श्री 'म' दर्शन

भारतीय संस्कृति व आत्मज्ञान का पथप्रदर्शक

श्री श्री रामकृष्ण पार्षद

श्री म का कथामृत

[तृतीय भाग]

ग्रन्थकार

स्वामी नित्यात्मानन्द

अनुवादिका

ईश्वरदेवी गुप्ता

सहायक

डॉ० नौबतराम भारद्वाज

एम.ए., पीएच. डी.

श्री म ट्रस्ट

श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट

579, सैक्टर 18 बी, चण्डीगढ़-160018

फोन : 28536

सूची

●●●●

श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट
(श्री म ट्रस्ट)
संक्षिप्त परिचय

यह धर्मार्थ संस्था 12 दिसम्बर, 1967 को परम पूज्य श्रीमत् स्वामी नित्यात्मानन्द जी के पुण्य संरक्षण में स्थापित हुई। इसका मुख्य उद्देश्य है जनता जनार्दन की सेवा और ऋषियों तथा महापुरुषों के दर्शाए पथ पर चलकर जन-जीवन का नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पुनरुद्धार करना।

इस ट्रस्ट ने श्री रामकृष्ण के परम प्रिय पार्षद तथा अन्तरग भक्त श्री महेन्द्रनाथ गुप्त (श्री म) के प्रवचनों को मूल दैनन्दिनी से संकलित करके प्रकाशित करने का एक विशाल ज्ञानयज्ञ प्रारम्भ किया है। इसके अन्तर्गत 'श्री म दर्शन' शीर्षक से बंगला में एक से सोलह भाग तथा हिन्दी में एक से चार भाग, और अंग्रेजी में—'M.'—The Apostle and the Evangelist शीर्षक से प्रथम चार भाग प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Centenary Memorial' तथा 'A short Life of Sri 'M.' भी प्रकाशित हो चुके हैं। बंगला में 'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत' के प्रथम भाग का हिन्दी संस्करण भी ठाकुर कृपा से शीघ्र ही भक्तों को उपलब्ध होगा।

यह ट्रस्ट नियमानुसार रजिस्टर्ड है और इसका मुख्य कार्यालय 579, सैक्टर 18 बी में स्थित है। सैक्टर 19 डी में स्थित 'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत पीठ' नाम से इसी ट्रस्ट के अपने भवन में एक ध्यानकक्ष तथा पुस्तकालय एवं वाचनालय की व्यवस्था की गई है। यह ट्रस्ट आयकर विभाग से मान्यता प्राप्त है और इसे दिए गए दान पर आयकर की छूट है। श्री रामकृष्ण देव जी के भक्तों तथा ट्रस्ट के बन्धुओं और प्रशंसकों द्वारा दिए चन्दे से ही ट्रस्ट के उक्त कार्य सम्पन्न हो पाते हैं।

'श्री म दर्शन' के पवित्र सागर-संगम में अवगाहन कर प्रतिदिन असंख्य दुःखसंतप्त मानव—विशेषतः गृहस्थ—नवचेतना, सन्तोष, धैर्य और प्रकाश पा रहे हैं।

ट्रस्ट की बहुमुखी गतिविधियों के विकास के लिए किसी प्रकार का भी दान सादर स्वीकृत होता है।

※ सम्पादकीय प्रार्थना ※

हे कल्याणमय एवं स्नेहमय परमपिता ठाकुर ! आज हम जगत् के सभी दुःख सन्तप्त मनुष्यों के लिए शान्ति तथा आनन्दस्वरूप आपकी अमृतमय वाणी का विनम्र भाव से प्रचार एवं प्रसार करने के उद्देश्य से इस "श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट" (श्री म ट्रस्ट) की स्थापना करते हैं। स्वामी विवेकानन्द, आचार्य श्री म आदि अपने सांगोपांग पार्षदों तथा श्री श्री मां के साथ ही आप हमें आशीर्वाद दें, हमारे साथ नित्य वास करें और मंगलमय दिशा में हमारा सदा मार्ग प्रशस्त करते रहें।

इस निष्काम कर्म तथा निस्स्वार्थ सेवाभाव से आपके वस्तु-स्वरूप—नरदेह में अवतीर्ण साक्षात् ईश्वर स्वरूप—को हम सतत अनुभव करें।

हमें वास्तविक शांति तथा आनन्द की प्राप्ति हो ! समस्त ब्रह्माण्ड के सकल जीव प्रशान्त एवं आनन्दमय हों—समग्र ब्रह्माण्ड में शाश्वत तथा अनन्त सुख-शान्ति का चिरस्थायी निवास रहे !! ॐ तत् सत् !!!

आपकी विनम्र सेवक-सन्तान,

स्वामी नित्यात्मानन्द

सिविल लाइन्ज, रोहतक।

20 दिसम्बर, 1967

* शुभाशीर्वाद *

परमकल्याणीया श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता,

देवि, देवार्चना के अर्घ्यस्वरूप आपका श्री म दर्शन का हिन्दी अनुवाद हुआ है अति सुन्दर, सरल औ' सावलील। वैसा ही वह हुआ प्रांजल, भावव्यंजक औ' मूल की छवि।

अनुवाद कार्य ही नीरस। किन्तु ग्रन्थ के मूल विषय-वस्तु के साथ आपकी एकात्मता-जन्य ही यह अनुवाद हुआ है अति सरस और सुरुचि-सम्पन्न।

भग्नस्वास्थ्य होते हुए भी बंगला भाषा की शिक्षा लेकर दैनन्दिन जीवन में आचरणीय वैदान्तिक-ग्रन्थ हिन्दी में अनुवाद करना है सुकठिन कार्य।

श्री म दर्शन का मूलविषय ही यह—सुखदुःखमय इस संसार में रहकर किस प्रकार से वेदवर्णित देवजीवन लाभ संभव, इसी का पथ निर्दिष्ट है इसमें।

वेदमूर्त्ति युगावतार श्रीरामकृष्ण की शिक्षा से वर्तमान जड़-सभ्यता के युग में आचार्य श्री म ने वन के वेदान्त को घर में लाकर मूर्त्त किया—अपने जीवन में इसी उनविंश-विंश शताब्दी में, ठीक जैसा मूर्त्त हुआ वैदिक युग में तपोवन में, ऋषियों के जीवन में।

श्री म दर्शन है महर्षि श्री म के जीवन का एक जीवन्त आलेख्य। और फिर है श्रीरामकृष्ण-लीला प्रकाशक। वर्तमान विज्ञान सम्मत, श्री म कथित प्रामाणिक महाग्रन्थ 'श्रीश्रीरामकृष्ण कथामृत' का मनोमुग्धकर सजीव और सटीक वार्त्तिक वा भाष्य।

"मनुष्य-जीवन का सर्वश्रेष्ठ आदर्श ईश्वर-दर्शन है," यह वाणी भी मेरे हृदय में श्री 'म' का जीवनचरित्र सुनकर ही प्रवेश की।

स्वामी नित्यात्मानन्द जी ने बंगला श्री म दर्शन से श्री 'म' की जीवनी का कुछ अंश हिन्दी अनुवाद करके सुनाया। इसी पाठ को सुनकर मन में धारणा हुई कि श्री 'म' गृहस्थ आश्रम में रहकर संसारी सकल कार्य सम्पन्न करके भी भृगु, वशिष्ठ आदि प्राचीन ऋषियों की भांति आत्मज्ञ और विदेही थे। उसी समय श्री 'म' के देव-जीवन के विषय में अधिकतर जानने की आकांक्षा तीव्र हुई। उसी समय ही इसी आकांक्षा ने मुझे बंगला भाषा सीखने में व्रती किया। भाषा सीखकर श्री म दर्शन के प्रकाशित दो भाग पढ़े और कुछ पांडुलिपि भी देखी। श्री म की जीवनी और वाणी के साथ और भी घनिष्ठ परिचय करने के लिए मैंने हिन्दी भाषा में श्री 'म' दर्शन का अनुवाद रूप व्रत लिया। इस विषय में कई साधु महात्माओं और भक्तों ने उत्साहित किया।

पहली जनवरी 1965, श्री कल्पतरु दिवस को वृन्दावन के सेक्रेटरी स्वामी कृपानन्द जी ने ईश्वरदेवी से प्रश्न किया, "श्रीमती गुप्ता, आपने जगबन्धु महाराज (स्वामी नित्यात्मानन्द) को कैसे बांध लिया? उन्हें तो उनका इतना बड़ा समृद्धिशाली अपना घर भी नहीं बांध सका, और संन्यासी बनने के पश्चात् रामकृष्ण मठ और मिशन भी जन-सेवा के लिए अपने यहां नहीं रोक सका। हम सब बड़े हैरान हैं कि बात क्या है?" करबद्ध श्रीमती गुप्ता ने कुछ चिन्तन कर सविनय कहा, "महाराज, एक कहानी याद आ गई। एक राजकुमार को एक राक्षस का विनाश करके एक फूल लाने का आदेश हुआ था जिसके परिणाम में उसको अपनी मनोवांछित वस्तु मिलनी थी। राजकुमार जब अनेक विघ्नबाधाओं को पार करके उस राक्षस के राज्य में पहुंचा तो उसे वहां एक सुन्दरी वृद्धा जादूगरनी मिली। उस जादूगरनी ने राजकुमार को दिखाया कि सामने पिंजरे में जो तोता है, उसमें उस भयंकर राक्षस के प्राण हैं। तुम इस

तोते की गरदन मरोड़ दोगे तो तुम्हें अनायास ही फूल मिल जाएग
राजकुमार ने जादूगरनी के वताए तरीके से उस तोते की गर
मरोड़ दी और वांछित फूल तथा राक्षस का सारा राज्य-वैभव
लिया। महाराज मुझे तो लगता है, श्री गुरु महाराज के प्र
'श्री म दर्शन' में हैं। श्री म दर्शन को श्री श्री ठाकुर ने अपनी अस
कृपा द्वारा मुझे पकड़वा दिया है, तभी महाराज यहां अ
हुए हैं।"

'श्री म दर्शन' के प्रकाशन का मुख्य प्रयोजन अपने हि
भाषा-भाषी बहन-भाइयों के हाथों में यह अमूल्य सम्पद् देना
इसका मूल विषय एवं उद्देश्य है, सुख-दुःखमय इस गृहस्थ में रह
भी किस प्रकार वेद-वर्णित शान्त दैव-जीवन मनुष्यमात्र को लाभ
तथा प्राचीन ऋषियों की भांति गृहस्थाश्रम में भी परम सुख, प
शान्ति तथा परमानन्द में रहा जा सके।

वड़े हर्ष की बात है कि पूज्य महाराज जी ने भक्तों की मांग
स्वीकार किया और श्री म ट्रस्ट को शुभाशीर्वाद सहित श्री म द
ग्रन्थमाला के प्रकाशन और प्रचार करने की सानुग्रह अनुम
प्रदान कर दी।

अब यह शरीर सेवा करने के लिए धीरे-धीरे असमर्थ होता
रहा है। श्री गुरु स्वामी नित्यात्मानन्द जी ने 1975 में अप
महासमाधि से पूर्व विश्वास दिलाया था.........."मैं सर्वदा तुम्हारे स
रहूंगा.........जब बुलाओगी तभी आ जाऊँगा।" मैंने कहा, "महारा
गीत में तो है—'सम्भव है झंझटों में मैं तुमको भूल जाऊं, पर ना
कहीं तुम भी मुझको न भुला देना।' यहां तो साधक में थोड़ा विश्वा
है कि वह नहीं भूलेगा। तभी 'सम्भव' कहा, किन्तु महाराज मैं
निश्चय ही झंझटों में भगवान् को पुकारना भूल जाऊंगी। आप
सर्वदा हमारे पास रहने का वायदा किया है। एक कार्य और
करना, सर्वदा हमें भगवान् को पुकारना, स्मरण रखना न भूल
देना।" अब, उन्हें अशरीरी हुए प्रायः दस वर्ष हो गये हैं। किन
वे अपनी कृपा सर्वदा वर्षण कर रहे हैं।

।-

इस ग्रन्थमाला के तथा श्री म दर्शन के इस तृतीय पुष्प की ना, प्रचार और प्रकाश में जिन्होंने जिस प्रकार की भी सहायता है और कर रहे हैं, मैं श्री म ट्रस्ट की ओर से उन सबके प्रति दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूं।

अन्तर्यामी श्री भगवान् के श्रीचरणों में इस दीन सेविका की ान्त प्रार्थना है कि इस ग्रन्थ का पाठ करके और इसका अनुकरण के सब भाई बहनों का भगवान् में भक्ति और विश्वास बढ़े और ार में परम सुख, परम शान्ति, परमानन्द लाभ हो।

विनीता,
ईश्वरदेवी गुप्ता
प्रेजीडेंट
श्री म ट्रस्ट

म ट्रस्ट
9, सैक्टर 18 बी,
डीगढ़—160018.
श्री मां शारदादेवी जन्मतिथि, 1884.

भूमिका

अब की बार का प्रेमोपहार—श्री म दर्शन का तृतीय भाग
पूर्व दो भागों की न्याईं इसमें भी है श्री रामकृष्ण परिवार की-
ठाकुर मां स्वामी जी प्रभृति की—वाणी और जीवन संस्पर्श। औ
है उपनिषद्, गीता, बाइबल, कुरानशरीफ़ आदि शास्त्रों की श्र
रामकृष्ण-भाव-सम्मत व्याख्या। इसका तृतीय वैशिष्ट्य
कथामृतकार का भाष्य। श्री रामकृष्ण के अन्यतम पार्षद स्वाम
अभेदानन्द जी महाराज (काली तपस्वी) का पाण्डित्यपूर्ण प्रवचन ए
कथोपकथन भी इस बार के श्री म दर्शन की और एक विशेषता है।

'कथामृत' की न्याईं श्री म दर्शन में भी पौनःपुन्य (repetition
हो गया है। साहित्य कला की दृष्टि से यह अवैध होते हुए भी
धर्मशास्त्र की दृष्टि से यह विधिसम्मत है। अध्यात्म-शास्त्र में
पौनःपुन्य सर्वकाल में ही अलंकार रूप में स्थान पाता आया है
इसे छोड़ने का उपाय ही नहीं है। सब धर्मशास्त्रों का उद्देश्य है
आत्मज्ञान लाभ अर्थात् जीव की शिवत्व प्राप्ति। यही शिवत्व ही
जीव का स्वरूप है। दैवी माया के वशवर्ती होकर जीव अपना
शिवत्व भूल गया है। श्री भगवान् गुरु रूप में, अवतार रूप में आकर
जीव के निकट उसके शिवत्व की वाणी युग युग में सुनाते रहते हैं।
अब की बार भी भगवान् श्री रामकृष्ण एवं उनके अन्तरंगगण यही
वाणी पुनः पुनः सुना गए हैं। उसी वाणी की प्रतिध्वनि अब भी हमारे
कर्णकुहरों में बज रही है। अतः देखा जाता है पौनःपुन्य अध्यात्म
शास्त्र की अपरिहार्य विधि है।

आत्मद्रष्टा आचार्यगण युग युग में यही पौनःपुन्य नीति अवलम्बन
करते आए हैं—'सोऽहम्', 'शिवोऽहम्', 'अहं ब्रह्मास्मि', 'अयमात्मा
ब्रह्म', 'तत्त्वमसि', इन सब महावाणियों के पुनः पुनः जप और ध्यान
की शिक्षा देते रहे हैं। जप का अर्थ यही है—पुनः पुनः एक महावाक्य
का उच्चारण। ध्यान भी वही—उसी महावाक्य के प्रतिपाद्य
भाववस्तु का सतत चिन्तन। इसी ध्यान की चरम सीमा ही है
समाधि अर्थात् ईश्वर के संग में जीव का एकत्व अनुभव। यही है

त्र का चरम लक्ष्य। इससे भी देखा जाता है, पुनरुक्ति धर्म-साहित्य
प्राण है।

धर्म साहित्य में एक ही उपदेश बहुवार बहुजन को बोला जाता
विशेषतः कथोपकथन भाग में। श्री म दर्शन में यही मिलेगा।
ाटं का नियम पालन करते हुए यदि यह पौनःपुन्य छोड़ दिया
ाए, तो उससे दो नूतन दोष आ पड़ते हैं। प्रथम, बात की
थार्थता और सजीवता का अंगच्छेद हो जाता है। और द्वितीय,
क ही बात को, बहु बैठकों में बहुजनों को बतलाने पर, किसके
ऊपर कैसा प्रभाव उस बात का पड़ा, यह पता नहीं चलता।
त एव पौनःपुनिकता अपरिहार्य है। वेदव्यास की अमृतमय भागवत
ौर क्राइस्ट की बाइबल में पौनःपुन्य दिखाई देता है।

यही पौनःपुन्य विधि अनुसरण करके आचार्य श्री म श्री रामकृष्ण
की वाणी पुनः संसार-तप्त जीवों को परिवेशन कर रहे हैं। तारस्वर
में घोषणा कर रहे हैं—हे जीव, तुम मनुष्य नहीं हो, तुम अमृत के
पुत्र हो। अहर्निश यही मंत्र जप करो, यही मंत्र ध्यान करो। इसी
मंत्र का प्राणसंजीवन करो। इसी उपाय से तुम अपना शिवत्व
प्राप्त करो। तुम अमृतत्व लाभ करो।

और जिन्होंने अमृतत्व लाभ किया है अथवा लाभ करने के लिए
व्याकुल हैं, उन्हीं आचार्यगण का संग करो, उनकी सेवा करो, उनके
निकट आत्मसमर्पण करो। यही है उपाय अमृतत्व लाभ का। इसे
ही साधुसंग कहते हैं।

हे जीव, तुम यदि गृहस्थाश्रम में पतित हुए पड़े हो, तुम्हारे
बन्धन उन्मोचन के लिए भगवान् श्री रामकृष्ण अभी उसी दिन ही
सुगम पथ प्रदर्शन कर गए हैं। कह गए हैं, तुम दासीवत् निज गृह
में परिजनरूपी भगवान् की सेवा करो। 'मैं इस घर का मालिक हूँ',
यदि यह होगा तो समझना होगा, तुम बन्धन में पड़ गए हो। इस
गृह के मालिक हैं श्री भगवान्। तुम हो उनकी दासी। तुम्हारा
अधिकार केवल कर्म में है, किन्तु भोग में नहीं। दासी को परितुष्ट
रहना पड़ता है गृहस्वामिनी द्वारा दिये हुए द्रव्य से। यदि तुम यह
परामर्श ग्रहण करो, तो फिर तुम्हारा गृह परिजन, जो बन्धन का
कारण होता, वही हो जाएगा मुक्ति का मुक्त द्वार। जो शोक ताप

का घर होता वही हो जाएगा परमानन्द हाट। गरल अमृत हो जाएगा।

बन्धु, श्रवण करो, श्री रामकृष्ण की यह अभय वाणी—'तोदेर (गृहस्थ भक्तदेर) जन्यइ आमार भावना बेशी। तोरा संसारे जड़िये पड़ेछिस्। तोरा आमाय धरो। आमार चिन्ता करो। आमि के, आर तोरा के, एटा जानलेइ होवे।' (तुम्हारे—गृहस्थों के—लिए ही तो मुझे अधिक चिन्ता है। तुम संसार में जो फँस गए हो। तुम मुझे पकड़ो। मेरा चिन्तन करो। मैं कौन हूं और तुम कौन हो, वह जान लेने पर ही हो जाएगा।) और यह भी सुनो, प्रतिज्ञा करके बोल रहे हैं—'प्रतिज्ञा करके कहता हूं जो मेरा चिन्तन करेगा ,सो मेरा ऐश्वर्यलाभ करेगा जैसे पिता का ऐश्वर्य पुत्र लाभ करता है। ज्ञान भक्ति, विवेक-वैराग्य, शांति सुख, प्रेम समाधि ये सब मेरे ऐश्वर्य हैं।'

और वही फिर सुनो भाई, श्री रामकृष्ण की प्रतिध्वनि श्री म के मुख से। संसार में रहोगे जल में पद्मपत्रवत्। अथवा छाछ के ऊपर मक्खनवत्। अथवा 'पांकाल मछली' की भांति, कीचड़ में रहते हुए भी निर्मल, अथवा कछुवे की तरह, जल में रहते हुए मन पृथ्वी पर रखे अंडों में। 'किंवा गृह का सब काज करती हुई, उपपति पर मन रखे हुए नष्टा स्त्रीवत्।' अथवा हाथ में तेल मलकर कटहल काटने की तरह। तब फिर इस संसार को ही मजे की कुटिया बना सकते हो, यदि श्री रामकृष्ण की प्रतिध्वनि श्री म के उपदेश सुनकर काम करो।

अब श्री म के जीवन की दो चार बातें बतलाता हूं। श्री म बताया करते, "शैशव से ही ठाकुर मेरी रक्षा किया करते थे। एक बार चार वर्ष की उमर में मां के संग नाव में महेश के रथोत्सव पर गया था। लौटती बार मां संगियों के साथ दक्षिणेश्वर काली मन्दिर दर्शन करने नौका में उतर गई। उसी समय मैं बिछुड़ गया और मां काली के मन्दिर के पास अकेला रोने लगा। तब एक सौम्यदर्शन युवक आकर मेरे शरीर और मुख पर हाथ फेरकर प्यार करने लगा। ये ही संभवतः परवर्ती काल के मेरे जीवन-सर्वस्व ठाकुर थे।

करते करते, यदि उनकी इच्छा हो जाए तो सब कुछ ही छुड़वा सकते हैं। और यदि संसार में रहें तो भी और आबद्ध नहीं करेंगे। नाममात्र संसारी, वस्तुतः संन्यासी।

"संन्यासी सर्वदा ईश्वर चिन्ता करते हैं कि ना, जभी उनके भीतर नारायण का विशेष प्रकाश होता है। तभी उन्हें नारायण कहते हैं। देखा नहीं, ॐ नमो नारायणाय कहकर उन्हें प्रणाम करते हैं। उनके दर्शन, उनकी सेवा करने से नारायण-दर्शन और नारायण-सेवा का फल होता है।"

मठ में सम्प्रति दुर्गोत्सव हुआ था। श्री म के निकट जो सर्वदा यातायात करते हैं वैसे कितने ही भक्तों ने श्री म के उपदेशानुसार उत्सव के कई दिन मठ में वास किया था। ये पूजा में साधुओं के संग योगदान और सेवा करके लौटे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—दुर्गा पूजा के कुछ दिन मठ में रहना पूर्व जन्म की तपस्या रहने पर ही होता है। यह पूजा तो किसी कामना के लिए पूजा नहीं है।

यह है निष्काम पूजा। ऐसी निष्काम पूजा मठ के साधु ही केवल कर सकते हैं। औरों के लिए यह काज है बड़ा ही कठिन।

"मठ की इस पूजा के पीछे कितनी बड़ी प्रार्थना-शक्ति रहती है! ठाकुर जगदम्बा के निकट जो प्रार्थना किया करते थे, उसी प्रार्थना की शक्ति रहती है जभी तो इतना आनन्द। ठाकुर मां के पास प्रार्थना किया करते, 'देह सुख चाहता नहीं मां। लोकमान्य चाहता नहीं मां। अष्टसिद्धि चाहता नहीं मां, शतसिद्धि चाहता नहीं माँ। पादपद्मों में शुद्धा भक्ति दो—शुद्धा, अमला, अचला भक्ति दो मां। और ऐसा करो जिससे तुम्हारी भुवनमोहिनी माया में मुग्ध न होऊं।' मठ की पूजा के पीछे ठाकुर की यही निष्काम प्रार्थना विद्यमान है। भक्तों के लिए भी माँ के निकट प्रार्थना किया करते, उन लोगों के लिए जो शत काज त्याग कर के भी उनके पास भागे हुए आया करते और किस तरह

उनका कर्म कम हो सर्वदा यही भावना किया करते। दमदम की पलटन वाले लोग कुछ घण्टे की छुट्टी में भी उनके पास दौड़े आते। उनके लिए भी प्रार्थना किया करते। देखते थे कि ना, कितने काज के भीतर भी यहां आते हैं। निज को निज जानते थे। जभी तो भावना करते, ये साधारण लोग नहीं हैं। जभी उनके लिए इतनी भावना किया करते।

"और फिर कहा करते ईश्वर साकार या निराकार यह लेकर सिर न घुमाना। वरन् बोलो, हे ईश्वर तुम जिस रूप में भी हो मुझे दर्शन दो। यह कहकर प्रार्थना करने पर वे दर्शन देकर समझा देंगे कि उनका क्या रूप है। विजयकृष्ण गोस्वामी को यह बात कही थी। तब ईश्वर साकार हैं कि निराकार यह लेकर कलकत्ता में खूब विचार हुआ करता था।"

श्री म की फरमाइश पर भक्तगण गा रहे हैं, रामकृष्ण रामकृष्ण बोले रे आमार मन। माधुर्य-घन मूर्ति जित कामिनी कांचन इत्यादि। गाना हो चुका। अनेक क्षण श्री म ध्यानस्थ रहे, फिर वे बातें कर रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—गाना क्या कुछ कम है भाई। ठाकुर कहा करते—रामप्रसाद गाने में सिद्ध थे। एकजन भक्त (श्री म) को ठाकुर ने कहा था—तुम वही गान निर्जने गोपने गाया करो अकेले व्याकुल होकर। इससे कुण्डलिनी जाग्रत होती है। 'जागो माँ कुल कुण्डलिनी तुमि नित्यानन्द स्वरूपिणी,' यह गाना।

कहा करते, कुण्डलिनी जाग्रत होने से ही व्याकुलता हो जाती है, ईश्वर के लिए। नहीं तो जैसे किसी का तीस बर्ष का माला जप, कितना गंगा स्नान करके कितनी पूजा अर्चा करके भी कुछ नहीं होता—जैसे अठारह महीने का साल हो, व्याकुलता तो नहीं है परन्तु करना चाहिए इसलिए करता है।

हरि से लगे रहो हे मन; तेरा बनत बनत बनि जाई। बनत बनत ठाकुर यह पसन्द नहीं करते थे। अभी दर्शन करना होगा, नहीं तो

तभी तो मठ में जाने को कहता हूँ। अल्प कष्ट करके जाने से फल पीछे अच्छा होगा। साधुदर्शन, प्रणाम और फिर सेवा।

बड़ों को प्रणाम भूमिष्ठ होकर करना चाहिये। और नूतन जनों को हाथ जोड़ कर। मन में भक्ति रहने से ही हुआ। लोक दिखावा क्या आवश्यक? राधाकान्त देव के घर का एक लड़का ठाकुर को प्रणाम नहीं किया करता था, लज्जा से। कहीं पीछे मित्र न कहने लगें भक्त हो गया है। ठाकुर को यह बात बतलाने पर उन्होंनें उत्तर दिया— क्या दरकार है लोक दिखावे की? मन में भक्ति रहने से ही हुआ। तुम जैसे करते हो वैसे ही करो। इससे ही तुम्हारा होगा।

मथुरबाबू एक बार ठाकुर को पकड़ कर बैठ गए, मां के चरणों में उनके हाथ से एक अर्घ्यं दिलवाने के लिए। बहुत बड़े मुकदमे में पड़े हुए थे। उनका विश्वास था उनके हाथ से अर्घ्यं दिये जाने पर जीत होगी। ठाकुर ने पीछे भक्तों से कहा था, देखो, मथुर का कैसा विश्वास— मेरे अर्घ्यं देने से ही उसका काम बन जाएगा।

ठाकुर सर्वदा लोगों के गुणों की ओर ही देखा करते। महापुरुषों का लक्षण ही यही।

(3)

श्री म मॉर्टन की चारतल्ला की छत पर बैठे हैं, कुर्सी पर उत्तरास्य। अपराह्न छह। कई भक्त भी दोनों ओर बेंचों पर बैठे हैं। श्री हट्ट के सुरेन बाबू (स्वामी सत्संगानन्द) भी हैं। आज चौथा अक्तूबर 1922 ईस्वी, 17वां आश्विन 1329 बं० साल, बुधवार, शुक्ला चतुर्दशी।

बेलुड़ मठ से स्वामी शुद्धानन्द, धीरानन्द तथा माधवानन्द और विवेकानन्द सोसायटी के सेक्रेट्री किरण चन्द्र दत्त आए हैं। श्री विजया का प्रणाम और आलिंगनादि हो जाने पर सब ने मिष्टी-मुख किया। मठ के सम्बन्ध में नाना बा[illegible] बातचीत में उन्होंने बताया, "आज हम deputation (आवेदन) लेकर आये हैं। कथामृत लिखना और सम्भव न हो तो जैसा डायरी में है वैसा ही छपवाने से क्या

नहीं होगा ?" श्री म ने सहास्य उत्तर दिया, सब उनकी इच्छा। हमारी अपनी इच्छा है कि और एक पार्ट लिखूं। वे शक्ति दें तो हो सकता है। डायरी छपवाने से समझेगा कौन? सम्भवत: उल्टा फल हो जाए।

श्री म (स्वामी शुद्धानन्द के प्रति)—अल्प उपनिषद् सुनाइये। साधुमुख से सुनना चाहिये शास्त्र, ठाकुर कहा करते। (भक्तों के प्रति) आप सुनिये।

स्वामी शुद्धानन्द अति सुपण्डित और मेधावी। उपनिषद् शास्त्र का बहु अंश उन्हें है कण्ठस्थ। आजकल उद्बोधन में उपनिषद् की क्लास करते हैं। वे उपनिषद् में से अनेक अंश आवृत्ति करने लगे। नीचे कुछ अंश दिये जाते हैं।

छान्दोग्य का नारद सनत्कुमार संवाद सुना रहे हैं।

स्वामी शुद्धानन्द—भूमैव सुखं......यत्र नान्यत् पश्यति नान्यच्छृणोति नान्यद्विजानाति स भूमा। ......यो वै भूमा तदमृतं। सर्वं खल्विदं ब्रह्म। तज्जलानिति। इन्द्र विरोचन संवाद में है, य एष अक्षिणि पुरुषो दृश्यते एष आत्मा इति होवाचैतदमृतमभयमेतद् ब्रह्मेति। उद्दालक श्वेतकेतु से कह रहे हैं, सदेव सौम्येदमग्रे आसीत्। एकमेवाद्वितीयम्। और फिर है, स य: त्रयोनिमैतदात्म्यमिदं सर्वं, तत्सत्य स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो।

बृहदारण्यक में याज्ञवल्क्य बोल रहे हैं, विज्ञानमानन्दं ब्रह्म। और फिर सर्वस्य वशी सर्वस्येशान: सर्वस्याधिपति:। जनक को कहा, सलिल एको द्रष्टाद्वैतो भवति एष: ब्रह्मलोक:। मैत्रेयी को कहा, स एष नेति नेति आत्मा विज्ञातारमरे केन विजानीयात्।

तैत्तिरीय में है, सत्यं ज्ञानमन[illegible]। और भृगु से कह रहे हैं, यतो वा इमानि भूतानि जाय[illegible]। येन [illegible]ता[illegible]न जीवन्ति। यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद् विजिज्ञासस्व। तद् ब्रह्मेति।

कई भक्तों ने प्रवेश किया।

श्री म (सहास्य)—यहां पर पिता का घर जो है भाई। वहां पर है श्वसुर घर। वहां पर ही जाना पड़ेगा सबको। कन्या को पिता माता के पास रहना प्यारा लगता है। इस कारण क्या वह वहां सदा रह सकती है। और न वहां रहना ही उचित है। प्रथम जब श्वसुर बाड़ी जाती है तब कितना रोना पीटना। पिता-माता कहते हैं, पुत्री रोओ मत, वही है तुम्हारा अपना घर। वहां तुम्हें चिरजीवन रहना होगा। उसे ही घर बनाना पड़ेगा। संन्यास है कि ना, भगवान् के लिए सब कुछ त्याग। इसके बिना किए कैसे उनकी प्राप्ति होगी। सबको ही यही करना पड़ेगा। पहले अथवा पीछे।

जभी तो साधुसंग बिना हमारी गति नहीं है। यही है एकमात्र पथ। रोज मठ में जाना उचित। पूर्व-जन्म की तपस्या हो तो यह हो जाता है। इससे संस्कार बदल जाता है।

मधुमक्खी केवल फूल पर बैठती है। अन्य मक्खी फूल पर भी बैठती है और फिर अन्य स्थान पर भी बैठती है। जो ईश्वर के लिए व्याकुल हैं वे ही साधुसंग चाहते हैं।

युवक भक्त—व्याकुलता हो तो होती नहीं।

श्री म—साधुसंग में जाना-आना करते-करते व्याकुलता होती है। प्रथम दर्शन में ही क्या फिर नूतन बहू को पति के लिए आकर्षण होता है? प्रथम जाना ही चाहती नहीं। कितने बहाने, रोना-पीटना। आत्मीय कुटुम्ब पांच जन कितना समझाते बुझाते हैं, तब पति के घर भेजते हैं। दिन बीतते हैं। हठात् मां को असुख हो जाता है। पिता कन्या को लिखता है, बेटी पत्र पढ़ते ही चली आओ। हम बड़ी विपद में हैं। कन्या उत्तर देती है, पिता जी अब किस प्रकार आऊं? लड़कों की परीक्षा, और फिर इन्हें आफिस में जाना होता है। मैं नहीं होऊंगी तो इन्हें बहुत कष्ट होगा। अभी नहीं आ सकती। आश्विन मास में चेष्टा करूंगी। (सबका उच्च हास्य)।

श्री म (सब के प्रति)—प्रवर्तकों की भी ऐसी ही अवस्था होती है। प्रथम तो साधुसंग में मन जाना ही नहीं चाहता। शायद कोई बन्धु जोर करके ले जाता है अथवा किसी के अनुरोध से पहली बार चला जाता है। तत्पश्चात् आना जाना करते करते अन्त में एक अभ्यास हो जाता है। तब साधुसंग बिना कुछ भी अच्छा नहीं लगता। तब वे जो करते हैं वही करने की इच्छा हो जाती है। ईश्वर के लिए व्याकुल हो जाता है।

जैसे शोकातुरा मां—पुत्र अभी अभी मरा है। उसके पास जाकर एक बन्धु सहानुभूति करता है। शोकभाव अपने आप ही आ पड़ता है। अन्य समय किसी के आने पर कितना हंसी तमाशा किया करती थी। किन्तु अब शोक अपने आप ही आ जाता है। वैसे ही साधुसंग। उसे करते करते उनके जैसा हो जाता है। तब अपने आप ही सब ठीक हो जाता है—व्याकुलता आ जाती है।

अनेक भक्त—व्याकुलता के बाद ही क्या भगवान् दर्शन होता है।

श्री म—हां, ठाकुर कहा करते, जैसे अरुणोदय होने पर संग संग सूर्योदय होता है, यह भी वैसा ही है। व्याकुल होते ही ईश्वर दर्शन देते हैं। फिर इस प्रश्न की ही आवश्यकता क्या है, होता है कि नहीं होता ? व्याकुल होने पर ही सब जाना जाएगा, तब।

पिप्पलाद ऋषि के पास कई जन गए प्रश्न करने। देखते ही वे कहने लगे, समझ गया हूँ तुम कुछ जिज्ञासा करने आए हो। अच्छा एक काज करो। पहले एक वर्ष तपस्या करके आओ। सत्य और ब्रह्मचर्य पालन करके आओ, फिर जिज्ञासा करना। तपस्या न की जाए तो ये सब प्रश्न ही नहीं कर सकता। कहना क्या है कह बैठेगा क्या। भगवान् लाभ करना केवल पाण्डित्य का कर्म नहीं। निर्जन में गोपने उनसे प्रार्थना करनी चाहिये। ईशु ने कहा—'But many that are first shall be last; and the last shall be first (St. Mathhew 19:30)

Verily I say unto you, Except ye be converted, and become as little children, ye shall not enter into the kingdom of heaven.' (St. Mathhew 18:3) जो जगत् में नगण्य वे हो ईश्वर के अतिप्रिय और जो जगत् में गणमान्य वे उनके पास नगण्य। शिशुवत् सरल हो तभी ईश्वरलाभ होता है। ऐसा काण्ड। यहां के बड़े बड़े नहीं हैं, उनके लिए जो व्याकुल हैं, वे ही बड़े हैं। क्योंकि वे ही जो हैं उनको अतिप्रिय।

बालक खेल में मस्त है। किसी ओर होश नहीं। कुछ क्षण बाद और खेल अच्छा नहीं लगता, सब छोड़ देता है। खाली 'मां मां' करके रोता है। एक जन मां के पास ले जाता है। मां को देखकर, उसका स्नेह चुम्बन पाकर फिर आकर खिलने लगता है। —तब कैसा तेज और आनन्द ! वैसा ही है साधुसंग। मठ में जाकर यही होता है। मन सतेज होता है। उनके लिए व्याकुलता की वृद्धि होती है। और संसार के कार्य में भी तब आनन्द होता है, उनकी सेवा है यह जानकर।

(4)

मॉर्टन स्कूल की चारतल की छत पर श्री म कुर्सी पर बैठे हैं, उत्तरास्य। श्री म के सम्मुख पूर्व और पश्चिम में दो लम्बे बेंच हैं। भक्तगण उन पर आमने सामने बैठे हैं—डाक्टर, विनय, बड़े सुधीर, छोटे नलिनी, अमृत, जगबन्धु आदि। अब रात्रि प्रायः आठ। शीत का तनिक आमेज* हुआ है।

आज कोजागर लक्ष्मी पूर्णिमा।** सुनिर्मल आकाश में पूर्णचन्द्र। चांद का कैसा आलोक—कैसा स्निग्ध और उज्ज्वल। श्री म एक दृष्टि से चन्द्रदर्शन कर रहे हैं। इस चांद के भीतर न जाने क्या देख रहे हैं और आनन्द से भरपूर हो रहे हैं। प्रथम चांद के भीतर देख रहे थे तत्पश्चात् निज के भीतर। लगता है एक सुखसेतु ने स्थान और काल का व्यवधान मिटा दिया है। दीर्घ काल बीत गया। श्री म अब आनन्द में उनकी भाव प्रतिमा का वर्णन कर रहे हैं।

---

*आमेज—मिलावट।

**कोजागर लक्ष्मी पूर्णिमा—आश्विन पूर्णिमा की रात्रि।

श्री म (भक्तों के प्रति)—वही पूर्णिमा, वही चांद, वही रात, सब ही तो हैं, केवल वे ही नहीं हैं—रामकृष्ण-शशी। वही आनन्दमय दिव्य बालक, वही वेद पुरुष।

अड़तीस वर्ष पूर्व इसी रात को कलुटोला में आए थे, नवीन सेन की बाड़ी में। वे थे केशवसेन के बड़े भाई। आहा, ठाकुर ने कैसा impression (चित्र अंकित) कर दिया है मन में। औरों के लिए अड़तीस वर्ष। हमारे मन में हो रहा है जैसे अभी अभी ही हुआ है—ऐसी vivid impression (जीवन्त छवि)।

उसी रात को ठाकुर ने तीन गाने गाए थे, नृत्य भी किया था। कैसा मधुर वह दृश्य! केशव सेन की मां निमन्त्रण देकर गई थीं। अब भी देख रहा हूं वही नाचगान। मैं तब श्यामपुकुर में रहा करता था। घर खाली छोड़कर ही भागा, ख्याल ही नहीं आया कि घर में कोई विपद् घट सकती है। ऊपर नहीं गया, नीचे चबूतरे पर बैठे हुए ही सब देखा। रात बारह बजे घर लौटा।

किन्तु ठाकुर जान गए थे। अगले दिन कहने लगे, हाँ गोपने खूब अच्छा है। ईश्वर को पुकारना चाहिए गोपने – कोई न जाने। उनके अगोचर तो कुछ नहीं, अन्तर्यामी पुरुष।

उ : अड़तीस वर्ष हो गए। हमारे मन में हो रहा है अभी ही हुआ है।

हिम पड़ रहा है। अब तक श्री म को होश नहीं था—ठाकुर की सुख-स्मृति में निमग्न थे। झटपट आकर सीढ़ी के कमरे में बैठ गए।

अब मठ की बात हो रही है। श्री म के उपदेशानुसार अति भोर में कई जन भक्त नित्य मठ में जाते हैं प्रथम स्टीमर से। ये लोग साधुओं के दर्शन और प्रणाम करते हैं पैर छूकर। इनमें वयस्क और प्रवीण लोग हैं। तभी मठ के अनेक साधु पादस्पर्श से संकुचित होते हैं। एक साधु मठ से आकर श्री म को यह बात निवेदन कर गए हैं। साधुओं को कष्ट हुआ है यह सुन कर श्री म चिन्तित हो गए हैं। इन्होंने इसके पहले भी भक्तों से कह दिया था कि वयस्क साधुओं को भूमिष्ठ होकर और

नूतन जनों को हाथ जोड़कर प्रणाम करना उचित है। पुनः आज फिर प्रणाम के सम्बन्ध में श्री म भक्तों को उपदेश दे रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—मन में भक्ति रहने से ही हुआ। साधुओं का पादस्पर्श चाहे न भी हो। मन भ्रमर को भेज दो न वहां। वे जब असंतुष्ट होते हैं तब क्या प्रयोजन? मन मन में भक्ति खूब अच्छी है। लोग-दिखावा क्या दरकार? उस पर रोज-रोज पैर पकड़ना धकड़ना यह भी है एक positive nuisance (सुस्पष्ट विरक्तिकर व्यापार)।

चार श्रेणी हैं साधुओं की। प्रथम श्रेणी के साधु खूब earnest (व्याकुल) भगवान्-जन्य। Trivial matters (तुच्छ वस्तु) वे चाहते ही नहीं। द्वितीय श्रेणी के साधु afraid of contamination (स्पर्श दोष को खूब हानिकर) मानते हैं। जो तृतीय श्रेणी के हैं वे लौकिकता चाहते हैं। उनकी संख्या बहुत कम है। और चतुर्थ श्रेणी के हैं indifferent (उदासीन)। कोई भी लक्ष्य नहीं इस ओर। भक्ति या सम्मान पैर पकड़ कर ही करो, या हाथ जोड़कर ही करो या ना हो करो, उन्हें ग्राह्य ही नहीं यह सब।

साधुओं को नारायण ज्ञान में पूजा करना केवल सम्मान दिखलाना ही नहीं है—not to pay respects but to worship. किसी भी मठ, मन्दिर वा आश्रम में, जहां साधु रहते हैं, जाते हुए इन्हीं तीन मोटी-मोटी बातों पर लक्ष्य रखना उचित है:—प्रथम आश्रम पीड़ा न हो, जैसे भोजनादि में। द्वितीय उल्लंघन। साधु जब ध्यान-जप करते हैं तब सामने से जाना उचित नहीं। और तृतीय, पांव खाबलाखाबलि* न हो। ऐसे चलना होगा जिससे साधुओं को तनिक सा भी विघ्न न हो, अति सावधानी से। भोजनादि के सम्बन्ध में यह एक point (नीति) कर ही लेनी उचित है—उत्सव आदि छोड़ वहां खाऊंगा ही नहीं। बहुत कहे बिना खाना उचित नहीं। उनका अन्न है भिक्षा-लब्ध। Winter (शीत) के लिए बहु कष्ट से काष्ठादि provision (संग्रह) करके रखा

*खाबलाखाबलि—पांव छूने के लिए जोर जबरदस्ती।

जाता है। उससे एक जन जाकर आग जलाकर आराम करे, यह उचित नहीं। यथाशक्ति तन-मन-धन से सेवा करना उचित है। एक स्थान पर बहु साधु उपस्थित हों तो नारायण का विशेष प्रकाश जानकर भक्ति पूर्ण भाव से एक ही बार प्रणाम करना यथेष्ट। साधुओं की पूजा तन-मन-धन द्वारा करनी चाहिए। वह न करके विघ्न उत्पादन करना, तो फिर पूजा कैसे हुई ? पूजा माने शरणागत होना। उससे भगवान् तुष्ट होते हैं। तस्मिन् तुष्टे जगत् तुष्टम्। और फिर साधु सन्तुष्ट हो जाएं तो ईश्वर सन्तुष्ट होते हैं। साधुगण हैं उनका रूप—नारायण।

बेलेघाटा, कलकत्ता।
5 अक्तूबर, 1922 ई०; बृहस्पतिवार।
कोजागर लक्ष्मी पूर्णिमा।

—⁂—

द्वितीय अध्याय

श्री रामकृष्ण का पथ सहज और स्वाभाविक

(1)

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता। अब संध्या। श्री म कुर्सी पर उत्तरास्य चार तल की छत पर बैठे हैं। सम्मुख भक्तगण बेंचों पर बैठे हैं। डाक्टर बक्शी, विनय, अमृत, बड़े सुधीर, छोटे नलिनी, जगबन्धु प्रभृति। प्रकाश के आते ही श्री म और भक्तगण ध्यान करने लगे।

आज 6 अक्तूबर, 1922 ईस्वी; 19वां आश्विन, 1229 बं० साल। शुक्रवार, कृष्णा प्रतिपदा तिथि। एक घण्टे पश्चात् ध्यान शेष हुआ। अब श्री म बातें कर रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—आज कौन गया था मठ में? जो सर्वदा ईश्वर को लेकर रहते हैं उनकी बातें कहिए।

युवक भक्त—आज मेरी बारी थी। गत रात्रि में बेलेघाटा में था। रात साढ़े तीन बजे उठकर बड़े बाजार आया। जगन्नाथ घाट पर प्रथम स्टीमर से चढ़ कर पांच बजे मठ में गया। काशीपुर से डाक्टर बाबू और विनय बाबू चढ़े। अन्य घाटों से भी कोई-कोई चढ़े थे। आज किसी ने साधुओं को पांव छूकर प्रणाम नहीं किया। जैसे बोल दिया था वैसे ही बड़ों को भूमिष्ठ होकर और नूतन जनों को हाथ जोड़कर सब ने प्रणाम किया। साधु भी आनन्दित हुए। आज भक्तों को प्रणाम करते देख कर सब समझ गए थे कि इस विषय पर यहां विशेष आलोचना हुई है। खाली महापुरुष महाराज को सब ने भूमिष्ठ हो पादस्पर्श करके प्रणाम किया।

यह बात सुनकर श्री म आह्लादित हुए हैं और प्रसन्नचित्त बातें कर रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—पैर पकड़ कर प्रणाम न भी हो, लोक दिखावा क्या प्रयोजन ? हो सकता है लोग कहें खूब भक्त है, लोकमान्य होगा। किन्तु ठाकुर कहा करते, झाड़ू मारता हूं लोकमान्य को। खूब लंकाफुरन* देकर कहा करते यह बात। लोकमान्य का भय करें तो कुछ भी होता नहीं। एक जन ने अल्प तपस्या की थी, उससे तनिक लोकमान्य प्राप्त हुआ। ठाकुर ने कहा, इस बार बस यहां तक। इससे अधिक फिर वह इस जन्म में आगे बढ़ नहीं सका। जभी ठाकुर अति करुण भाव से प्रार्थना किया करते। मैं देह सुख चाहता नहीं मां। मैं लोकमान्य चाहता नहीं मां। अष्टसिद्धि चाहता नहीं मां। शतसिद्धि चाहता नहीं मां। तुम्हारे पादपद्मों में जैसे शुद्धाभक्ति हो—शुद्धा, अचला, अमला अहैतुकी भक्ति। और मां यह करो, तुम्हारी भुवनमोहिनी माया में जैसे मुग्ध न हो जाऊं।

यही है हमारी Universal prayer or Lord's prayer (सार्वजनिक प्रार्थना व ईश स्तुति) ईशु क्राइस्ट भी लिख गए हैं एक प्रार्थना। 'Our Father which art in Heaven hallowed be thy name. Thy kingdom come. Thy will be done in earth, as it is in heaven. Give us this day our daily bread. And forgive us our debts as we forgive our debtors. And lead us not unto temptation, but deliver us from evil. For thine is the kingdom, and the power, and the glory for ever.

भावार्थ—हे परम पिता, आपका नाम जययुक्त हो। आप का धर्मराज्य यहां प्रतिष्ठित हो। स्वर्ग की भांति पृथिवी पर भी आप की ही इच्छा पूर्ण हो। हमें दैनन्दिन भोजन प्रदान करो। कृपा करके ऋणमुक्त करो, जैसे हम उनका करते हैं जो हमारे पास ऋणी हैं। अपनी भुवनमोहिनी माया में हमें मुग्ध न करो। सकल अमंगलों से हमारी रक्षा करो। हे पिता आप सबके अधीश्वर, आप सर्वशक्तिमान्; आप की महिमा सदा विघोषित हो।

*लंकाफुरन—मिर्च का छौंक देकर, तेज करके कहना।

श्री म (भक्तों के प्रति)—लोकमान्य ऐसी वस्तु। उनकी कृपा से ही केवल इसके हाथ से रक्षा हो सकती है। जभी तो विशेष करके उल्लेख किया है और प्रार्थना की है, मां, अपनी भुवनमोहिनी माया में मुग्ध न करो। ठाकुर ने भी किया और क्राइस्ट ने भी किया। सब ने ही किया—अवतारों ने। कैसा भयंकर मोह इस लोकमान्य का।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—दुकान पर चावलों के खूब बड़े-बड़े टैंक (बोरे) रहते हैं। रात्रि को दुकानदार उनके पास छाज में मूड़ि-मुरमुरा रख देता है। चूहे सारी रात उसी को करड़-मरड़ करते रहते हैं। चावलों का संधान भी नहीं पाते, अथ च इतने निकट हैं चावल। इस संसार का भी ठीक ऐसा ही है रूप। भोग की वस्तु—कामिनी कांचन द्वारा भुला रखा है भगवान् ने। मनुष्य इस कामिनी कांचन में डूबे हुए हैं, और नीचे ही नीचे जा रहे हैं। इतने निकट हैं वे हृदय में, उनकी खोज ही नहीं। उनकी कृपा से जो बाहर के विषय भोग छोड़ देते हैं, वे ही केवल परमानन्द उपभोग कर सकते हैं। वे चावलों का सन्धान पाते हैं।

साधुसंग से यह भूल टूट जाती है—नित्य नियमित साधुसंग से। इसके बिना हम संसारियों के लिए और कोई उपाय नहीं है। नाना विषयों में मन बिखरा हुआ है। उसको एक स्थान पर लाना होगा। साधुसंग इसका सहायक है। साधु का एक स्थान है—ईश्वर—जैसे दांत की व्यथा। दिखाई देता है कि नाना काज करता है किन्तु भीतर में हैं भगवान्। सब उनके लिए करता है। यही तो लाभ प्राप्त होता है उनका संग करने से। ध्यान करने के लिए बैठते ही क्या उनका ध्यान हो जाता है? मन को साधुसंग द्वारा तैयार करना चाहिये। नहीं तो सारे जगत् की चिन्ताएं, कामिनी कांचन की चिन्ताएं मन में उठती रहती हैं। साधुसंग से यह चिन्ताएं बलहीन हो जाती हैं। क्रमशः गल जाती हैं, मोम जैसे उत्ताप से गल जाता है। संसार जैसा कठिन है, साधुसंग उतना ही सहज कर देता है पथ। साधुसंग is the panacea, remedy for all diseases—सर्वौषधी।

जनैक भक्त—संसार में सब कुछ ही यदि ईश्वर की इच्छा से होता है, तब जगत् में भला-बुरा ऐसी बात क्यों कही जाती है? ईश्वर तो बुरा कुछ कर नहीं सकते।

श्री म—वे लोग समझ न सकने के कारण ही कहते हैं ऐसी बातें। सब के कर्त्ता वे हैं। वे सदा मंगलमय, सर्वमंगलमय, सब के लिए मंगलमय। वे सब भले के लिए ही करते हैं। देखने में लगता है खराब। मां बेटे को मारती है। बाहर से दिखाई देती है निष्ठुरता। मां के हृदय में जाकर देखो। बेटे के कल्याण के लिए सर्वदा मां को चिन्ता है। झूठ बोलना सीख गया है तभी मारती है। नहीं तो पीछे बेटे का अकल्याण होगा। अग्र पश्चात् देखकर ही ऋषियों ने कही है यह बात—ईश्वर सर्वमंगलमय।

ईश्वर के दो डिपार्टमेंट हैं। एक तो विद्यामाया का एक अविद्या-माया का। अविद्यामाया में जो हैं मुग्ध, वे ही पशु की भाँति जीवन यापन करते हैं। आहार, विहार, मैथुन और भय—पशु के यही चार काज हैं। विद्यामाया जिन का आश्रय है वे उनको पाने की चेष्टा करते हैं। सत्संग वे ही खोजते हैं। सब ही उनकी इच्छा। उनकी इच्छा हो तो इस पशु भाव से देवभाव में ले जा सकते हैं। सब ही वे करते हैं। क्यों करते हैं इस प्रश्न का एक ही उत्तर है, मैं नहीं जानता। उनकी लीला को ऋषिगण कुछ समझ पाए थे। उन्होंने ही यह बातें कही हैं। आनन्द में सृष्टि, आनन्द में पालन, आनन्द में विनाश करते हैं यह जगत्।

लीला, यह बात ही स्पष्ट कहनी हो तो कहना पड़ता है मैं नहीं जानता। वे तो किसी के संग परामर्श करके करते नहीं जो जान सकें, किस लिए करते हैं वे। वे हैं सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, कर्त्ता, प्रभु और फिर स्नेहमयी माता, पिता, बन्धु, सखा। सुख, दुःख, सुविधा, असुविधा सब ही हैं उनका दान।

श्री कृष्ण पाण्डव सखा, किन्तु पाण्डवों को कितनी विपद। सम्पद में विपद में सब समय ही उन्हें पुकारना उचित। उन्हें आश्रय करने से वे सब ठीक कर देते हैं। ठाकुर जुलाहे की गल्प सुनाते। सब बातों में

ो जुलाहा बोलता, राम की इच्छा। कपड़े का दाम पूछा, कहता है, ाम की इच्छा से एक रुपया। यदि संसार की बात विषय की बात ोलो; सब का ही उत्तर देता, किन्तु संग संग कहता, राम की इच्छा। ़क बार डाकुओं के हाथ पड़ गया। पुलिस ने पकड़ कर जेल में डाल ़या, फिर कोर्ट में हाजिर किया। हाकिम ने पूछा, क्या था बोलो। ़ुलाहा कहने लगा; हजूर, मैं चण्डीमण्डप में बैठा तम्बाकू पी रहा था; ाम की इच्छा से। राम की इच्छा से डाकू डाके का सारा माल लिए ाग रहे थे। राम की इच्छा से मेरे सिर एक बोझा धर दिया गया। ़ुलिस वाले आ गये राम इच्छा से। राम की इच्छा से डाकू भाग गये। ाम की इच्छा से पुलिस ने डाकू जानकर मुझे पकड़ कर जेल में डाल दिया। अब हजूर के पास खड़ा हूँ राम इच्छा से। इस पर हाकिम ने ़ुक्त कर दिया। ईश्वर में अटूट विश्वास और सत्यवादी होने के कारण ाब उस पर श्रद्धा करते थे।

श्री म (सब के प्रति)—गृहियों को उचित है, हजार काज के भीतर भी समय निकाल लेना, उन्हें पुकारने का। अन्य सब वे ठीक कर देंगे। ठाकुर बोलते, बारह आना मन ईश्वर में और चार आना मन संसार में रखकर काज करना चाहिये। इस चार आना मन के काज से गृहस्थ में उथल-पुथल हो जाती है। स्थिर चित्त से चार आना मन का काज क्या कम बात। और कहा करते, बाप, मां, स्त्री, पुत्र सब को ही बाहर से दिखाओगे कि वे कितने अपने हैं, किन्तु भीतर में जानोगे कि तुम भी उनके कोई नहीं हो, वे भी तुम्हारे कोई नहीं हैं। ईश्वर ही हैं सब के अपने।

राधाकान्त के गहने चोरी हो गए एक बार दक्षिणेश्वर मन्दिर में। हलधारी थे पुजारी, सम्पर्क में ठाकुर के बड़े भाई। पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। ठाकुर ने तब प्रार्थना की मां के पास, तुम्हारे दुर्गा नाम को कलंक होगा मां सन्तान पर विपद पड़ने से। मां, तुम सब ठीक कर दो।

उन्हें पाने के लिए कोई भी वस्तु आवश्यक नहीं होती। निर्जने गोपने उन्हें पुकारना चाहिये रो-रो कर—दर्शन दो, दर्शन दो मां,

कहकर। ठाकुर कहा करते थे; एक जन ने पुरश्चरण करने के लिए एक आठचाला* घर बनाया। सुनकर ठाकुर ने उसका तिरस्कार किया। कहने लगे, छि: कैसी हीन बुद्धि है तुम्हारी। भगवान् को पुकारोगे तो फिर साइनबोर्ड लगाकर? वे तो हैं अन्तर का धन। अति गोपने उन्हें पुकारना चाहिये।

और एक जन भक्त कुछ चने लिए जा रहा था। एक सौ आठ जप करेगा और एक दाना अलग रख देगा, ठाकुर ने सुनकर कहा, उससे अहंकार होगा कि मैंने पचास हजार जप किया है, इतना पुरश्चरण किया है। वे हैं गोपन-धन। छोले मुझे दे दो। बल्कि भिगो कर मैं खा लूंगा। (सब का हास्य)।

श्री म (जनैक भक्त के प्रति)—रात को ध्यान करो न—सारी रात तो पड़ी है। दिन में होने से लोग जान जायेंगे। वे हैं अन्तर के धन, गोपन में पुकारने से चैतन्य होता है। संसारियों को क्या कभी संन्यास करना उचित। किसी निर्जन स्थान पर जाकर दो-एक मास रहना उचित।

और हास्य परिहास के समय साधुओं के सामने रहना उचित नहीं। उनके कष्टों की ओर तो देख ही नहीं सकते, परिहास देखते हैं। हो सकता है कि मन में आ जाए कि ये शायद इसी प्रकार ही समय काटते हैं। उन्हें देखना चाहिये ध्यान के समय प्रभात में और सन्ध्या के पश्चात्। कार्यगति से उनका मन नीचे आ भी जाए तो भी वे झट से उसे उठाकर ऊपर ले जा सकते हैं। किन्तु संसारियों द्वारा यह होना बड़ा ही कठिन। उनका मन रहता है शत धाराओं में विक्षिप्त।

ठाकुर का मन सर्वदा समाधिस्थ रहता था। एक बार उनके सामने एक जन ने एक छाता बन्द किया, झट समाधिस्थ हो गए। उद्दीपन हुआ, बिखरा हुआ मन सिमट आया। योग का उद्दीपन हुआ। बाबा, यह मानो सूखी दियासिलाई। अल्प रगड़ी, झट जल उठी। कैसा

*आचचाला—आठ छप्पर जोड़कर छत वाला घर।

अद्भुत concentration (मनोयोग)। एक बार भाव में थे। तब हाथ जल गया। जब बाह्यज्ञान लौटा तो कहने लगे, मां मुझे अच्छा कर दो। मानो चंचल बालक। समाधि में सब स्थिर और फिर अब यही चांचल्य। दो contradictory points (परस्पर विरोधी भावों) की meeting place (मिलन भूमि) उनका जीवन—समाधि और संसार।

श्री म (डाक्टर के प्रति)—कोई-कोई कहता है कि मेरा राजा जनक जैसा मत है। किन्तु कहने से ही तो फिर वैसा नहीं हो जाता। पहले जनक की तरह तपस्या करो, ज्ञान भक्ति लाभ करो, तब संसार में रहो। तपस्या नहीं, ज्ञानभक्ति विवेक-वैराग्य नहीं, तब कैसे जनक हुआ ? (सहास्य) हां, जनक हो जाता है, father of children (सन्तानों का जनक)। और कुकर्मों का जनक। (सब का उच्च हास्य)।

एक जन ने मछली और पान छोड़ दिया था। ठाकुर सुनकर कहने लगे, अरे, उसमें क्या है ? कामिनीकांचन का त्याग ही त्याग है। मछली-पान केवल छोड़ने से क्या होगा। तत्पश्चात् बोले, शूकरमांस खाकर भी यदि मन भगवान् में रहे वह धन्य है। हविष्य कर के भी जो कामिनीकांचन चिन्ता करता है वह धिक्।

ठाकुर किसी के ऊपर जोर नहीं देते थे—वह करना होगा, यह करना होगा, कह कर। कहा करते, ईश्वर की इच्छा से जो जहां भी हो, जो कुछ भी कर रहा हो, वही करता रहे। किन्तु मन मन में ईश्वर को पुकारे। एक गृही भक्त से कहा था, निर्जन में अकेले यह गाना गाओगे। वह रोज ही वही गाया करता। सुनकर ठाकुर बोले, नहीं नहीं, ऐसे नहीं। कभी कभी गाओगे। नहीं तो वितृष्णा आ जाएगी—एकस्वरता है कि न। कोई भी जोर नहीं किसी के ऊपर। सहज स्वाभाविक पथ पर ले जाते हैं सब को।

श्री म (भक्तों के प्रति)—प्रवर्तकों को खूब जप ध्यान करना चाहिये। छोटे पेड़ की बाड़ लगाकर रक्षा करनी चाहिये। वैसे ही कच्चे मन को सर्वदा ईश्वरीय चिन्ता द्वारा घेरे रखना चाहिये। तना मोटा हो जाए तो हाथी भी बांध दो, टूटेगा नहीं। सोलह आना मन हो तभी श्यामा मां को पाओगे, ईश्वरलाभ होगा। एक पैसा भी कम होगा तो टिकट नहीं मिलेगा।

और साधुसंग करना चाहिये। समुद्र के नीचे जाने से देखा जाता है कि कितना कुछ है—मणिमुक्ता। वैसे ही साधुसंग। यह एक नूतन जगत् में ले जाता है। उनका कितना ऐश्वर्य, यह सारा दीख पड़ता है। साधुओं का कार्यकलाप watch (पर्यवेक्षण) करना चाहिये। तब ही उनकी तरह करने की निजी इच्छा होगी—What man has done man can do (जो एक ने किया है दूसरा भी कर सकता है।)

साधु कौन ?—जो सर्वस्व छोड़कर भगवान् को पाने के लिए खड़ा है, व्याकुल होकर सकल विषयवासना का न्यास—माने त्याग न हो तो ठीक-ठीक संन्यास नहीं होता। वह तो होता है केवल उनका दर्शन होने पर। अन्तिम बात तो वही है। जब तक वह न हो तब तक उनके दर्शनों के लिए व्याकुल होना ही संन्यास है। यह हो तो बहुत अग्रसर हो जाता है। संसार की स्नेह ममता घट गई। एक मन से उनको पुकारने का सुयोग मिला। साधुओं के भीतर भी त्याग है और बाहर भी।

गृहियों का वैसा नहीं। उनका मन में त्याग, ठाकुर कहा करते। तो भी great men (महापुरुषगण) सब कर सकते हैं। ठाकुर ही हैं स्वयं आदर्श गृही और फिर आदर्श संन्यासी भी। मां, भाई, स्त्री, कुटुम्ब, इनके संग रहा करते, किन्तु कोई भी आसक्ति नहीं। सब करके देखा है किन्तु मन एक ही भाव में है। सर्वदा बोलते मां, मां। ईश्वर के बिना कुछ भी नहीं जानते।

श्री म (युवक भक्त के प्रति)—कलकत्ता के लोग बड़े आन्दोलनप्रिय हैं। अनेक ही लेक्चर देते हैं। भगवान् का साक्षात् न हो, उनका आदेश लेकर बातें न करें तो कौन सुनता है उनकी बातें? केशवसेन और शशधर पण्डित को ठाकुर ने कहा था, पहले उनका आदेश पाओ तत्पश्चात् वक्तृता दो। नहीं तो तुम्हारी बात कोई नहीं सुनेगा। आन्दोलन की तरह दो दिन सुनेगा फिर सब भूल जाएगा। काम में कुछ भी नहीं आएगा। क्राइस्ट के सम्बन्ध में कहा था डाक्टरों ने अर्थात् पण्डितों ने, 'For he taught them one having authority'—उनकी बातों का ऐसा जोर है कि मानो वे निज ही मालिक हैं। इधर तीस वर्ष काटे नीरव में, गोपन में, सूत्रधर (बढ़ई) का काज करते हुए। फिर जब आत्म-प्रकाश किया तो जगत् स्तम्भित हो गया, उनकी बातें सुनकर।

ठाकुर कहते थे, हलधर पुकुर के पार लोग शौच जाते। मना करने पर भी कोई नहीं सुनता था। कितना ही शोरगुल हुआ, किसी ने नहीं सुना। अन्त में कम्पनी (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड) ने नोटिस लगा दिया, यहां शौच न करें। बस झट सब बन्द हो गया। कुछ बोलने से पहले शक्ति प्राप्त करनी चाहिये, तब फिर बोलना।

उनके जानने के लिए metaphysical questions—आध्यात्मिक तत्त्व विचार का कोई प्रयोजन नहीं है। उनकी कृपा ही सार। उनकी कृपा हो जाए तो सब तत्त्व आप ही समझ में आ जाते हैं। नहीं तो संशय जाता ही नहीं। एक जाता है और एक आता है। संशय है मानो सहस्रफणा सांप। यही तो है मन का धर्म। (सहास्य) रसिकता करके कभी कभी ठाकुर कहते, मन कैसा है, जानते हो। जैसे 'ब' में आकार और 'ल'। खींचो तो सीधा हुआ, छोड़ दो वैसा ही बांका (सब का हास्य)। छिद्यन्ते सर्वसंशयाः—उनके दर्शन हो जाने से सब संशय चले जाते हैं। दर्शन होते हैं उनकी कृपा से। कृपा होती है व्याकुल होने से; और सत्संग से व्याकुलता होती है। तभी साधुसंग मूल। इसके बिना उपाय नहीं।

एक जन भक्त—ठाकुर मां के संग बातें किया करते थे कैसे ?

श्री म—यह बहुत दूर की बातें हैं। पहले पथ पर तो चढ़ो। रास्ता पकड़ कर चलते रहो। हाट में घुसने पर देख पाओगे आलू परबल कितना कुछ। नहीं तो मानो 'हो हो' शब्द ही दूर से सुनना।

(सहास्य) कोई कोई कहते हैं, ईश्वर के सम्बन्ध में कुछ नूतन बातें कहो original research, यह तो सब पुराना हो गया है। ऐसे लोग केवल कथा सुनना चाहते हैं। और वाह वाह करते हैं, शाबाश वक्ता कह कर। काम कुछ भी नहीं करते। ईश्वर चिर-नूतन। उनका दर्शन करो पहले। तब समझोगे वे कैसे हैं। उनकी कथा कभी भी पुरानी नहीं होती। एक ही कथा किन्तु चिरनूतन। साधुसंग करो, पथ पर चढ़ो पहले। ऋषियों के पास कोई कुछ भी जिज्ञासा करने जाता था तो कहते, पहले तपस्या करके आओ, फिर जिज्ञासा करो। नहीं तो क्या बोलना था, बोल दिया क्या; इसका भी निश्चय नहीं। एक छटांक बुद्धि से कैसे अनन्त को बूझे ? एक सेर लोटे में दस सेर दूध कभी नहीं समाता।

श्री म (सब के प्रति)—आज भी दक्षिणेश्वर में ठाकुर को देखा जा सकता है। यदि कोई पुस्तक पढ़ कर, वे कब कहां बैठे थे, कहां क्या किया था, यह सब जान कर निज को उसी स्थान पर, उसी समय, उसी संग में मैं हूं, ऐसा सोचे, और कल्पना की छवि अंकित करे तो आज भी उनका संग हो जाता है। उनको देखा जा सकता है। आज जो कल्पना है वही कल वास्तव है। कल्पना घनीभूत होने से दर्शन होता है और फिर योग शास्त्र में तो सब वर्तमान। अतीत भविष्यत् नहीं।

अनेक डिपार्टमेंट हैं उनके—धर्म, राजनीति, समाजनीति कितने ही। धर्मपथ में हैं केवल भगवान् की ही कथा और उनके प्राप्त करने की कथा। अन्य कुछ भी नहीं यहां। ठाकुर कहते थे इस हाट पर बिके न सूत, बिके केवल नन्दरानी का सुत। 'नन्दरानी का सुत' माने श्री कृष्ण—ईश्वर। ईश्वर को जो चाहते हैं वे ईश्वरीय विषय छोड़ अन्य

विषय नहीं लेते। कैसे भगवान् में भक्ति, विश्वास हो, प्रेम हो; ज्ञान-वैराग्य हो, कैसे उनका दर्शन हो—सर्वदा इसके लिए व्याकुल रहते हैं। सर्वदा वही बात वही चेष्टा। अन्य कथा लेते नहीं। अन्य कथा बोलते भी नहीं। 'अन्या वाचः विमुञ्चथ।'

ईश्वर के लिए चेष्टा को छोड़कर और जितनी चेष्टा है वह सब कामिनीकांचन की चेष्टा है। बड़ा दुर्गम पथ—क्षुरस्य धारा। सा चातुरी चातुरी। अन्य सब बन्धन का कारण।

धर्मपथ भी कितना भिन्न। एक एक जन का एक एक मत। व्याकुल होने से सब पथों से ही उनको पाया जाता है, ठाकुर कहते थे।

(2)

मॉर्टन स्कूल की चारतल की छत पर श्री म कुर्सी पर बैठे हैं उत्तरास्य। आज रविवार, 8 अक्तूबर, 1922 ई०; 21वां आश्विन 1329 बं० साल; कृष्णा तृतीया। क्रमशः अनेक भक्त आए हैं। आज छुट्टी, तभी अनेक पहले ही आ गये हैं। डाक्टर, विनय, अमृत, छोटे ललित बड़े अमूल्य, बड़े सुधीर, छोटे नलिनी, केष्टो, शुकलाल, मनोरंजन, जितेन, जगबन्धु, प्रभृति—सब बैञ्चों पर आमने सामने पूर्व-पश्चिम दिशा में बैठे हैं। इस समय अपराह्न पांच।

कुछ क्षण पूर्व श्री म के सम्मुख अन्तेवासी बैठे हुए थे, और भी थे कई एक जन भक्त। अन्तेवासी के हाथ में था टालस्टाय का एक जीवन चरित। 'कौन सी पुस्तक' यह कह कर श्री म पुस्तक हाथ में लेकर विषय सूची पढ़ने लगे। गृहत्याग और मृत्यु का अध्याय निकाल कर अन्तेवासी के हाथ में देकर पढ़ने के लिए बोले। श्री म अति निविष्ट भाव से सुन रहे हैं। उसके शेष होने पर Impression at Yasnaya Poliana (यासनाया पोलीयाना की कथा) यह अध्याय भी पढ़ने के लिए कहा। यह है उनका वासगृह। गृह के नाम का उच्चारण ठीक न होता हुआ देखकर श्री म ने बोल दिया 'यासनाया पोलियाना'। पाठ शेष हुआ।

श्री म (भक्तों के प्रति)—घर में शान्ति नहीं थी। स्त्री थी कलहप्रिया। कन्याएं तीन, पुत्र था नहीं। बड़े घर का लड़का। सैनिक हुआ। तब से ही परिवर्तन आरम्भ हुआ। इससे पहले जैसे बड़े घर के लड़कों के साथ होता है, विशेष कुछ भी काज नहीं सीखा था। परिवर्तन दिखाई दिया। दरिद्रों के लिए उनका हृदय रो पड़ा। इसके उपरान्त कितनी पुस्तकें लिखीं। विद्रोह आदि हुआ। जमीन पर आप ही काम शुरू कर दिया। अति सरल जीवन था। ऋषिवत् था उनका जीवन। स्त्री का कलह सहन न कर सकने पर एक दिन गृहत्याग किया। किसी से कुछ नहीं कहा। केवल एक ही शिष्य को लेकर निकल गये। शिष्य था डाक्टर। टॉलस्टाय का वृद्ध शरीर, सह सका नहीं। रास्ते में अस्वस्थ होकर रेलवे स्टेशन पर पड़ गये। वहां पर ही देह गई।

बाहर हिम पड़ रहा है। सब आकर सीढ़ी के कमरे में बैठ गये। सन्ध्या का ईश्वर चिन्तन शेष हो जाने पर श्री म कठोपनिषद् पढ़ने के लिए बोले। मठ के एक ब्रह्मचारी आये हैं। एक युवक पढ़ रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—प्रश्न हुआ है 'आत्मा क्या?' यम कितने प्रकार से समझा रहे हैं। विषय है अति दुरूह। कभी positive (अस्तिवाचक) कभी negative (नास्तिवाचक) युक्तियों से समझा रहे हैं। एक बार कहते हैं 'एतद् वै तत्', कभी कहते हैं 'न जायते म्रियते' और फिर कहते हैं, 'अस्ति इति उपलब्धव्य:'। 'एतद् वै तत्'—सब ही आत्मा। किसी किसी भाष्यकार ने 'तत्' को आत्मा अर्थ में लिखा है। ठाकुर ने इस का और भी सहज अर्थ किया है। वे कहते हैं, यह 'तत्' ही ईश्वर—मेरी मां। वेद में जिसको ब्रह्म बोला है, आत्मा बोला है, मैं उसको ही मां बोलता हूं। जब प्रलय करती है तब बोलता हूं 'मां' 'आद्याशक्ति', 'काली'। स्वरूप में रहते समय बोलता हूं ब्रह्म। जैसे सांप कुण्डली मारे भी रहता है और फिर हिलता डुलता और चलता है। शक्ति ब्रह्म अभेद। आत्मा-ब्रह्म, ईश्वर, काली सब ही एक।

श्री म (शुकलाल के प्रति)—ईश्वर इच्छा से ही सब होता है।

अज्ञानता के कारण हम कहते रहते हैं, 'मैं करता हूं'। ठाकुर कहते हैं, एक जन एक बड़ा वृक्ष काट रहा है। काटते काटते सामान्य भाग शेष रह गया। वृक्ष तब हुड़ मुड़ करके गिर गया। वृक्ष मन में सोचता है मैं गिर गया हूं, किन्तु काटा अन्य व्यक्ति ने था तभी तो गिरा। हमारी अवस्था भी वैसी ही है। वे हो सब करते हैं, हम बोलते हैं 'मैं करता हूं।' मूल में वे ही हैं, उनकी शक्ति। (अन्यमनस्क भाव से) यही जो मरुभूमि में (मरूद्यान) है इसे क्या फिर मनुष्य ने बनाया है? उन्होंने ही बनाया है। और फिर शरीर के भीतर रहकर मन बुद्धि को वे ही चला रहे हैं। मरुभूमि में जैसे मरूद्यान है, वैसे ही संसार में मठ, आश्रम, साधुसंग है। त्रिताप-दग्ध जीव जाकर शान्तिलाभ करता है। यही जो (बेलुड़ मठ) हुआ है यह भी उनकी ही इच्छा से हुआ है। मनुष्य की अज्ञानता की बातें सोच कर ठाकुर कभी कभी आदेश करते, कहते, सब ही कहते हैं, रानी रासमणि की कालीबाड़ी। कोई नहीं कहता ईश्वर की कालीबाड़ी उन्होंने बनाई है।

श्री म (जितेन के प्रति)—श्वसुर घर बनाना होगा, सब को ही। बाप के घर कन्या का सदा रहना चलता नहीं। एक जन्म में हो या दो जन्म में हो या बहुजन्मों में ही हो, श्वसुर घर बनाना ही होगा। सकल जीव ही सर्वस्व त्याग करके उनके लिए व्याकुल होंगे, एक दिन। सत्त्व रज तम इन्हीं गुणों के भेद से दो दिन आगे पीछे, किन्तु व्याकुल होना होगा ईश्वर के लिए। यही है evolution (क्रमविकास)। प्रकृति के कर्म समाप्त होते ही उनमें मन जाता है। दर्शन-जन्य व्याकुल होता है। इसका ही नाम है summum bonum परम पुरुषार्थ—highest good. यही general rule (साधारण नियम)। इसका व्यतिक्रम भी हो सकता है—exception, उनकी कृपा से। ठाकुर ने कहा था; कंसवध में मथुरा के एक जुलाहे ने श्री कृष्ण की सहायता की थी। भगवान् ने तुष्ट होकर उसको बैकुण्ठ में ले जाने के लिए एक रथ भेज दिया। उसकी मां तो हो गई रथ देखकर आकुल। कहने लगी, 'मेरे बेटे को बैकुण्ठ दरकार नहीं। कपड़ा कौन बुनेगा?' जुलाहे के बेटे के स्वर्ग चले जाने पर कपड़ा बुनना बन्द हो जाएगा। (सब का हास्य)। यही है प्रकृति का खेल। जब तक इसके भीतर है तब तक कर्म। इसका

व्यतिक्रम केवल उनकी कृपा से हो सकता है। जभी क्राइस्ट ने कहा, 'भगवान् इच्छा करें तो इन्हीं ईंट पत्थरों से बड़े बड़े भक्तों की सृष्टि कर सकते हैं' (out of these stones, He can raise children unto Abraham) वे गूंगे को वक्ता बनाते हैं, और पंगु से गिरि लंघाते हैं।

"पाण्डवों का ज्योंहि कर्म शेष हुआ त्योंहि महाप्रस्थान। जिस राज्य के लिए इतना युद्ध विग्रह, सब पड़ा रह गया। मुड़ कर देखा तक नहीं, उसका क्या हुआ। कर्मफल को जोर करके झाड़ फेंकने का अधिकार किसी का भी नहीं है। अर्जुन तो इतने बड़े उत्तम अधिकारी, उनको भी नहीं। उनके द्वारा युद्ध करवा लिया तभी शान्ति। किन्तु ईश्वर इच्छा करें तो वे सब कर सकते हैं।"

अमृत—कर्म का कब त्याग हुआ इसका चिह्न क्या है?

श्री म—व्याकुलता। ईश्वर के लिए व्याकुल होने पर समझना होगा कर्म त्याग हुआ है। व्याकुलता होती है सत्संग से। जभी सत्संग बड़ा ही दरकार है। भगवान् युग युग में अवतार होकर आते हैं इसका कारण भी यही है। वे व्याकुलता बढ़ाने के लिए आते हैं। उनके आने पर व्याकुलता खूब बढ़ जाती है और फिर अन्तर्धान होने के उपरान्त धीरे धीरे कम हो जाती है। अवतार जब आते हैं तब Golden Jubilee, एक दम स्वर्ण सुयोग। तब परीक्षक खूब liberal (उदार) और फिर grace marks (कृपा नम्बर) मिलते हैं। न लिखने पर भी पास। हजार हजार बरसों का भी संचित अन्धकार एक मुहूर्त में नष्ट हो जाता है, उनकी कृपा से। व्याकुलता न आए तो बड़ी देर हो जाती है—जैसे अठारह मास का एक वर्ष। कितने लोग कितनी माला जप करते हैं, तिलक लगाते हैं, नित्य गंगा स्नान करते हैं, किन्तु तीस वर्षों में भी इनका क्यों नहीं होता। इसके उत्तर में ठाकुर कहते, 'इनमें व्याकुलता नहीं है। नियमित काज ही करते जा रहे हैं। व्याकुलता चाहिये।'

"ठाकुर कहा करते, यहां हमारा घर नहीं है। यहां रहना चाहिये दासीवत्। बड़े लोगों के घर को दासी कहती है, 'यह हमारी कोठी'; 'वह मेरा कमरा', किन्तु अन्तर में जानती है, मैं दासी हूं यह कोठी मेरी नहीं। मेरा घर उसी ग्राम में है। वहां मेरे बाल बच्चे रहते हैं।

जहां घर तहां मन। अघरसेन को ठाकुर ने कहा था झटपट पूरा कर लो। मनुष्य का जीवन जैसे ग्राम से शहर में आना कर्म करने के लिए। कर्म होते ही लौट जाता है अपने घर। अघरसेन डिप्टी मैजिस्ट्रेट थे। आयस थी तीस। आफिस के उपरान्त रोज ढाई रुपये खर्च करके गाड़ी में दक्षिणेश्वर जाया करते। बेनेटोला में थी बाड़ी। जाते ही सो जाते। खूब काम था। बड़ा फाटक बन्द होता रात के दस बजे। ठाकुर तब जगा देते उन्हें। ऐसा छह मास किया। फिर देह गई।"

डाक्टर—अभी तक भी जिनका श्वसुर घर नहीं हुआ है उन्हें श्वसुर घर के लिए क्या करना उचित है ?

श्री म—साधुसंग। यह करना चाहिये नित्य नियमित रूप से। यही करते करते श्वसुर घर की नींव पड़ जाती है। एक बार उस घर का आस्वाद पा लेने पर बाप मां के शत अनुरोध करने पर भी कन्या उस घर को फिर छोड़ना नहीं चाहती। वह घर फिर छोड़ कर बाप के घर आना नहीं चाहती। साधुसंग करते करते एक नशा जन्म लेता है। यह बड़ा नशा है जैसे मद का नशा। (सहास्य) ठाकुर एक गल्प सुनाते। एक लड़का बहुत मद पीता था। बाप ने मद छोड़ने के लिए उपदेश दिया। लड़के ने कहा, पिता जी, पहले तुम एक गिलास पीकर देखो, फिर मैं छोड़ दूंगा। बाप मद का स्वाद पाकर फिर छोड़ ही नहीं सका, लड़के ने किन्तु छोड़ दिया। साधुसंग का नशा जब जन्मता है, तब अन्य कुछ अच्छा नहीं लगता। साधुसंग से चैतन्य होता है, विद्या-रूपी सन्तान का जन्म होता है। इसकी सहायता से क्या प्रेय और क्या श्रेय है, इसका विवेक जन्मता है। प्रेय माने विषय भोग, श्रेय माने ईश्वर। श्रेय लाभ की इच्छा जब अति प्रबल हो जाती है, तब नूतन कर्मों में और जड़ित नहीं होता।

"नूतन कर्म माने—विवाह करना, सन्तान को जन्म देना, उनकी शिक्षा विवाह आदि करना, उनके लिए अर्थोपार्जनजन्य दूसरों का दासत्व करना—यही सब। जिसने विवाह नहीं किया है उसके लिए ये सब नूतन कर्म हैं और जिस ने विवाह कर लिया है उसके लिए कर्म संक्षिप्त करना। जिस कर्म के न करने से चलता ही न हो वही करना, और बाकी समय ईश्वर की चिन्ता करना, सत्संग करना। इनकी ही है थोड़ी सी

मुश्किल। ठाकुर इनके लिए ही अधिक चिन्ता किया करते थे। कैसे कर्म कम हो, अधिक अवसर मिले, यही परामर्श देते। जभी साधुसंग चाहिये। साधुसंग करने से अपने आप भीतर से बुद्धि आती है—कैसे कर्म कम हो, और ईश्वर चिन्तन अधिक हो। साधुसंग के सम्बन्ध में निबन्ध रचना, वक्तृता—ये सब तो खूब सहज हैं, किन्तु हाथ में लाना कठिन है। खूब रोख करके करना चाहिये। ठाकुर कहते थे, 'बाजे के बोल मुखस्थ करने से क्या होता है, हाथ में लाना चाहिये।' (डाक्टर के प्रति)—किन्तु श्वसुर घर सब को ही बनाना होगा। ठाकुर कहा करते, निमन्त्रण वाले घर में सब ही खायेंगे। चाहे पहिले, चाहे पीछे। प्रथम चाहे ब्राह्मण खा लें, फिर गरीब दुखी। सब ही खाएंगे। अभुक्त कोई नहीं रहेगा। उसी प्रकार ईश्वर के पास जाने का सब का ही समान अधिकार है—equal and birth right.

"साधुसंग से व्याकुलता बढ़ती है। तब ही त्याग होता है। कर्म त्याग होने पर क्या होता है, उसके दृष्टान्त हैं महादेव। श्मशाने मशाने फिरे घरेर भावना भावे ना—He lives in eternity, not in time. जभी तो कहा करते थे प्रातः शिव गुरु का नाम लेना चाहिये। ठाकुर का अपना जीवन भी वैसा। 'मां मां' कह कर पागल, समाधिस्थ। एक आध बार नहीं, प्रायः सारा दिन। दीनुबोस के घर पर पूछा, "दिन के कितने बजे हैं?" तब बहुत रात हो गई थी। बाहर का ज्ञान नहीं है, अभी तक मन चढ़ा ही हुआ है। इस समय कर्म त्याग का दृष्टान्त हैं ठाकुर।

"और प्रार्थना करनी चाहिये, daily (नित्य)। वह भी सिखा दी है:

मां मैं यन्त्र तुम यन्त्री।
मैं घर तुम घरणी।
मैं रथ तुम रथी।
जैसे चलाती हो वैसे ही चलता हूं।
जैसे कराती हो वैसे ही करता हूं।
जैसे बुलवाती हो वैसे ही बोलता हूं।
मां शरणागत, शरणागत।"

(3)

आज 7 अक्तूबर, अपराह्ण पांच। काशी के स्वामी कैवल्यानन्द और जामताड़ा के स्वामी रामेश्वरानन्द आए हैं, श्री विजया के उपलक्ष्य में श्री म को प्रणाम करने। उनके संग दो जन ब्रह्मचारी हैं। सभी अब बेलुड़ मठ से आए हैं।

श्री म चारतल की सीढ़ी के कमरे में बैठे हैं, सीढ़ी के समीप। कई जन भक्त भी हैं। साधुओं को सीढ़ी पर चढ़ते देख कर श्री म खड़े हो गए और कहने लगे, 'नमस्कार, नमस्कार। आइए, पधारिये'। श्री म किसी को भी पैर छूने नहीं देते। जब साधु पैर छूने लगे तो उन्होंने उन्हें हाथ पकड़ कर आलिंगन कर लिया। साधु लोग मिष्टी-मुख कर रहे हैं। काशी, जामताड़ा और बेलुड़ मठ के नाना संवाद ले रहे हैं। स्वामी रामेश्वरानन्द कह रहे हैं, "मास्टर महाशय, जामताड़ा में ठाकुर का मठ बना हुआ है। खूब सुन्दर खुली जगह है। आप चलियें, वहां रहियेगा, कोई भी असुविधा नहीं होगी, हम सब हैं। और आप के जाने से वह समस्त स्थान जाग्रत हो आएगा। वहां पर कई भक्त भी हैं। सब को खूब आनन्द आएगा। इस समय वहां की climate (जलवायु) अतिसुन्दर है। कहिये कब आयेंगे ?" श्री म ने उत्तर दिया, वृद्धों का कुछ भी स्थिर नहीं। इच्छा तो है, वे ले जाएं तो हो। साधुओं ने विदा ली। श्री म के आदेश से एक भक्त उन्हें फाटक तक पहुंचा आए।

अब मठ का दैनन्दिन विवरण ले रहे हैं। आज थी बड़े नलिनी और बड़े सुधीर की पारी। बड़े सुधीर मॉर्टन स्कूल के पुरातन छात्र हैं। नित्य मठ में जाने वालों की बातों से दो फल होते हैं। जो मठ में नहीं जाते उनको मठ में जाने की इच्छा होती है। और जो जाते हैं उनमें भी साधुसंग के लिए व्याकुलता की वृद्धि होती है।

श्री म ने बड़े नलिनी से पूछा, "साधुओं के संग कुछ बातचीत हुई ?" बड़े नलिनी बोले, "मां की बातें हुई थीं।" "क्या बातें ? बतलाइये शीघ्र—स्थितप्रज्ञस्य का भाषा। जो real life lead (आदर्श जीवन यापन) कर रहे हैं, वे क्या कहते हैं सुनना चाहिये"; श्री म बोले।

नलिनी कहते हैं "एक बार कालीघाट के एक भक्त ने मां के पास

से दीक्षा मांगी। वे बोले, हमारे एक गुरुदेव हैं, किन्तु साधन भजन के सम्बन्ध में हमें उन्होंने ऐसा कुछ नहीं बतलाया। माँ ने कहा, "जो सुना है उसे ही काम में लगाओ उनकी बात पर विश्वास करके। इससे ही होगा।" और कहा, "देखो एक वृक्ष पर बैठे हुए बहुत से पक्षी नाना प्रकार से पुकारते हैं। वैसे ही सब भक्तजन एकजन को ही पुकार रहे हैं, नाना प्रकार से नाना भाषाओं से। तुम गुरुदेव की बातों पर विश्वास करो।"

एक बार एक स्त्री भक्त ने दीक्षा मांगी। दीक्षा की चीजों के लिए उसने गर्व करके दस का नोट निकाल कर दिया। मां ने उसका यह व्यवहार पसन्द नहीं किया। रोने धोने पर निश्चय हुआ कि महाष्टमी के दिन दीक्षा होगी। उस दिन उसका अस्पर्शदोष हो जाने से फिर दीक्षा नहीं हुई। अन्त में मां की इच्छा ही पूरी हुई, उसकी फिर दीक्षा ही नहीं हुई।

और एक बार एक स्त्री भक्त ढेर सारे शेफाली* के फूल लेकर मां के पास आई। उसकी इच्छा थी कि उन फूलों से मां की पूजा करे। किन्तु आते ही मां फूलों की टोकरी मांग कर ले गईं, और फूलों से ठाकुर को सजाने लगीं। सजाना शेष हुआ। कुछ फूल टोकरी में पड़े रहे। मां ने पुकार कर कहा, "क्यों री, देगी नहीं कुछ फूल" "यह लो।" भक्त ने मां के पैरों पर वे फूल देकर कृतार्थ बोध किया।

नीचे आहार का स्थान बनाया गया। मां को बुलाने एक स्त्री भक्त गई। कुछ अन्तराल से भक्त ने सुना मां जैसे किसी से कुछ कह रही हैं, "चलो जी, खाने के लिए चलो।" उस घर में अन्य कोई जन नहीं था। थी केवल ठाकुर की छवि और बालगोपाल की मूर्ति। भक्त ने अप्रसन्न होकर मां से पूछा, क्यों जी, किससे क्या कह रही हो, मां? मां ने उत्तर दिया, "कुछ नहीं, खाना खाने चलने को कह रही हूं, चलो।" भक्त को लगा जैसे मां के पीछे और भी दो जन आ रहे हैं।

एक बार बलराम बाबू की बाड़ी में दक्षयज्ञ नाटक हुआ। अभिनय प्रसंग में सती से कहा, चलो मां अपने पित्रालय में चलो, वहां यज्ञ हो रहा है तुम्हें ले चलूं। मां यह बात सुन कर आविष्ट होकर

---

*शेफाली—हारसिंगार, पारिजात।

बोल उठीं, ओ मा ! मैं क्यों नहीं जाऊंगी ? मैं चलती हूं। गौरी मां ने सुन लिया, पूछने लगी 'क्या बोल रही हो, मां ? मां ने उत्तर दिया, कुछ नहीं, सुन भी लिया हो तो बोलना मत।

और एक दिन स्पष्ट वाणी में एक भक्त को कहा था, 'मैं और ठाकुर अभेद।'

श्री श्री मां की ये सब बातें श्री म ने गल्प-श्रवण-निरत एक बालक की न्याईं अति निविष्ट मन से सुनीं। कथा शेष हो गई तो भी किसी के मुख से एक बात नहीं निकली। सब के हृदय एक प्रशान्त गंभीर भाव में हैं पूर्ण।

क्षण काल परे जामताड़ा जाने की बात हो रही है।

बड़े जितेन (श्री म के प्रति)—जामताड़ा जाना हुआ तो घर का कोई संग में जाएगा क्या ?

श्री म—भक्त के समान आत्मीय और कोई नहीं जगत् में। जभी तो क्राइस्ट भक्तों को दिखाकर बोले थे, "ये ही मेरे बाप-मां, ये ही मेरे भाई-बन्धु सब हैं। ज्ञाति, blood relations, वे तो माया का बन्धन हैं। आत्मीय कुटुम्ब यदि भक्त हों तो ही अच्छा, नचेत् महाबन्धन। ईश्वर को भुला देते हैं। (अन्तेवासी के प्रति) अल्प उपनिषद् पाठ हो जाये।

श्री म ने कठोपनिषद् की प्रथम वल्ली निकाल कर दी। नचिकेता की परीक्षा चल रही है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—आहा ! नचिकेता कुछ भी मांग नहीं सके। खाली ईश्वर को मांगा। राज्य, आयु, गाड़ी-घोड़ा, स्त्री-पुत्र, धन-रत्न कुछ भी नहीं। केवल आत्म-ज्ञान चाहा, केवल ईश्वर। ठाकुर भी केवल मां को ही चाहते। अन्य कुछ नहीं। मां अपने पादपद्मों में शुद्धाभक्ति दो। एक वस्तु—मां।

द्वितीय वल्ली का पाठ चल रहा है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—यम नहीं न कर सके। प्रलोभन से कुछ भी नहीं हुआ। 'न त्वा कामा बहवो लोलुपन्त'। नचिकेता किसी भी कामना के वश नहीं। 'केवल श्रेय चाहता हूं प्रेय नहीं।' आत्मज्ञान

केवल काम्य। (स्वगत) तर्क करके उनको कैसे जानोगे ? 'नैषा तर्केण मतिरापनेया', वेद कहता है। चाहिये ब्रह्मचर्य और तपस्या। (सब के प्रति) ईश्वर छोटे से छोटा और फिर बड़े से बड़ा—'अणोरणीयान् महतो महीयान्', दुर्बल लोग उन्हें नहीं पाते। और फिर प्रवचन, मेधा और बहु श्रवण से भी वे लभ्य नहीं। पुस्तक पढ़कर उनका लाभ नहीं होता। व्याकुल होकर पुकारने पर उनकी कृपा से होता है—'यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः'। इसी नचिकेता की भांति व्याकुल होने पर उनका दर्शन होता है। केवल आत्मज्ञान चाहिये, अन्य कुछ नहीं—'नान्यं तस्मान्नचिकेता वृणीते।' साधुसंग चाहिये। 'साधुसंग से व्याकुलता बढ़ती है। व्याकुल होने पर फिर दर्शन में देर नहीं। अरुणोदय के पीछे ही सूर्योदय होता है। वैसे ही व्याकुल होते ही ईश्वर दर्शन होता है', ठाकुर कहते थे।

एकजन भक्त—मन ही उस पथ पर जाना नहीं चाहता। व्याकुलता तो दूर की बात है।

श्री म—तभी साधुसंग चाहिये। वे हैं व्याकुल उनके लिए। और सर्वदा उनको चिन्ता करने की चेष्टा करनी चाहिये। उनकी चिन्ता, उनका काज, उनकी सेवा—यह करते करते होता है। विजयकृष्ण गोस्वामी ने एक दिन कीर्तन किया। समाप्त होने पर ठाकुर बोले, 'वही काज हुआ'। जितने क्षण उनका नाम होता है, उनकी चिन्ता होती है उतने क्षण ही real life (वास्तविक जीवन) है। मां की बातें हुईं। उपनिषद् हुआ, यही असली कार्य हुआ।

बेलेघाटा; कलकत्ता।

रात्रि, 10 अक्तूबर, 1922 ई०।

20वां आश्विन, 1329 (बं०) साल; शनिवार।

—※—

तृतीय अध्याय

विश्वगायिका मैडम कालवे के धर्म-जीवन में स्वामी विवेकानन्द

(1)

श्री म अमहर्स्ट स्ट्रीट में टहल रहे हैं। संग में बड़े सुधीर और अन्तेवासी। अल्प क्षण पहले एक साधु उद्बोधन से आए थे। वे श्री म को विजया प्रणाम और दर्शन करके चले गये। श्री म आम्ज हाउस पर्यन्त जाकर लौट आए। अब अपराह्न सवा छह। एच. बसु की कोठी के फाटक के सामने फुटपाथ पर एक गाय लेटी हुई है। श्री म अन्तेवासी से बोले, "यह देखो यह सोई हुई है। पशु का काज ही यही —शयन, भोजन और procreation (सन्तान उत्पादन)। मनुष्य में भगवान् दर्शन की शक्ति है। यदि उसके लिए चेष्टा न करे तो वह भी इस (गाय) के जैसा ही है। ईश्वर दर्शन है मनुष्य का सर्वप्रधान कर्त्तव्य।"

मॉर्टन स्कूल का प्रांगण। श्री म पश्चिममुखी एक बैंच पर बैठे हैं और उनके सम्मुख तीनों दिशाओं में तीन बेंच हैं। सामने बड़ा रास्ता। कुछ क्षण नीरव रहे। अब श्री म एक युवक से कह रहे हैं, "आपका विवाह इतने दिन तक हुआ नहीं। कैसा आश्चर्य! इतने बड़े हो गये हो। अब तक भी क्यों नहीं हुआ। कब होगा?" युवक ने स्थिर भाव से उत्तर दिया, "जानता नहीं।" श्री म पुनः बोले, अच्छा ही तो है। साधुसंग हो रहा है। उसके बाद ही हो तो अच्छा है। भले ही कुछ देर से हो जाए, चाहे। साधुसंग जो कर रहे हो, इससे लगता है कि आपका विवाह शायद फिर होगा ही नहीं। साधु विवाह नहीं करते।

आज 9 अक्तूबर, 1922 ई०, 22वां आश्विन, 1329 बं० साल। सोमवार, कृष्णा चतुर्थी। नित्यकार भक्तगण आकर समवेत हुए। मठ

की कथा हो रही है। एक जन बोले, नौरवे के एक साहब (राजा) मठ और उद्बोधन दर्शन करने आए थे। श्री म ने अन्तेवासी से पूछा, "इस दुर्गा पूजा के समय कुछ भक्तों के संग परिचय हुआ क्या ?" अन्तेवासी ने उत्तर दिया, "जी हां। हैदराबाद के एक कृषकभक्त के संग आलाप हुआ था।" श्री म ने कहा, हाँ वे अष्टमी के दिन यहां आए थे। खूब आन्तरिक भक्त हैं। ठाकुर के शरणागत। वे फर्स्ट क्लास भक्त हैं। उस देश में बहुत अच्छे अच्छे भक्त हैं। अन्तेवासी फिर बोले, मद्रास के और एक भक्त के संग आलाप हुआ था। इन्होंने अष्टमी के दिन महापुरुष महाराज से दीक्षा ग्रहण की है। मैंने जिज्ञासा की आपने बंगाली गुरु से क्यों दीक्षा ली। भक्त उत्तर में बोले, संस्कारम्। श्री म यह बात सुनकर आनन्द से बोले, आहा, कितना व्याकुल। कहां मद्रास, व्याकुल होकर आए मठ में वहां से। इनका दर्शन करने से चैतन्य होता है। संस्कार न हों तो क्या ठाकुर के आश्रम में आ सकता है—सात समुद्र तेरह नदी पार होकर। बहुत अच्छा किया, उनके संग आलाप करके। (सुधीर के प्रति) हां, सुधीर बाबू तुमने आलाप नहीं किया ? सुधीर ने उत्तर दिया, "ना"। श्री म पुनः बोले, "They seeing see not; and hearing hear not", इसे ही कहते हैं आंखें होते अन्धा और कान होते बहरा। साधु भक्त को देखते ही आलाप करना चाहिये। इससे शिक्षा होती है, चैतन्य हो जाता है।

सान्ध्य-दीप जल रहा है। श्री म भक्तों के संग में ईश्वर चिन्तन कर रहे हैं। आध घण्टे बाद श्री म की इच्छा से भजन होने लगे। एक भक्त गा रहे हैं, 'फिरिये ने मां तोर बेदेर झुलि' (वापस ले लो मां, अपने जादू की झोली।) और एक जन ने शिव का गाना गाया। श्री म अब व्याख्या कर रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—'से जे श्मशाने मशाने फिरे घरेर भावना भावे ना'; 'श्मशाने मशाने फिरे', माने He lives in eternity—समाधिमग्न हैं। और 'घरेर भावना भावे ना' अर्थात् not in time—बाह्य-ज्ञान शून्य है। महादेव की परमायु है, मनुष्य की भांति नहीं—अनन्तकाल। वहां घूमने फिरने से पृथिवी की कुछ भी खबर नहीं रहती। ठाकुर का सर्वदा यही तो होता था। महादेववत्। ठाकुर भी प्रायः सर्वदा इन्द्रिय-ग्राह्य जगत् के बाहर रहते थे (तर्जनी से दो वृत्त

अंकित करके) ये हैं दो circles (वृत्त)—एक जगत्; एक ईश्वर। एक बड़ा, एक छोटा। छोटा छोड़ कर बड़े में माने (भूमा) में चले जाते। वहां परिपूर्ण ब्रह्मानन्द उपभोग करते। अनेक नीचे उतर कर कभी कभी बोलते। वेद वेदान्त सब घासफूस लगता है। अब रात है कि दिन, समझ में नहीं आ रहा—यही तो है महाकारण।

"मनुष्य के भीतर चार भाग हैं—स्थूल, सूक्ष्म, कारण और महाकारण। स्थूल बाहर का जगत् लिए रहता है, सूक्ष्म इन्द्रिय मन लेकर रहता है। कारण शरीर का विषय आद्याशक्ति का चिन्तन है। महाकारण में पहुँचने पर तब सब एकाकार। तब स्थूल, सूक्ष्म, कारण इन का अभाव हो जाता है। मन का तब नाश हो जाता है। मन अर्थात् इन्द्रियों के वशीभूत मन, बाह्य पदार्थ द्वारा जिसकी सृष्टि है। इस अवस्था का नाम ही है ब्रह्मानन्द। ब्रह्मज्ञान माने खूब बड़े पदार्थ का ज्ञान, जिसकी दृष्टि जगत् व्याप्त है। कभी देखता था कि आकाश की ओर देखते हुए ठाकुर समाविस्थ। आकाश खूब बड़ी वस्तु, wide व्याप्त और अनन्त। उसे देखकर, उसका जो कारण, उसकी बात मन में आते ही समाधिस्थ हो जाते। किन्तु हम मनुष्य, उसे हृदय में (धारण) कर नहीं सकते। हमारा हृदय परिष्कृत नहीं है—कर्म से आवृत है। केवल पण्डितों का काम नहीं इसे बूझना। वहां बुद्धि का प्रवेश निषेध। एक छटांक बुद्धि से वह कैसे अनन्त की बात बोलेगा? एक सेर के लोटे में दस सेर दूध नहीं समाता। ये सब बातें ठाकुर की निजी बात हैं। ऐसा करते करते मन बड़ा ही छोटा हो जाता है कभी कभी। एक चींटी ने जैसे चीनी के पहाड़ पर जाकर सोचा कि सारा पहाड़ मुख में भर कर ले जाएगी। केवल बुद्धि द्वारा ईश्वर के सम्बन्ध में विचार का प्रयास भी वैसी ही हीन बुद्धि का काम है।"

श्री म (युवक के प्रति)—वैस्ट के कई पण्डित भारत के लोगों को barbarous (असभ्य, बर्बर) कहते हैं। कारण, उनके विचार में भारत का इतिहास नहीं है। आहा, कैसे सुसभ्य हैं वे! उनका इतिहास सत्य है, किन्तु किसका इतिहास। यही ना history of blood and rapine—मारामारी, काटाकाटी और दंगाफसाद का इतिहास। उनके इतिहास में क्या है, इतने लोग ध्वंस करके वह राजा हुआ। बड़े बड़े प्रासाद बनाए, खूब कामिनीकांचन की सेवा की—ऐसे इतिहास के

मुख में आग। हमें नहीं चाहिये यह इतिहास। भारत के जातीयजीवन का जो वंशिष्ट्य है उसका इतिहास पूर्ण रूप से है। रामचन्द्र, कृष्ण, बुद्ध, इनके जीवन चरित क्या हैं, यही तो हमारा जातीय इतिहास है। जिस जीवन चरित को पढ़ने पर मन ईश्वर की ओर नहीं जाता उसे इस देश में सच्चा इतिहास नहीं कहते। सत्य वस्तु के लीला प्रकाश की कथा ही इस देश का इतिहास है। इतने बड़े राजा ने, (दीप देने में नेक देरी हो गई थी) इसी अपराध से, एक जन को छत के ऊपर से गिराकर मार डाला। छिह, हमें नहीं चाहियें ऐसा इतिहास। भारत का सनातन आदर्श है, श्मशाने मशानें फिरे घरेर भावना भावे ना—ब्रह्मानन्द। वेस्ट का आदर्श राजनीति, सुनाम, सुयश। उसमें ही तनिक भला होकर रहना। इस देश के आचार्यों ने कहा है सब छोड़ो। केवल एक जन को रखो 'यत्ने हृदये रेखो आदरिणी श्यामा मां के' (यत्न से हृदय में रखो आदरणीया श्यामा को)। केवल ईश्वर आदर्श। कोई कोई संसार भोग कर सकता है किन्तु ईश्वर को सामने रख कर। 'तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युद्ध्य च'—यही है इस देश का आदर्श। घोर युद्ध क्षेत्र में खड़े होकर इसी महान् आदर्श का प्रचार और पालन करते हैं, भारत के आचार्य। यह चीज मिलेगी कहां।

उस देश में ब्राह्मीस्थितिप्राप्त प्रायः एक भी जन दिखाई नहीं देता। Socrates, he also falls short of it—(सोक्रेटीज की बात यदि कहो तो वह भी कम पड़ जाती है।) अवश्य in his own way (निजी भाव में) वे बड़े हो सकते हैं। प्लेटो, बेइन, बेनथम, मिल, हरबर्ट स्पेन्सर इनमें से किसी ने भी उसे प्राप्त नहीं किया। एग्नोस्टिक जन कहते हैं, 'thus far shall thou go, and no further' (तुम्हारी दौड़ यहीं तक की है, आगे नहीं।' ईश्वर है, यह बात एक दम ही अस्वीकार नहीं करते। हो तो हो, किन्तु इसी बुद्धि—human intellect—द्वारा उसे जाना नहीं जाता। ऐसे लोगों की बातें सुनने से क्या लाभ? हां, क्राइस्ट की बात माननी ही होगी। कान्ट ने कहा, 'God is unknown and unknowable' (ईश्वर अज्ञात और अज्ञेय)। क्राइस्ट ने कहा, 'As the father knoweth me, even so I know the Father. I and my Father are one—(मैंने ईश्वर को जाना है। मैं और वे अभेद हैं।) क्राइस्ट की बात है [illegible]

(प्रत्यक्ष, सत्य)। उनके प्रत्यक्ष के पास किसी की युक्ति नहीं टिकी। सबको चुप करना पड़ा। जो लोग सत्य का सन्धान नहीं जानते उनकी बात नहीं लेनी चाहिये चाहे तो वे विद्वान् हों, चाहे हों पण्डित। जिसने काशी देखी है, केवल वही काशी की बात बोलने का अधिकारी है, यह ठाकुर की बात है।

राम, कृष्ण, बुद्ध, चैतन्य, क्राइस्ट, रामकृष्ण—ईश्वर के सम्बन्ध में, परम सत्य के सम्बन्ध में—इनकी वाणी लेनी चाहिये। इनके निकट God revealed हुए हैं, ईश्वर ने दर्शन दिये हैं। इनकी वाणी वेद वाणी। ठाकुर ने मां से कहा, मां पांच जने पांच प्रकार से बोलते हैं। उनमें से किसी की भी बात मैं नहीं लूंगा। तुम जो कहोगी केवल वही लूंगा। ऋषियों के पास वेद इसी प्रकार revealed (प्रत्यक्ष) होता था। प्रत्यक्ष के सम्मुख केवल पाण्डित्य चलता नहीं। जभी तो कभी कभी कहते पण्डित लोग ऊंचा तो उड़ते हैं—किन्तु दृष्टि मरघट पर रहती है।

एक भक्त—जी त्याग किसे कहते हैं?

श्री म—Perfect detachment from the sense world, संसार भूल जाना। यह होता है मन में। शुद्ध मन त्याग का आश्रय है। जभी ठाकुर कहा करते। शुद्ध मन और शुद्ध आत्मा एक। मन जब सम्पूर्ण रूप से शुद्ध हो जाता है तब उसका नाम है, त्याग। त्याग ही ब्रह्म। ब्रह्मज्ञान माने 'छोटे मैं' को छोड़कर 'बड़े मैं' में डूब जाना।

"सूत में रेशा रहने से सूई में पुरता नहीं। लोहे पर मिट्टी रहने से चुम्बक खींचता नहीं। वैसे ही मन अशुद्ध रहे तो 'बड़े मैं' का सन्धान प्राप्त नहीं होता। भोग-वासना है मैल। इससे ही मन अशुद्ध होता है। ज्यों ही मन का मैल हट जाता है त्यों ही 'बड़े मैं' का दर्शन होता है। मन शुद्धि के लिये ही यह सब आयोजन—साधुसंग, तीर्थ, तपस्या, व्रत-नियम, जप-ध्यान, गुरुसेवा।"

श्री म चुप रहे। क्षणकाल पीछे फिर कहते हैं।

श्री म (सब के प्रति)—व्याकुलता कैसी होती है—चुम्बक के संग में जैसे सूई। चुम्बक के संग संग सूई घूमती है। जो हैं ईश्वर-जन्य व्याकुल उनको यही दशा होती है। (सहास्य) एक बार ठाकुर बलराम मन्दिर में थे। घर में मझे सारी रात निद्रा नहीं हुई, प्राण छट पट करते

लगा। कोई मानो खींच कर ले गया बलराम मन्दिर में। तब रात के दो। मुझे देखते ही बोले, आ गये, अच्छा किया। मैं पहले से ही उठ कर फिर रहा हूँ। मानो पहले से ही तैयार हैं।

श्री भगवान् की अवतार-लीला का दिव्य सम्वाद उनके पार्षद के मुख से सुनकर भक्तों को क्षण भर के लिए लगा जैसे जगत् भूल हो गया हो। तब फिर शान्तिमय मन लेकर अपने अपने स्थानों पर चले गये। रात्रि अब दस।

(2)

अगले दिन 10 अक्तूबर, मंगलवार। श्री म चार तल की छत पर बैठे हैं, कुर्सी पर उत्तरास्य। समीप दो एक भक्त उपविष्ट।

श्री म (जगबन्धु के प्रति)—आप आज मठ में नहीं गए ?

जगबन्धु—बेलेघाटा में था। भोर बेला में पैदल मिर्जापुर के मोड़ तक आकर भी ट्राम नहीं मिली। अनेक क्षण प्रतीक्षा करके देरी होते देख फिर जाना नहीं हुआ।

श्री म—तो भी हुआ। चेष्टा की है उससे ही हुआ। हमारे साथ भी ऐसे ही हुआ करता था। दक्षिणेश्वर जाना है। शोभा बाजार में सवारी गाड़ी न मिलने से लौट आना पड़ता। शोभा बाजार से गाड़ी में आलमबाजार, फिर पैदल दक्षिणेश्वर जाना होता था। कभी कभी बराहनगर, फिर पैदल दक्षिणेश्वर। लौटते समय सारा पैदल जाना पड़ता था रोज। कितने ही बार शोभा बाजार आकर सवारी की गाड़ी न मिलने से लौट आना पड़ा था।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—कभी कभी ठाकुर भक्तों को लेकर चांदनी के घाट पर बैठा करते। गंगा पर से जो नौकाएं जातीं उन सब को देखा करते। (सहास्य) एक दिन एक मोटे ब्राह्मण को देखा, एक नौका में। यह बड़ी तोन्द, गले में जनेऊ झकाझक सफेद। उस पर रंग काला मानो आबनूस की लकड़ी। भक्तलोग उसी व्यक्ति को निविष्ट मन से देख रहे हैं। ठाकुर समझ गये और बोले क्या बात सोच रहे हो। यह घास गामिन, घास खा खाकर पेट इतना बड़ा हो गया है अन्तःसार शून्य। बच्चा नहीं होगा, दूध भी नहीं मिलेगा। इसका खाना ही सार।

(हीलिगबाम) दुर्गापद मित्र आये हैं। वे श्री म से कह रहे हैं, "आज स्वामी जी (विवेकानन्द) की बातें, इण्डियन डेली न्यूज में निकली हैं। सब नूतन बातें। न्यूयार्क के सैटरडे इवनिंग पोस्ट से उद्धृत की हैं। मैडम कालवे* की स्मृति कथा।

यह बात सुनकर उस समाचार पत्र को देखने के लिए श्री म बालकवत् व्याकुल हो गये। रात्रि अब प्रायः नौ। समाचारपत्र मिलने की सम्भावना नहीं तथापि बारम्बार अति आग्रह से कहने लगे, उसको देखने से चलता। श्री म तथा भक्तगण सीढ़ी वाले कमरे में बैठे थे। श्री म के सम्मुख ही बैठे थे सीढ़ी के निकट बैंच पर एक भक्त। श्री म का इतना आग्रह देखकर वे बिना किसी को पता लगे उठकर नीचे उतर गये। उनका संकल्प था कि समाचार पत्र लेकर ही लौटेंगे। चाहे डेली न्यूज के आफिस से अथवा किसी के घर से अथवा किसी हरकारे के पास से—पेपर चाहिये। कालेज स्ट्रीट से भक्त द्रुत चाल से जा रहे हैं। फिर बोऊ बाजार से ब्रिटिश इण्डियन स्ट्रीट की ओर दौड़े जा रहे हैं। उनको इस अवस्था में देखकर रास्ते में कोई कोई लोग खड़े हो गए। लालदिघी के प्रायः निकट एक हरकारा मिला। उसने कहा कि अतिरिक्त दाम देने पर वह लाकर दे सकता है। अति कष्ट से एक पर्चा मिल गया। दाम चुकता कर ट्राम में चढ़ ठनठनिया उतरे। फिर पसीना पसीना हुए हांफते हांफते मॉर्टन स्कूल में सीढ़ी के घर में उपस्थित हुए। श्री म विस्मय से कहने लगे, "हम सोच रहे हैं, आप हठात् कहां अदृश्य हो गये। जल में भीगी मछलीवत् हो गये हैं पसीने से। कहां से आये हैं?" भक्त ने उत्तर न देकर समाचारपत्र जेब से निकाल कर दे दिया। पेपर देखकर श्री म का आनन्द समाता नहीं। नूतन खिलौना पाकर जैसे बालक का आनन्द। उसी आनन्द से भक्त को आशीर्वाद कर रहे हैं, वाह खूब ही adventurous (दुःसाहसी) हैं आप तो, पढ़िये पढ़िये, आप पढ़कर सुनाइये सबको।

एक युवक पढ़ रहे हैं। श्री म निविष्ट मन से सुन रहे हैं। बहुत सा पढ़ा जा चुका है। वे कहने लगे, फिर पढ़ो, आरम्भ से। पाठक पढ़ रहे हैं—स्वामी जी के संग प्रथम परिचय शिकागो में। मैडम कालवे तब असहनीय मानसिक व्याधि से भोग रही थीं। शरीर मन टूट गया

*[partially cut off] Madame Emma Calve.

था, यौवन के प्रारम्भ में। स्वामी जी के आशीर्वाद से नूतन जीवन लाभ किया। फिर पैरिस में स्वामी जी का पुनः दर्शन हुआ। फिर तुर्की (Turkey), ईजिप्ट और ग्रीस में स्वामी जी के संग भ्रमण किया। संग में थे विख्यात दार्शनिक फादर हयासिन्ते लैसन और उनकी पत्नी और मिस मैक्लिओड। श्री म पाठ सुनते सुनते आनन्द में पूर्ण हो गये हैं। आंखों और मुख पर आनन्द की रश्मियां प्रतिफलित हैं। लगता है श्री रामकृष्ण महिमासागर में मग्न हैं। कुछ काल नीरव रहकर फिर बातें करते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ठाकुर आए थे, तभी तो स्वामी जी को उस देश में भेजा। और तभी ऐसे सब लोग देखने में आते हैं। सात समुद्र तेरह नदियां पार होकर वे आते हैं। कैसी महिमा का प्रसार हो रहा है संसार भर में! मैडम कालवे ने निज को Songbird अर्थात् गायक पक्षी कहा है। वैस्ट के लोग उन्हें यही कहते हैं। उस देश की सर्वश्रेष्ठ गायिका। मठ में देखो तो मिस मेक्लिओड पड़ी हैं। इतनी असुविधायें—मलेरिया, भिन्न देश, भिन्न भाषा, कितनी असुविधायें, किन्तु किसी पर भी लक्ष्य नहीं। कितने ऐश्वर्य में रहकर वे लोग पले हैं और अब कहां? मायावती में मिसेज सेवियरस् रहा करतीं। साधुओं के ऊपर कैसा स्नेह उनका, कितनी आपन-बुद्धि। देश, ऐश्वर्य, आत्मीय कुटुम्ब छोड़कर यहां रह रही हैं। गोपीप्रेम की कथा सुनते थे। वही प्रत्यक्ष हुई। निवेदिता को देखो। इस देश के लिए परिश्रम करते करते गुरु आदेश से देह त्याग किया। क्रिस्टीन भी हैं। उनके आने से कितने ही महत् व्यक्ति देखने में आ रहे हैं। जब बड़े लाट साहिब आते हैं तब गवर्नर और अन्य बड़े कर्मचारियों को भी आना पड़ता है। ठाकुर आए हैं—मनुष्य शरीर लेकर भगवान। जितने भी गुणवान और भक्तिमान लोग हैं सबको ही आना होगा उनके पास

श्री म ने अब समाचारपत्र माँग लिया। दृष्टि डाल रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—देखिए, स्वामी जी को वे लोग किस दृष्टि से देखते हैं। कहती हैं '(He) truly walked with God, a noble being, a saint, a philosopher and a true friend.

His influence upon my spiritual life was profound ....my soul will bear him eternal gratitude.' कैसी कृतज्ञता; 'eternal gratitude—अनन्तकाल के लिए कृतज्ञ।

अमृतत्व का संधान दिया है: इसीलिए इतनी कृतज्ञ। जभी तो कहते हैं गुरु का ऋणशोध नहीं होता। अहेतुक कृपासिन्धु गुरु। कैसा कहती हैं, 'ये यथार्थ हो ईश्वर के सहचर, महामना महापुरुष। ये परमतत्त्ववेत्ता सच्चे सुहृद।' जो ईश्वर के पथ में ले जाते हैं, इस संसार के ज्वलन्त अग्निकुण्ड के भीतर से, उन्हें हो कहते हैं, सच्चे सुहृद और फिर कह रही हैं 'स्वामी जी extrodinary man (महामानव)।' अपने विषय में कहती हैं 'स्वामी जी के संग प्रथम मिलन के समय, I was at that time greatly distressed in mind and body (मानसिक कष्ट से शरीर मन टूट गया था)' और फिर दर्शन के पश्चात् क्या हुआ? 'I became once again vivacious and cheerful, thanks to the effect of his powerful will.'—मुझे नूतनजन्म लाभ हुआ। पुन: आनन्द लौट आया। और मैं इस महापुरुष का बहु धन्यवाद ज्ञापन करती हूं—उनकी इस अमानुषी कृपा के लिए। इसके बाद ही कह रही हैं, 'He did not use any of the ordinary hypnotic or mesmeric influences. It was the strength of his character, the purity and intensity of his purpose that carried conviction......he lulled one's chaotic thoughts into a state of peaceful acquiescence.' इसके माने, उनके पास कोई जादू विद्या नहीं थी। वे लोगों के मन में विश्वास उत्पादन करते थे अपने सुमहत् चरित्र, पवित्रता और लोक कल्याण साधन के दृढ़ संकल्प द्वारा। उनके पास बैठने से मन के सकल संशय और अशान्ति अपने आप ही दूर हो जाते हैं। यह सब फिर क्या है? कवित्व? नहीं यह नहीं। अपने जीवन में जो समझी हैं, वही कह रही हैं। इसे ही स्तव कहा जा सकता है। यह सब evidence (साक्ष्य)—स्वामी जी क्या थे, उनसे क्या पाया था उन्होंने।

श्री म (दुर्गा बाबू के प्रति) और यह सीन भी कैसा महत्।

काहेरा (Cairo) में वारांगनाएं स्वामी जी का ठट्ठापरिहास करती हैं। वे उनकी हीन दशा देखकर बोले, 'poor children; poor creatures. They have put their divinity in their beauty. Look at them now.' बच्चियां कैसी हतभागिनी हैं, कैसा हीन इनका जीवन है। इन्होंने देह के नश्वर रूप के पास निजी देवत्व को बेच डाला है—यह कहकर एकदम रो पड़े, उनके दुख में। और कहने लगे, 'अब दृष्टिपात करो, ये अब नूतन मनुष्य हो गई हैं। इनका देवत्व फिर लौट आया है।' स्त्रियां पश्चात्ताप से कहने लगीं, 'Homre de dios—' हे देवमानव, हमें क्षमा करिए। अपराध मार्जन करिए। प्रथम परिहास, तत्पश्चात् पूजा। आहा, कैसा स्नेह, कैसी दया! ऐसी एक घटना से ही मनुष्य पहचाना जाता है। कैसा हृदय, कितना बड़ा मन, कैसी शक्ति!

"यह मानो ड्रामा है। ठाकुर आए हैं तभी ऐसा हुआ है। अवतार आने पर यह सब होता है। सच्चा अभिनय। मैडम कालवे मठ में आई थीं। साधुओं के विषय में कहा था, 'Gentle philosophers' (सौम्य दार्शनिक।) बोलीं, "The hours that I spent with these gentle philosophers have remained in my memory as a time apart. Thee beings—pure, beautiful and remote seemsd to belong to another universe, a better and wiser world.' मठ में कई एक घण्टे रहकर अनुभव किया मानो भूस्वर्ग में हैं। जभी कहती हैं, "साधुगण मानो हैं अन्य एक जगत् के लोग, उन्नततर चिन्मय धाम के अधिवासी। कैसा पवित्र, कैसा मनोहर इनका जीवन है। इनका मन मानो दूर, अति दूर—एक शांतिमय आनन्दमय धाम में विराज कर रहा है।

"कितना बड़ा महत् उनका मन—यह इन अन्तिम बातों से खूब समझ में आ जाता है। साधुओं को जो जितना ही समझेगा वह उतना ही ऊँचाई पर चढ़ेगा। कैसी उच्च अनुभूति साधुओं के सम्बन्ध में। स्वयं साधु हुए बिना कोई साधु को पकड़ नहीं सकता। धन्य हैं हम जो भगवान की यह दिव्य लीला देख सके हैं। और भी कितना महिमाप्रचार होगा दिन पर दिन।"

श्री म कुछ क्षण नीरव रहकर पुनः बोल रहे हैं।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—ऐसा एक समय आया था, इस देश में, जब "वेस्ट" का अनुकरण करना ही सब लोग खूब बड़ा कार्य मानते थे। अब देख रहा हूं, सब उलटता जा रहा है। "वेस्ट" ने ही इस देश की बात सुननी आरम्भ कर दी है। इस महाकार्य के अग्रदूत हैं स्वामी जी। एक धक्के में ही इस मोह को तोड़ दिया था, स्वामी जी ने शिकागो में। तत्पश्चात् ही जब वे इस देश में लौट कर आये थे, तब सब युवकों ने उनकी गाड़ी को खींचा। उनकी ही शिक्षा और प्रचार के प्रभाव से निजी सभ्यता की ओर दृष्टिनिक्षेप करने लगे, आहार-विहार, पोशाक में, शिक्षा-दीक्षा में। उससे पहले केवल उनका अनुकरण ही किया करते थे। टोनी साहब ने हमें एक चिट्ठी में लिखा था, विलायत से, "भारतीयों के लिये कोट-पैंट पहनने की अपेक्षा चोगा-चपकन पहनना ही अच्छा है। कोट-पैंट पहनने से तो बन्दर लगते हैं। ये प्रेसिडेन्सी कॉलेज में हमें पढ़ाते थे। फिर डायरेक्टर ऑफ पब्लिक इन्सट्रक्शन्ज़ हो गए थे। रिटायर होकर विलायत चले गये थे। उस देश में चले जाने पर भी हमारे संग पत्र-व्यवहार रहा बहुत वर्षों तक। भले व्यक्ति थे।

भक्तों ने अब और प्रसंग आरम्भ कर दिया। शीघ्र ही श्री म ने पुनरपि प्रवाह ईश्वरीय-कथा की ओर मोड़ दिया, जैसे एक चंचल शिशु को बाहर से लाकर पुनः मातृ-अङ्क में स्थापन कर दिया हो। श्री म साधुसंग माहात्म्य वर्णन करने लगे।

श्री म (भक्तों के प्रति)—गृहियों को साधुसंग बड़ा ही दरकार। साधुसंग ही एकमात्र औषध। और कभी-कभी निर्जनवास करना भी उचित। एक दिन, दो दिन, तीन दिन किंवा अधिक, जिसको जैसी सुविधा हो। वही है partial (आंशिक) संन्यास। इस बात को तो ठाकुर बहुत ही कहते। निर्जन में जाने से अपने आप ही मन में चिन्ता आ जाती है: कर क्या रहा हूं, दिन जा रहे हैं। मरण मुंह खोले सम्मुख बैठा है। मेंढक के मुख में मक्खी, मेंढक सांप के मुख में, और व्याध के तीर में सांप। यही precarious (विपद्जनक) अवस्था है। निर्जन में जाने पर यह बात याद आती है। संग संग मनुष्य

जीवन का उद्देश्य, भगवान् दर्शन, यह महामन्त्र भी हृदय में जाग्रत होता है।

सत्संग करने से निर्जनवास की इच्छा जाग्रत होती है। और निर्जनवास करने पर सत्संग में रुचि की वृद्धि होती है। यदि कहो कि सब साधु तो सिद्धपुरुष नहीं हैं, उनके संग से क्या लाभ? इसका उत्तर है कि उनके मध्य कोई-कोई सिद्धपुरुष भी हैं। इसके अतिरिक्त वे भले रास्ते पर खड़े हैं। On Vantage ground—वहां पर से आगे जाने में खूब सुविधा है।

"और मुक्ति की बात यदि बोलो, वह क्या फिर एक ही जन्म में होती है सब की? किसी को एक जन्म, किसी को दस जन्म, किसी को सौ जन्म लगते हैं। 'घुड़ि लक्षे एकटा दुटो काटे, हेसे दाओ मा हात चापड़ि।" (लाखों में एक दो पतंगें कटती हैं, मां आप ताली बजाकर हंस पड़ती 'है'। गीता में क्या है डाक्टर बाबू—मनुष्याणां.........?

डाक्टर—मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चित् यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥ (गीता 7:3)

श्री म (भक्तों के प्रति)— यही देखिए श्री कृष्ण बोल रहे, 'कश्चित् मां वेत्ति' माने खूब rare (दुर्लभ)। क्या साधु, क्या गृही सब को एक जन्म में मुक्ति नहीं होती। तब भी मुक्ति के लिए चेष्टा करना उचित, जैसे खानदानी किसान करता है। एक वर्ष दो वर्ष फसल न होने पर भी खेती बाड़ी करता ही रहता है। चेष्टा छोड़नी नहीं चाहिए। इसीलिए गृहियों को साधुसंग बड़ा दरकार। साधुगण लगातार ईश्वर का भाव ही लिए रहते हैं कि ना। गृही पांच चीज में मन देता है। साधु के पास जाने से गृहियों का विक्षिप्त हुआ मन एकत्रित होता है। ईश्वर दर्शन है जीवन का उद्देश्य, यह बात स्मरण होती है। साधुसंग बिना उपाय नहीं।

साधुसंग करो, क्या केवल यह कहकर ही वे बैठे हैं? यह नहीं। साधु भी बना दिए हैं। यही (बेलुड़) मठ उन्होंने ही बनाया है हमारे कल्याणजन्य। इसका advantage (सुयोग) लेना उचित है।

श्री म (बड़े अमूल्य के प्रति)—जो अधिक सयाने वे ठगे जायेंगे। काक बड़ा सयाना, किन्तु अन्य का गू खाकर मरता है, ठाकुर ने कहा था।

अधिक calculation (लाभ हानि का हिसाब) अच्छा नहीं। ऐसे लोग ठगे जायेंगे। जो केवल सच्चे साधु खोजते फिरते हैं।' स्वयं क्या हैं इस ओर नज़र नहीं। मुड़कर देखते ही नहीं एक बार। खाली दूसरों के दोष देखते फिरते हैं, सच्चा साधु खोजते फिरते हैं। ऐसे लोगों को कभी भी सच्चा साधु नहीं मिलेगा। यह क्या दुकानदारी है? ठाकुर कहते थे, 'दोषे गुणे मानुष'। निर्दोष एक ईश्वर अवतार—ठाकुर। आहा, मां ने कहा है चन्द्र में वरं कलंक है, किन्तु रामकृष्ण शशी में कलंक नहीं।

श्री म (युवक के प्रति)—जिन्होंने विवाह नहीं किया उनके लिए बड़ा chance (सुयोग) है। उनका केस खूब hopeful (आशाप्रद) है। कारण गोरख-धन्धे में अभी तक उनका पैर नहीं पड़ा है। इसमें अटक जाओ तो महासंकट।

बड़े अमूल्य ने अनेक प्रश्न किए—पुस्तक पढ़कर जैसे किया करते हैं। प्रश्नों में कितने ही तो थे खूब ही विरक्तिजनक और चांचल्यकर, किन्तु प्रशान्तचित्त श्री म ने जननीवत् अति प्रसन्न भाव में एक बात में ही सब प्रश्नों का उत्तर दे दिया।

श्री म (बड़े अमूल्य के प्रति)—इन सब बातों से क्या होगा? अवतार की बातें हमारे लिए सुनना उचित। उन्होंने जो कहा है उसके पालन करने की चेष्टा करना हमारे लिए है उचित। उन्होंने कहा है, नित्य साधुसंग करो; और व्याकुल होकर प्रार्थना करो, दर्शन दो कह कर। और कभी कभी निर्जनवास करो। ये सब चेष्टाएं करना उचित।

श्री म (भक्तों के प्रति)—कर्म के भीतर रहते हुए ब्रह्मावस्था, समाधि नहीं होती। कुरुक्षेत्र का युद्ध समाप्त हो जाने पर श्री कृष्ण की एक बार वही अवस्था हुई थी। उसे देखकर पाण्डवगण भयभीत हो गए थे। प्रतीत होता था कि देह त्याग कर दी है। खूब rare (क्वचित्) होती थी। इसी कारण वे समझ नहीं सकते। कितना काज उनको। जन्म से लेकर अन्त तक सर्वदा काज करते रहे। किन्तु ठाकुर की (यह अवस्था) सर्वदा ही होती। एक दिन में ही कई बार होती। एक बार छह मास तक इसी अवस्था में सम्पूर्ण लीन रहे थे। चैतन्यदेव की भी पुरी में हुआ करती थी। शेष के बारह वर्ष प्रायः इसी में डूबे रहे। जो सर्वदा ईश्वर के संग एक होकर रहते रहे हैं

उनकी ही वाणी हमें लेना उचित। अन्य कथा सब त्याज्य। ठाकुर कहते थे पुकुर का जल काही (जल-पौधे) से ढका हुआ है। एक ढेला मारा उससे तनिक सा जल दिखाई दिया। और फिर नाचते नाचते काही ने आकर सब ढक लिया। वैसे ही हमारा मन, आंखों के सामने अविद्या का परदा पड़ा है, इस कारण देखने नहीं देता। इसे कभी अल्प हटा लेने पर कुछ दिखाई देता है, तनिक उद्दीपन होता है, और फिर ढक जाता है। सर्वदा साधुसंग करने से ऐसे नहीं होता। जभी तो है साधुसंग बड़ा दरकार। साधुसंग से सर्वदा उद्दीपन होता है।

"कभी कभी मन तनिक ऊपर चढ़ता है और फिर नीचे गिर जाता है। मन की गति ही निम्नगामी जैसे जल निम्नगामी है, पतन का भय पग पग पर है। पतन के समय पता तक नहीं लगता कि पतन हो रहा है। ऐसा कलमबाड़ा (ढालू) पथ है। ठाकुर ने कहा था, "किले में गाड़ी कितनी नीचे उतर गई है, प्रथम पता ही नहीं लगा। जब सामने तीन तल का घर आया तब तक पता लगा कि कितने नीचे उतर आए हैं। जभी ठाकुर की एक वाणी—साधुसंग, साधुसंग, साधुसंग। नित्य नियमित साधुसंग। इससे ही केवल होश रहती है।"

श्री म सीढ़ी के कमरे में बैठे। अब सन्ध्या। कई एक भक्त आए हुए हैं। एक युवक मठ का विवरण दे रहे हैं। आज उनकी पारी थी। इसी युवक को ही महापुरुष महाराज ने लॉ छोड़ देने के लिए कहा था। समस्त सम्पर्क सम्पूर्ण रूप से त्याग करने के लिए कहा था। महापुरुष महाराज बोले—"अभी छोड़ दो। हमारा परामर्श यही है इसी क्षण छोड़ दो। इससे मनुष्यत्व नष्ट हो जाता है। जभी तो ठाकुर वकीलों की सेवा ग्रहण नहीं कर सकते थे। बुद्धिनाश हो जाता है इससे। यह भी फिर कोई व्यवसाय है। इस व्यवसाय को नहीं करना चाहिए। अर्थ का प्रयोजन हो तो अन्य व्यवसाय करो, वकालत नहीं। प्रेस और पब्लिकेशन अच्छी है—यह भी इन्टलेक्चुअल (बौद्धिक) काज हैं।

श्री म (युवक के प्रति)—लॉ पढ़ना अच्छा, किन्तु प्रैक्टिस अच्छी नहीं। लॉ पढ़ने से बहुत कुछ जाना जाता है, सीखा जाता है। 'हिन्दू लॉ' कैसा सुन्दर धर्म-मूलक है। लॉ आफ ऐविडेन्स, जुरिसप्रूडेन्स—ये

सब ही अच्छे हैं। याज्ञवल्क्य, मनु, पराशर, व्यास, वसिष्ठ ऋषियों ने हिन्दू लॉ बनाया है। और कुछ वार्त्ता हुई ?

युवक—महापुरुष महाराज ने शुकलाल बाबू के लिए मेरे द्वारा संदेश भेजा है। कहा है ठाकुर की कृपा उन पर हुई है, उन्हें कहो समय निकालकर एक टुक ईश्वर चिन्ता करें कुछ दिन। बड़े बेटे को अपना काजकर्म समझा दें। जनरल लाइन में पढ़ाकर लाभ नहीं है आज कल। इससे तो अपना काम ही करना कहीं भला है।

युवक—एक साधु ने एक भक्त से कहा था, सत्काज में, शुकलाल को कुछ दान करना चाहिए। एक घर की आय देव सेवा में लगा दें तो उचित। एक घर दान कर दें।

श्री म—ठाकुर होते तो कहते, रुपया पैसा जो कुछ है उससे परिवार की provision (व्यवस्था) करके निश्चिन्त मन से ईश्वर को पुकारो। परिवार के पेट में खींच रहते ईश्वरचिन्तन नहीं होता। ठाकुर को देखा करता, किस प्रकार भक्तों को अवसर मिले, उनका (भगवान् का) चिन्तन कर सकें, यही भावना सर्वदा किया करते। परिवार के लिए भावना रहे तो कोई भी काज नहीं होता। (युवक के प्रति) और किसी के संग में बातचीत हुई, मठ में ?

युवक—मिस मेक्लिओड के सम्बन्ध में महापुरुष महाराज बोले, वे गेस्ट-हाउस के ऊपर कमरा बना कर रहेंगी। विलायती नियमानुसार संभ्रान्त घर की महिलायें नीचे के घर में रहकर खुश नहीं होती। काली महाराज वहां रहना चाहते थे। ये अब तिब्बत जा रहे हैं, हेमित मठ में। मेडम कालवे की बातें हुई थीं। बताया, मठ में ठाकुर घर में घुटने टेक कर गाना गाया था हाथ जोड़कर। कैसा वह गला ! सुर कहां ऊपर चढ़ा दिया और फिर नीचे उतार लिया धीरे धीरे, मानो अनन्त में मिला दिया। मन में लगा मानो कितनी कोकिलाएं एक संग गा रही हैं। इतना सुमिष्ट और उच्च उनका कण्ठस्वर। वेस्ट के सारे जगत् में उनका नाम है। स्वामी जी की बड़ी भक्त हैं।

श्री म—और कुछ कथावार्ता हुई, किसी साधु भक्त के संग ?

युवक—मां की बात कही थी, बड़े नलिनी ने।

मां ने बताया था, "बाबू राम ने एक बार अपनी माता से कहा

था : मां, ठाकुर जैसा प्यार करते हैं उसके पास तुम्हारा प्यार कुछ भी नहीं है'।" चार वर्ष की वयस में बाबू राम ने अपनी माता से कहा था,'मेरा बिवाह न करिओ, नहीं तो मर जाऊँगा।'

"एक दिन बाराहनगर मठ में आहार के लिये कुछ नहीं था, लड़कों ने—नरेन, निरंजन आदि ने स्थिर किया कि किसी के पास से कुछ भी नहीं मांगेंगे। उपवास करके सब के सब सारा दिन ध्यान भजन में लीन रहे। सन्ध्या के समय लाला बाबू के घर से अपने आप सब आ गया। ऐसा प्रायः ही होता था।

"और एक बार नरेन पश्चिम के किसी स्टेशन पर (राजस्थान में) लेटा हुआ था, सिर तक चादर ओढ़े। आहार आदि कुछ भी नहीं हुआ था। एक हलवाई पूरी दमआलू आदि आहार लेकर उपस्थित हुआ। और संग ही सुराही में ठण्डा जल और चिलम बनाकर ले आया। नरेन को खाने के लिये कहा, किन्तु उसने लेना नहीं चाहा। हलवाई तब बोला, श्री रामचन्द्र जी ने मुझे साधु के लिए यह सब कुछ लेकर जाने के लिए स्वप्न में कहा है। वह हलवाई खा पीकर विश्राम कर रहा था, दुकान में। श्री रामचन्द्र जी ने स्वप्न में कई बार कहा, 'साधु भूखा स्टेशन पर लेटा हुआ है। तुम यह सब चीजें ले जाकर उसे खिलाओ।' यह सुनकर नरेन ने ग्रहण किया।

"तपस्या के समय एक बार नरेन का अलमोड़ा में तीन दिन आहार नहीं हुआ। कबरिस्तान के एक चौकीदार ने तब एक खीरा खाने को दिया। अमरीका से लौटकर अलमोड़ा गया। एक सभा के बीच उस चौकीदार को देख लिया। उसके हाथ पकड़कर बोला, 'प्राणदाता'। और उसे पच्चीस रुपये दिलवाए।

"काशीपुर बागान में दूध का कटोरा हाथ में लिये मैं ऊपर चढ़ रही थी, ठाकुर को पिलाने के लिए। ओ मां, फिसलकर गिर पड़ी और पैर में मोच आ गई। तीन दिन ऊपर नहीं जा सकी। नरेन तब खिलाता पिलाता था। मेरे नाक में तब एक नथ थी। ठाकुर ने तब उंगली से नथ की तरह गोलाकार चक्र दिखाकर हंसते हुए

कहा, उसे टोकरी में रखकर ले आना। उनका हंसी मज़ाक भी शिक्षा के लिए ही।

'राखाल को अब तो तुम लोग महाराज देख रहे हो। यह मेरा बच्चा मेरा कितना काज किया करता था। कितनी देगचियां मांजो हैं।

"अमेरिका से आकर नरेन ने मठ में दुर्गा-पूजा की। वही प्रथम पूजा। उसमें चौदह सौ रुपया खर्च हुआ। खूब धूम-धाम। सारा आयोजन ठीक। नरेन आकर बोला, 'मां मेरे लिए ज्वर ला दो।' संग संग ज्वर हो गया। मैं तो एकदम आवाक्. नरेन ने क्या काण्ड किया। पूजा भी शेष हुई और उसका ज्वर भी चला गया। ठीक रहता तो सम्भवत: भूल त्रुटि के लिए किसी के साथ गाली गलौच करता। उससे उसके मन को कष्ट होता। तभी ज्वर ले आया।

"सब की सब स्त्रिएं असंयमी हैं। किसी के बीस किसी के पच्चीस प्रसव हुए होंगे। इनके लिये हो तो शरीर को इतनी रोग यंत्रणाएं हैं। यही ज्वाला है, नहीं तो इस शरीर को रोग कैसा? (मना करने पर भी कलकत्ते की कुछ स्त्री-भक्तों को मां के पैर पकड़कर प्रणाम करने से असह्य ज्वाला हुई थी। इस कारण ही यह बात कही थी।)"

मां की वाणी शेष होने के संग संग ही बहुत से भक्त एक साथ आ पहुंचे। कुछ नूतन लोग भी आये हैं। एक जन ने एक पत्रिका 'The world magazine of New York' निकाली। एक अमरीकावासी सज्जन ने एक प्रबन्ध लिखा है 'India's latest saint'—ठाकुर का जीवन चरित। एक भक्त ने उसका पाठ किया। अभी अभी मठ का रोज का विवरण सुना गया है। आजकल मॉर्टन स्कूल के भक्तगण मठ में साधुओं को प्रणाम करते समय पाँव में हाथ नहीं लगाते। और इससे साधुगण सन्तुष्ट हैं। इसी सम्बन्ध में बातें हो रही हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—इससे यदि वे अस्वस्तिबोध करते हैं तो साधुओं के पैर न छूना ही भला। उद्देश्य है उनकी शुभेच्छा प्राप्त करना। पांव को न छूने से ही यदि वे सन्तुष्ट होते हैं तो यही करना ठीक है। मन भ्रमर को भेज दो उनके पादपद्मों में। साधुओं के पैर

नारायण के ही पैर हैं कि ना ? साधुओं के शरीर की खूब यत्न से रक्षा करनी चाहिए। मिट्टी का सांचा सुनार अति यत्न से रखते हैं जब तक कि उसमें सोने की ढलाई न हो। सोने की ढलाई हो जाने पर फिर और उसका प्रयोजन नहीं। तब फेंक देते हैं। वैसे ही साधु का शरीर। जब तक इस शरीर में भगवान दर्शन नहीं होता, तब तक अति यत्न से रक्षा करनी चाहिये। जभी इतने सावधान !

"साधुओं की सेवा करना सामर्थ्य अनुसार - असुख के समय ही हो कि स्वस्थ रहते समय ही हो। भाग्य में हो, पूर्व जन्म में पुण्य किया हो, तो ही उसकी सेवा की जाती है। न चेत् उस ओर मन ही नहीं जाता। साधुसेवा करने का अर्थ ही है भगवान को सेवा। नारायण ज्ञान में सेवा करना। इसका फल मोक्षलाभ है। यही है सेवा का श्रेष्ठ फल। दया से सेवा करना, अर्थलाभ किंवा सुनाम के लिये सेवा करना अथवा स्नेह से आत्मीय स्वजन की सेवा करना— विभिन्न भाव से सेवा का विभिन्न फल होता है। आर्त्त निराश्रयों में भी उनका विशेष प्रकाश है। भगवत् बुद्धि से इनकी सेवा से भी उत्तम फल होता है। जब तक उन्होंने द्वैतभाव में रखा है, अपनी देह के भले मन्दे का बोध है, तब तक नारायण ज्ञान में सेवा करनी चाहिये।

"और भी एक अवस्था है। उस अवस्था में Subject and object merge in the highest state of consciousness, द्रष्टा दृश्य नहीं रहता। यह सारा जगत् एक अखण्ड चेतन-सत्ता में विलीन हो जाता है। यही समाधि है। जैसे नमक का पुतला समुद्र के जल के साथ मिलकर समुद्र हो जाता है। वहां पर 'तुम-मैं' नहीं, सेवक-सेव्य नहीं, जगत् ही नहीं, एकमात्र अखण्ड सच्चिदानन्द ब्रह्म। उस अवस्था को लक्ष्य करके वेद कहता है, 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म।' यह अवस्था जिनको सर्वदा होती थी वैसे एकजन के हमने दर्शन किये हैं। इस अवस्था में कोई वृक्ष का पत्ता भी तोड़ता तो चीत्कार कर उठते, कष्ट होता। तब सर्वत्र ब्रह्म सत्ता अनुभव करते।

श्री म कुछ काल नीरव रहे, कुछ सोच रहे हैं।

श्री म (युवक के प्रति)—ठाकुर ने एक बार नरेन्द्र को वेदान्त

सिखाया था। बोले, ये दस पात्रों में जल है और उसमें सूर्य का प्रतिविम्ब पड़ता है। बता कितने सूर्य देखता है? नरेन्द्र बोले, दस प्रतिबिम्बित सूर्य और एक सत्य सूर्य।

ठाकुर फिर बोले—अच्छा एक पात्र तोड़ डालो, अब कितने? नरेन्द्र ने उत्तर दिया—नौ प्रतिविम्ब और एक सत्य सूर्य। ठाकुर पुनः बोले—इसी प्रकार नौ पात्र तोड़ डालो। अब क्या देखता है? नरेन्द्र न उत्तर दिया—एक प्रतिबिम्ब सूर्य और एक सत्य सूर्य। ठाकुर फिर बोले—इस पात्र को भी तोड़ दे, अब क्या रहा? नरेन्द्र बोले, एक सत्य सूर्य रहा। ठाकुर बोले ना रे, यह नहीं हुआ। एक रहा कि क्या रहा, उसे कौन बताएगा? जो बताएगा वही जो नहीं है।

तभी विद्यासागर महाशय को कहा था, सब उच्छिष्ट हो गया है, ब्रह्म उच्छिष्ट (झूठा) नहीं हुआ। अर्थात् मुख से जो बोला जाता है वही उच्छिष्ट हो जाता है। ब्रह्म को मुख से, अर्थात् वाक्य आदि द्वारा प्रकाशित नहीं किया जाता।

"ब्रह्मज्ञान और समाधि क्या हैं ये दोनों बातें इस दृष्टान्त से ठीक समझ में आ जाती हैं। उपनिषद् में भी ऐसा सरल और सुन्दर उदाहरण नहीं है।"

अब रात्रि दस।

मॉर्टन स्कूल, 11 अक्तूबर, 1922 ई०।
24 वां आश्विन, 1329 (बं०) साल।
बुधवार, कृष्णाष्टमी।

—※—

चतुर्थ अध्याय

भक्तजीवन संगठन में श्री म

मॉर्टन स्कूल की छत। अब संध्या होने ही वाली है। नित्यकार भक्तगण अनेक ही आए हैं। कोई कोई तो ऑफिस से सीधे ही आए हैं। आज बड़े अमूल्य की मठ में जाने की पारी थी। वे सरकारी कर्म करते हैं। श्री म ने मठ का विवरण उनसे अभी अभी सुना है। वे कुर्सी पर बैठे हैं, उत्तरास्य।

आज बृहस्पतिवार, 12 अक्तूबर, 1922 ई०, 25वां आश्विन, 1329 (बं०) साल, कृष्णा सप्तमी। संध्या के आलोक के आने पर आध घण्टा सबने ध्यान किया। बाहर हिम पड़ रहा है। अभी सब सीढ़ी वाले घर में आकर बैठे हैं। अब श्री म सत्संग का माहात्म्य कीर्तन कर रहे हैं।

श्री म (बड़े अमूल्य के प्रति)—साधुसंग बिना और कोई उपाय नहीं। अभी मठ में जाना खूब भला। और फिर उस ओर भी लक्ष्य रखना चाहिए, ऑफिस के काज में क्षति न हो। प्रथम स्टीमर से जाकर प्रथम वापसी स्टीमर से लौट आये।

बड़े अमूल्य—मेरा ऑफिस आजकल एक बजे होता है।

श्री म (आह्लाद से)—सब ठाकुर की इच्छा। यही जो सुविधा हुई वह भी उन्होंने ही की। प्रातः मठ में बैठकर एक घण्टा सुन्दर जप-ध्यान कर सकते हैं। यह क्या कुछ कम सुविधा हुई। इसका उपभोग करना उचित। ऐसे सब स्थानों पर जप-ध्यान करने और घर में बैठकर करने में बहुत अन्तर है। ऐसे स्थानों पर अग्नि दाउ-दाउ* करके जल रही है। तनिक कुछ करने से ही

*दाउ-दाउ=अग्नि जलने का शब्द।

चैतन्य हो जाता है। इन सब स्थानों पर साधुओं ने कितना साधन भजन किया है, कितने प्रकार से क्रन्दन किया है उनके लिए। तत्पश्चात् दर्शन। अब भी चल रहा है, यही सब। स्वामी जी, राखाल महाराज, बाबू राम महाराज, हरि महाराज आदि साधुओं ने कितनी 'डाक डाकी' (पुकार की) है, वहां। अब भी तारक महाराज रह रहे हैं। मठ पवित्र हो गया है—महातीर्थ।

"और भी एक महातीर्थ है—दक्षिणेश्वर। पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ तीर्थ-स्थान। भगवान नरदेह में वहां तीस वर्ष थे। ठाकुर का लीला-स्थल दक्षिणेश्वर। प्रथम साधन, फिर नाना रूपों में ईश्वर के संग दिव्य विलास और अन्त में भक्त संग प्रेमास्वादन—इन सब की ही लीला-भूमि दक्षिणेश्वर। ठाकुर कहते थे, 'मैं पंचवटी में धरती पर पड़ा रहता, दिनों-दिन कितना क्रन्दन किया है, जगदम्बा-दर्शन के लिए। सांप ऊपर से चला जाता, होश नहीं। तब मां का दर्शन पाया...बातें की, तब शांति हुई।'

"मठ का और दक्षिणेश्वर का सब कुछ खूब छानबीन करके देखना चाहिये—वृक्ष लता तक। सारी छवि मन में अंकित कर लो। तभी तो ध्यान के समय वही छवि मन में उठेगी। छोटे से एक पुष्प वृक्ष की बात स्मरण होते ही सम्पूर्ण छवि मन में आ जायेगी संग-संग। तब क्रमश: ठाकुर का स्मरण होगा और मां काली का। जिन्हें नित्य किंवा प्राय: ही जाने की सुविधा नहीं है उन्होंने यदि भली प्रकार देख रखा हो तो घर बैठे हुए ही मन को उन समस्त महातीर्थों पर भेज सकते हैं, अनायास में। मैं स्वयं भी वही करता हूँ। ठाकुर का महावाक्य है—मन जहां तुम भी वहां।"

श्री म (भक्तों के प्रति)—साधु मात्र ही नारायण। जभी सबको ही श्रद्धा करना उचित। सबके पास बैठना चाहिये और उनकी बात सुननी चाहिये। किन्तु चलना होगा एकजन के आदेश से—श्री गुरु के। काज करना उनके आदेशानुसार। नहीं तो चार-पांच जनों की बातों पर चलने से सब गोलमाल हो जायेगा। नाना मुनियों के नाना मत। किन्तु सब साधुओं पर ही श्रद्धा-भक्ति और सामर्थ्य अनुसार सेवा करनी चाहिये।

श्री म (रमेश के प्रति)—तब उनके 'श्रोण्डारे', ठाकुर कहते थे। सब उनके हाथ में है। जो खूब निकट रहते हैं वे सब देख सकते हैं। जैसे कठपुतली का नाच। जो निकट बैठे हैं वे देख पाते हैं कि अन्य एक जन पकड़ कर नचा रहा है। जो दूर हैं वे सोचते हैं पुतली आप ही नाच रही है। वैसे ही सब मनुष्य जैसे काठ की पुतलिएं हैं। सब वे करवा रहे हैं, हृदय में बैठकर। मनुष्य सोचता है—मैं कर रहा हूं। जो उनके निकट गये हैं और उनका दर्शन लाभ किया है, वे उनका हाथ देख पाते हैं। "यन्त्रारूढानि मायया।" (गीता 18:61)

जनैक भक्त—ध्यान करने बैठने पर मन नाना दिशाओं में बिखर जाता है। अब स्थिर कैसे हो ?

श्री म—अभ्यास करते करते होता है। एक दिन में ही क्या मन स्थिर हो सकता है? वासनाएं सर्वदा बुलाती रहती हैं। तब भी यदि कोई मन को स्थिर करना चाहता है तो उसका उपाय है। भगवान ने जो बोला है वह पालन करना चाहिए, अन्ततः चेष्टा करनी चाहिये। अभ्यास और वैराग्य द्वारा होता है। गीता में है—"अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।" (गीता 6: 35) अभ्यास करने से पहले चाहिए दृढ़ संकल्प—resolution 'मैं करूँगा ही', इस प्रकार की प्रतिज्ञा। तब फिर सवेरे दोपहर और शाम को बैठना चाहिये, ठीक समय पर। आज इस समय, कल उस समय करने से नहीं होगा। एक आदर्श स्थिर करके उसमें बिखरे हुए मन को धैर्य से समेटकर लगाना चाहिए। मन है चंचल, बालकवत् भागना चाहता है। खूब यत्न के साथ बार-बार चेष्टा करके बिठाना चाहिये। इसे ही 'अभ्यास' कहते हैं। और वैराग्य माने सत्-असत् विचार। ईश्वर सत्य और सब अनित्य। देह जो इतनी प्रिय है, यह भी अनित्य—यह विचार करना चाहिये। कब देह चली जाएगी यह निश्चय नहीं है। जन्म के समय* जो प्रतिज्ञा करके आया हूं कि उनका भजन करूँगा,

---

*पूर्वयोनि सहस्राणि दृष्ट्वा चैव ततो मया।
आहारा विविधा भुक्ता: पीता: नानाविधा: स्तना: ॥
जातश्चैव मृतश्चैव जन्म चैव पुन: पुन:।
यन्मया परिजनस्यार्थे कृतं कर्म शुभाशुभम् ॥

वह प्रण पालन करना चाहिए। और वेद तथा अवतार कहते हैं कि मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य है इसी शरीर में ईश्वरदर्शन करना। मैंने उसके लिये किया ही क्या है ? यह सब चिन्ता करनी चाहिए।

"और एक उपाय है। प्रथम मन को मठ में भेज देना चाहिये। मठ के घर-द्वार, वृक्ष-लता, मन्दिर प्रभृति में वह घूमता रहे। धीरे धीरे ध्यान की वस्तु में, आदर्श में—जैसे ठाकुर में, बिठा देना चाहिये। कभी सोचना चाहिये साधुओं के संग बैठा हुआ हूं, वे भी ध्यान कर रहे हैं, मैं भी ध्यान करता हूँ, ध्यान माने बाहर की नाना वस्तुओं से मन को उठाकर आदर्श पर, ध्येय वस्तु पर लगाना।

"एक जन सितार सीखता है। प्रथम तो बिल्कुल बेसुरा होता है। अंगुली ठीक पड़ती ही नहीं तारों पर। एक को पकड़ने लगता है दूसरी पर हाथ जा पड़ता है। दृढ़ संकल्प हो तो यही बेसुरा भाव कट जाता है, क्रमशः। तब रात दो बजे भी बैठकर बजाओ तो ठीक बजेगी अन्धकार में भी।"

एकाकी तेन दह्येऽहम् गतास्ते फलभोगिनः।
अहो दुःखोदधौ मग्नो न पश्यामि प्रतिक्रियाम्॥
यदि योन्याः प्रमुच्येऽहं तत्प्रपद्य महेश्वरम्।
अशुभक्षयकर्तारं फलमुक्तिप्रदायकम्॥
यदि योन्याः प्रमुच्येऽहं तत्प्रपद्ये नारायणम्।
अशुभक्षयकर्तारं फलमुक्तिप्रदायकम्॥
यदि योन्याः प्रमुच्यामि तद्ध्यायेऽहं ब्रह्म सनातनम्। —गर्भोपनिषद् 4

मैंने सहस्र सहस्र योनियों में भ्रमण किया है। नानाविध आहार और स्तन्य दुग्धपान किया है। जन्म के बाद मृत्यु, उसके पश्चात् फिर जन्म पुनः पुनः पाया है। परिजनों के लिए जो समस्त शुभ और अशुभ कर्म किये उन सबके कर्मफलों से मैं अकेला ही दग्ध हो रहा हूं। कर्म के फलभोगी कुटुम्बी सकल ही मुझे छोड़कर चले गए हैं। हाय, अब मैं महादुःखसागर में निमग्न हूं। परित्राण का कोई भी पथ नहीं मिल रहा। यदि इस बार योनि से मुक्त हो सकूं तब अशुभ विनाशकारी मुक्तिदाता महेश्वर की शरण निश्चय ही लूंगा, नारायण की शरण निश्चय ही लूंगा, ब्रह्म सनातन का ध्यान निश्चय ही करूंगा।

डाक्टर कार्त्तिक—मनुष्य इच्छा करने से ही क्या व्याकुल हो सकता है, ईश्वर के लिए ?

श्री म—व्याकुलता, ईश्वर लाभ की तीव्र इच्छा, ये क्या वे हमारी इच्छा से देंगे ? यह बात नहीं। उन्हें जो अच्छा लगता है वही करते हैं। फिर भी हमें चेष्टा करनी चाहिए और यह प्रार्थना—पिता, मुझे यह बोध करवा दो कि मैं तुम्हारा पुत्र हूं। वे हमारी इच्छा से करने जाएं तो उनका सब गड़बड़ हो जाएगा। वे समस्त विश्व को ही अपनी इच्छा से individual को भी, चला रहे हैं, और फिर एक व्यक्ति को भी, चला रहे हैं । और फिर चींटियों की गतिविधि भी उनका ही काज है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—विकार (प्रलाप) का रोगी क्या नहीं चाहता ? बोलता है, एक मटका ठण्डा जल पीने को दो, एक थाल पान्ताभात (जल में रखा हुआ ठण्डा बासी भात) खाने के लिए दो। किन्तु कोई भी कुछ नहीं देता। उससे दोनों को ही विपद है। कविराज बैठा हुआ गुड़गुड़ तम्बाकू पी रहा है। मानो कोई भी बात उसके कान में नहीं जा रही। आत्मियों में से यदि कोई कहता है, "महाशय, मटका न सही थोड़ा सा जल तो दे दो। हाय ! कैसे मांग रहा है," तो झट डांट देता है, "नहीं तुम उस विषय में क्या जानो। जिससे भला होगा, वही मैं करूँगा।" एक बिन्दु जल भी नहीं दिया।

"बेटे ने मां को पकड़ लिया। पतंग खरीदने के लिए पैसे दो। खाता नहीं, रोता है और अछाड़-पछाड़ खाता है। मां आती है किन्तु पैसे देने का नाम तक भी नहीं लेती। उल्टा धम-धम करके पीठ पर कई मुक्के धर देती है। क्यों ? मां जानती है कि ना इससे पुत्र का अनिष्ट होगा। घर की छत टूटी हुई है। पतंग उड़ाने जायगा तो गिरेगा और हाथ पांव टूटेंगे।

"जिससे हमारा मंगल होगा ईश्वर वही करते हैं। उनके कार्यों की criticism (समालोचना) करना उचित नहीं है। वैसा करना है एकदम foolishness (मूर्खता)। वेद कहता है, ईश्वर सर्वमंगलमय।"

श्री म (डाक्टर कार्तिक के प्रति)—पूर्व जन्म के संस्कार—ये तो हुए व्याकुलता का general rule (साधारण नियम)। जितना बड़ा संस्कार, उतनी ही व्याकुलता। परन्तु कृपा की बात है स्वतन्त्र। ठाकुर ने कहा था—"एक जन ने एक बोतल शराब पी ली, किन्तु उसे कुछ भी नहीं हुआ। और एकजन को पूरा ग्लास पीने से पहले ही नशा चढ़ गया, पूर्णतः बेहोश हो गया। इसके मानें यही कि उसने रात भर शराब पी है। जभी अब एक ग्लास से ही बेहोश हो गया है।

श्री म—(दुर्गापद के प्रति)—पूर्व जन्म के संस्कार रहने से इस जन्म में शीघ्र होता है। भगवान् जो सद्‌बुद्धि देते हैं, यह उनकी कृपा है। बाकी स्वयं कर लो, वे यही चाहते हैं। अनेक तपस्या के फल से लोग साधुसंग करना चाहते हैं। मठादि में जाते हैं। जो नाना काज के भीतर भी मठ में जाता है, समझना होगा कि वह संस्कारवान है। ऐसे भक्तों के लिए ठाकुर, मां के निकट रो-रोकर प्रार्थना करते—मां इनकी मनोवासना पूरी करो। भक्तों पर कितनी कृपा थी उनकी। ठाकुर की सेवा ठीक नहीं हो रही, इससे हो सकता है कि माँ अप्रसन्न हो। किन्तु ठाकुर उनकी ओर से प्रार्थना करते हैं, मां इनको कितना काज है; कितने झंझट हैं, संसार में। इनको दोषी न जानना। उन पर कृपा करना, मां।

श्री म कुछ क्षण चुप रहे। फिर बातें कर रहे हैं।

श्री म (शुकलाल के प्रति)—कोल्हू का बैल नहीं देखा आपने? घूमते घूमते एक-एक ग्रास खा लेता है। (सहास्य) गृहिणी को कितना काम। भात रांधना, खिलाना, लड़के को स्तन पिलाना, बासन मांजना, घर लीपना और फिर दीप देना; कितने ही तो काम। इस बीच भी आकर पति को अल्प हवा कर जाती है। घर के सैंकड़ों झंझटों के भीतर भी जो साधु संग करते हैं वे ही धन्य हैं। साधुसंग, साधुसंग। इसके बिना और उपाय नहीं।

कोई कोई भक्तगण आफिस में कर्म करते हैं। भोर वेला मठ में जाकर अधिक समय ठहर नहीं सकते। यही आक्षेप उक्ति सुनकर श्री म उन्हें सान्त्वना दे रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—प्रथम वासपी स्टीमर संभवतः 7/35 पर

है। जाना और आना, यह क्या कम बात है ? ठाकुर कहा करते, अमृतसागर का जल कलसी कलसो पोने से भी अमर हो जाता हैं; और तृण से बिन्दुमात्र पोने से भी अमर हो जाता है। जिन्हें अन्य कार्य है उनका रोज आकर, अल्प समय हो आना ही यथेष्ट है। दर्शन करने से भी कितना लाभ होता है।

(एक जन भक्त के प्रति)—पत्रपाठ हो जाय।

एक जन ने श्री काशी, विन्ध्याचल और प्रयाग के दर्शन किये हैं। उनका पत्रपाठ हुआ। और, एक साधु ने श्रीकन्याकुमारी से लिखा है। उनके पत्र का भी पाठ हुआ। उन्होंने लिफाफे के भीतर देवी का प्रसादी फूल और सिन्दूर भेजा है। तीर्थयात्रियों द्वारा भेजा हुआ देव-देवियों का प्रसाद भक्तगण मस्तक पर धारण और ग्रहण कर रहे हैं।

श्री म (सब के प्रति—(प्रसाद दर्शन, स्पर्शन और ग्रहण करना चाहिए। एक स्थान पर बैठे ही बैठे कितने ही तीर्थ आपने कर लिए, देखिए। और पुराण-पाठ श्रवण किया। भक्त के पत्र सब पुराण, ठाकुर कहा करते थे। वे स्पर्श करके जान सकते थे चिट्ठी भक्त की है या दूसरे की। भक्त की चिट्ठो होने पर खूब सुख्याति करते। औरों की चिट्ठो होतो तो परे फेंक देते—जैसे सांप देखने से भय होता है वैसे। अन्य लोगों की चिट्ठी में विषय की बात होती है। साधु-भक्तों की चिट्ठी पढ़ने से ईश्वर का उद्दीपन होता है।

"रात हो गई, उठा जाय," यह कहकर श्री म उठ गये। भक्तों ने भी प्रणाम करके विदा ली। अब दस।

(2)

अगले दिन शुक्रवार, सांझ पांच। चार तल की सीढी के घर में कुछ भक्त बैठे हैं। पास ही श्री म का कमरा। वे द्वार बन्द किए भीतर हैं। कुछ क्षण पश्चात् बाहर आकर हाथ जोड़कर कह रहे हैं; "नमस्कार, नमस्कार।" तत्पश्चात् द्वार के पास के डेस्क बेंच के पश्चिम प्रान्त में दक्षिणास्य बैठ गए।

श्री म (अन्तेवासी के प्रति)—कहिए, आज मठ का क्या संवाद है ?

अन्तेवासी—आज एक सज्जन ने महापुरुष महाराज से दीक्षा मांगी थी। उन्होंने उसे इस प्रकार उपदेश दिया।

महापुरुष (दीक्षाप्रार्थी के प्रति)—तुम दीक्षा-दीक्षा करते हो। अरे बाबा, मेरे द्वारा कान में फूँक मारकर एक शब्द कह देने से ही क्या फिर ईश्वर-दर्शन हो जाएगा। मां से निवेदन करो। क्रन्दन करो मां के निकट; प्रार्थना करो मां के पास। उनके पास जाकर मांगने पर कोई भी खाली हाथ लौटकर नहीं आया अभी तक। उनसे तो निवेदन नहीं करते हो, खाली मुझ से कहते हो दीक्षा दो। अरे साधु के वाक्य सब ही दीक्षा हैं। व्याकुल होकर क्रन्दन करो, मां के पास—मां, मेरी अज्ञानता दूर करो, क्षुद्रता नष्ट कर दो।

दीक्षार्थी सम्प्रति विपत्नीक हुए हैं।

महापुरुष (दीक्षार्थी के प्रति)—अब तुम्हारा महासौभाग्य है। ठाकुर ने कृपा की है। अब सब क्षुद्र विषयों से मन को उठाकर मां को पुकारो, पूरे प्राणों से। मनुष्य समझते हैं—दो चार रुपए, स्त्री-पुत्र—ये सब बहुत बड़ी चीजें हैं। किन्तु वे जब बृहत् का आस्वाद पाते हैं तब समझते हैं कि ये सब अति तुच्छ हैं। तुम अब यह तुच्छ वस्तु छोड़ो, भूल जाओ सब क्षुद्रता। बृहत् की चिन्ता करके बृहत् हो जाओ, परमानन्द लाभ करो।

श्री म (साह्लाद, सब के प्रति)—वाह, कैसी अमूल्य बातें ! एकदम चैतन्य कर देती हैं। (अन्तेवासी के प्रति) और कुछ बात हुई ?

अन्तेवासी—और एक भक्त श्री कन्याकुमारी जाएंगे। उन्होंने श्री महापुरुष महाराज से आशीर्वाद के लिए प्रार्थना की। इसी प्रसंग में उनसे यह सब वार्तालाप हुआ।

महापुरुष (तीर्थयात्री के प्रति)—तीर्थ दर्शन, यह बहुत अच्छा है। इससे भगवान् का उद्दीपन होता है। किन्तु आजकल तीर्थस्थान मानो व्यवसाय के स्थान बन गए हैं। रुपया-पैसा, जोर जबरदस्ती। और विग्रह रहते हुए वहां देवता भी रहता हो, ऐसा नहीं होता।

कैसे कुत्सित मन पुरोहितों के होते हैं। कितनी कलुषित वासनाएं उनके मन में हैं। ऐसे लोग वहां पूजा करते हैं। क्या फिर देवता वहां रह सकते हैं ?

"ठाकुर एक बार कालीघाट दर्शन करने गए थे। कभी-कभी आया करते थे। मन्दिर में प्रवेश करके देखा, मां की मूर्ति है, किन्तु मां नहीं है। एक बदसूरत कुत्सित-चित ब्राह्मण मां को पूजा कर रहा है। और फिर पूजा में योगदान दे रही है एक स्त्री। वह तो उससे भी बढ़कर—वैसा ही मलिन मन। यह चित्र देखकर ठाकुर का मन बहुत खराब हो गया। सोचने लगे, आया तो था मां को देखने और बिना देखे ही चला जाऊं, यह नहीं होगा। अच्छा, गंगास्पर्श करके आता हूं। तब फिर ज्यों ही ठाकुर आदि गंगा के घाट पर गए त्यों ही देखा कि मां गंगा के ऊपर क्रीड़ा करती हुई टहल रही हैं।

"महाराज (स्वामी ब्रह्मानन्द) गए थे श्री तिरुपति दर्शन करने। वहां मन्दिर में श्री बाला जी की पूजा होती है—विष्णुमूर्ति की। किन्तु महाराज ने देखी देवी मूर्ति। विस्मित होकर जिज्ञासा करने पर पता लगा पहले वह देवी मन्दिर ही था। रामानुज आचार्य ने विष्णु स्थापित किए थे।

"पुरी में जगन्नाथ का मन्दिर खूब जाग्रत स्थान है। लक्ष शालग्राम के ऊपर महादेव बैठे हैं। मां ठाकुरण को यही दर्शन हुआ था मन्दिर में। मैं निज तो कुछ देख नहीं पाया, वहां पर। प्रथम जब गया था तो संग में महाराज (स्वामी ब्रह्मानन्द) थे। गर्भ मन्दिर में घुसते ही उन्हें खूब उच्चभाव हो गया। मेरा मन भी प्रेम भक्ति में खूब ऊंचा उठ गया। उसके पश्चात् क्या हुआ यह कह नहीं सकता।"

श्री म स्थिर हैं, प्रसन्नवदन, मुख में कोई बात नहीं। वे क्या ठाकुर के इस महावाक्य की भावना कर रहे हैं कि मैं ही जगन्नाथ। पन्द्रह मिनट पश्चात् संध्या का आलोक आ गया। तब ईश्वर चिन्तन करते हैं। प्रायः एक घण्टा बाद श्री म पुनराय बातें करते हैं।

श्री म (एक युवक के प्रति)—ब्रह्म माने बड़ी वस्तु। बृह धातु से हुआ है। बृह् धातु का अर्थ है बृहत्। जभी ब्रह्म-दर्शन के माने

बड़ी वस्तु को देखना, छोटी मोटी वस्तु पर लक्ष्य नहीं—one who lives in eternity, not in time.

"ठाकुर को जभी 'शुभंकरी का घांघा'* अच्छा नहीं लगता था। कारण, यह सब छोटी वस्तुएं हैं—finite things. Time and space (स्थान काल) द्वारा सीमाबद्ध। इसमें उनकी प्रीति नहीं। असीम में उनका निवास—He lived in Eternity. असीम जभी उन्हें प्रिय।"

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—साकार दर्शन में रूप रहता है, जभी अल्प अहं भी रहता है। अहं लोप होने के बाद जो दर्शन होता है, वह मुख से बोला नहीं जाता।

"ठाकुर सर्वदा बृहत् को देखते। तब छोटा मोटा सब लोप हो जाता। तब किसी भी गंडी (सीमा) में नहीं ठहर सकते थे। स्थान, काल, नाम, रूप, जाति—ये सब हैं गंडी। केशवसेन के घर खाकर आए, तब कहते हैं अच्छा खिलाया। किसके हाथ से खाया, इस ओर ख्याल नहीं। अन्य समय ब्राह्मण का पकाया चाहिए पवित्र भाव में, तभी खा सकते थे। एक एक अवस्था में एक एक प्रकार से होता।

श्री म (सहास्य, भक्तों के प्रति)—नकुड़ बोस्टम (नकुल वैष्णव) हमारे मुहल्ले के थे। ठाकुर बाड़ी† के सामने दुकान थी। वे ठाकुर को बातें बतलाया करते। ठाकुर की वयस थी तब सत्रह-अट्ठारह। झामापुकुर अंचल में पूजा किया करते। चावल केला अंगोछे में बाँधकर घर जा रहे हैं। मुहल्ले के लोग पुकार घर बुला लेते, "ओ बामन ठाकुर, सुन, सुन, एक गाना सुनाता जा।" ठाकुर बैठकर गाना सुनाते हैं। उधर वे सब केले वेले खा डालते, या निकाल लेते। तब फिर जाते समय ठाकुर अंगोछा झाड़कर हंसते-हंसते चले जाते।

---

*शुभंकर द्वारा लिखित बंगाल में प्रचलित गणित के गुरों की पुस्तक। Arithmetical formulae.

†ठाकुर बाड़ी = श्री म का वास स्थान—13/2, गुरुप्रसाद चौधरी लेन कलकत्ता। अब नाम है—'कथामृत भवन।'

श्री म (अन्तेवासी के प्रति)—ब्रह्म क्या है, ठाकुर ने एक सुन्दर दृष्टान्त देकर समझाया था। बोलते, एक समुद्र की कल्पना करो। सब जल ही जलमय। और मनुष्य जलपूर्ण कलसी है जो उसी सागर में तैर रही है। किसी प्रकार कलसी फूट गई है। तब कलसी का जल और सागर का जल एक हो गया। तब सब सागर। सच्चिदानन्द सागर। यही ब्रह्म*।

इस कलसी को ही अर्थात् उपाधि को ही, separate individuality को ही तोड़ने के लिए ये सब जप-तप आदि हैं। वही टूट जाये तो सब ब्रह्म। 'आमि मोले घूचिबे जंजाल'—मैं के मरने पर सब जंजाल समाप्त हो जाएगा।

एक अवस्था में बोला करते, 'सब मोम का बाग देख रहा हूं। वृक्ष-लता फल, बाड़ सब मोम के। माली भी मोम का। उस समय जगत् को नाम, रूप में देखा करते। अल्प नीचे उतरते हुए ब्रह्म और जगत् इन दोनों के सन्धि-स्थल में रहकर यह बात बोलते। नाम रूप तो देखते किन्तु सब सच्चिदानन्दमय। मन सच्चिदानन्द में जड़ा हुआ रहता है, चेतन का न्यावा† लगा रहता। चेतन ने आकर्षित कर रखा है। वहां से अचेतन का अर्थात् जगत् का प्रथम रूप, यही नाम रूप देखा करते—वृक्ष-लता, फल, बाड़। यह ही था उनका normal state (स्वाभाविक भाव), जिस समय भक्तों के संग लीला किया करते थे।

"अल्प कुछ उद्दीपन हुआ, झट Whole (ब्रह्म) के ऊपर दृष्टि चली गई। बोलते, मौन्युमेंट के ऊपर चढ़ने पर नीचे का सब समान, सब एक।"

"और एक अवस्था में, मां और पुत्र। बोलते, 'प्रतिज्ञा करके कहता हूं, आई हैं।' तब हनुमान को बातें कहकर निजी अवस्था का वर्णन करते। हनुमान कहते हैं, 'हे राम, तुम प्रभु मैं दास।' और फिर कभी कहते हैं, 'तुम पूर्ण, मैं अंश।' और एक अवस्था में कहते, 'तुम ही मैं।' जब तक अहंकार है तब तक, 'प्रभु-दास', 'पूर्ण-अंश'। अहंकार लोप होने पर, तुम—एक।"

---

*जल में कुंभ, कुंभ में पानी, फूटा कुंभ जल पानी समानी। —कबीर

†न्यावा =Jaundice, पीलिया रोग में सब पीला ही दीखता है।

एक जन भक्त—हमारे लिए उपाय क्या ? हम गृही, मन के संग बस नहीं चलता।

श्री म (सस्नेह)—साधुसंग, साधुसंग, साधुसंग। ठाकुर कहते थे, 'साधुसंग बिना उपाय नहीं।' और प्रार्थना करना व्याकुल होकर, रो-रो कर-दर्शन दो, यही कहकर। और कभी-कभी निर्जनवास। यही है उनका prescription (व्यवस्था-पत्र)।

रात्रि प्रायः दस। श्री म सीढी से सटे हुए खड़े हैं। पास में हैं एक भक्त हाथ में लालटेन लिए। सब प्रणाम करके सीढियों से नीचे उतर रहे हैं।

(3)

सोमवार, 16 अक्तूबर 1922 ई०, कृष्णा एकादशी। अपराह्न चार। मॉर्टन स्कूल की चारतल की सीढ़ियों के घर में श्री म भक्तों के संग बैठे हैं। यहां के अनेक भक्त—छोटे जितेन, विनय, राखाल, छोटे नलिनी, तारक, मनोरंजन, जगबन्धु प्रभृति दो दिन मठवास करके लौट कर आए हैं। ठाकुर के भक्त कालीपद घोष महाशय के पुत्र वरेन बाबू का देहत्याग हुआ है रेल दुर्घटना में। इसी उपलक्ष्य में ठाकुर का विशेष पूजापाठ और भण्डारा हुआ है। मठ में बहुत कम लोग हैं। जभी स्कूल बाड़ी* के भक्तों को संवाद देना पड़ा। वे उत्सव करके लौटे हैं। श्री म ने मठ की सब बातें सुनीं। अब साधुसंग-माहात्म्य की कीर्त्ति वर्णन कर रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ये लोग महासौभाग्यवान। कितने जन्म की तपस्या हो तो ऐसा सौभाग्य होता है। साधुसंग में मठवास और फिर सेवा—ठाकुर की कृपा होने पर ही यह संभव। उनकी कृपा हुई है इसी कारण तो ऐसी सद्बुद्धि हुई है। इन्होंने स्वर्ण की खान का आविष्कार कर लिया है। केवल यही नहीं, खान में उतर कर फिर काज भी कर रहे हैं। हथौड़ी हाथ में, धमाधम काम चल रहा है। उद्देश्य सोना निकालना।

"आना जाना करने से अपना जन बन जाता है।

*मॉर्टन स्कूल=श्री म का शिक्षा केन्द्र, 50 नम्बर अम्हर्स्ट स्ट्रीट, कलकत्ता।

और फिर मिलकर काज करने से घर का ही व्यक्ति हो जाता है—वहां का ही मैम्बर, अन्यत्र रहने पर भी। ठाकुर बोलते, मन जहां, हम भी वहां। मन को मठ में रखकर अपने घर रहते हुए भी वहां का हो मेम्बर होता है। अल्प कर्म बाकी है—वह हो जाने पर पूर्णतया मठ का मैम्बर हो जाता है। तब whole time man—सर्वत्यागी साधु। फिर कुछ दिन पश्चात् ही काली पूजा है। काली पूजा के दिन मठवास, बड़ी तपस्या का फल है। उस दिन सारी रात ईश्वर चिन्तन करना चाहिये। उससे चैतन्य हो जाता है। इस पूजा के पीछे कितनी बड़ी tradition, पुण्यस्मृति है। ठाकुर इस दिन मुहुर्मुहुः समाधिमग्न हो जाया करते थे।"

एकजन भक्त—मठवास के समय कोई व्रत उपवास आदि नियम पालन करने की आवश्यकता है क्या ?

श्री म—बाह्याडम्बर की आवश्यकता क्या ? शरीर रक्षा करके धर्म करना चाहिये। जितना सहे उतना करे। उद्देश्य, कैसे उनमें मन रहे, कैसे भक्ति लाभ हो। 'मध्यपंथा' लेना। गृहियों को शास्त्रविधि मानकर चलना उचित है। अवतार आकर सोधा पथ दिखा देते हैं, नूतन पथ जो कालोपयोगी होता है। वे शास्त्रविधि से पार। अवतार का आचरण और उनके महावाक्य ये सब हो शास्त्र होते हैं। ये सब पुरातन शास्त्र के नूतन भाष्य हैं। वे न आएं तो शास्त्र का मर्म आवृत रहता है। भक्तों के ऊपर कोई भी जबरदस्ती नहीं थी ठाकुर की। बोलते, 'रये शये करो,'—जितना सहन हो, उतना करो, किन्तु लगातार। सब कामों का ही उद्देश्य है, ज्ञानभक्ति लाभ करना, उनमें मन रखना। यह जिसके द्वारा हो वही करना।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—साधुसंग का माहात्म्य अनेक साधु भी नहीं समझ पाते। जभी अन्यत्र रहते हैं। जो समझते हैं वे कभी भी साधुसंग नहीं छोड़ते, साधु को भी साधुसंग दरकार। (सहास्य) ब्राह्म समाज के कोई कोई लोग समझते थे कि ठाकुर एक साधारण साधु हैं। इस पर योगेन स्वामी रुष्ट हो गए। ठाकुर सुनकर बोले, 'उनकी बातों से तुम उत्तेजित क्यों होते हो ?' तब फिर एक कहानी बोले। हीरे का एक टुकड़ा लेकर एक जन बैंगन वाले की दुकान

पर बेचने गया। उसने उसका दाम बोला, नौ सेर बैंगन। उसके पश्चात् कपड़े वाले की दुकान पर गया। उसने नौ सौ रुपये देने चाहे। 'और कुछ दाम बढ़ाओ—एक हजार रुपये दे दो,' हीरे वाले ने कहा। किन्तु कपड़े वाले ने उत्तर दिया, 'न महाशय, एक पैसा भी अधिक नहीं दिया जाएगा।' तब फिर जौहरी की दुकान पर गया। एकदम ही एक लाख रुपया दाम मिल गया। जभी 'जौहरी पहचाने हीरा' जैसा आधार वैसी बुद्धि।

"जौहरी होना हो तो उनके लिए सर्वस्व त्याग चाहिए। स्त्री-पुत्र, कन्या, धन-जन का बन्धन छिन्न कर सकने पर जौहरी बना जाता है। त्याग तपस्या कुछ भी तो नहीं, तो फिर हो कैसे? स्नेह ही बन्धन, स्नेह ही संसार।"

गदाधर आश्रम के महन्त स्वामी कमलेश्वरानन्द आये हैं, संग में दो भक्त। नित्यकार भक्त भी अनेक ही उपस्थित।

आज पहला कार्तिक 1329 (बं०) साल, 18 अक्टूबर, 1922; बुधवार, त्रयोदशी। अपराह्ण पांच।

मॉर्टन इन्स्टिट्यूशन। चारतल की सीढ़ी वाला कमरा। डैस्क बेंच पर दरी बिछी हुई है। श्री म पश्चिमप्रान्त में दक्षिणास्य बैठे हैं। कमलेश्वरानन्द जो श्री म के बाएं हैं। साधु और भक्तों का मिष्टीमुख हो जाने पर श्री म ईश्वरीय कथा कहने लगे।

श्री म (संगियों से प्रति)—गृहियों को सर्वदा ही साधुसंग दरकार हैं। रोग लगा है। मन में होता है कुछ साफ हुआ है, परन्तु झट फिर मेघ। संसार में रहने से मेघ उठेंगे ही। साधुसंग करो, मेघ कट जाएंगे। भय नहीं—ये सब बातें ठाकुर कहा करते।

"साधुसंग, निर्जनवास और रो-रो कर प्रार्थना—यह है उनकी व्यवस्था। कभी-कभी अवसर निकालकर निर्जन में चले जाने को कहा करते। (सहास्य) परन्तु जमाई के घर नहीं। (सबका हास्य)। जहां कोई दूसरा परिचित व्यक्ति न हो, ऐसे स्थान पर जाना चाहिए और सर्वदा प्रार्थना करनी चाहिये। प्रार्थना से बड़ा

शीघ्र काज होता है। ठाकुर स्वयं इसी पथ से गये थे कि ना जभी यह बात इतनी कही।

"मन साधुसंग में जाना नहीं चाहता। प्रथम जोर करके ले जाना चाहिये। रोख* करनी चाहिए—जैसे मैं नौकरी करता हूं, परिवार प्रतिपालन करता हूं, कितना कुछ ही तो करता हूं। वैसे ही मैं साधुसंग भी करूँगा। रोख चाहिए। लेदाड़ू (गोबर गणेश) का कर्म नहीं। प्रथम खूब कष्ट करके साधुसंग करना चाहिये। अन्त में सहज हो जाता है, अच्छा लगता है। यह जैसे एक नशा हो। तत्पश्चात् बिना किये रहा ही नहीं जाता—second nature (स्वभाव) बन जाता है।

"संन्यासी को स्त्रियों का संग त्याग करना चाहिए, स्त्रियों का चित्रपट तक भी नहीं देखना चाहिये, ठाकुर कहा करते। पश्चिम के एक साधु ने भी (Thomas A. Cempis, Author of the 'Imitation of Christ') यही बात कही थी—Give up the company of rich man, woman and youngman—धनी, कामिनी और युवक का संग त्याज्य। Richman (धनी) क्योंकि अनेक समय धनी की मन-तुष्टि के लिये मिथ्या बात में भी सम्मति देनी पड़ती है। जभी richman—धनी का संग त्याग करो। 'woman' (कामिनी) साधन-पथ का विघ्न है। और youngman (युवक) वाचाल होता है। तभी avoid woman and youngman कामिनी और युवकसंग भी त्याज्य।

"एकजन ने पंचवटी में एक दिन एक स्त्री भक्त के संग अधिक समय तक बातचीत की थी। ठाकुर ने तभी उसका खूब तिरस्कार किया। वैसे तो उस पर कितना प्यार था। ठाकुर स्वयं भी स्त्रीभक्तों के निकट अधिक समय ठहर नहीं सकते थे। वे जाना नहीं चाहतीं तो वे स्वयं खड़े हो जाते।

"स्त्री-संग से पतन होता है। हुआ भी है, ऐसी अनेक घटनाएं हुई हैं। शहर में साधुओं का अधिक वास करना उचित नहीं। Environment का influence (वातावरण का प्रभाव) मन के

*रोख—तेज, जिद्द, दृढ़ निश्चय।

ऊपर आ पड़ता है। जभी ठाकुर की व्यवस्था है कि निर्जन में रहकर, गोपने उन्हें पुकारो, ईश्वर गोपन-धन।

"और एक महाशत्रु है साधन पथ का—लोकमान्य। इसे ग्राह्य करने पर सब व्यर्थ हो जाता है। किसी ने तनिक जप-तप किया था। उससे लोकमान्य हुआ। बस उसका यहाँ तक ही था, इस जन्म में। और आगे बढ़ नहीं पाया। ठाकुर ने कहा था, बड़ी तेजी से, मिर्चों के छोंक की भांति 'छांटा मारि लोकमान्ये'—नाम यश को झाड़ू मारता हूं, उनका यह महावाक्य स्मरण करना इस दुर्जय रोग की महौषध है।"

श्री म (सब के प्रति)—ठाकुर की सिद्ध की अवस्था हुई Eighteen-fifty-eight (1858 ई०) में। तब केवल छटपटाते। बोलते, 'मां, चारों ओर कामिनी कांचन। मेरा शरीर जला जा रहा है। और सहन नहीं हो रहा। लगता है, देह अधिक रख नहीं सकूंगा।' मां ने प्रबोध देकर बोला, 'सबर करो बेटा। शुद्ध सत्त्व भक्त सब आयेंगे। उनके संग में तुम शांति पाओगे। अन्तरंग भक्तों ने आना आरम्भ किया, इसके इक्कीस बाईस वर्ष पश्चात्। इतने दीर्घकाल तक उन्हें प्रतीक्षा करनी पड़ी। मथुर बाबू कभी-कभी पूछते, बाबा, कब आयेंगे तुम्हारे अन्तरंग भक्त? इतने दिन अन्य कुछ भक्त आये, किन्तु ठहर नहीं सके। ठाकुर परिहास करके बोलते, भूत का संगी खोजने की न्याईं तब मेरी अवस्था थी। एक भूत संगी खोज रहा था। इधर अपघात मृत्यु के बिना भूत नहीं बनता। ज्यों ही किसी की मृत्यु होती, त्यों ही भूत जा हाजिर। परन्तु कुछ ही क्षण बाद देखता उसका फिर जन्म हो गया है। मेरी अवस्था ठीक ऐसी ही हुई थी। कोई आता तो सोचता, यही शायद आया है। किन्तु तत्पश्चात् ही वह चला जाता।

श्री म (सगी के प्रति)—कामिनी कांचन का त्याग गृहियों के लिये मन से ही बाहर से नहीं। साधुओं का बाहर-भीतर दोनों ही, ठाकुर बोलते। गृहियों का मन से त्याग और क्रमशः। क्योंकि एकदम तो कर नहीं सकता। प्रकृति रोके खड़ी है। तभी तो धीरे-धीरे करने को कहते। दूसरी क्लास के एक लड़के को दसवीं क्लास में

बिठा देने से क्या वह चल सकेगा ? बल्कि इससे कुफल होगा, उसका अपकार होगा। जभी तो गृहियों के लिये क्रमशः त्याग, एकदम नहीं। यह जैसे है केले के भीतर कुनीन देनें की व्यवस्था। समय पर सब त्याग होगा।

"ठाकुर का और एक महावाक्य है—तुम ईश्वर को पुकारो। तुम्हें जो चाहिए वह सब वे देंगे। वे सब जानते हैं—क्या दरकार है। यही देखो, तुम्हारे जीवन से पहले ही कितना आयोजन करके रखा है—जल, वायु, चन्द्र, सूर्य, मेघ, अग्नि, शस्य और फिर मातृस्तन में दुग्ध और पिता माता का स्नेह। जो विद्या माया का आश्रय लेंगे उनके लिए साधुसंग, देवालय, शास्त्र, मठ, आश्रम, तीर्थ। जिसके लिये जहां जो आवश्यक, सब पहले से ही तैयार है।

"रुचि और प्रकृति देखकर ठाकुर एक-एक जन के लिए एक-एक प्रकार की व्यवस्था किया करते थे। एक पथ सबका नहीं। भिन्न लोगों के भिन्न पथ। जभी तो (गुरु) तीन जनों को तीन प्रकार से कहते हैं। एक जन से कहते हैं, तुम कुछ दिन तीर्थ और तपस्या कर आओ। एक जन से कहते हैं, तुम जैसे हो वैसे ही गृह में रहो। और एक जन को अपने पास रख लेते हैं कि सेवा करे। क्यों ऐसी भिन्न व्यवस्था हुई, प्रकृति जो भिन्न है। किन्तु गन्तव्य है सबका ही एक, ईश्वर। एक ही जामा सबके शरीर पर नहीं आता।"

एक भक्त—झामापुकुर में ठाकुर कहां ठहरते थे ?

श्री म—सुना है अब जहां हेयर प्रेस है, वहीं। बेचु चैटर्जी की स्ट्रीट में, सिटी कालेज से तनिक पहले, रास्ते के दाईं ओर। बाईं ओर है बनियों का घर। उससे कुछ घर परे ही ठाकुर के बड़े भाई की टोल (संस्कृत पाठशाला) थी। अब जहां चने-मुरमरे की दुकान है।* जहां रहते थे वह खपड़े का घर था। अब वे सब पक्के मकान हो गये हैं। ठनठनियां वाली मां काली के पास रोज जाकर बैठा करते।

श्री म क्या सोच रहे हैं ?

*अब वहां राधाकृष्ण का मन्दिर है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—कल वही कालीपूजा है। कल जो मठ में रात्रिवास करेंगे और पूजा दर्शन करेंगे वे तपस्या में बीस वर्ष आगे बढ़ जायेंगे। कल कैसा दिन! इसी दिन मुहुर्मुहुः समाधि होती थी ठाकुर की।

"एक ही बात ठाकुर की है—साधु संग। And the rest will take care of itself—बाकी सब अपने आप होगा।"

जनैक युवक—योग किसे कहते हैं? इसके सम्बन्ध में ठाकुर क्या कहते थे?

श्री म—अति संक्षेप में बताया था—योग जैसे "निक्ति का कांटा।" ऊपर के कांटे के संग नीचे के कांटे का मिलन। और एक दृष्टान्त दिया था—जैसे प्रदीप की शिखा—निर्वात-निष्कम्प-प्रदीपवत्। परमात्मा के संग जीवात्मा का मिलन। और बोला था, "योग—जैसे पक्षी अण्डे सेता है।" चक्षु शून्य शून्य, मन सारा ही अंडों पर। अन्य समय मनुष्य देखते हो भय से उड़ जाता है। अब अंगुली से धक्का दो तो भी नहीं हिलता। यह है राजयोग की बात। ज्ञानयोग, भक्ति योग, कर्म योग ये भी योग हैं। जिसके द्वारा उनके संग युक्त हुआ जाता है वही योग है। ज्ञान, भक्ति, कर्म द्वारा उनके संग युक्त हुआ जाता है। इन सब का उद्देश्य भी यही है—भगवान के साथ, मिलन।

"रामायण में एक दृष्टान्त है—भरत। राजधानी छोड़कर नन्दी ग्राम में जाकर वास किया, कुटीर में। कम्बलासन पर बैठे हैं और मुख में अहर्निश राम राम। सुमन्त, वसिष्ठ के जाने पर एक घण्टा प्रायः राज्य की बातों की आलोचना होती, बाकी समय राम राम—यही महामंत्र मुख में। "राम-विरही भरत" यह भी योग का दृष्टान्त।"

श्री म (युवक के प्रति)—अवतार आने से व्याकुलता बढ़ जाती है। कैसे उनका दर्शन हो, इसके लिये कोई कोई व्याकुल हो जाता है। और भी एक प्रधान काज है अवतार का। "वे अव्यक्त और व्यक्त का योगसूत्र," connection दिखा देते हैं। अवतार के बिना हुए यह बूझा नहीं जाता। ठाकुर कहते थे, कल्पना करो;

दिगन्तव्यापी मैदान है, उसके बीच एक दीवार है। दीवार में एक छेद है। इस छेद द्वारा देखो उस ओर का मैदान और इस ओर के बाड़ी घर लोकालय। एक जन (श्री म) से पूछा (ठाकुर ने) : बतलाओ। तो यह छेद क्या है? भक्त नें कहा, "वही तो आप।" सुनकर खूब खुश हुए। यही छेद ही अवतार। When he lives in time, जब जगत् की ओर दृष्टि होती है तब ठीक मानो मनुष्य। कितनी चिन्ता जगत् के लिये, सब के कल्याण के लिये। आहार, विहार, वाणी, स्नेह प्यार सब मनुष्यवत्। जरा परे ही समाधिस्थ,—Now he lives in eternity तब इधर को कोई होश नहीं—सच्चिदानन्द सागर में विलीन।

स्वामी कमलेश्वरानन्द और संगियों ने विदा ली। संग संग एटोर्नी वीरेन और कुछ भक्तों नें प्रवेश किया। अधिक प्रश्न करने से श्री म का कथा-प्रवाह बन्द हो जाता है। वे कहा करते, रसभंग हो जाता है। तब फिर शास्त्र-पाठ, किंवा गाना होता। आज भी वही हुआ।

श्री म (भक्तों के प्रति) —क्या हमारा गायक-फ्रेण्ड आज कोई भी नहीं है। (अन्तेवासी के प्रति) गाइये न आप ही एक।

अन्तेवासी वैसे गायक व्यक्ति नहीं हैं। अपने भाव में कभी कभी गाते हैं। आज श्री म नें छोड़ा नहीं। अगत्या वे गा रहे हैं।

गान- अकूल भवसागर वारि पार होबि के आय रे आय।
अन्ध आतर अनाथ निराश्रय पापी तापी आछो के कोथाय॥
आमि उच्च आशाय पाल तुले दियेछि (तरी)
हरि-कृपा पवने वेगे धाय।

(भावार्थ—आओ रे आओ, जो अकूल भवसागर पार होना चाहते हैं। अन्धे, दुःखी, आतुर, अनाथ, निराश्रय, पापी तापी जो जहां भी हो, आओ। मैंने उच्च आशय से पाल उठा दिया है। हरि की कृपा पवन से नाव प्रबल वेग से दौड़ी जा रही है।)

श्री म—वाह, वाह। एक और हो जाये, सुन्दर गान।

अन्तेवासी फिर और गा रहे हैं।

गान-एमन मधुमाखा हरिनाम निमाइ कोथा होते एनेछे ।
श्रोइ नाम एक बार शुने हृदय बोणे श्रापनि बाजिया उठेछे ॥
कतोदिन श्रवणे शुनेछि ओइ नाम कखनो एमन करेनि पराण,
श्राजि कि जानि कि एक नव भावोदय हृदय माझारे होतेछे ॥
केटे गेछे मोर स्वप्नेर घोर, गले गेछे कठिन हृदय मोर,
आज कि जेनो कि एक उजल जगते, श्रामाय निये चलेछे ।
आज होते निमाई तोर संगे रबो ज्ञानेर गौरब कभु ना करिबो,
श्राहा सब छेड़े दिये हरि हरि बोले नाचिते बासना होतेछे ॥
के जेनो कहिछे मोर काने काने, पारेर उपाय होलो एतोदिने,
श्राज प्रेमेर पसरा धरि निज शिरे, प्रेमेर ठाकुर एसेछे ॥

(भावार्थः—ऐसा मधुमय हरिनाम निमाई तुम कहां से लाए हो ? यह नाम एक बार सुनकर हृदय-वीणा आप ही बज उठी है । कितने दिन कानों से यही नाम सुना है किन्तु प्राण ऐसे तो कभी भी नहीं हुए। श्राज न जाने कैसा एक नव भाव हृदय में उदय हो रहा है। मेरे घार स्वप्न (पाप) कट गये हैं श्रौर मेरा कठोर हृदय गल गया है। श्राज मानो कोई मुझे उज्ज्वल जगत् में लिये जा रहा है। श्राज से हे निमाई, तेरे संग रहूँगा। ज्ञान का गौरव कभी नहीं करूँगा। श्राहा, सब छोड़कर हरि हरि बोलकर नाचने की वासना हो रही है। कोई मानो मेरे कानों में धीरे धीरे कह रहा है इतने दिनों में श्रब पार जाने का उपाय हुआ है। श्राज प्रेम का बोझा अपने सिर पर रखे हुए प्रेम के ठाकुर श्राये हैं।)

वीरेन (श्री म के प्रति)—सम्प्रति यही गाना मैं पुरी में सुनकर श्राया हूं—ऐसा ही मधुर सुर।

श्री म—केवल क्या सुर, भाव भी वैसा ही जीवन्त—मानो खींचे लिये जा रहा है, भीतर। प्रकाशानन्द संन्यासी थे, ज्ञानियों के गुरु। काशीवास किया करते। चैतन्य देव के मुख से हरिनाम सुनकर यही श्रवस्था हुई थी। प्रथम श्रभिमान, पीछे यही दशा। सुना जाता है, प्रकाशानन्द प्रथम तो विरक्त हुए यह बात सुनकर कि चैतन्यदेव संन्यासी होकर हरिनाम करते हैं। फिर बुलाकर पूछा भी था। चैतन्यदेव ने उत्तर दिया था, मुझे हीन श्रधिकारी जानकर गुरुदेव ने

हरिनाम कीर्तन करने के लिये कहा है, तभी करता हूं। कैसा मधुर भाव था उनका—प्रथम जाकर पाँव पोश के पास बैठ गये थे। अन्य सब अच्छे अच्छे आसनों पर थे। फिर जब हरिनाम करने लगे तब प्रकाशानन्द की भी वही अवस्था हो गई जो गाने में सुनी है। ठाकुर ने कहा था, चैतन्यदेव के भीतर अद्वैतज्ञान था, बाहर हरिनाम। कहा करते, जैसे हाथी के भीतर के दांत और बाहर के दांत, वैसे ही थे वे। प्रथम एक दिन नरेन्द्र से कहा था, "नदिया का गौरांग और मैं एक।" फिर तो अनेक बार ही कही थी यह बात। अवतार जब बात करते हैं, तब जगत् स्तम्भित हो जाता है। वे आते ही हैं इसीलिए, साधुओं का उद्धार करने। जभी तो आकर्षण हुआ था, प्रकाशानन्द के ऊपर। निरक्षर क्राइस्ट की बातों का प्रवाह आज भी चल रहा है। और ठाकुर, उनका प्रभाव तो आंखों के सामने है ही—नूतन जगत् गढ़ रहे हैं।

(4)

आज शुक्ला प्रतिपदा, बुधवार, 20 अक्तूबर, 1922 ई०, तीसरा कार्तिक, 1329 (बं०) साल। मॉर्टन स्कूल की चारतल की सीढ़ियों का कमरा। अब अपराह्न पांच।

गत कल श्री श्यामा काली की पूजा गई है। अनेक भक्तगण भी साधुओं के संग रात्रिवास और पूजा दर्शन करके लौटे हैं। श्री म जगबन्धु से पूजा का समस्त विवरण सुन रहे हैं। कौन पुजारी, कौन तन्त्रधारक, कौन भण्डारी से आरम्भ करके, कौन कौन उपस्थित थे, कौन कौन से गाने हुए और भोग कितने प्रकार का हुआ, इत्यादि समस्त संवाद ले रहे हैं। अल्पक्षण मध्य ही दो गुजराती भक्त आ गये। वे श्री म को अपने देश के नाना संवाद बतला रहे हैं। श्री म के अनुरोध से उन्होंने तुकाराम के कुछेक भजन सुनाये। तब फिर विदा ली।

इस समय बारुइपुर के वकील वृद्ध केदारनाथ बैनर्जी आए हैं। वे श्री राखाल महाराज (स्वामी ब्रह्मानन्द, के मंत्र शिष्य हैं। सम्प्रति, कई मास हुए, उन महापुरुष ने समाधि लाभ किया है। ये प्रथम से

ही प्रायः पच्चीस वर्ष तक श्री रामकृष्ण मठ और मिशन के प्रेजिडेण्ट थे। नित्यसिद्ध, ईश्वरकोटि, ठाकुर के मानसपुत्र श्री राखाल ने अपनी अलौकिक आध्यात्मिकता के प्रभाव और अपार स्नेह से साधु भक्तों को निबिड़ बन्धन में बद्ध कर लिया था। उन्होंने आनन्दधाम में प्रयाण किया है, परमानन्द में वहां विराजमान हैं। भक्तगण उनके अभाव में अनाथ और निराश्रय हैं। केदार विरह-कातर, श्री म के साथ बातें कर रहे हैं।

केदार (श्री म के प्रति)—मास्टर महाशय, कुछ भी अच्छा नहीं लगता। मन में जो धक्का लगा है उसे संभाल नहीं पा रहा हूं। काम काज में मन नहीं लगता। सर्वदा महाराज की बात याद आती है।

श्री म के साथ श्री राखाल का घनिष्ठ स्नेह-सम्पर्क था। राखाल प्रथम श्री म के छात्र, फिर प्रिय गुरुभ्राता थे। उनके शरीर त्याग से श्री म भी मर्माहत हैं। शरीर त्याग के अगले दिन श्री म अनाहार रहकर दरवाजा बन्द किये पड़े रहे थे। चक्षु देखने से पता लगता था मानो क्रन्दन से छल छल कर रहे हैं। कभी श्री महाराज के शिष्यों के पास जाकर उनकी बातें करके शांत हुआ करते। इसी के साथ श्री हरि महाराज (स्वामी तुरीयानन्द) के शरीर त्याग की व्यथा भी हृदय में बज रही है। प्रबुद्ध भारत में इन दोनों महापुरुषों की बातें लिखकर श्री म स्नेह और श्रद्धा की अंजलि प्रदान करके कुछ शांत हुए हैं। केदार बाबू की बात सुनकर श्री म मानो नूतन रूप से फिर विरह-व्यथा से व्यथित हो गये हैं। सहानुभूति से विगलित होकर रुद्धकण्ठ से केदार बाबू से कह रहे हैं, 'फिर किया क्या जाय सब ही उनकी इच्छा से होता है। चलिए, हम उनके चरित्र का गुणगान करें।' यह बात सुनते ही केदार की परिपूर्ण हृदय-कलसी से श्री राखाल का सुसंचित स्नेह-पीयूष मानो निर्झरवत् बिगलित होने लगा। केदार श्री महाराज का गुणकीर्तन शेष ही नहीं कर पा रहे। श्री म उसका पान कर रहे हैं।

केदार—महाराज कहा करते, ठाकुर की अहेतुकी कृपा की कथा कितनी कहूंगा? प्रथम प्रथम मेरा जप ध्यान में मन बैठता नहीं था।

ठाकुर के संग अभिमान से जभी झगड़ा किया करता। एक दिन पास बुलाकर बिड़ बिड़ करके (अस्पष्ट वाणी में) न जाने क्या कहा और मेरी जीभ पर तीन बार मृदु आघात किया। तब से सब ठीक हो गया। उन्हें पहले समझ नहीं सका था। उनका स्नेह और मातृवत् प्यार और यत्न मुझे घर से खींचकर बाहर ले जाया करता। एक दिन ठाकुर ने कहा, "ओ रे, तूने आज क्या किया है। तेरे मुख की ओर तो देख भी नहीं सक रहा हूं। लगता है झूठ बात बोली है। अच्छा अल्प गंगा जल पी ले। और रोज हो अन्ततः चाहे तिनके के अग्रभाग से ही हो, अल्प गंगाजल पी लिया कर।" इन्द्रिय चांचल्य होने पर अकपट भाव से मैं उन्हें बता दिया करता था। वे छाती पर हाथ फेर देते और सब ठंडा हो जाता।

महाराज सब के मन की बात समझ लिया करते, किन्तु कहते नहीं थे सब को। उनके लिये तो यह अवश्य ही सामान्य बात थी। एक बार कोन्नगर के डाक्टर जरा विपथ पर जाने लगे। एक विधवा की ओर उनका मन गया था। महाराज यह जान गये और हंसी परिहास से उसको खूब फटकारा और सावधान कर दिया। एक बार एक साधु को एक व्यक्ति ने प्रलोभन दिखाया था। उसे पथभ्रष्ट करना चाहा था। साधु ने कहा ऐसा नहीं होगा। हमारे महाराज सब जान लेते हैं। उनके अगोचर कुछ नहीं है। लोहपट्टी के भक्त एक बार वृन्दावन जा रहे थे। बाबू राम महाराज थे तब काशी में। भक्तों ने उन्हें भी उनके संग जाने के लिए कहा। महाराज ने सुनकर उत्तर दिया, नहीं, उनके संग जाने से कैसा भाव, कैसा उद्दीपन होगा। जाने नहीं दिया (बाबू राम महाराज को)।

एक बार कहा, "देखिए मनुष्य का मन कितना छोटा है। पुरी में समुद्र स्नान करके सन्तुष्ट नहीं होता। कहीं किसी पुकुर किंवा सरोवर में फिर और नहाने जाता है। कैसा आश्चर्य! यह है छोटे मन का परिचय। विराट् समुद्र सामने, उसमें मन नहीं बैठता।' कहते थे, 'जगन्नाथ मन्दिर में जाकर प्रणाम करके सामने खड़े होकर कहना चाहिये, प्रभो, तुम जगत् के नाथ हो। मुझ पर कृपा करो।' देह-त्याग के कुछ दिन पूर्व मुझ से कहा था, मठ में

यातायात करते रहना। वह बन्द न हो।' नारायण आयंगर (स्वामी श्रीवासानन्द) ने कहा था, 'मैंने अनेक तीर्थ घूमकर देखे हैं, किन्तु ऐसा कोई फल नहीं हुआ। फिर महाराज के संग छः मास वास करके समझ सका हूं, साधुसंग बिना हमारा उपाय नहीं।'

वैषयिक विषयों में भी महाराज का ज्ञान अगाध था। कितने ही जटिल विषयों पर हमें उपदेश दिये थे। एक बार एक भक्त ने महाराज से पूछा, ठाकुर का इतने लोगों ने दर्शन किया है, किन्तु उनका जीवन वैसा उन्नत कहां हुआ ? महाराज ने उत्तर दिया, 'मलय-पर्वत पर सब वृक्ष चन्दन हो जाते हैं, किन्तु बांस, केले आदि के वृक्ष चन्दन नहीं होते। केवल दर्शन करने से क्या होगा ? कृपा, प्यार हज़म करने की शक्ति चाहिये।' महाराज ने मुझे कहा था, 'काशी आदि सब शिव-क्षेत्रों में ही भक्ति का उद्दीपन होता है।' और भी कहा था, 'मन जब खराब होगा, एक बार जाकर दक्षिण भारत के तीर्थों को देख आना—कन्या कुमारी, रामेश्वर प्रभृति। वे सब बढ़िया स्थान हैं, खूब उद्दीपन होता है।'

श्री म (केदार के प्रति)—एक दिन ठाकुर ने गिरीश बाबू से कहा था, 'जाओ, गंगा में डुबकी लगा आओ। और हाथ जोड़कर बोलो, पतितपावनी मां, मुझ पर कृपा करो। गिरीश बाबू अनिच्छा से गये। किन्तु गंगा में डुबकी लगाने पर अपार आनन्द से मनप्राण भर गया। इतनी महिमा मां गंगा की। कहा था, कलियुग में गंगा वारि साक्षात् ब्रह्म।

"गृहस्थियों का साधुसंग बिना उपाय नहीं है। कितना माहात्म्य इसका ! ठाकुर ने एक गल्प द्वारा समझाया था। एक मछली बंसी (कांटों) समेत दौड़ गई डोरी काटकर। बच्ची जाएगी कहां ? कुछ दूर जाकर तैरने लगी। बंसी हज़म करने की शक्ति नहीं, जभी मरकर तैरने लगी। वैसा ही साधुसंग। उनका स्नेह, प्यार कभी भी नाश होने वाला नहीं है। इसका अपव्यवहार नहीं। चाहे बीस वर्ष बाद ही हो, कार्य होगा ही। जैसे पारा खा लेने पर वह निकलेगा ही। ठाकुर को जिन्होंने एक बार भी देखा है धन्य हैं वे, पीछे फल होगा निश्चय ही।"

आज फिर नई बातें नहीं हुईं। आठ बजे सभा भंग हो गई।

अगले दिन 21 अक्तूबर, 1922 ई०, चौथा कार्तिक, 1329 (बं०) साल, शनिवार। साढ़े बारह की गाड़ी से श्री म मिहिजाम के लिए रवाना हुए। (श्री म दर्शन प्रथम भाग द्रष्टव्य) संग थे विनय। भक्तगण यह संवाद नहीं जानते थे। मानो टालस्टायवत् सबके अगोचर चले गए। कुछ दिन पूर्व टालस्टाय का गृहत्याग पाठ सुना था अति मनोयोग से। भक्तगण आज उसका अर्थ समझे।

जामताड़ा आश्रम में सात दिन ठहरकर मिहिजाम में विद्यापीठ में रहे। तब विद्यापीठ आरम्भ हुआ ही था। फिर भक्तों के संग भिन्न कुटीर में वास किया तपोवन में—जैसे व्यास, वसिष्ठ।

कलकत्ता, 21 अक्तूबर, 1922 ई०,
चौथा कार्तिक, 1329 (बं०) साल।
शनिवार, शुक्ला द्वितीया।

'योगीर चक्ष'–इसी अध्याय के पृष्ठ 78 की बारहवीं पंक्ति द्रष्टव्य

पंचम अध्याय

मुक्ति होगी कब ?
–"मैं" मरेगा जब

(1)

मॉर्टन स्कूल। संध्या सवा सात। आज तेरह सितम्बर, 1923 ई०। बृहस्पतिवार, 26वां भाद्र, 1330 (बं०) साल। श्री म दो तल के पश्चिम के कमरे में बैठे हुए हैं। भूमि पर चटाई बिछी है। पास ही छोटे जितेन, सुधीर, शची और छोटे नलिनी बैठे हैं। जगबन्धु बेलेघाटा गये थे, अभी लौटे हैं, संग में हैं शुकलाल। घर में प्रवेश करते ही श्री म जगबन्धु से बोले, "आप लोगों के लिए स्वामी जी के Lectures on Practical Vedanta (लेक्चरस ऑन प्रैक्टिकल वेदान्त) ज्ञानयोग और राजयोग खूब भली प्रकार पढ़ना उचित है।"

जगबन्धु—किस भाषा में—बंगला या अंग्रेज़ी ?

श्री म—अनेक ही अंग्रेजी से पढ़ते हैं। अंग्रेजी में प्रथम बोले थे कि ना। इन सब विषयों पर जो कहने योग्य है स्वामी जी उसकी अन्तिम बात कह गये हैं। वे निज को निज जानते थे। जभी कहा था; "अब लोग दागा बुलुक* (अनुसरण) करें, जो कुछ मैं कह चुका हूँ उसका।"

श्री म (शचो और सुधीर के प्रति)—तुम लोगों को वह सब कुछ नोट कर लेना उचित है जो वहां अभेदानन्द स्वामी से सुनो। नोट कर लेने से मन mind (मन) पर अच्छा impression (रेखापात) होगा। स्वामी जी की पुस्तक पढ़कर लेक्चर सुनो तो और भी भला।

श्री म (एक भक्त के प्रति)—हां, कल वेदान्त सोसाइटी में क्या कुछ हुआ, सुनाइये ना एक बार अपने नोट पढ़कर।

एक भक्त नोट पढ़ रहे हैं। विषय—"आत्म-संयम" (Self-

---

*दागाबुलुक=जैसे शिशु लिखे हुए पर फिर लिखकर अभ्यास करता है।

control). उपस्थित सभ्य पचास जन, अपराह्न साढ़े पांच, 12 सितम्बर, 1923 ई० ।

स्वामी अभेदानन्द बोले—मन को control (संयत) बिना किए ईश्वर-दर्शन नहीं होता। पहले यही चाहिए। अति यत्न से उसके लिए चेष्टा करनी चाहिये। मन तो स्वभावत: ही चंचल है जैसे बन्दर। मद खिलाने पर, बिच्छू के काटने पर, किंवा भूत के पकड़ने पर बन्दर की चंचलता और भी बढ़ जाती है। मन भी अनवरत भोग पाकर अधिक चंचल हो उठता है। प्रथम प्रथम खूब कष्ट करके, सब छोड़कर पहले उसको वश में करना चाहिए।

मन वशीभूत करने का उपाय है, concentration (एकाग्रता)। किसी भी एक विषय पर इसे conentrate (एकाग्र) करो। भगवान के कितने रूप हैं, इसे किसी एक पर ही एकाग्र करो ना। एक ideal (आदर्श) पकड़ो। तब फिर समस्त मन को उसमें आकर्षित करो। तुम बंगाली युवकगण ideal (आदर्श) विहीन हो गये हो। दोष तुम्हारा नहीं, पिताओं का है। उन्हें स्वयं भी यह शिक्षा नहीं मिली, तभी तुम्हें भी यह शिक्षा दे नहीं सके। तुम पहले सत्य-रक्षा करना सीखो। सत्य बात कहो और उसके पालन करने की चेष्टा करो, प्राणपण से। सत्य के आश्रय बिना धर्म जीवन नहीं होता। सत्य है प्रथम सोपान।

"श्री रामकृष्ण देव यदि कभी भी कुछ कह दिया करते, तो सैंकड़ों विघ्न-बाधाओं के होते हुए भी उसका पालन किया करते। सत्य-रक्षा के लिए उनमें अमानुषिक दृढ़ता थी। वायदा करके पूरा न किया जाय तो सत्य-भंग होता है। वे इस युग में सत्य, धर्म, ज्ञान और विश्वास का आश्रय लेने को कहते। तुम उनकी वाणी पालन करने की चेष्टा करो।

"रोज ध्यान करो। मन को एक आदर्श में निविष्ट करो। और विचार करो तुम्हारे चारों ओर सब मृत्यु की छाया है। कुछ भी तो नहीं रहेगा, मृत्यु तो सब हरण करके ले जाएगी। केवल नाम-यश के द्वारा क्या करोगे जब शरीर ही मृत्यु का ग्रास है, आत्मा को छोड़, (सच्चे "मैं") को छोड़, सब ध्वंस हो जाएगा। ठाकुर कहते थे,

"मुक्ति होवे कबे, आमि मरवे जबे।" —मुक्ति होगी कब ? —"मैं" मरेगा जब।

"शव साधना करो। तन्त्र मत में यह एक प्रकार की साधना है। शव के ऊपर बैठकर जप करना पड़ता है। इसे शव-साधना कहते हैं। मैं कहता हूँ यह "शव"-साधना निज शरीर पर ही हो सकती है। शरीर है शव। नारायण को उसके भीतर जाग्रत करो, नारायण की प्रतिष्ठा करो। इसी शरीर में वे हैं। उनका ध्यान करो।

"ध्यान से मन शांत होता है। ज्यों ही बाहर के विषय के संग मिलकर मन अशांत हो, त्यों हो भीतर के आदर्श को स्मरण करो। विचार करने से तब समझ सकोगे। तुम ही शिव हो सकते हो। "भ्रान्तियुक्तः भवेज्जीवः, भ्रान्तिमुक्तः सदा शिवः।" शिव ने सब छोड़कर शरीर पर भस्म मल ली। इसका अर्थ क्या ? यही कि उन्होंने मृत्यु को जीत लिया है, जान लिया है, यह शरीर तो छाई (राख) है। संसार में उनका कोई भी बन्धन नहीं। मृत्यु अर्थात् यम के चर काम-क्रोधादि रिपु हैं, इन्हें जलाकर शिव ने शरीर पर भस्म मल ली है।

भगवान् बुद्ध ने छह वर्ष तक साधन किया था, बुद्ध गया में। तब गिनकर मात्र तीन चावल खाते। शरीर कंकाल मात्र। मन में इन्द्रिय-विषय उठने पर कहते, युद्ध में हार जाने की अपेक्षा सम्मुख समर में प्राण-त्याग करना अच्छा है। इन्द्रियों का दास होकर रहना है विडम्बना। इन्द्रियों के संग प्रलयंकर युद्ध आरम्भ किया। आसन पर बैठकर बोले, 'इहासने शुष्युतु मे शरीरं, त्वगस्थिमांसं प्रलयं च यातु।' (इस आसन पर चाहे मेरा शरीर, त्वचा, अस्थि, मांस क्यों न सूख जायें।) किन्तु बहुजन्म दुर्लभ बोधिलाभ बिना किए यहां से उठूंगा नहीं। "ललित-विस्तार" में है यह कथा। कैसी दृढ़ प्रतिज्ञा—देह जाती है तो जाय, इन सबका महाप्रलय होता है तो हो, किन्तु मैं आसन छोड़कर उठूंगा नहीं जब तक स्व-स्वरूप को नहीं जान लूंगा। ऐसे कठोर संकल्प, कठोर तपस्या के तीन दिन पश्चात् ही सिद्ध हो गए, भगवान् का दर्शन पा लिया।

"तुम भी इच्छा करने से इसी प्रकार कर सकते हो। आदर्श निश्चय करो, बालकपन से। तुम समझ नहीं सकते कि मृत्यु को लेकर रह रहा हूं। हमने यह समझ लिया है परमहंसदेव की कृपा से। तुम भी बूझ पाओगे, उनको पकड़कर चेष्टा करो।"

प्रश्न—मैं कुण्डलिनी चक्र को सर्वदा सामने देखता हूं।

उत्तर—बहुत सुन्दर बात है। तुम्हारी psychic power (मन का बल) बहुत अधिक है।

प्रश्न—मन की सूक्ष्म वासना का दमन किस प्रकार हो ?

उत्तर—ध्यान करो, विचार करो, आदर्श में मनोनिवेश करो। परमहंस देव इस युग के आदर्श हैं, उन्हें पकड़ो। ऐसा आदर्श अब कहीं भी नहीं पाओगे। वे हैं मृत्युञ्जय। उनमें देह-बुद्धि का लेश भी नहीं था। समाधिस्थ अवस्था में डाक्टर महेन्द्र सरकार ने आंखों में उंगली देकर परीक्षा की, दबाकर देखा, किन्तु होश नहीं था। इस युग के आदर्श हैं वे। उनके पकड़ने से शीघ्र हो जाएगा।

श्री म—वाह, बड़ी ही सुन्दर सारी वाणी। जभी तो सबको ही जाने के लिये कहता हूं।

एक जन भक्त—उनकी इच्छा है कि वहां से कर्मी लोग शिक्षा पाकर पल्लीग्राम में जाकर धर्म-कर्म दोनों को ही शिक्षा दें। खाली भजन से और भोजन से अब नहीं चलेगा, वे कहते हैं।

शुकलाल—साधुओं का भजन और भोजन तथा गृहस्थियों का भजन और भोजन क्या एक जैसा है ?

श्री म—नहीं, बिलकुल नहीं। साधुगण मधुकरी करके, भिक्षा करके निर्वाह करते हैं और सर्वदा उनके (ईश्वर के) संग योग में रहते हैं।

इसी समय योगेन और अमृत ने प्रवेश किया। क्षण भर बाद बड़े जितेन, डाक्टर कार्त्तिक और विनय आ गये।

बड़े जितेन (श्री म के प्रति)—Political prisoners (राजबन्दी) जेल से आकर अधिक उत्साह के साथ काम कर रहे हैं—चन्दन नगर के गांधी-दल के लोग।

श्री म—गांधी महाराज ने ठीक चीज़ ही पकड़ी है। कहा—
fe simple (जीवन सहज) अनाडम्बर करो। यह तो खूब सत्य
ात है। आहार शरीर धारण के लिए है, यह बात विशेष करके
मरण रखनी चाहिये। कर्म बढ़ने से ही मुश्किल होती है। ऐसे
ुछ लोग हैं जो शायद स्वयं तो कुछ भी भोग नहीं करते, किन्तु
ाड़के, लड़की, जमाई इनको ऐसे style (चाल) से रखते हैं कि उनके
लये ईंधन का जोगाड़ करने के लिए ही सर्वदा उन्हें कर्म करना पड़ता
ै। उनके भोग के उपकरण जुगाड़ करने के लिये उन्हें सर्वदा
ंयस्त रहना पड़ता है। अपने लिए समय ही नहीं रहता, ईश्वर
ो पुकारने का। और फिर ऐसे कर्ता, मालिक भी देखे हैं, स्वयं अति
सरल जीवन यापन करते हैं—आहार पोशाक सब साधारण। लड़के-
लड़कियाँ, भतीजे-भांजे आदि परिवार के सबको एक ही स्टाइल में
रखते हैं, सब simple way सरल साधारण रूप में। बढ़ाने पर
तो रक्षा ही नहीं है। चन्द्रकान्त चक्रवर्ती थे इसी श्रेणी के लोग।
थे तो हाईकोर्ट के वकील, किन्तु प्रेक्टिस उतनी नहीं थी।

बेलुड़ मठ के स्वामी घोरानन्द और बलराम वसु का एक पौत्री पति आ गये।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—काशीपुर बागान में ठाकुर ने एक जन से कहा था, 'पुत्र उत्पादन की शक्ति और ईश्वर-लाभ करने की शक्ति दोनों क्या एक ही हैं ?' ईश्वर लाभ जिस शक्ति से होता है उसके पास इन्द्रियां आदि दमित रहती हैं, दास बनी रहती हैं। जो पुत्र उत्पादन की शक्ति है वह इन्द्रियों की दास है। (तर्जनी दिखाकर) ऐसा रोगी, दुबला, देह पर मांस कहने को भी नहीं। श्री मां, स्त्री-संग के समय उसमें अमित बल आ जाता है। सरा "टा" ओ "टा" घोड़ा "टा" ओ "टा" ? कसोरी और घोड़ा क्या एक ? कभी नहीं। मुड़ि मिश्री एक दर।* मुड़ि मिश्री एक दर करने से सूली पर चढ़ना पड़ता है। (मोहन के प्रति) जानते तो हो न वह कहानी ?

श्री म (भक्तों के प्रति)—एक गुरु का एक शिष्य था। गुरु ने शिष्य को उपदेश दिया, जहां (मुड़ि मिश्री) मुरमुरा और मिश्री एक दर देखो वहां न ठहरना। शिष्य खूब पर्यटन करने से क्लान्त हो

*टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

गया था। उसे विश्राम का प्रयोजन हुआ। एक स्थान चुन लिया। वहां देखा मुड़ि* और मिश्री एक दर से बिक रही है। तब गुरु की बात स्मरण तो अवश्य हुई किन्तु लोभ को रोक नहीं सका। सोचा कुछ दिन रहकर हृष्ट-पुष्ट हो जाता हूं। जभी वहां खाता-पीता घूमता हुआ आनन्द से रहने लगा। शरीर भी अच्छा सतेज हो गया। उसी समय उस देश के राजा के काली मन्दिर में नरबलि होनी थी—एक व्यक्ति दरकार था। एक प्यादा एक दुबले-पतले व्यक्ति को पकड़ लाया। राजा को पसन्द नहीं आया। आज्ञा दी, मोटा ताजा देखकर लाओ। रास्ते में वही शिष्य दिखाई दिया, उसे पकड़ लाया। बलि का सब आयोजन हो गया। बहुत व्यक्ति आ गए। शिष्य ने कितनी ही अनुनय विनय की छोड़ने के लिए। गुरु की आज्ञा को अमान्य करने के कारण ही उस पर यह विपद घटी, यह बात स्मरण करके क्रन्दन करने लगा। ईश्वर को अन्तिम बार पुकारने का आदेश हुआ। शिष्य बैठकर रोता है और जप करता है, बार-बार आंख उठाकर सब को देखता है, व्याकुल हो होकर। गुरु भी भ्रमण करते करते वहां आ उपस्थित होते हैं। बहुत लोगों का समावेश देखकर वहां यह देखने जाते हैं कि क्या व्यापार है। देखते हैं कि अपना शिष्य यूपकाष्ठ में बन्धा है। सस्नेह पूछते हैं, तेरी यह दशा कैसे हुई ? शिष्य कर जोड़ कर कहता है, गुरुदेव आपकी बात न मानने से ही यह दुर्दशा हुई। मेरी रक्षा कीजिए। गुरु आदेश देता है, शरीर नंगा करके बैठो। गुरु तब राजकर्मचारियों से कहता है, "यह बलि नहीं हो सकती, अशास्त्रीय है। इसके शरीर पर घाव है।" उसके शरीर पर एक घाव था, गुरु यह जानते थे। तब फिर राजा के आदेश से उसने मुक्ति लाभ किया।

"जो सर्वत्याग करके भगवान को पुकारता है और जो संसार-भोग-जन्य चेष्टा करता है, इन दो जनों की शक्ति एक नहीं है। योगशास्त्र में दोनों शक्तियों को कथा है—एक constructive (गठनमूलक) दूसरो destructive (ध्वंसमूलक)। एक का रूप है "इति इति", दूसरी का "नेति नेति"। प्रवृत्ति और निवृत्ति।

---

*मुड़ि=मुरमुरे परमल, चावल के भुने हुए दाने।

"जगत् के कल्याण-जन्य योगी ऋषि महापुरुष गण ये सब बातें अति स्पष्ट करके कह गए हैं। जिसकी प्रकृति जैसी है वह वैसा ही काज करेगा। एक जन की प्रकृति में प्रवृत्ति अर्थात् कर्मशक्ति प्रबल हो तो उसे वह लगानी ही पड़ेगी। हजार चेष्टा करने पर भी उसे रोक नहीं सकेगा। जभी उपाय बता दिया मुक्त होने का— निष्काम होकर करो। निष्काम कर्म द्वारा प्रवृत्ति भी क्षय होगी अथच कर्मफल से बद्ध नहीं होगा। अर्जुन को श्रीकृष्ण ने यही संकेत दिया था। निष्काम कर्म करने से मिथ्या अहंकार नाश हो जाता है। फिर चित्त शुद्ध होता है। शुद्ध चित्त में उनकी छाप पड़ती है। यह होने पर ही मुक्ति है—फिर और जन्म-मरण के दुःख में पड़ना नहीं पड़ता।

"जिसकी जैसी प्रकृति है उसे जोर करके छोड़ना चाहने में ही है विपद। बाज को उड़ता देखकर कच्छप ने भी उड़ना चाहा। बाज ने मना किया। कच्छप ने उसकी बात नहीं सुनी। एक लकड़ी मुंह में पकड़ ली, कच्छप ने। और बाज पंजों से उस लकड़ी को पकड़कर उड़ने लगा। ऊँचे चढ़कर ज्यों ही कच्छप आनन्द प्रकाश करने लगा, त्यों ही लकड़ी मुख से छुट गई। और कच्छप पहाड़ से टकराकर चूर चूर हो गया। जिसकी जैसी प्रकृति, उसके भीतर से ही उसे जाना पड़ता है। जिसकी प्रकृति में विवाह की वासना है उन्हें "विवाह न करो", यह कहने से क्या वे सुनेंगे? क्या कहते हो शची बाबू?"

शची के विवाह की बात हो रही है।

श्री म (डाक्टर के प्रति)—सब कुछ ही उनका है। उनकी वस्तु से ही उनकी पूजा होती है। बाप के रुपये से बेटा बाप को खिलाता है। ब्राह्मसमाज के एक जन ने कहा था, 'महाशय, फूल द्वारा पूजा! इससे क्या होगा? उनकी चीज से उनकी पूजा?' ठाकुर ने उससे पूछा, 'तुम किससे उनकी पूजा करते हो?' उसने उत्तर दिया, 'मन से।' तब ठाकुर ने कहा, 'अच्छा, मन क्या तुमने अपने बाप के घर से पाया है? मन भी तो उनका ही है।' (शची के प्रति) फिर वे ही एक रूप में महामाया होकर रहते हैं। पहले उन्हें सन्तुष्ट कर सकें तब ही होगा।

श्री म (स्वामी धीरानन्द के प्रति)—एक दिन मैं पंचवटी में छतरी छोड़ आया। ठाकुर का तो था सब ओर होश। यह भी लक्ष्य कर लिया। घर में आकर कहा, 'छतरी नहीं लाए। इसे (अपनी ओर संकेत करके) समाधि के बाद भी इस ओर की सब होश रहती है और तुमसे भूल हो जाती है ?' और एक दिन समाधि के पश्चात् नीचे उतरकर कहा, 'ओ रामलाल, तेल के पात्र में तेल तो है ना ?' ऐसे विरुद्ध धर्मों का समावेश अवतार के जीवन में होता है। 'True to the kindred points of heaven and earth ?' अखण्ड सच्चिदानन्द सागर में विलीन रहता है समाधि की अवस्था में। होश में आकर जगत् के छोटे छोटे सब विषयों की बातें सोचता है।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—जानते हो कि ये सब ladders (सीढ़ियां) feelings (भावों) की हैं ? मार्टिनी का भी यही मत है। सीढ़ी के नीचे का तो सब कुछ देखते हैं लोग। ऊपर क्या है यह जानते नहीं। एक एक तल पर एक एक प्रकार का है। जभी रामप्रसाद के सब गाने लोग नहीं समझ सकते। एक एक stage (अवस्था) में एक एक प्रकार का। तत्पश्चात् सात तल पर चढ़ने से नीचे का सब दिख जाता है। ठाकुर हंसी-मजाक कर रहे हैं, सात तल से एक तल पर उतर कर। और फिर झट समाधिस्थ—सब नीरव प्रशान्त। इतना नीचे उतर सकते हैं और फिर इतना ऊपर चढ़ जाते हैं। राजा का बेटा है, उसकी सात तल के महल में सर्वत्र गतिविधि है। अन्य व्यक्ति केवल नीचे के या बाहर के महल में ही जा सकता है। तपस्या आवश्यक। तपस्या कर लेने पर उनकी कृपा से यह सब समझ में आ जाता है। अवतार—जैसे बाउलों का दल, चट् से घर में आया, गाना गाया और चला गया।

भक्तगण प्रसाद पा रहे हैं। गिन्नी मां* ने भेजा है। रात्रि पौने दस।

(2)

14 सितम्बर। मॉर्टन स्कूल का ऑफिस। रेक्टर के आसन पर

*गिन्नी मां=श्री म की धर्मपत्नी। "गृहिणी मां"।

श्री म बैठे हैं। पास ही एक युवक शिक्षक हैं। दो चार अन्य शिक्षक भी इधर उधर बैठे हैं। कोई कोई अखबार पढ़ रहा है। इस समय स्कूल चल रहा है, समय बारह का। एक कोने में नीचे जमीन पर स्कूल का चपड़ासी पीताम्बर बैठा है। अदूर मछुआ बाजार स्ट्रीट से इंग्लिश बैंड जा रहा है—कैसा मनोमुग्ध बाजा। बाजे का मधुर शब्द सुनकर चपड़ासी की तन्द्रा भंग हो गई। वह अति मनोयोग पूर्वक सुनने लगा। परमतत्त्ववेत्ता जाग्रतदृष्टि श्री म की दृष्टि तो चूकने वाली नहीं। उन्होंने यह लक्ष्य कर लिया। गृह में किसी की भी इधर नजर नहीं। प्रशान्त भाव में युवक-शिक्षक को कहते हैं, क्षीण स्वर में, "Shakespeare says, a man who has no taste for music can commit a treason. The bearer was dozing, but as soon as he heard the sweet music of the band, he awoke, stood up and is all attention to it." (शेक्सपीयर कहते हैं, जिस जन में संगीत का आस्वाद नहीं है, वह विद्रोह कर सकता है। बैरा ऊंघ रहा था, लेकिन ज्यों ही इसने बैंड का मधुर संगीत सुना त्यों ही जाग्रत होकर खड़ा हो गया और मनोयोग पूर्वक सुनने लगा।)

"नवीन भास्कर ने छह मास तक दोपहर अढाई बजे हविष्य आहार खाकर दक्षिणेश्वर की मां काली की मूर्ति गढ़ी थी। ठाकुर कहा करते, भास्कर का कार्य, चित्रांकन, कविता, संगीत—ये सब शिल्प मनुष्य को चिन्तनशील बनाते हैं।"

अब संध्या साढ़े सात। दो तल पर पश्चिम के कमरे में भक्तों की रात्रि मजलिस बैठी है। अमृत, सुधीर और शची, बड़े अमूल्य और सुषपति बैठे हुए हैं। अब जगबन्धु और एक और भक्त आए। संग संग श्री म ने प्रवेश किया। फर्श पर चटाई पर श्रीम बैठे हैं, पूर्वास्य। क्षण भर पश्चात् श्री म बातें करने लगे।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—आज प्रकृति का व्यापार देखकर आया हूं। एक धोबी, पीठ पर कपड़ों का बोझ लिए सड़क पर से जा रहा है। देखा, उसकी पीठ पर भी एक छोटी सी पोटली है। Surroundings create (परिवेश सृष्टि) करता है, अभी से। एक तो,

men are born with past impressions. (मनुष्य अतीत संस्का लेकर जन्म लेता है।) उस पर फिर ऐसी शिक्षा। श्री कृष्ण ने इस प्रकृति की बात ही अर्जुन को कही थी—"प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति। (गीता 18 : 59)

बड़े अमूल्य—गीता का उपदेश अर्जुन के लिए है। अर्जुन गृही। गृही होकर भगवान्-लाभ की चेष्टा करनी होगी या सा होकर ?

श्री म—उनकी जैसी इच्छा। उनके बिना और तो नहीं कोई। उनकी इच्छा से ही सब होता है। हमारी इच्छा से कु नहीं होगा। उनके दो विभाग हैं, विद्या और अविद्या, ठाकुर बताय करते। वे विद्या के डिपार्टमैंट में भी रख सकते हैं और फिर अविद्य में भी गिरा सकते हैं। विद्या के इलाके के व्यक्ति देखने से ही पहचा जाते हैं। वे चारों ओर दौड़-धूप करते रहते हैं कि कहां ईश्वर की बा हो रही हैं और कहां साधुसंग। अविद्या के लोगों को (भगवान संसार में भुलाए रखते हैं। ईश्वर, साधु—ये सब उन्हें अच्छे नह लगते। जिससे संसार का भोग बढ़ता है—रुपया-पैसा, नाम, य इत्यादि—ये सब कामिनी-कांचन को ही लेकर मज़े में रहते हैं ठाकुर कहा करते, गृहस्थ में रहकर उन्हें पाना बड़ा ही कठिन है बड़ा सावधान होकर चलना पड़ता है। मायामय है संसार। तो यदि वे पकड़े रहें तो फिर भय नहीं। बाप बेटे का हाथ पकड़ ले त लड़के के गिरने का भय नहीं रहता।

"जापान में जो यह काण्ड हुआ, किसकी इच्छा से हुआ पांच लाख लोकक्षय। उनकी ही इच्छा से हुआ। जैसे सृष्टि औ पालन करते हैं, वैसे ही विनाश भी वे ही करते हैं और फिर आ जो नहीं होगा ऐसा प्रलय काण्ड, वह भी तो कोई नहीं कह सकता उनकी इच्छा—वे लीलामय, वे स्वतन्त्र। यदि कहें, क्यों ऐसा बीभत्स काज वे करते हैं? इसका एक ही उत्तर है, मैं नहीं जानता 'Lady how' (कैसे) और why (क्यों) ये दो हैं। 'हाउ' तो क सकता है मनुष्य, 'व्हाई' नहीं कह सकता। ध्वंस में भी उनक आनन्द है। 'आनन्दाद्धयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। आनन्देन जाता

ीवन्ति। आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति।'* ध्वंस में भी आनन्द।

"दक्षिणेश्वर में एक दिन खूब जल-झड़ तूफान हो रहा था। ाकुर यह देखकर विभोर होकर घर के भीतर नृत्य करने लगे, ाह गाना गाते हुए —'कखनो कि रंगे थाको मा श्यामा सुधा ारंगिणी।' (कब किस रंग में रहती हो तुम, मां श्यामा सुधा ारंगिणी।) मां की प्रलयंकरी मूर्ति देखकर यह नृत्य। मां का यह ताज्जुब काण्ड' देखकर और एक गाया करते थे—'श्यामा मा कि ल करेछे, काली मां को कल करेछे। चौद्द पोया कलेर भितरे कतो रंग देखातेछे।' (मां श्यामा ने यह कैसी कल बनाई है। काली मां ने यह कैसी कल बनाई है। चौदह पाव (साढ़े तीन हाथ) की कल के भीतर कितने रंग दिखाती है।) यह भी उनका एक favourite (प्रिय) गाना है।"

रात्रि प्रायः नौ। डाक्टर और विनय ने गृह में प्रवेश किया। संग-संग श्री म भी उठे—ऊपर जा रहे हैं आहार करने। श्री म के उपदेशानुसार मणि भागवत पाठ कर रहे हैं—एकादश स्कन्ध, ड्विंश अध्याय—उर्वशी-पुरुरवा संवाद। श्री म आहार करके लौट आए। भागवत पाठ अब भी चल रहा है। श्री म ने कहा, 'पुरुरवा की गाथा का अब फिर पाठ हो जाय।

मणि—पुरुखा कह रहे हैं, 'हाय। मैं कामवासना में अपना कितना होश गंवा बैठा हूं। मेरा कैसा मोह बाहुल्य!'—कैसा परिताप का विषय। उर्वशी के मोह में पतित होकर कितने वर्षों के जो असंख्य दिन चले गए हैं यह भी अनुभव नहीं कर सका। अहो मेरा कैसा विभ्रम, मैंने राज चक्रवर्ती होते हुए भी निज को रमणी की क्रीड़ा सामग्री बनाए रखा।......मैं नग्नवेश उन्मत्तवत् रोता चिल्लाता, रमणी का अनुसरण करता रहा।......नारी जिसका मन हरण कर लेती है उसका तेज, बल, प्रभाव एवं विद्या, तपस्या और संन्यास और शास्त्रज्ञान, सच्ची सेवा और वाक्य-संयम ये सब ही वृथा हो जाते हैं। मैंने बहुत वर्षों तक भोग किया है तथापि तृप्ति का अन्त नहीं हुआ। प्रत्युत आहुति-प्राप्त अनलवत् पुनः पुनः उस भोगपिपासा की वृद्धि ही

*आनन्द से ही सर्वजीव उत्पन्न हुए हैं। आनन्द में ही उनकी स्थिति है। आनन्द में ही उनका विनाश होता है। —तै० उ०, भृगुवल्ली, षष्ठ अनुवाक।

हुई है।…………अब आत्माराम परमेश्वर के अतिरिक्त मेरे जैसे व्यक्ति की मुक्ति का और उपाय नहीं।"

श्री म—अनुशोचना आई, इससे ही हो गया। क्राइस्ट ने कहा था, Repent and thou shalt see god—पश्चात्ताप करो तब तुम भगवान को देखोगे। अपनी भूल समझने पर ईश्वर की शरण लेते ही काज हो जाता है। उनके लिए व्याकुल होने से ही हुआ। ये सब क्या कर देते हैं।

"अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥* (गीता 9 : 30)

"मनुष्य, भोग शेष होने पर व्याकुल होता है। पुरुरवा राजचक्रवर्ती (Emperor), भोग का अन्त हो जाने पर व्याकुलता हुई। निजी अवस्था खूब समझ सके हैं—कितना नीचे उतर गए हैं। जभी ठाकुर कहा करते—किले में प्रथम तो मनुष्य को पता नहीं चलता कि कितना नीचे जा रहा है, रास्ता जो है 'कलमबाड़ा'—ढालू। जब होश होती है तब वे गोद में उठा लेते हैं।"

पाठक—पुरुरवा पुनः कह रहे हैं, 'मुझे रस्सी में सर्प का भ्रम हुआ। मैंने द्रष्टा का स्वरूप नहीं पहचाना। दुर्गन्धमय मलवत् अशुचिपूर्ण देह में मैंने परमेश्वर के कुसुमवत् सौरभगुण आरोप किए। ……देह किसकी ? वह क्या माता-पिता की, या भार्या की, स्वामी की, अग्नि की, कुकुर की, गृध की, निज की अथवा बन्धु-बान्धवों की ?………नारीदेह त्वक्, मांस, रक्त, स्नायु, मेद, मज्जा और अस्थि-पुँज से गठित है। इसमें जो विहार-परायण होते हैं, विष्ठा, मूत्र और पीप विहारी कीड़ों से उनका प्रभेद ही क्या ?

श्री म—ठीक यही बात ही ठाकुर ने एक भक्त को कही थी।

*यदि कोई अतिशय दुराचारी भी अनन्य भाव से मेरा भक्त होकर मुझे निरन्तर भजता है वह साधु ही मानने योग्य है। क्योंकि वह यथार्थ निश्चय वाला है। अर्थात् उसने भली प्रकार निश्चय कर लिया है कि परमेश्वर के भजन के समान अन्य कुछ भी नहीं है।

पुरुषों को स्त्रियों के सम्बन्ध में इसी प्रकार की भावना होती है—जो जन श्री भगवान् को चाहते हैं। तीव्र वैराग्य होने पर ही ऐसी दृष्टि होती है।

पाठक—(पढ़ते हैं) विषयों के साथ इन्द्रियों का संयोग हो जाने से मन क्षुब्ध हो जाता है।······षड्रिपु, छह रिपु तो विद्वानों के लिए भी विश्वास योग्य नहीं। विद्वज्जनों के भी अविश्वास्य।

श्री म—इसीलिए प्रथम प्रथम दूर भागता है। चोर जैसे जेब से भागता है, वैसा पलायन। अति दूर जाकर वास करता है। Out of sight, out of mind—आंखों से दूर होने पर मन से भी दूर हो जाता है, क्रमशः। संग-दोष से परमहंस का भी पतन होता है, ठाकुर कहा करते थे। जो केवल उन्हें ही चाहते हैं उनके लिये ही है यह व्यवस्था। औरों से कहा करते, 'अच्छा तो है कुछ दिन निर्जन में ईश्वर का भजन करके, ज्ञान भक्ति लाभ करके, गृहस्थ करो।' तब गिरने का भय कम। कच्चा मन लेकर संसार करने पर ही है विपद्।

भक्तगण विदा ले रहे हैं। श्री म सीढ़ियों के सामने खड़े हुए हैं। अब रात्रि दस। कह रहे हैं, "कर्म प्रकृति में हो तो छोड़ने का उपाय कहां? हम ही क्या छोड़ सके हैं? वैसी अवस्था तो खूब अच्छी। वह (सर्वत्याग की अवस्था) होती ही कहां है? तो भी उनकी कृपा होने पर होती है। (बड़े अमूल्य के प्रति) शास्त्र पढ़ोगे उसे interpret (व्याख्या) करेगा कौन? असार भाग छोड़कर केवल गुरु ही सार-सार बोल सकते हैं। गुरु माने ईश्वर, अवतार। सब तो ठीक नहीं होता, रिपोर्ट करते समय भूल हो जाती है, और फिर interpolation (प्रक्षेप) भी है। अभी गुरुवाक्य-विश्वास है एकमात्र पथ।"

(3)

अगले दिन शनिवार। श्री म मॉर्टन के दो तल के पश्चिम वाले कमरे में चटाई पर बैठे हैं। सम्मुख भक्तगण—बड़े जितेन, बड़े नलिनो के बड़े भाई, छोटे नलिनो आदि। इटाली के युवक हरेन बंगाल-नागपुर रेलवे में काम करते हैं, वे भी आये हैं। अब रात्रि आठ।

एक भक्त वेदान्त सोसाइटी से लौटे हैं। अमृत और एक अन्य सज्जन ने गृह में प्रवेश किया। डाक्टर और विनय सब से पीछे आए।

श्री म के ज्येष्ठ पुत्र, प्रभास बाबू वायु परिवर्तन करने देओघर गये थे। आज लौटे हैं। उनकी अनुपस्थिति में श्री म को स्कूल का काम देखना पड़ता था। आज उनके आनें से श्री म को अवसर मिला है। वे आनन्द से भक्तों के संग कथा कह रहे हैं।

श्री म (हरेन के प्रति)—अनेक ही ट्राम के छह पैसे मार जाते हैं और फिर ऐसे भी कोई कोई हैं, कन्डक्टर ने न मांगने पर स्वयं मांगकर टिकट खरीदते हैं। शायद खूब भीड़ है। टिकट नहीं ले सके। इस अवस्था में पैसे ट्रेफिक मैनेजर के पास भेज देते हैं। कोई कोई ट्रांसफर टिकट लेकर आधा आज और बाकी दूसरे किसी दिन व्यवहार में लाते हैं। ये लोग सब मूर्ख हैं। —penny wise, pound foolish (अशर्फियों को लुटाना और कोयलों पर छापा)।

"समझते नहीं कि छह पैसे के लिए कितनी क्षति होती है। '..........and narrow is the way which leadeth unto life' '......and broad is the way that leadeth to destruction' बाइबिल कहता है। 'क्षुरस्य धारा' वेद ने कहा। —भगवान लाभ इतना कठिन, किन्तु नरक का पथ प्रशस्त।"

हरेन्द्र के जाने की आज्ञा मांगने पर श्री म ने रोक कर कहा, "ठहरो अल्प वेदान्त सोसाइटी की कथा सुनो। (एक जन भक्त के प्रति) इस ओर आइये। बोलिये क्या हुआ आज की क्लास में ?" भक्त नें कहा—आज प्रश्नोत्तर क्लास थी। सभ्य पचास जन। 5.30 पर शाम को आरम्भ हुई। निम्नलिखित प्रकार से कथावार्ता हुई। प्रश्न नाना जनों के, उत्तर अभेदानन्द महाराज के।

प्रश्न—शंकर ने कहा है—'जगत् मिथ्या', स्वामी जो नें कहा है; 'काम करो'। जगत् मिथ्या हो तो काम करने का लाभ क्या ?

उत्तर—प्रथम यह देखना होगा कि शंकर ने किस अर्थ में संसार मिथ्या कहा है। "संसार मिथ्या" माने name and form में (नाम और रूप में) मिथ्या। चेयर (कुर्सी) जल गई, चेयर मिथ्या हो गई। जापान ध्वंस हो गया। वस्तुतः (in reality) क्या कुछ

in matter ध्वंस हुआ ? केवल नाममात्र changed (परिवर्तित) हुआ। सत्य का अर्थ—जो तीनों कालों में रहता है—भूत, भविष्यत् और वर्तमान में, अर्थात् जिसका परिवर्तन नहीं होता और मिथ्या माने जो बदलता है, या तीनों कालों में एक रूप नहीं रहता। नाम-रूप ही नहीं रहते हैं, substance (मूल-तत्त्व) रहता है, वही सत्य।

"स्वामी जी ने कहा, 'दरिद्र नारायण की सेवा करो।' दरिद्र की सेवा करो, यह बात तो नहीं कही। 'नारायण' की सेवा करने के लिए कहा है। 'दरिद्र' यह नाममात्र, इसके भीतर जो ब्रह्म रहता है उसकी सेवा करने को कहते हैं। ब्रह्म को ही प्रचलित बातों में नारायण कहते हैं। 'सेवा' का अर्थ केवल खिलाना पहनाना ही नहीं, प्यार करना है। तुम जितना अपने को प्यार करते हो, अपने पड़ोसी को भी उतना ही प्यार करो। तुम्हारे भीतर जो हैं, वे ही—'दरिद्रनारायण' जिसे कहते हो—उसके भीतर भी हैं। अपने सुख-स्वाच्छन्द के लिए जैसा यत्न करते हो, उसके सुख स्वाच्छन्द के लिए भी ठीक वैसा ही यत्न करो। इससे चित्त शुद्ध होगा 'मेरा मेरा' कम हो जायेगा। निष्काम कर्म के माने भी यही—चित्तशुद्धि करना। अब एकदम भूले हुए हो—'मेरी देह' 'मेरा पुत्र' 'मेरा गृह' ये सब लेकर। और इन्हीं का आराम खोजते हो। अरे बाबा, शरीर ही तेरा कैसे ? तू क्या इसका एक भी बाल वा नख तैयार कर सकता है ? इन सब हीन भावों से अपनी रक्षा करने के लिए ही, ईश्वर के लिए कर्म—निष्काम कर्म करने को कहा है, स्वामी जी ने। शंकर ने 'मोह मुद्गर' में कहा है, "ब्रह्मपद प्रविशासु विदित्वा।" इससे तो फिर पता चलता है कि शंकर ने जो कहा है स्वामी जी ने भी वही कहा है—ब्रह्म की पूजा करना, जो दरिद्र के भीतर नारायण रूप में रहते हैं। एक ही बात हुई।

"अब दो बातें naturally, (स्वभावतः) उठती हैं—जगत् मिथ्या किंवा जगत् सत्य अर्थात् भगवान की लीला सत्य है कि नहीं। एक अर्थ में मिथ्या है—वह पहले कहा गया है। ठाकुर कहते लीला भी सत्य। 'कथामृत" में है, ठाकुर कहते हैं, नित्य और लीला दोनों ही सत्य—कारण अवस्था और कार्यावस्था। कारणावस्था में संसार समेट लेते हैं, कार्यावस्था में बहुरूप में, जगत् रूप में खेलते हैं। दोनों ही absolute—

सत्य, नित्य। यदि कहो, लीला का प्रयोजन क्या है ? इसका उत्तर है उनकी इच्छा, उनका खेल, उनकी लीला। दूसरा कोई नहीं जानता। उनके अतिरिक्त तो और कोई नहीं है—कौन जानेगा तब फिर ? ठाकुर कहा करते, सांप कुंडली मारे बैठा है, यही है दृष्टान्त ब्रह्म का, अपने स्वरूप में। सांप हिलता, चलता है, यही है लीला का दृष्टान्त।

"संसार मिथ्या—यह किसकी दृष्टि में प्रतिभासित होता है ? क्या तुम्हारी ? तुम्हारी नहीं। कारण, तुम्हारे ज्ञान चक्षु उदय नहीं हुए हैं। ज्ञानी के चक्षु में जगत् मिथ्या बोध होता है—जैसे माया मरीचिका। इस चक्षु से नहीं, यह है चर्म चक्षु। ज्ञानियों के कपाल में एक चक्षु होता है और शरीर में एक नाड़ी होती है। उसके आलोक में वे सब देख लेते हैं—जो सत्य है, जो यथार्थ है। उसका उत्ताप नहीं, किन्तु आभा है। देवताओं के शरीर के आलोक का भी यही अर्थ है। यह spiritual light (ब्रह्म ज्योति) है। जड़ सूर्य की light (ज्योति) नहीं। तुम यदि सूर्य पर जा सको, वहां से पृथ्वी की ओर दृष्टि डालने पर सब ही प्रकाशमय देखोगे। वैसे ही भीतर ज्ञानसूर्य के उदय होने पर सब ही सत्य है यह ज्ञान हो जाता है।

"संसार को किस रूप में देखते हो, जानते हो ? जैसे मरुभूमि पर मरीचिका। पथिक मरीचिका का अनुसरण करके विपद् में पड़ता है। संसार के पीछे भागने पर भी वैसी ही विपद् होती है। मरीचिका की सृष्टि कैसे होती है, जानते हो ? एक vapour (वाष्प) उठती है, पृथ्वी से। उस पर सूर्य का प्रकाश पड़ता है। उसमें दूर के वृक्षादि, जल, ये सब reflected (प्रतिबिम्बित) होते हैं। तब लगता है वहां जल है, बाग, शहर, ये सब हैं। हम चिलका झील देखने गए थे, एक बार। सारदानन्द, प्रेमानन्द और मैं। वहां हमें वैसा भ्रम हुआ था। हम कहने लगे, कैसा सुन्दर स्थान है। वास्तव में वह मिथ्या था। वैसे ही संसार भी सत्य दिखता है।"

प्रश्न—पाप और पुण्य क्या है ?

उत्तर—दो forces (शक्तियां) हैं, एक constructive (गठनात्मक) दूसरी destructive (विनाशात्मक)—जैसे आलोक और अंधेरा। आलोक में आने पर अंधेरा नहीं रहता। वस्तुतः पाप-पुण्य नाम से कुछ

भी नहीं है। यह मन की सृष्टि है। जब तक अज्ञान में है, संसार के विषयों में डूबा हुआ है, तब तक पाप है। वहां से उठने पर पुण्य। पाप माने अज्ञान, मिथ्या वस्तु को सत्य कहकर पकड़ लेना। स्त्री-पुत्र-कन्या-गृह सबको सत्य कह कर पकड़ लेना ही पाप है। पुण्य—इनके मध्य भी ईश्वर को पकड़ना।

प्रश्न— यह क्यों महाशय ? एक जन मद पीता है उसे आनन्द सुख मिलता है। और एक जन अपने शरीर की बहुत अच्छी तरह रक्षा करता है, पुत्र-कन्या को उत्तम आहार-वस्त्र देता है—इन सब में भी तो सुख होता है ?

उत्तर—नहीं। यह प्रकृत सुख नहीं। यह सुख कब तक ? जब तक नूतन और एक विषय में मन को लगा नहीं सकता। फिर इस विषय में सुख नहीं रहेगा। किन्तु भगवान के सुख का क्षय व ह्रास नहीं। विषय-सुख अभी है, अभी नहीं। मद पिया एक जन ने, तुरन्त मादकता आरम्भ कर दी। इसमें फिर क्या सुख ? कितने क्षण रहेगा ? मद पीना ही तो दुख है। ईश्वर सुख के सागर। संसार का जो सुख है वह उनके अनन्त सुख-सागर का एक कण मात्र है। तुम मिथ्या के पीछे घूम घूम कर सुख लेना चाहते हो, ऐसा भी क्या कभी होता है ? परिणाम में दुख ही सार होगा।

"ठाकुर ने सुन्दर एक कहानी सुनाई थी। एक कृषक की एक ही सन्तान, एकमात्र पुत्र था, वह मर गया। कृषक ज्ञानी था। उसने अपने को सम्भाल लिया, ज्ञान-विचार करके। किन्तु स्त्री को शोक था असहनीय—केवल रोती है और अछाड़-पछाड़ खाती है। स्वामी को स्थिर देखकर बोली—'तुम कैसे निष्ठुर हो। एक बूंद जल भी आंख से नहीं गिरा, एक मात्र पुत्र की मृत्यु पर। कैसे पाषाण तुम !' कृषक बोला, एक बात तुम्हें सुनाता हूं। रात को स्वप्न देखा कि मैं राजा हो गया हूं और तुम हो रानी। हमारे सात पुत्र हुए हैं। परम सुख में हम रह रहे हैं। निद्रा भंग होने पर देखा कि जैसा कृषक था वैसा ही हूं। अब विचार करता हूं कि तुम्हारे एक पुत्र के लिए रोऊं या उन सात पुत्रों के लिए रोऊं ? ज्ञानी की दृष्टि में इसी प्रकार ईश्वर सत्य है और जगत् मिथ्या।

हरेन्द्र 'वेदान्त सोसाइटी' का ठिकाना, एक भक्त से लेकर अपनी नोट बुक में लिख रहे हैं। श्री म की दृष्टि तो चूकने वाली नहीं है। उसे लक्ष्य करके हरेन से हंसी में बोले, "यह बात भी kindly (कृपा करके) लिख लें, नीचे—'कल मठ में जाऊंगा।' (बड़े जितेन के प्रति)—अनेक तीर्थ किये हैं कि ना इसने। उस दिन ये (जगबन्धु को दिखाकर) जोर करके मठ में ले गए थे इसको जन्माष्टमी के दिन, रात्रि को। (उच्च हास्य से) इसने चला आना चाहा था। इन सब ने जोर करके सारी रात पकड़ रखा। (हरेन के प्रति) अच्छा, तुम ये बातें भी लिखोगे, प्रश्नोत्तर क्लास में, जो सब हुई हैं, जो अभी अभी सुनी हैं ?"

हरेन्द्र—इसमें नहीं लिखी। बड़ी डायरी है, उसमें लिखूंगा।

श्री म (कल्पित विस्मय से)—बड़ी डायरी है, देखा जितेन बाबू तीर्थ करने के कारण इसका सब ठीक है।

एक जन भक्त—अभेदानन्द महाराज सब बातों के अन्त में ठाकुर की कथा द्वारा उपसंहार करते हैं। आज भी बोले, 'नित्य और लीला दोनों ही सत्य।' सांप का कुंडली मारे रहना और हिलते-डुलते चलना—स्वप्न में राजा और सात पुत्रों का बाप होना, देखना—ये सब ही ठाकुर की कथाएं हैं।

हरेन्द्र—ठाकुर की बात से ऊंची कोई बात नहीं। इसकी अपील भी नहीं।

श्री म (अधिक विस्मय से)—अच्छा ! देखा किस प्रकार सार समझे हैं। तीर्थ किए हैं कि ना, जभी पकड़ सके हैं।

हरेन्द्र—ठाकुर की कथा इतनी सरल और सहज है कि पांच बरस का शिशु भी समझ सकता है।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—देखा मूल में ठीक है।

हरेन्द्र ने प्रणाम करके विदा ली। भक्त अन्य बातें करने लगे।

बड़े अमूल्य (श्री म के प्रति)—कोकिलेश्वर शास्त्री ने वेदान्त की पुस्तक लिखी है, शंकर का मत।

श्री म—हां। पण्डितों की बातें छोड़ दो। वे जो बोलते हैं, उसे साधुओं के मुख से हम सुनना चाहते हैं—साधुओं ने ईश्वर के लिए सब

छोड़ा है। पण्डितों की बातें तो सर्वदा हैं ही। (अनैक भक्त के प्रति) हां, उस दिन साधुसंग—माहात्म्य क्या पढ़ा गया था ? वही फिर पढ़िए तो। भागवत ले आइए, कमरे से।

एक जन भक्त भागवत पढ़ते हैं—11वां स्कन्ध, 27वां अध्याय—उर्वशी पुरुरवा संवाद।

पाठक—(श्री कृष्ण उद्धव से कहते हैं) जो बुद्धिमान होंगे वे कुसंग त्याग करेंगे, और साधुसंग करते रहेंगे। साधुओं के उपदेश गुण से उनके मन की आसक्ति छिन्न हो जाती है। जो निरपेक्ष, मदगत चित्त, प्रशान्त, समदर्शी, ममता-वर्जित, निरहंकार, निर्द्वन्द्व और निष्परिग्रह हैं, वे ही साधु कहलाने योग्य हैं।

श्री म (पाठक के प्रति)—फिर दुबारा पढ़िये यही।

पाठक—जो लोग निरपेक्ष, मद्गत चित्त, प्रशान्त, समदर्शी, ममता वर्जित, निरहंकार, निर्द्वन्द्व और निष्परिग्रह हैं वे ही साधु कहलाने योग्य हैं।

श्री म—ठाकुर ने भी ठीक यही बात कही, जिसके पास बैठने से ईश्वर का उद्दीपन होता है अर्थात् ईश्वर सत्य, संसार अनित्य, यह बोध होता है, वे ही साधु।

पाठक (पढ़ते हैं)—हे महाभाग उद्धव, साधुगण नित्य हितजननी मदीय कथा की ही आलोचना करते हैं। वही सकल कथा श्रोताओं की कलुष नाशिनी है। जो लोग सादर साधु की वाणी श्रवण, कीर्तन और अनुमोदन करते हैं वे मदेक-तत्पर और श्रद्धावान होकर मेरी ही भक्ति प्राप्त करते हैं। मद्भक्ति, अनन्तगुण और आनन्दानुभवात्मक है। ऐसे साधु जो इस प्रकार की भक्ति से सम्पन्न हैं, उनके लिए और क्या अवशिष्ट रहता है ?

"भगवान अग्निदेव की उपासना से मनुष्य के जैसे शीत, भय और अन्धकार दूर होते हैं, साधुओं की सेवा से निखिल पाप नष्ट हो जाते हैं। जल में डूबते हुए व्यक्तियों के लिए जैसे नौका ही परम अवलम्बन है। डूबते उतराते जीवों के लिए ब्रह्मवेत्ता साधुगण भी वैसे ही आश्रय हैं। अन्न जैसे है जीव का प्राण, मैं जैसे दीन जनों की शरण, धर्म जैसे मानव का पारलौकिक धन, साधुगण वैसे ही हैं संसार-पतित भीत जीवगणों के

परित्राणकर्त्ता। सूर्य पूर्ण प्रकाशित होकर एकमात्र बहिश्चक्षु प्रदान करता है, किन्तु साधुगण बहुचक्षु अर्थात् सगुण निर्गुण बहुज्ञान प्रदान करते हैं। साधुगण ही हैं देवता। वे ही हैं बान्धव एवं वे ही हैं 'मैं'।

श्री म (भक्तों के प्रति)—साधुगण ही हैं 'मैं' भगवान कहते हैं। और फिर गीता में भी ठीक यही बात बोली है, ज्ञानी तु आत्मैव मे मतम्' (7 : 18) ज्ञानी मेरा स्वरूप। इन्हीं साधुओं की बातें हम सुनना चाहते हैं। नहीं तो प्राण शीतल होगा कैसे ? जो बाजे के बोल हाथ में लाए हैं वे ही हैं साधु। पण्डितों की बात पर ठाकुर कहते थे, घासफूस जैसे लगते हैं। किन्तु यदि पण्डित विवेक वैराग्यवान होते तो उन्हें खूब मान देते। कहते थे : के जाने बापू तोर गाई-गुई बोर भूमेर बामुन मुई*। गाई गुई माने non-essential (अनावश्यक भाग), 'वीरभूमेर बामुन मुई' माने ईश्वर की सन्तान, जगन्माता का पुत्र, 'मद्‌गतचित्त, मदेकतत्पर।'

श्री म अब कथामृत से एक सीन (दृश्य) पढ़कर भक्तों को सुना रहे हैं। इसके पूर्व और भी चार सुनाए थे। ठाकुर अधर के घर में बैठक खाने में नृत्य कर रहे हैं। ऐसे अपरूप नृत्य को देखकर नरेन्द्र आदि भक्तगण और स्थिर नहीं रह सके। नाचते नाचते ठाकुर एकदम ही समाधिस्थ हो रहे हैं। तब अन्तर्दशा। मुख में एक भी शब्द नहीं। शरीर एकदम स्थिर। भक्तगण तब उनके चारों ओर घूम घूम कर नाच रहे हैं। कुछ क्षण पीछे ही अर्द्ध बाह्यदशा हो गई—चैतन्यदेव की जैसी हुआ करती थी। उसी समय ठाकुर सिंह विक्रम से नृत्य करते हैं। प्रायः तब भी मुख में शब्द नहीं—प्रेम में उन्मत्त प्रायः। जब अल्प प्रकृतिस्थ होते हैं उसी समय एकदम आखर† देते हैं। आज अधर का बैठकखाना श्रीवास का आंगन हो गया है। हरिनाम के ऊंचे स्वर सुन कर राजपथ पर असंख्य लोग जमा हो गए हैं। भक्तों के संग अनेक क्षण नृत्य के पश्चात् ठाकुर ने फिर आसन ग्रहण किया। उसी अवस्था में नरेन्द्र से बोले, 'वही गाओ, 'आमाय दे मां पागल करे।' (मुझे मां पागल कर दे।)

---

*कौन जाने भाई गाम नाम, मैं तो वीरभूम का ब्राह्मण हूं।

†आखर=संकीर्तन में मूल संगीत के परिपोषक, गायक द्वारा संयोजित नूतन पद।

अधर सेन के घर में जितने गाने हुए थे सबके सब श्री म भक्तों के संग गा रहे हैं। अन्त में श्री म की इच्छा से एक भक्त शंकराचार्यकृत, दुर्गापर घ क्षमापनस्तोत्र आवृत्ति करते हैं :—

न मंत्रं नो यंत्रं तदपि च न जाने नुतिमहो,
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथा: ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्तदनुसरणं क्लेशहरणम् ।।'

बेलेघाटा, कलकत्ता।
15 सितम्बर, 1923 ई०।
28वां भाद्र, 1330 (बं०) साल; शनिवार।

षष्ठ अध्याय

ईश्वरदर्शन की कथा ही भारत का इतिहास

(1)

वेदान्त सोसाइटी से शची और जगबन्धु अभी अभी लौटे हैं। श्री म दोतल के कमरे में बैठे हैं। अब संध्या साढ़े सात। शुकलाल, योगेन, रमणी "दीर्घकेश", सुरपति, नलिनी आदि बैठे हैं। अल्प पश्चात् सुधीर, डाक्टर, विनय एवं दुर्गापद आ गए।

आज 16 सितम्बर, 1923 ई०, 29वां भाद्र, 1330 (बं०) साल; रविवार। श्री म की इच्छा से जगबन्धु वेदान्त सोसाइटी की वक्तृता के नोट पढ़कर सुना रहे हैं। आज विषय था, वेदान्त-कर्मयोग। सभा साढ़े पांच आरम्भ हुई। सभ्य संख्या : पचास जन।

स्वामी अभेदानन्द बोले—वेदान्त के भीतर द्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद और अद्वैतवाद, ये तीन ही हैं। इनके अतिरिक्त ज्ञानयोग, राजयोग; भक्तियोग और कर्मयोग, ये चार प्रधान पथ भी हैं। आज का आलोच्य विषय है, कर्मयोग।

श्री म—कर्मयोग, माने जो कुछ भी करो यदि यह सोचकर करो कि इसके द्वारा उनकी ही पूजा करता हूं तो फिर कर्मयोग हो गया। कर्म द्वारा उनके संग युक्त होकर रहना। उनका काम मैं करता हूं, मैं यन्त्र मात्र हूं, मालिक हैं वे। यही हुआ कर्मयोग का secret (कौशल)। मांस विक्रेता भी इस देश में ब्रह्मज्ञानी हुए हैं, भगवान लाभ किया है इसी कर्मयोग के द्वारा।

"जो कुछ भी किया जाय उसका फल भगवान को समर्पण कर देने पर फिर काम खराब नहीं होता। कर्मयोग का प्रथम सोपान है प्रार्थना। तुम रोज दो बार, प्रातः संध्या प्रार्थना करना सीखो। बोलो, 'हे प्रभो, सवेरे से संध्या तक जो कुछ किया है, सब तुमको

अर्पण करता हूं ।' और फिर संध्या से सवेरे तक जो करो उसका फल प्रातः समर्पण कर दो, प्रार्थना द्वारा । भला मन्दा फल सब उनको दे दो । कुछ मेरा, कुछ उनका—यह नहीं, सब उनका । इस प्रकार कुछ काल अभ्यास करने पर अन्त में देख सकोगे कि तुम फिर कोई खराब काज कर ही नहीं सकते । खराब काज करने में लज्जा होगी यह सोचकर कि अपने इष्ट को खराब वस्तु कैसे दूं ?

"यह करना हो तो एक आदर्श पकड़ना होगा । ईश्वर के किसी भी रूप का ध्यान चिन्तन करो । उनको ही फल समर्पण करो । उनके निकट ही प्रार्थना करो । और एक प्रकार है—एक भाव (thought) का ध्यान करना । यही एक भाव ले लो कि परमहंस देव ने अपने सिर के बालों द्वारा भंगी का घर साफ किया । ध्यान करने से इसका अन्तर्निहित भाव मूर्त्तिमान होकर दर्शन देगा । केवल मूर्ति-ध्यान करने से भाव-ध्यान बड़ा है । अवश्य प्रथम प्रथम सबका भावध्यान नहीं होता । किसी भी भाव का ध्यान करो फल उत्तम ही होगा । यह एक और भाव है—ठाकुर ने कहा था, 'मां, दिन जा रहा है, दर्शन नहीं दिया । इस वाणी पर ही चिन्तन करके देखो, कितना आनन्द पाओगे उनके चिन्तन में । आनन्द की खान हैं वे ।

"लोग विषय के पीछे दौड़ते हैं । कितना आनन्द है विषय में ? —एक तिलमात्र । ईश्वर का आनन्द अनन्त है, इसका शेष नहीं । तिल मात्र आनन्द के लिये सब दौड़ भाग करते हैं । तुम ब्रह्मानन्द का संधान करो । उसका आस्वादन कर सकोगे । तुम्हारा स्वरूप ही तो वही है । अपने को आप जानो । अब भूले हुए हो । तभी यह दुरवस्था है । घर में निर्जन छत पर, या अपने कमरे में, या अन्य किसी भी निर्जन स्थान पर ध्यान करो तो सही । बिखरे हुए मन को समेटकर एक वस्तु के ऊपर स्थापन करो तो । कितना आनन्द इसमें देख पाओगे । रोज अभ्यास करो ।

"जो पथ अच्छा लगे उसी पथ द्वारा ही जाओ, अग्रसर होओ । अन्त में ज्ञान और भक्ति दो प्रधान पथ ही रह जाते हैं । तभी ठाकुर बोले थे, शुद्धा भक्ति और शुद्ध ज्ञान एक वस्तु । यह वाणी शास्त्र में भी है, किन्तु इतना प्रचार नहीं था । परम हंस देव ने अपने जीवन में

उसे साधन करके, सिद्ध होकर प्रचार किया—'ज्ञान और भक्ति एक'। किन्तु शुद्ध होने चाहिएं। बुद्ध ज्ञान लेकर चले थे, चैतन्य भक्ति लेकर। ज्ञान और भक्ति दोनों का समन्वय रामकृष्ण।

"सामान्य विषयों के आनन्द में लोग डूब जाते हैं—स्त्री पुत्र संसार लेकर। अनन्त आनन्द सागर का संधान वे नहीं पाते। ईश्वर को पकड़कर संसार करने से इस दुरवस्था में नहीं पड़ना पड़ता। ज्ञान लाभ करके संसार करो, इसमें दोष नहीं। तब मन को बांध सकोगे।

"इस देश के लोग केवल दुहाई देते हैं—अमुक ने यह बात कही है, तमुक ने वह बात कही है। मैं कहता हूं कि तुम किसी को भी दुहाई मत दो। 'स्वयं होने की चेष्टा करो।' दो फूल चैतन्य प्रभु को चढ़ाने से, परमहंस को खूब बड़ा महापुरुष बोलने से, केवल नहीं होता मेरे भाई। निज करने की चेष्टा करो—वे जो जो बोल गए हैं। तभी तुम उनके, यथार्थ पुजारी बनोगे। उन्होंने कहा है, "आगे ईश्वर परे जगत्।" यह उलट कर, आगे जगत् परे ईश्वर—यह करके मत बैठो। कैसे कहते हो कि तुम उन्हें मानते हो? उनके उपदेशानुसार कार्य करो तभी तो उन्हें मान्य करना होगा। केवल "फूल" में क्या है, या "आहा" ही बोलने में क्या? कार्य करो।

"अन्य को अपनी भांति प्यार करना सीखो। निष्काम भाव में कार्य करने से यह हो सकता है। निष्काम कार्य करते करते निचला "मैं" दूर हो जाएगा। तब विराट "मैं" के संग योग होगा। तब समझ सकोगे तुम्हारे निज के भीतर जो नारायण हैं अन्य के भीतर भी वे ही नारायण हैं। पहले निष्काम काज करो, उनको प्यार करो, अन्त में देखोगे वे ही जगन्मय हैं। तब किसकी निन्दा करोगे, किसका अनिष्ट करोगे? "मैं" ही विश्वग्रासी हो जाएगा। यह ज्ञान होने पर अन्य से घृणा नहीं कर सकोगे। एक डाक्टर ने कहा था, "घृणा से जो विष उत्पन्न होता है उससे बीस लोग मर सकते हैं।" क्रोध भी क्रमशः कम हो जाता है। सब रिपु धीरे-धीरे शान्त हो जाते हैं। सारा दिन काज करने से जितनी energy (शक्ति) क्षय नहीं होती एक बार के क्रोध में उससे ढेरों अधिक शक्ति नष्ट होती है। यह सब जानना उचित है। यह सब पता हो तो चेष्टा करोगे ताकि वे सब फिर न हों। तब याद

रहेगा। निन्दा कैसे करूं ? इससे मेरे ही भीतर विष उत्पन्न होगा और उससे मेरा ही प्राण जाएगा।

"इन्हीं सब कारणों से निष्काम कर्म का नित्य अभ्यास करना चाहिए। इससे निन्दा, घृणा, क्रोध सब कम होते जाते हैं। अन्त में एकदम नष्ट हो जाते हैं। तब चित्त शुद्ध होता है। शुद्ध चित्त में हृदय बिहारी नारायण का दर्शन होता है। "मैं" ही करता है जितना भी है गोलमाल। इसको आरम्भ से ही उनके सग में योग कर दो। फिर बच जाओगे। अनन्त आनन्द की खान को अपनी बना सकोगे।"

श्री म (जगबन्धु के प्रति)—इसे ही स्वामी जी ने कहा है: Practical Vedanta (व्यावहारिक वेदान्त) कर्मयोग पुस्तक में, जो सवेरे आपके हाथ में थी।

(भक्तों के प्रति)—आप लोग भागवत पाठ सुनें, मैं आहार करके आता हूं।

शुकलाल भागवत पाठ करते हैं—दशम स्कन्ध, इकतालीसवां अध्याय। श्री कृष्ण और बलराम ने मथुरा में रजकवध किया है। आहार के पश्चात् श्री म ने वापिस आकर कुछ पाठ सुना।

श्री म—अक्रूर ने जल में डुबकी लगाई। वहां विश्वरूप दर्शन किया। बोले, जब तुम्हारा दर्शन सामने कर रहा हूं तब फिर मेरा ब्रह्म-दर्शन बाकी ही क्या रहा ? अर्थात् तुम्हीं परब्रह्म हो। जभी तो क्राइस्ट ने कहा था, I and my father are one (मैं और मेरे पिता एक हैं।) ठाकुर कहते थे, 'मेरा चिन्तन करने से ही होगा।' जुलाहे पर कृपा हुई, और फिर सुदामा मालाकार को भी तत्त्वज्ञान दिया। किन्तु धोबी कर्तव्यपालन करने गया तो मारा गया। इसमें क्या उनकी दृष्टि का वैषम्य है ? नहीं, यह नहीं—वे समदर्शी। यही कहकर सुदामा स्तव कर रहे हैं। (पाठक के प्रति)—पढ़िए तो फिर यही।

पाठक पढ़ते हैं :—सुदामा बोले—इस जगत् का चरम कारण आप सब लोग हैं। इस पृथिवी पर आपका अंशावतार केवल जगत् के मंगल के लिए होता रहता है। प्रभो, यद्यपि भजनकारी व्यक्ति का आप भजन करते हैं, तथापि आपकी असमान दृष्टि नहीं है। क्योंकि आप

जगत् को आत्मा हैं, सबके अनन्तकाल के बन्धु हैं, परम मंगलमय और समदर्शी हैं। आप सब की दृष्टि सर्वभूतों पर समान है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—भगवान की दृष्टि समान। शत्रु मित्र भेद नहीं इसमें। सूर्य सर्वत्र ही है किन्तु किरण प्राप्ति के लिए घर के बाहर आना पड़ता है। वैसे ही ईश्वर की कृपा सब के ऊपर समान है। उसकी उपलब्धि करनी हो तो अल्प चेष्टा का प्रयोजन है। यह चेष्टा जो जन करते हैं उन्हें ही भक्त कहते हैं, साधक कहते हैं : उनकी कृपा लाभ होने पर ही शान्तिलाभ होता है। इससे ही सुख, इससे ही अनाविल आनन्द, सर्वशेष अमृतत्व लाभ होता है। धोबी के मारने में क्या कोई अन्य उद्देश्य था ? नहीं, जो भाव लेकर सुदामा पर कृपा की थी उसी भाव को लेकर धोबी को भी मारा। इससे उसका मंगल होगा। चण्डी में देवता महामाया का स्तव करते हैं—मां, तुम्हारी तो शत्रु मित्र भेदबुद्धि नहीं है। फिर भी तुमने असुरों को अपने हाथ से क्यों मारा ? तुमने उनको सद्यमुक्ति देने के लिए मारा। तुम्हारे स्पर्श से वे मुक्त हो गए। जो सबकी आत्मा हैं उनमें वैषम्य रहेगा भी कैसे ?

जगबन्धु—कर्त्तव्यबुद्धि भी क्या बन्धन का कारण होती है ?

श्री म—हां। कर्त्तव्य दो प्रकार के हैं—एक से बद्ध होता है, दूसरे से मुक्त। जो अज्ञान से किया जाता है—जैसे पुत्र-कन्या गृहस्थ के लिए करना, इससे बद्ध होता है। और ईश्वर ही पुत्र कन्या आदि के रूप में मेरी सेवा ग्रहण कर रहे हैं—इस भावना से कर्त्तव्य करने से मुक्त होता है। इसे ही निष्काम कर्म कहते हैं।

"दीर्घकेश"—अच्छा, जिन शुकदेव स्वामी की कथा हुई है वे ही क्या व्यासदेव के पुत्र थे ?

श्री म—ऐसा ही तो लगता है। और ये सब historical matters (ऐतिहासिक विषय) नहीं, विश्वास की कथाएं हैं। वे (प्रतीची) कहते हैं कि भारत का इतिहास नहीं है। इसीलिए हमें barbarous nation, (बर्बर जाति) कहते हैं। क्या आवश्यकता है उनकी भांति history (इतिहास) रखने की ? नेपोलियन रशिया गए

स लाख सैनिक लेकर। नौ लाख शीत में शेष हो गए। एक लाख
कर लौट आए। यही तो है उनका इतिहास। कौन कब राजा हुआ,
किसका कितना रुपया था, किसने कितना कब लोकक्षय किया—ये सब
जानने से क्या लाभ ? भारत ऐसा इतिहास नहीं रखता। भारत रखता
; किसने आत्मदर्शन किया था, कितने लोगों को यह करने में सहायता
की थी—ये सब बातें। वे लोग ambition (उच्चाकांक्षा) के दास
होकर ऐसा करते हैं, स्वार्थ सिद्धि जन्य। किन्तु इस देश की history
(इतिहास) ऐसा नहीं। यहां पर ज्यों ही तनिक अधर्म होता है त्यों ही
उसका फल दिख जाता है। समस्त गीता का, समस्त महाभारत का
gist (सार) क्या है—"यतो धर्मस्ततो जयः"। (जहां धर्म है वहीं
जीत है।) पुराण, रामायण, महाभारत इस देश का इतिहास हैं। इन
सब में ईश्वर की कथा लिखी है। लोग किस प्रकार परम पुरुषार्थ लाभ
कर सकते हैं, किस प्रकार सब दुखों से छुटकारा पा सकते हैं, यही सब
बातें लिखी हैं। यदि कहीं ऐश्वर्य की बातें हैं भी, तो वे ईश्वर के ऐश्वर्य
की महिमा प्रचार के लिए ही हैं, जैसे राम के राज्याभिषेक का वर्णन,
अथवा द्वारका का वर्णन।

श्री म—दिलीप भारत के चक्रवर्ती राजा थे। वानप्रस्थ अवलम्बन
करके गुरुगृह में गए। अपने हाथों से गुरु सेवा करते। और फिर
आश्रम की गायें चराने का भार भी उन पर था। फिर वे ही अकेले
नहीं थे उनकी स्त्री—भारत की महारानी—वे भी सेवा करतीं एक
दिन एक सिंह आकर बोला, 'राजन्, यह गाय मेरा भक्ष्य, अत एव
इसको मुझे प्रदान कीजिये।' महाराजा दिलीप ने उसको नाना धर्म
उपदेश दिये। कौन सुनता है उनकी बात ? अस्त्र शस्त्र भी थे,
किन्तु उसे मारा नहीं। कारण, वानप्रस्थ में अहिंसाव्रत लिया था
कि ना। अहिंसा, सत्य और ब्रह्मचर्य, ये तीनों ही तो हैं प्रधानतया
पालनीय। सिंह किसी तरह से भी नहीं मानता। यह देखकर, अन्त
में बोले, 'पशुराज, गाय तुम्हारा भक्ष्य, सन्देह नहीं। किन्तु अब मेरी
care (आश्रय) में रह रही है। आश्रित का त्याग करना मेरे लिये
अधर्म है। तुम क्षुधार्त्त हो, अत एव मेरा शरीर खा डालो, गाय को
छोड़ दो।' सिंह थे छद्मवेशी धर्म। स्वरूप प्रकट करके अन्तर्निहित हो
गये। यही है हिस्ट्री भारत की।

श्री म (भक्तों के प्रति)—आजकल तो उस प्रकार कोई भी वानप्रस्थ के लिए नहीं जाता। नाम सुनते ही भय होता है। पुत्र कन्या गृहस्थ के मोह में जड़ित हुए पड़े हैं। सुनते हैं पहले बहुत लोग वानप्रस्थ के लिए जाते थे। (शुकलाल के प्रति) और फिर यह भी है—'यदहरेव विरजेत् तदहरेव प्रव्रजेत्।' वैराग्य होते ही वन में चले जाना।

जनैक भक्त—वानप्रस्थ के समय यदि वैराग्य न हो तो भी जाना?

श्री म—हां, तब भी जाना पड़ता था। अब कहां जाते हैं लोग? 'पंचाशदूर्ध्वं वनं व्रजेत्' (पचास के ऊपर वन में जाए)। यह असाधारण नियम। कोई कोई इस बात का contradiction (विरुद्ध उपदेश) करते हैं। किन्तु यह नहीं। शास्त्र का contradiction (विरुद्ध उपदेश) जिसको कहते हैं वह भी तो त्याज्य नहीं। कारण, मनुष्य ने नहीं कही ये बातें। सब भगवान का निर्देश है। अर्थ न समझ सकने के कारण वे ऐसी बात कहते हैं। स्थान काल पात्र भेद से विभिन्न व्यवस्था दी गई है।

एक सुनार था भलामानस। तभी बहुत लोगों ने उसे अलंकार गढ़वाने के लिए सोना चांदी दिया। वह एक ही पतरे को पीटता जाता है। जो भी आता है उससे यही कहता, 'यह आपका ही हो रहा है।' एक ही पतरे से विभिन्न गढ़न होगी। वैसे ही एक ही ईश्वर से इस जगत् की विचित्रता है। भिन्न-भिन्न स्थान काल पात्रों के भिन्न-भिन्न नियम हैं। किसी को भी छोड़ा नहीं जा सकता। पचास पार होने पर वन में जाना यह व्यवस्था भी सत्य, और फिर जब वैराग्य होगा तभी वन में जाना, यह भी सत्य।

यह तो था साधारण नियम कि प्रथम गुरुकुल में वास करके, गुरु सेवा द्वारा विद्या अर्जन और चरित्र गठन करना। इसे ही student life अथवा ब्रह्मचर्य आश्रम कहते हैं। यहां पर कठोर discipline (अनुशासन) की शिक्षा पाता है। फिर यही जीवन्त शिक्षा लेकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना। यहां धर्मपालन, अर्थलाभ और कामभोगादि करेगा। पूर्व के आश्रम की कठोर शिक्षा के फल से यहां पर पदस्खलन का भय रखते हुए भी, पच्चीस वर्ष इस आश्रम की सेवा करके तृतीय आश्रम वानप्रस्थ ग्रहण करना। यह एक प्रकार से आजकल की

retirement (अवसर ग्रहण) की तरह ही है। दीर्घकाल गृहस्थ में काजल की कोठरी में रहने के कारण मन में जो जो दाग लग जाते हैं, उन सबको छुड़ाने की चेष्टा करता है इस आश्रम में। तत्पश्चात् मल-मुक्त मन होते ही संन्यास ग्रहण करना। तब सर्वदा ईश्वर-चिन्तन में निमग्न रहेगा। यह हुआ साधारण नियम। किन्तु किसी किसी के पूर्वजन्मों के संस्कार सहायता करते हैं। उसे इस जन्म में सारा (चक्र) घूमना नहीं पड़ता। इसके लिए ही है व्यक्तिक्रम। जब ही ईश्वर चिन्ता करने की प्रबल वासना जाग्रत होगी तब ही गृहस्थ आश्रम अर्थात् कर्मकाण्ड त्याग कर देगा। एक नियम क्या सब के लिए चलता है। जिसके जैसे संस्कार उसको वैसा ही करना होगा।"

श्री म (भक्तों के प्रति)—ठाकुर कहते, 'मां, मैं जानना भी नहीं चाहता कि शास्त्र में क्या है। अपने पादपद्मों में शुद्धा भक्ति दो और आपकी भुवनमोहिनी माया में मुग्ध न होऊं।' ईश्वर के दो डिपार्टमेन्ट हैं—विद्या और अविद्या। विद्या ईश्वर की ओर ले जाती है और अविद्या ध्वंस के पथ पर ले जाती है। वेद में है, 'जो कहता है कि उनको जान गया हूं, समझ गया हूं, वह कुछ भी नहीं समझा—मतं यस्य न वेद सः। (जनैक भक्त के प्रति)—कौन सा मंत्र ?

भक्त—यस्यामतं तस्य मतं मतं यस्य न वेद सः।
अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानताम् ॥

श्री म—'डेलफिक ओरेकल', डैलफाई में दैववाणी हुई : इस ग्रीस देश में श्रेष्ठ ज्ञानी साक्रेटीज। साक्रेटीज यह सुनकर पहाड़ पर निर्जन में बैठकर सोचने लगे, क्यों हुई यह दैववाणी ? बहुचिन्तन के पश्चात् बोले, अरे समझा, क्यों यह बात कही। मैं जानता हूं कि मैं ईश्वर के विषय में कुछ भी नहीं जान सका। अन्य सब पण्डितगण कहते हैं कि उन्होंने सब कुछ जान लिया है। इस जगत् और ईश्वर के इन सब तत्वों को मैं कुछ भी नहीं समझ सका हूं।

श्री म (दीर्घकेश के प्रति)—द्रौपदी के पांच पुत्रों को अश्वत्थामा ने मार दिया। श्री कृष्ण अर्जुन से बोले, इस आततायी का सिर काटना विधेय है। और फिर जब द्रौपदी ने गुरुपुत्र के वध में बाधा डाली तब श्री कृष्ण बोले, हां गुरुपुत्र है अवध्य। प्रथम अर्जुन के भाव में बात

कहीं। अर्जुन था क्षत्रिय-राजा। दुष्ट का दमन, शिष्ट का पालन राजा का धर्म है। अन्त में बोले थे, द्रौपदी के भाव में। आहा, द्रौपदी का कैसा उच्च भाव ! इतना शोक, पांच पुत्रों का नाश हुआ, तब भी धर्म को नहीं छोड़ा। बोली, मेरे साथ जो हुआ सो हुआ। गुरुपत्नी के मन में पुत्र-शोक देना ठीक नहीं है। गुरुपुत्र है अवध्य। भक्त हैं कि ना तभी तो इतने शोक में निज धर्म, निज कर्त्तव्य भूली नहीं। यही है भारत का इतिहास।

कुछ क्षण पूर्व दुर्गापद मित्र आए। ये 'हीलिंग बाम' के मैनेजर हैं। मठ में इनका नाम तभी हीलिंग बाम पड़ गया। वे हैं एक प्रवीण मेधावी भक्त।

दुर्गापद (श्री म के प्रति)—मैं बुधवार को पुरी जाऊंगा, यह सोच रहा हूं।

श्री म—बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। हमारे लिए भी एक वास स्थान देखिएगा।

दुर्गापद (खेद से)—संभवत: और पांच छ: वर्ष बचूंगा। किन्तु अभी तक कुछ भी तो नहीं हुआ। ना तो उन्हें संतुष्ट कर सका न आप लोगों को ही। आप लोग जो message (उपदेश) देते हैं उसके लिए तो हम ऋणी हैं। वह (पालन) नहीं कर सका। जीवन तो वृथा ही गया।

श्री म—वे (प्रभु) सब के लिए चिन्ता करते हैं। हम उनके हाथ में हैं या वे हमारे हाथ में हैं ? हम ही उनके हाथ में पड़े हैं। वे इच्छा करने से सब कर सकते हैं। बिल्ली के बच्चे की भांति भी रख सकते हैं, ज्ञान भक्ति भी दे सकते हैं। हमें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। एक दिन रात्रि दस के समय कहने लगे, मां, चिन्ता क्यों करवाती हो। तुम तो इच्छामयी हो। तुम जो इच्छा करोगी वही तो होगा। तब फिर व्यर्थ क्यों भावना करवाती हो ? उनकी जो इच्छा, वही होगा।

दुर्गापद—स्त्री पुत्र परिवार ये सब लेकर चिन्ता करते करते ही दिन जा रहे हैं।

श्री म—इनके भीतर ईश्वर रह रहे हैं—यह विचार करके उनकी सेवा करने पर इससे उनकी ही पूजा होती है। अच्छा तो है, पुरी

जाइए। जगन्नाथ, समुद्र, चैतन्यदेव के सब स्थान—ये सब उद्दीपन की वस्तुएं हैं। उनकी इच्छा से हमारा भी कई बार जाना हुआ है।

डाक्टर कार्त्तिक (श्री म के प्रति)—आपका कितनी बार जाना हुआ पुरी ?

श्री म—यही पांच छः बार हुआ है। कभी पण्डों के घर, कभी शशि-निकेतन, इसी प्रकार कई एक स्थानों पर था। एक बार जाकर ठहरा था अन्यत्र। मन्दिर में मिलन हुआ प्रेमानन्द, बलराम बाबू के संग। ये पकड़कर ले आए, शशि-निकेतन में। उनकी बाड़ी पर ही उस बार ठहरा। ठाकुर की कथा की manuscript (पाण्डुलिपि) संग में थी। उन्हें पढ़कर सुनाता। पर्दे के पीछे बैठकर स्त्रियां सुनती। और एक बार राखाल महाराज और प्रेमानन्द थे*।

सब भक्त प्रसादी अंगूर खा रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—जापान का detailed account (विस्तृत विवरण) मिले तो kindly (कृपया) लेते आइएगा। यह जो जापान ध्वंस हुआ यही ईश्वर की warning (सतर्क वाणी) है। ईश्वर warn (सतर्क) करते हैं, दो एक बार। बार बार नहीं करते। अधर सेन को ठाकुर ने घोड़े पर चढ़ने के लिए सतर्क किया था। कहा था, पालकी तो अच्छी है। अधर बाबू ने नहीं सुना। द्वितीय बार घोड़े से गिरकर ही शरीर गया। तब ठाकुर बोले थे, 'मां बार बार नहीं बोलतीं, दो एक बार सावधान करती हैं।' बंगाल में जो बार बार flood (बाढ़) आती है, लोगों को चाहिए flood area (बाढ़ क्षेत्र) से हट जाएं। उनकी warning (सतर्क वाणी) न सुनने से कष्ट होगा, नाश होगा निश्चय ही।

(2)

मॉर्टन का द्वितल। एक भक्त ने आकर देखा श्री म पश्चिम दिशा में हॉलघर में बैठे ध्यान कर रहे हैं पूर्वास्य। पास सुधीर और योगेन। अब संध्या सवा सात। क्षणिक ध्यान के पश्चात् श्री म गान गा रहे हैं। आज विश्वकर्मा पूजा है।

---

*श्री म दर्शन 14वां भाग द्रष्टव्य—श्री पुरी खण्ड।

गानः तोमारेइ करियाछि जीवनेर ध्रुवतारा।
ए समुद्रे आर कभु होबो नाको पथहारा॥
यथा आमि जाई नाको, तुमि प्रकाशित थाको,
आकुल नयनजले ढालो गो किरण धारा॥
तव मुख सदा मने, जागितेछे संगोपने,
तिलेक अन्तर होले ना हेरि कूल किनारा॥
करवनो विपथे जदि, भ्रमिते चाय ए हृदि,
अमनि ओमुख हेरि, समरे जे होय गो सारा॥[1]

गानः आछि मा तारिणी ऋणी तव पाय।[2]

गानः हरि जगत् जीवन जगबन्धु।
शेनेछि पुराणे कय पुनर्जन्म नाहि होय हेरिले तव मुख इन्दु॥[3]

गानः श्री हरि काण्डारी जेमन आर कि तेमन आछे नेये।
पार करेन दीनजने अधमतारण चरण दिए॥
तरणीर एमनि गुण नाइको हाल तार नाइको गुण।
चले से आपनि तरी अधमधारण चरण पेये॥[4]

---

[1]भावार्थ—मैंने तुझे अपने जीवन का ध्रुव तारा बना लिया है। मैं अब भवसागर पर पथच्युत नहीं हूंगा। जहां कहीं मैं जाता हूं वहां तुम्हारा प्रकाश है। तुम्हारी किरण से मेरे आकुल नयनों से अश्रुधारा बहने लगती है। तव सदा तुम्हारी छवि मेरे मन के भीतर जाग्रत रहती है। जब तुम मेरे अन्तर से ओझल हो जाते हो तो मैं कूल किनारा खोजने लगता हूं। यदि किसी समय मेरा हृदय विपथ पर भ्रमण करना चाहता है तो झट तुम्हारा मुख देखकर मैं लज्जित हो जाता हूं।

[2]ओ मेरी तारिणी मां, मैं तुम्हारे चरणों में ऋणी हूं।

[3]ओ जगबन्धु जगज्जीवन हरि, मैंने पुराणों से सुना है कि तुम्हारा मुखचन्द्र देखने पर फिर पुनर्जन्म नहीं होता।

[4]भावार्थ—जैसे श्री हरि तारणहार हैं वैसा क्या कोई और भी है? जो अधमतारण अपने चरणों द्वारा दीनजन को पार करते हैं। इस तरणी का न तो खेवैया है और न ही कर्णधार है। यह नाव अधमतारण भगवान के चरण प्रताप से आप ही आप चलती है।

बड़े जितेन ने गृह में प्रवेश किया। साथ ही अमृत, चैटर्जी और शुकलाल आ गए। फिर डाक्टर तथा विनय और छोटे नलिनी आए। श्री म फिर और गा रहे हैं।

गान: गौर प्रेमेर ढेउ लेगेछे गाय।
तार हुंकारे पाषण्डदलन ए ब्रह्माण्ड तलिये जाय।
मने करि मूले दांड़िये रई गौर चाँदेर प्रेम-कुमीरे गिलेछे गो सइ।
एमन व्यथार व्यथी के आर आछे हात धरे टेने तलाय।।*

श्री म का शरीर आज इतना ठीक नहीं—पीठ में व्यथा है। बातें करने में कष्ट होता है। तभी उनकी इच्छा से भागवत पाठ हो रहा है। सत्व रजः तमः गुणों की बातें श्री कृष्ण उद्धव को बतला रहे हैं:—

श्री कृष्ण—हे पुरुषवर उद्धव, सत्त्वगुण की वृत्तिएं ये हैं—शम, दम, तितिक्षा, विवेक, स्वधर्मनिष्ठा, सत्य, दया, पूर्वापर स्मृति, यथा-लब्ध वस्तु में सन्तोष, दान, वैराग्य, आस्तिक्य, अनुचित कार्य में लज्जा, सारल्य, विनय और आत्मरति प्रभृति।

रजोगुण की वृत्तियां ये हैं—इच्छा, चेष्टा, दर्प, लब्ध वस्तु में असन्तोष, गर्व, धनादि कामनाओं के लिए देवता के निकट प्रार्थना, मन्दबुद्धि, विषय-भोग, मत्तताप्रयुक्त युद्धाभिनिवेश और स्तुतिप्रियता उपहास, प्रभावविस्तार और वध चेष्टा आदि।

तमोगुण के कार्य हैं ये—असहिष्णुता, व्यय विमुखता, अशास्त्रीय कथा, हिंसा, प्रार्थना, धर्मध्वजिता, श्रम, कलह, अनुशोचना, भ्रम, दुःख, दैन्य, तन्द्रा, आशा, भय और उद्यमहीनता आदि।

श्री म (भक्तों के प्रति)—सुन्दर हैं ये सब बातें, मानो गीता के तीन गुणों की commentary (व्याख्या) है। जो भगवान को चाहते हैं उन्हें ये सब मुखस्थ रखना उचित। तब अपने संग मिलान किया

*भावार्थ—गौर प्रेम की लहर शरीर पर आ लगी है। उसकी हुंकार से दुष्टों का दमन हो जाता है और ब्रह्माण्ड तल में डूब जाता है। ए सखी, मेरा मन करता है कि इसी किनारे पर खड़ी रहूं। मुझे गौरचन्द्र के प्रेम रूपी मगरमच्छ ने निगल लिया है। इस दुःख में ऐसा मेरा कौन सा बन्धु है जो हाथ पकड़ कर मुझे बाहर खींच ले।

जा सकता है—मैं कहां पर हूं—where do I stand. लम्बी लम्बी बातें केवल मुख से बोलने से क्या होगा, हाथ में लाना होगा। इन सब से मिलान करने पर देख सकोगे कि भीतर सब खोखला है, असार से पूर्ण है। निश्चय ही सबको भगवान के पास जाना होगा। किन्तु अब कहां पर हूं, यह पता न हो तो कैसे समझोगे कि कितना बाकी है। अतः चेष्टा और प्रार्थना एक संग करनी चाहिये। वे सब कृपा करके सहाई होते हैं। इन तीन गुणों से ही मनुष्य बद्ध होता है। इसीलिए तो तम से रज अच्छा, रज से सत्त्व भला। भगवान् कहते हैं, भक्तियोग अवलम्बन करके, मत्परायण होने पर इन तीनों गुणों पर विजय पाई जाती है। मनुष्य त्रिगुणातीत हो जाता है। यही है मुक्ति।

बड़े जितेन—पीठ में व्यथा क्यों होती है?

श्री म (सहास्य)—यह भी कोई व्यथा है, old man वृद्ध तो है। वार्धक्य में कितने विघ्न। किन्तु इससे बड़ी व्यथा भी सामने है।

शुकलाल इसी व्यथा के लिए एक शीशी 'आयल गलथेरिया' लाये हैं। कुछ क्षण डाक्टर ने उसकी उपकारिता के सम्बन्ध में बातें कहीं। श्री म पुनः बातें करने लगे—अब आत्म-चरित।

श्री म (भक्तों के प्रति)—एक बार एक miracle (अलौकिक व्यापार) हुआ था। कैसा आश्चर्य! सादा बाड़ी में झाड़ू दे रहा था। एक बिच्छू ने काट लिया। कैसी यन्त्रणा! आंखों में जल ही जल। कितने जनों ने जितना ही कुछ लाकर दिया। तम्बाकू के पत्ते आदि बांधा बांधी, सब कुछ ही किया। किसी से भी कुछ नहीं हो रहा था। हठात् ठाकुर की रोगक्लिष्ट मूर्ति याद आ गई। मैंने इच्छा करके याद नहीं किया था, भीतर से अपने आप आ गई। कैसा आश्चर्य! क्षण भर में यह प्राणघाती यंत्रणा कहां अदृश्य हो गई! कैसा अद्भुत miracle (दैवी घटना)!

"कैंसर हुआ। मां से बोले, 'मां बड़ा दर्द है, हटा दो'। कुछ ही समय पश्चात् बोले, 'मैं यह न कहूं तो क्या करूं? मां ने मुझे बालक की अवस्था में जो रखा हुआ है। जिसकी मां है वह क्या

करता है ? —सब बातें मां को कहता है। मां बच्चे के लिए सब करती हैं। मेरी मां हैं और मैं हूं। अब मुझे तो ज्ञानी की अवस्था में रखा नहीं है जो ऐसे किए (चुप) रहूंगा। मां से सब कहना पड़ता है। मां की इच्छा से ही सब होता है।'

"सुख दुःख के पार जाने पर क्या अवस्था होती है यह भी उनमें ही देखी है। रात दिन हो रही है यह अवस्था। अभी अभी जो पढ़ने गई है भागवत में, त्रिगुणातीत अवस्था। 'यस्मिन् स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते।' (गीता 6:22) यंत्रणा से रो रहे हैं और फिर सब स्थिर—मुखमण्डल जैसे प्रस्फुटित कमल। महेन्द्र सरकार इतना विचार किया करते, किन्तु ठाकुर की यह अवस्था देखकर निर्वाक् हो जाते। उनकी डाक्टरी साइन्स में तो इस अवस्था की बात ही नहीं थी।

"लोग जिसे सुख कहते हैं वह है worldly (जागतिक) सुख, विषय-सुख। यह आता जाता है। ज्ञानी लोग इसे भी दुःख कहते हैं। इसी दुःख सुख के पार और एक सुख है। यह बदलता नहीं, सर्वदा ही सुख, अविराम सुख। वह तो भगवान के पास है—उसका नाम ब्रह्मानन्द है। यही तो है मनुष्य का चरम लभ्य।

"एक दिन ठाकुर मां के संग बातें कर रहे थे। बोले, 'मां तू इच्छामयी है, तेरी इच्छा ही पूर्ण होगी। इतना कह रहा हूं कि अपना भुवन-मोहन रूप एक बार तो उसे (श्री म को) दिखा दे। इस रूप को देखने से शोक, दुःख सब दूर हो जाते हैं। संसार झड़ पड़ता है। वह तू ही तो उसे देगी ना।'

"उनको देख लेने पर सब भूल जाता है। तब क्षण भर का विरह भी सह्य नहीं होता। आहा, ठाकुर ने कैसा क्रन्दन किया था—जिसे कहते हैं, 'एक घटि क्रन्दन'। पंचवटी में सड़क के सभी लोग जमा हो जाते। और प्रबोध देकर कहते, तुम्हारा होगा, तुम्हारा होगा। चैतन्यदेव भी सर्वदा रोते रहते थे। संसार भूल गया था। एक बार जगन्नाथ के मन्दिर की दीवार के निकट गिर पड़े—बाह्यज्ञान जो न था। महाभाव में सब भूल गया था। भक्तजन खोजते हैं पर वे मिलते नहीं। एक बार फिर देखा गया कि समुद्र में तैर रहे हैं। मछुए निकालकर

ले आये। पृथिवी, जल, किसी का भी ज्ञान नहीं था। और फिर कहां चले गए किसी को पता ही नहीं। कोई कहता, टोटा गोपीनाथ में मिल गये हैं। कोई कहता है, जगन्नाथ में। Third theory (तीसरा मत) है, समुद्र में।*

"भक्तों के लिए कितना plead (प्रार्थना) किया करते, मां के पास। आधी रात, निद्रा भंग हो गई। मां से बोले, उसे डुबाना न मां। एक भक्त को ससुराल भेज दिया था। फिर कहीं स्त्री तंग न कर बैठे इसीलिए कल दबाते हैं।

"और एक भक्त* के लिए कहा, वह बड़ा सरल है, चुप करके बैठा रहता है। तुमसे कहता हूं, इसे खींच लो मां।"

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—ठाकुर कहते थे, 'असुर होने से एक तो बड़ी अच्छी बात हुई। कौन अपना है, कौन अन्तरंग और कौन पराया—इसकी छंटाई हो जाएगी इससे। जो अन्तरंग हैं वे छोड़ नहीं सकेंगे। घर के आदमी को, अपने जन को असुख होने पर क्या छोड़ सकते हैं? अन्य लोग हट जाते हैं। और कहने लगते हैं ये अपनी ही रक्षा नहीं कर पा रहे, तो हमारी रक्षा कैसे करेंगे? और एक यह लाभ हुआ, ठाकुर कहते थे, 'इसको हस्पताल डिस्पैन्सरी होने से बचा दिया। सिद्धाई-विद्धाई होने से जनता आती, रोग हटवाने या मुकद्दमा जितवाने। अनेक ही तो ऐसे निम्न भाव लेकर आते हैं कि ना, साधु के पास?'

"उनके असुख के समय सब भक्त हर समय उनकी सेवा नहीं कर सके, घरों में अनेक काम रहते थे। मां से जभी तो कहते, 'मां कैसे वे आवें? उनको कितने काज हैं, घरबार देखना पड़ता है। समय कहां, मां उन्हें।' पीछे कहीं मां उनका अपराध लें, जभी मां से स्वयं ही प्रार्थना करते हैं।

"रुपया पैसा अधिक मांगने से कहीं भक्त फिर आयें ही ना,

*दीनेश सेन "बृहत् बंग" में कहते हैं गुण्डिचा मन्दिर में रथ के समय विषाक्त ज्वर से शरीर गया। वहां पर ही समाहित हो गए।

*श्री म।

सो कहते यहां पर 'पैला'* नहीं है। कहते, आहा, उन्हें वह (धन) इतना प्रिय है तो उनका ही रहे। भक्तों को दो एक पैसे की इलायची या ऐसा ही कुछ ले आने को कहते। जिनके पास पैसा नहीं था उनके लिये फिर आने जाने का गाड़ी भाड़ा भी देने के लिए कहते, और जिनके पास पैसा है ऐसे भक्तों से—बलराम बाबू आदि से बोल देते, हां तुम इसका गाड़ी भाड़ा दे देना। भक्त बिना रह नहीं सकते थे, तभी उनके लिये व्याकुल होते। किन्तु कोई भी जबरदस्ती नहीं, वहां पर। कभी कभी हंसते हंसते कहते, एक जगह यात्रा हुई थी। उसमें 'पैला' नहीं था, बिल्कुल मुफ्त। तभी भीड़ ही भीड़।

"एक बार पंचवटी में एक हठयोगी साधु आया था—अफीम खाता था। नित्य उसका डेढ़ सेर प्रायः दूध लगता था। उसने राखाल से दूध और अफीम के लिए रुपया जमा करने को कहा। राखाल ने कहा, भक्तों के आने पर कहूंगा। ठाकुर घर में सारे भक्त आकर बैठे। हठयोगी पैरों में खड़ाऊं पहने खटर खटर करता आ गया। राखाल से वही बात पूछते ही ठाकुर ने राखाल की ओर से भक्तों से कहा, 'तुम कुछ दोगे? इससे तो लगता है तुम कुछ नहीं देना चाहते। क्योंकि कोई भी तो कुछ बोला नहीं।' भक्त press (पीड़ित) न हों, तभी कैसे सुन्दर भाव से बात कह दी।

"आर० मित्र हमारे मुहल्ले के व्यक्ति थे। कुम्भ मेले में प्रयाग गये थे। लौटकर ठाकुर को मिलने गये। ठाकुर ने पूछा, कैसा लगा सब कुछ? उन्होंने कहा, सुन्दर, किन्तु अनेक साधु पैसे लेते हैं। ठाकुर बोले, 'पैसे लेते हैं, तुम केवल यही देख पाये? उनमें कुछ भी और भला नहीं देख पाए। पैसा न हो तो वे खायें क्या'?"

बाहर तीर्थ-भ्रमण में जाकर कहां क्या सुविधा-असुविधा होती है ऐसी बातें होने लगी।

श्री म (भक्तों के प्रति)—तीर्थ में रहना तो अच्छा है। वहां पर आग सर्वदा जल रही है। तापने से ही हुआ। अन्य जगह आग जलानी पड़ती है। अन्य स्थानों में—वैद्यनाथ, पुरी आदि

*पैला = दरशनी; चन्दा। प्रणामी।

स्थान अच्छे हैं। पुरी में तो इससे भी बढ़कर एक बड़ी सुविधा है। वहां पर राँधना नहीं पड़ता। खरीद कर खाओ। खरीदने से प्रसाद मिल जाता है। खाना पकाने लगो तो सब समय उसमें ही चला जाता है। ईश्वर चिन्तन का समय कम हो जाता है। पुरी में सुखी चरण ने दो बार बुलाया है। वे जगन्नाथ के मैनेजर हैं। उन्होंने बुलाया है अर्थात् जगन्नाथ ने ही बुलाया है।

मणि और योगेन दोनों सन्मुख भुके हुए विषण्ण भाव में बैठे हुए हैं। यह देखकर श्री म बातें करने लगे।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ठाकुर को तब खूब असुख था। एक भक्त खिन्न हुए बैठे थे उनके सामने। ठाकुर का शरीर सूखकर धनुषवत् हो गया था मुड़कर। हाड़ कुछ बचे थे केवल। इस अवस्था में भी विषण्ण भक्त से उत्तेजित भाव से बोले, 'यह क्या ? कमर कसो। ऐसा होने से कैसे चलेगा ? विषण्ण भाव परित्याग करो।'

श्री म (मणि और योगेन के प्रति)—ऐसा होने से नहीं चलेगा। संसार युद्ध-क्षेत्र। अनवरत युद्ध चलता है। नग्न तलवार बनकर रहना चाहिए। कब क्या विपद् पड़े। सशस्त्र सैनिक जैसे रहता है। "कम्पेनवैल" अस्त्र शस्त्र से सज्जित था, तो भी हठात् एक गोला लगते ही डूब गया। संसार में कितने गोली छर्रे चलते हैं। चारों ओर ही है विपद्। उसके लिये ही तलवार सर्वदा खुली रखनी चाहिए। इसी भावना से कि न जाने कब विपद् आ पड़े। महायुद्ध क्षेत्र में आलसी,अमनोयोगी होते ही विनाश होता है। क्राइस्ट ने तभी तो भक्तों से कहा था, तुम लोग आमोद करो और मेरा अनुसरण करो। मैंने संसार जीत लिया है। मुझे पकड़कर तुम अनायास में जय कर सकोगे—'but be of good cheer; for I have overcome the world !' इसीलिये भक्त लोग सर्वदा आनन्द में रहेंगे, भगवान को पकड़कर। अवसादग्रस्त होने से यह वह दोनों ही दिशाएं जाएंगी। 'आत्मानम् नावसादयेत्।'

श्री म, भोजन के लिये ऊपर गये। भक्तों में से अनेक चले गए।

डाक्टर, विनय, छोटे नलिनी और जगवन्धु श्री म की प्रतीक्षा में बैठे हैं। रात्रि 10 बजकर 15 मिनट।

कलकत्ता, 17 सितम्बर, 1923 ई०।
30वां भाद्र, 1330 (बं०) साल।
सोमवार।

सप्तम अध्याय

स्वामी जी को समझने का समय अभी भी नहीं हुआ

(1)

मॉर्टन स्कूल के द्वितल के पश्चिम के कमरे में श्री म बैठे हुए हैं। तीनों ओर शुकलाल, शची, सुधीर योगेन आदि भक्तगण भी बैठे हैं। आज 18 सितम्बर, 1923 ई०; पहला आश्विन, 1330 (बं०) साल। अब संध्या साढ़े सात। एक भक्त ने गृह में प्रवेश करके देखा श्री म गुनगुन करके रामप्रसाद का गाना गा रहे हैं—'आमि ओइ खेदे खेद करि, तुमि माता थाकते आमार जागा घरे चुरि'।[1] अल्प पश्चात् भक्तों के संग बातें करने लगे।

श्री म (दृष्टि अतीत में निबद्ध करके)—ठाकुर के हाथ में bars (छपटियां) बंधी हैं। यंत्रणा से खूब क्रन्दन कर रहे हैं और यही गाना गा रहे हैं, 'तुमि माता थाकते आमार जागा घरे चुरि'। तारों की बाड़ थी, झाऊतले जा रहे थे। भाव में थे—wire (तारों) में अटक कर गिर पड़े और हाथ टूट गया। इतनी यंत्रणा कि रो रहे हैं। किन्तु कैसा आश्चर्य, भक्त लोग ज्यों ही आए, उन्हें देखकर एकदम समाधिस्थ। नीचे उतर आकर कितनी हंसी-खुशी। सुख दुःख के पार तब। इस अवस्था में केवल उन्हीं एक जन को ही देखा है—सुख-दुःख के पार की अवस्था। 'यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते।'[2] गाने में हैं—कमलाकान्तेर मने आशापूर्ण एतोदिने। सुख दुःख समान होलो आनन्दसागर उथले।[3] ईश्वरदर्शन के पश्चात् यही अवस्था होती है।

---

[1]मुझे इसी का खेद है कि माता तुम्हारे रहते हुए मेरे जाग्रत घर में चोरी हो रही है।

[2]जिसमें स्थित हुआ बड़े से बड़े दुःख से भी विचलित नहीं होता। गीता 6 : 22

[3]इतने दिनों पश्चात् कमलाकान्त के मन की आशायें पूर्ण हुई हैं—सुख-दुःख समान होकर आनन्दसागर उमड़ पड़ा है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—भक्त होने पर, ईश्वर को पुकारने से दुःख कष्ट नहीं होंगे, यह बात कोई मन में न लाए। पाण्डवों को ही देखो, स्वयं भगवान उनके संग, तब भी उनके दुःख की सीमा नहीं। महाभारत हमें पढ़ना चाहिए। उसमें ही है यह महाशिक्षा—सुख-दुःख देह धारण करने से होता ही है। तो भी भगवान को पुकारना होगा। ठाकुर जभी तो कहा करते, पंचभूतेर फांदे ब्रह्म पड़े कांदे।* यह बात समझ सकने पर अनेक हो जाता है। एक जन ने कहा था, याकूब है तो बहुत बड़ा भक्त, किन्तु जेल गया है। ऐसा होगा नहीं ? सुख-दुःख के अधीन है यह शरीर। अवतार यही दिखा गए हैं। क्राइस्ट भी यही बात कहते हैं, 'In the world ye shall have tribulation' अर्थात् यहां रहने पर सुख दुःख रहेगा ही। क्यों ऐसा दिखला गए हैं ये सब अवतारगण ? भक्तों के भरोसे के लिए। जभी तो भक्त लोग सुख-दुःख को वरण करेंगे और इसके भीतर रहकर ही परमसुख की खोज करेंगे, जिस सुख के संग दुःख जड़ित नहीं है, वही अविराम सुख।

अमृत ने आकर प्रणाम किया। ये राजकर्मचारी हैं।

भक्तगण श्री म की इच्छा से गाना गा रहे हैं—

'गुरुपद भरोसा करो'। बड़े जितेन और विरिंचि कविराज ने घर में प्रवेश किया। गाना शेष होने पर श्री म पूर्वकथित उपदेश उन्हें सुना रहे हैं। क्षण भर बाद डाक्टर, विनय और छोटे नलिनी आ गए। पुनः आवृत्ति करके सुना रहे हैं। कह रहे हैं, देखिए, कैसी आश्चर्य-लीला ! जो भगवान पूर्णब्रह्म नारायण, उन्हें भी दुःख। मनुष्य की शक्ति ही कहां इस खेल को समझना। उनके समझाने से ही समझ सकता है। इससे यही शिक्षा—शरीर धारण करने से यह दुःख कष्ट होगा ही। रोग यंत्रणा आदि अपने शरीर में ग्रहण करने से—संसार दुःखमय, शरीरधारण विडम्बना, इसी महासत्य की मौन व्याख्या चलती है। निर्वाक् उपदेश देते हैं, नौका डूब रही है—मांझी तब भी पतवार मत छोड़ो।

सब क्षण भर चुप रहे। बड़े जितेन के प्रश्न से पुन बातें होने लगीं।

---

*पंचभूत के बन्धन, ब्रह्म करे क्रन्दन।

बड़े जितेन (श्री म के प्रति)—तीर्थ एक बार दर्शन होने से ही तो हुआ ?

श्री म—दर्शन, फिर उनके संग बातें कर लेने पर दर्शन एकदम पक्का हो जाएगा। जैसे विवाह में कच्चा पक्का होता है। बातें करके पक्का हो गया, तब सब ठीक।

बड़े जितेन—स्वामी जी ने अधिकांश स्थानों पर कर्मयोग की ही बात बोली है, किन्तु ठाकुर की बात थी कर्मत्याग।

श्री म—ठाकुर की वह बात क्या सब लोग एकदम झट से पकड़ सकते हैं ? भीतर कर्मप्रवृत्ति रहती है, जब क्या करे। अर्जुन के भीतर कर्मप्रवृत्ति थी। श्री कृष्ण के कहने से भी बदली नहीं। तभी उपाय बोल दिया था—निष्काम कर्म द्वारा चित्त शुद्ध करो। तब वही बात पकड़ी जाती है। कर्मत्याग का अर्थ ही है ईश्वरदर्शन। (वह) अन्तिम बात है। फिर स्वामी जी तो उस देश में (पश्चिम में) बोले थे। उस देश के तो सब लोग ही रजोगुणी हैं। इसका कर्म क्या शीघ्र कम होता है ? तभी स्वामी जी ने जाकर उपाय दिखा दिया। बोले, निष्काम भाव में सब ही उनका कर्म जानकर करो, इससे भी ईश्वर लाभ होता है। तो भी कुछ देर से होता है। और फिर किसी का ऐसा संस्कार कि "थेई-थेई" करते हुए बढ़ता ही जाता है। अमेरिका की एक मेम ने, जिसका खूब ऐश्वर्य था, स्वामी जी के मुख से ठाकुर की कथा सुनकर सब छोड़ दिया। उसका संस्कार था अच्छा। किन्तु उस देश में अधिकांश लोग ही होते हैं राजसिक।

"स्वामी जी ने जैसे कर्मयोग की बात कही है, वैसे ही ज्ञानयोग, राजयोग, भक्तियोग की बातें भी बोली हैं। जिनके वैसे संस्कार हैं वे क्या कर्मयोग लेंगे ? संस्कारों के अनुयायी ही वे सब प्रकार के योग लेंगे। उन्होंने सब ही तो बताए हैं। अब जिसका जैसा संस्कार है वैसा वह ले ले।

आलम बाजार मठ से दो जन संन्यास लेकर निकल पड़े। पैदल चलते चलते पटना की ओर जा पहुंचे। एक वन के बीच में से जा रहे हैं। एक जन बोल उठा, बाप रे, वन देखकर मुझे भय हो रहा है। घर में मेरे मां-बाप तो हैं। दूसरे व्यक्ति के तिरस्कार करने पर वह फिर उसके संग चलने लगा। जाते जाते, फिर और चल

ही नहीं सकता। एक जगह बैठ गया। संगी तब बोला, "साले ने फिर संन्यास लिया है। पड़ा रह, मैं तो चला।" संगी चला गया। क्षण भर परे एक इक्के वाले के संग मेल हुआ। साधु के कहने पर वह चढ़ा कर ले गया। संगी के संग मिलकर दोनों जने काशी आ गये। काशी से उस व्यक्ति ने चिट्ठी लिख दी, "मुझे कुछ रुपये भेजो, मैं घर लौट रहा हूं।" रुपया पाकर, गेरुआ छोड़कर गाड़ी में घर लौट गया। फिर विवाह हुआ, कई पुत्र-कन्या हुए। नौकरी करता। तनिक वैराग्य था जभी बीच बीच में तीर्थ पर चला जाता। नौकरी जाने पर बड़ा कष्ट पाता। बाप भाइयों के संग भी नहीं मिलता था, वाक्यबाण लगते थे। तभी असन्तुष्ट रहता। अन्तिम समय consumption (क्षयरोग) हुआ, कष्ट पाकर देहत्याग हुआ।

"यही तो है मनुष्य की अवस्था। जोर करने से कुछ भी नहीं होता। 'प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति'।* अब जिनके भीतर रजप्रकृति है वे बड़े कहां पर होंगे? रजः बिन गए 'विरजा' होंगे कैसे? तभी स्वामी जी ने वह पथ बतला दिया है। निष्काम कर्म करो, चित्त शुद्ध होगा, तब 'विरजा' अर्थात् सर्वत्याग होगा।

श्री म (भक्तों के प्रति)—देश की कैसी दुरवस्था हुई थी। अंग्रेजों के आते ही सबने उनका अनुकरण करना शुरु कर दिया। देश तो एकदम hypnotised (मन्त्रमुग्ध) हो गया था। उनके आदर्श से अपने को साहब बनाना आरम्भ कर दिया था, और नारियों को मेम बनाने लगे। मनुष्य अंग्रेजों के पास हाथ जोड़े खड़ रहते। अंग्रेजों के अनुकरण से कोई कोई तो उच्च कण्ठ से बोलने भी लगे, "Away with idolatry and caste system." (मूर्तिपूजा और जाति-विचार नाश कर दो।) और फिर ऐसा खेल कि जो वैसी बातें बोलता था, वही व्यक्ति कुछ दिन पश्चात् बोलने लगा, "मृण्मय आधार में चिन्मयी मां की पूजा करो।" परमहंस देव के संग साक्षात् होने के पश्चात् मत का परिवर्तन हुआ। ठाकुर की बहुत बातें केशव बाबू ने लीं, अन्त में सम्पूर्ण परिवर्तन।

---

*गीता 18 : 59

"विद्यासागर महाशय जैसे लोग भी उसी चकाचौंध में पड़ गये थे, hypnotised (मोहित) हो गये थे, कैसा आश्चर्य। वे भी चरितावली में योरोपीय जीवनावली लिखने लगे। उसमें है कि ना एक जन ने बहुत कष्ट से पढ़ाई की, अन्त में बड़ा हुआ। जंगली बिल्लियां मारकर उनका चमड़ा बेचकर कष्ट करके पढ़ा था। ऐसी ही कहानियां। कैसा नीचा lower (नीचा) ideal (आदर्श) हो गया था।

"पहले इस देश के लोग वैस्ट में जाते थे उनसे भिक्षा माँग लाने के लिये। स्वामी जी ने कहा, मैं उन्हें सिखाना चाहता हूं। क्या नहीं किया उनके आदर्श ने? घर की नारियों को बाहर ले आये दरबार में। लज्जा गई। सबके सामने हारमोनियम बजाना सिखाया। एकदम मेम बना दिया। उनकी भांति 'किस', चुम्बन करने लगे। पति बैठा है, स्त्री हारमोनियम बजाती है। बाप भी सामने बैठा है और भी बहुत लोग हैं। बाप फिर कहता है, विमला सुन्दर गाती है। पति विमला, विमला कहकर पुकारता है। (सबका हास्य) मुख पर घूँघट नहीं। स्त्रियों की लज्जा गई तो रहा ही क्या, ठाकुर कहा करते।"

बड़े जितेन—क्यों, इससे क्या होता है?

श्री म—घूँघट रहने से ही महामाया के खेल से रक्षा नहीं, और फिर घूंघट खोल देना। पुरुषों का जो पतन होगा! इस घूँघट की प्रथा को क्या मनुष्य ने कमेटी बनाकर निश्चय किया है। ईश्वर ने ऋषियों के द्वारा करवाया है। चण्डी में है, ब्रह्मशक्ति लज्जा रूप में सर्वभूतों में विराज करती हैं। 'या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।' मां ने लज्जा रूप धारण किया था स्वयं। यह सब उच्च भाव उस आदर्श में शेष हो गया था। अन्त में केशव बाबू ने भी नवविधान में स्क्रीन (परदा) लगा दिया था। इसी सम्बन्ध में नवविधान में एक sermon (वक्तृता) भी दी थी—मां लज्जारूपिणी। साधारण ब्राह्मसमाज में स्क्रीन नहीं है।

"स्वामी जी से पहले कोई कोई ब्राह्मसमाजी कहते थे, हिन्दू धर्म में कुछ नहीं है। स्वामी जी के अमेरिका और योरोप जाने के बाद, ब्राह्मसमाजी जिनकी पूजा किया करते थे, वे ही जब स्वामी जी की

पूजा करने लगे और उसकी रिपोर्ट इस देश में आने लगी, तब सब अवाक् होकर माथे पर हाथ धर कर बैठ गए। शिवनाथ शास्त्री इससे पहले ठाकुर को fanatic (पागल-वागल) कहते थे। अब समझ पाए कि हिन्दू धर्म के भीतर भी कुछ है। हमने अपनी आंखों से देखा है, उन्हें स्वामी जी के पैरों में बूट पहनाते हुए। स्वामी जी के संग उस देश से मेम और साहब आए थे। इतने रजोगुणी हैं उस देश के लोग, तब भी वैसा किया। करेंगे नहीं, कितना उपकार पाया है—अमृतत्व जो दिया था स्वामी जी ने उनको। स्वामी जी गंगा-स्नान करने जाते हैं और साहब लोग ऐसे ऐसे (हस्त-चालन द्वारा शरीर रगड़ने का अभिनय करके) देह को अंगोछे से रगड़ देते हैं, ठीक जैसे भृत्य।"

बड़े जितेन—तब तो वे उल्टे hypnotised (सम्मोहित) हुए हैं?

श्री म—इसको क्या hypnotised (सम्मोहित) कहते हैं? अन्य साग खाने से अम्ल-शूल होता है, हिंचा साग खाने से नहीं होता। हिंचा साग सागों के मध्य नहीं, ठाकुर ने कहा। साधुओं, महापुरुषों की सेवा करने से मुक्त होता है मनुष्य, अमृतत्व लाभ करता है। स्वामी जी को समझने का समय अभी भी नहीं हुआ। वे क्या कर गए हैं, भविष्य के लोग समझेंगे। स्वामी जी ने स्वयं कहा है, "मैंने जो कर दिया है उसे समझते बहुत दिन लगेंगे। उन्हें (अनुवर्तियों को) और कुछ करना नहीं होगा, खाली दागाबुलुक*। महापुरुष छोड़ और कौन कह सकता है यह बात। उच्चकण्ठ से, सिंहनाद से प्रचार किया, सनातन हिन्दू धर्म में सब है—मनुष्य "अमृतस्य पुत्राः", "जीव शिव"। जहाज में एक साहब से कहा था, वह अमेरिका का व्यक्ति था, "तुम इण्डिया को धर्म सिखाने मत जाना—धर्म सिखाओगे, उसका तुम्हारे पास है ही क्या?"

श्री म (भक्तों के प्रति)—उस देश से आने के पश्चात् गाना हो रहा है। निज ही (पखावज बजाने का अभिनय दिखलाकर) बजा कर गाना गा रहे हैं। कैसा गन्धर्व कण्ठ, मन स्थिर हो जाए सुनने से। समाप्त होने पर हमने खूब सुख्याति की। तब स्वामी

*दागाबुलुक—केवल मेरे द्वारा खींची गई रेखाओं को अभ्यास द्वारा गाढी करें अर्थात् मैंने जो कर दिया है उस पर आचरण करें।

जी बोले, "मेरी तो इच्छा ही यही थी। Himalayan silence में, (हिमालय के निभृत स्थान पर) जाकर केवल उनका चिन्तन करूं। किन्तु कहां कर पाता हूं ? इन कुछ वर्षों में समझ सका हूं कि मानो कोई मेरी गर्दन पकड़ कर (गर्दन पर हाथ रखकर अभिनय करके) काम करवा रहा है। मैं बोलो फिर और क्या करूं ?

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—कैसा त्याग देखिए। केवल इच्छा करने से ही औरों की भांति बैठे बैठे ईश्वर चिन्तन कर सकते थे। वैसा न करके जीव के कल्याणजन्य चारतल से एकतल पर आना पड़ा। इसे ही कहते हैं महापुरुष। इससे बड़ा त्याग और क्या है ? कितनी बड़ी genius (प्रतिभा) !

हाजरा ने एक बार ठाकुर से कहा था, "तुम उनके लिए इतना क्यों करते हो ? इच्छा मात्र से ही तो समाधि में रह सकते हो।" ठाकुर बोले, "साला क्या बोलता है ? इनके मंगल के लिए मुझे जन्म-जन्म आना पड़े तो आऊंगा"। कहते, "अपने घर की उड़द की दाल 'कड़ार डाल' तो है ही। भक्तों के निमन्त्रण खाने की इच्छा होती है। "कड़ार डाल" माने ईश्वर भाव, "भक्तों का निमन्त्रण" माने भक्त लेकर लीला। लीला के लिए अवतार आते हैं।

वे सब का past, present, future (भूत, वर्तमान और भविष्य) जानते थे। तभी तो स्वामी जी को प्रथम देखते ही रो पड़े थे, आनन्द के उच्छ्वास में। बोले थे, 'तू इतने दिन कहां था, तेरी बाट में बैठा हूं।' स्वामी जी ने हमें बातचीत में कहा था, 'यह बात सुनकर मैंने सोचा कि यह बात निश्चय ही पागल है। ठाकुर ने देख लिया था यह अति बड़ा आधार है। आया, और फिर चला गया। ब्राह्मसमाज, इधर-उधर, अनेक काण्ड हो गए। तब फिर दुबारा आए। ऐसा तो होगा ही, बड़ी मछली जो। कहा था, 'मछलियों में नरेन्द्र रोहू है अन्य सब छोटी मोटी हैं।' बंसी में बड़ी मछली फंस जाए तो क्या करता है व्यक्ति ? डोरी छोड़ता रहता है और मछली खेलती है। खेलते खेलते जब मछली अवश हो जाती है, तब शक्ति चली जाती है, तब डोरी खींच लेता है और मछली को भूमि पर डाल देता है। स्वामी जी का भी ऐसा ही किया।

"जिन्होंने अंग्रेजी शिक्षा पाई थी उनसे ठाकुर कहते, 'संस्कार पर विश्वास करना चाहिए। बोलते, किसी किसी के संस्कार ऐसे होते हैं कि थोड़ा मद पेट में पड़ते ही नशा हो जाता है। एक ने सारी रात (मद) पिया है और एक ने एक बोतल ही पिया है, किन्तु कुछ भी नहीं हुआ। इस व्यक्ति का यही प्रथम जन्म है। पुकारता रहे अनेक जन्मों तक। श्री कृष्ण ने तभी तो नाना प्रकृतियों के लिए नाना पथ दिखा दिए हैं। एक पथ से सबका कैसे हो ?

"ईश्वर क्या इतना सा है। वे क्या केवल कुछ भक्तों के लिए ही चिन्ता करते हैं ? उनकी भावना है समस्त जगत् के लिए। उनके अनन्त काण्ड, सबके लिए चिन्ता करते हैं वे। योरोप अमेरिका में जो हैं उनके लिए भी भावते हैं। (प्रथम विश्व) युद्ध के पश्चात् से उस देश के better minds (मनीषीगण) इण्डिया की ओर ताक रहे हैं। यहां पर जो हुआ है वही ठीक है।"

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—संस्कारों का खेल देखिए ना। (अपने एक अतिथि बिल्ली के बच्चे को दिखलाकर) इतना सा बच्चा मछली के लिए कैसी उछलकूद करता है। मछली खाने की instinct (संस्कार) लेकर जो जन्मा है। बिना किए, उपाय कहां। इसका ही नाम है प्रकृति। कितनी प्रकार की प्रकृति द्वारा उन्होंने इस जीव की सृष्टि की है उसका अन्त नहीं।

"किन्तु बाप यदि बेटे का हाथ पकड़े तब गिरने का भय नहीं रहता। बेटा बाप का हाथ पकड़े तो गिरने की आशंका पद पद पर रहती है।"

बड़े जितेन—अब बाप पकड़े तभी तो हो।

श्री म (सहास्य)—हां, जी हां, बाप पकड़े तभी तो।

श्री म (स्वगत)—बूढों की इच्छा होती है निर्जन में रहने की। युवकों की वह नहीं होती, मन में कितनी वासनाएं हैं। यही है प्रकृति का खेल।

रात्रि 10 बजकर 15 मिनट; सितम्बर 18, 1923 ई०।

(2)

श्री म ने आज धर्म की आलोचना का एक अभिनव उपाय अवलम्बन किया है। विगत दो दिन हुए स्वामी अरूपानन्द ने "मायेर कथा" (मां की वाणी) की पाण्डुलिपि श्री म को पढ़कर सुनाई थी। आज की सभा में उसी "मायेर कथा" का अनुकीर्तन चल रहा है। स्वयं मां के कई उपदेशों की आवृत्ति करने लगे। फिर भक्तों से "मायेर कथा" का स्मृतिकीर्तन करने के लिए बोले। श्री म की यह अनुकीर्तन प्रथा भक्त-समिति में नूतन होने पर भी श्री म के लिए नूतन नहीं है। स्कूल और कॉलेज में अध्यापन के समय भी सर्वदा इसका प्रयोग किया करते हैं। यह अनुकीर्तन-प्रथा श्री म की आदर्श शिक्षकता का अन्यतम प्रधान कारण है। उन्होंने इसकी अपने गुरुदेव परमहंस देव से शिक्षा पाई थी। परमहंस देव प्रायः ही निजी उपदेश समूह को "मास्टर" के द्वारा अनुकीर्तन करवाया करते थे।

आज शनिवार, 22 सितम्बर, 1923 ई०; 5वां आश्विन, 1330 (बं०) साल।

श्री म बोल रहे हैं, मां कहती हैं—Promise (प्रतिज्ञा) करती हुई:—

1. ठाकुर के जो शरणापन्न हैं अन्ततः मृत्यु के समय ही चाहे क्यों न हो, ठाकुर को उनके निकट दर्शन देना ही होगा।

2. देहधारण करने पर दुःख-कष्ट तो हैं ही। विधाता की भी इनको रोकने की क्षमता नहीं। तो भी शान्ति चाहते हो तो साधन भजन करो।

3. मृत्यु कब आएगी उसका जब निश्चय नहीं है तब फिर काला-काल विचार करके बैठे न रहने से तो अच्छा है जितना शीघ्र हो तीर्थ करना।

4. मां, कर्म समाप्त क्यों नहीं होते, इस प्रश्न के उत्तर में मां ने कहा है, लाटाई* पर बहुत सूत है। वह सब उतरेगा तभी तो खाली होगा।

5. ठाकुर ने एक दिन के लिए भी मुझे कष्ट नहीं दिया।

*लाटाई=परेता, पतंग की डोर लपेटने का बेलन, चरखी, हुचका।

श्री म ने ये पंचरत्न उपहार में देकर भक्तों से कहा—"आप बोलिए जिसको जो याद है मां की वाणी।" एक-पर-एक भक्त बोलने लगे।

6. (ठाकुर के शरीरत्याग के पश्चात्) वृन्दावन जाते समय मुझे ठाकुर का इष्ट-कवच पूजा करने के लिए (ठाकुर ने) बोला था, रेल के पायदान पर खड़े होकर।

7. ठाकुर को मेरे लिए चिन्ता हुई थी। कहा था, गांव की लड़की (दक्षिणेश्वर) आकर न जाने कितना लज्जित करेगी। मैंने मां से (जगन्माता से) प्रार्थना की थी। जभी कुछ नहीं हुआ।

8. सात बार स्वप्न देखकर एक भक्त श्री हट्ट से (मुझे) देखने आया था।

9. ठाकुर, अपने घर में भक्तों के संग नृत्य कीर्तन किया करते, मैं नहवत से बेड़े* के झरोखे से खड़ी खड़ी देखा करती।

10. देखने में सुन्दर धनी लोगों के संग ठाकुर कभी कभी बाग में टहलते। फिर आकर मुझे पूछते, बताओ तो कौन सुन्दर है?

11. नहवत के उसी छोटे कमरे में सब चीज बस्त रहती। भक्त स्त्रियां—गौरदासी, योगेन, गोपाल—ये भी कभी-कभी मेरे संग उसी घर में ही रहतीं। और उस पर फिर घर में ही टीन में जीवित मछलियां कलकल करतीं। उतने छोटे से घर में रहते हुए भी मुझे कोई कष्ट बोध नहीं था—केवल पाखाना छोड़। प्रातः शौच का दबाव होता—तो रात को ही जाया करती गंगा के किनारे।

12. मेरे पास इतना काम था तब भी ठाकुर छींका बनाने के लिए पटसन मंगवा दिया करते। कहते, संदेश रखने होंगे, एक छींका बना दो। आलसी बनकर बैठे रहने से स्त्रियों के मन में कुभाव आता है। जभी तो वैसा करते थे लोकशिक्षा-जन्य।

13. पुरी में ठाकुर की छवि के निकट घी का टीन था। घर का दरवाजा बन्द करके मैं मन्दिर गई थी। लौटकर कमरा खोल कर देखती हूं टीन पर मकौड़े चढ़ रहे हैं और ठाकुर की छवि भूमि पर लेटी हुई है।

---

*बेड़ा=बासों को चीर कर चटाई से बनाई गई आड़, टट्टी।

श्री म (भक्तों के प्रति)—इससे तो कहना पड़ता है कि छवि में भी ठाकुर हैं।

14. ठाकुर मातृभाव खूब पसन्द करते थे। लोकशिक्षा के लिए तभी तो मुझे रखा है।

15. अल्प वयसी सुन्दरी विधवाओं को किसी भी पुरुष का विश्वास नहीं करना चाहिए, बाप भाई का भी नहीं।

16. कितने गर्भपात किए हैं, अथवा बीस-पच्चीस सन्तानें प्रसव की हैं, ऐसे सब असंयमी या रुग्ण जनों के द्वारा (पाद) स्पर्श करने से ही तो रोग है। नहीं तो इस शरीर को और फिर रोग कैसा ?

17. ठाकुर से कहा था, एक भी तो लड़का नहीं है, कैसे मैं दिन काटूंगी। उन्होंने प्रबोध देकर कहा था, एक ही लड़के के लिए तुम सोचती हो। कितने ही अमूल्य धन लड़के आएंगे इसके पश्चात्। अब वही देख रही हूं।

18. कामारपुकुर में लाहाओं की बाड़ी से लक्ष्मीपूजा के दिन मां लक्ष्मी आई थीं। ठाकुर की मां ने पहचान न सकने के कारण विदा कर दिया। तो भी मां लक्ष्मी बोली थीं, 'वैसे ही मेरी दृष्टि रहेगी'। इसी-लिए कामारपुकुर में मोटे भात और कपड़े का अभाव नहीं होता।

19. दिन जाने पर रात आती है, रात जाने पर दिन आता है, इसी सन्धि-क्षण में जप ध्यान करना चाहिए नियमित भाव से। कारण, किस समय सुसमय आ पड़े।

20. ठाकुर सब खाते हैं, जो दो सब कुछ ही खाते हैं। फिर भी किसी को अच्छी तरह खा लेते हैं, किसी पर दृष्टि-भोग। अथवा किसी का मात्र स्पर्श ही करते हैं। ठाकुर ने खाया अथवा नहीं खाया वह क्या मैं देखती नहीं ? वे न खाएं तो क्या मैं खा सकती हूं ? वे खाते हैं। उनके चक्षु से एक ज्योति आकर सब रस शोषण कर लेती है। उसके पश्चात् उनके अमृतहस्त के स्पर्श से दुबारा फिर समस्त पूर्ण हो जाता है।

21. जिस स्थान पर उनकी पूजा होती है या कथा होती है, अथवा उनका "पीठ" (पवित्र स्थान) होता है, वहां पर उनकी दृष्टि रहती है।

22. ठाकुर का शरीर खूब मोटा था और खूब सुन्दर था। पीढ़े पर बैठने से समाता नहीं था।

23. षोडशी पूजा हुई थी गंगाजल के मटके के पास।

24. कामारकुपुर में मैदान में मैं सूखा गू कुचल कर आ जाया करती। बाड़ी आकर "श्री विष्णु, श्री विष्णु" कहकर शुद्ध हो जाती।

25. मठ आजकल का बड़ा तीर्थस्थान है। योगेन के असुख में वृन्दावन में मुझे बड़ी चिन्ता हो गई थी।

26. काशीपुर में ठाकुर को खिला दिया करती थी। एक बार पैर में मोच आ जाने के कारण कई दिन जा नहीं पाई ऊपर। हाथ से नथ दिखलाकर नरेन्द्र को इंगित से बोले, टोकरी में रखकर ले आना। रसिक पुरुष थे ठाकुर!

27. कभी-कभी दो-दो मास पश्चात् ठाकुर के दर्शन कर पाती थी।

आज का अनुकीर्तन यहां पर ही शेष हो गया।

श्री म (भक्तों के प्रति)—देखते हो कितना उपकार होता है परस्पर उनकी कथा बोलने से।

आज की बैठक हुई थी तीन तले के पश्चिम के कमरे में। फर्श पर श्री म बैठे हैं चटाई पर। तीनों ओर भक्तगण। छोटे जितेन, योगेन, मणि, छोटे ललित और रमणी, बड़े जितेन और विरिंचि। फिर आए डाक्टर, विनय, छोटे नलिनी तथा सुधीर। अब संध्या उत्तीर्ण हो गई, प्रायः साढ़े सात। जगबन्धु वेदान्त सोसाइटी से लौटे हैं। अनुकीर्त्तन शेष होने पर एटोर्नी वीरेन बोस ने गृह में प्रवेश किया। उनको लक्ष्य करके श्री म बातें कर रहे हैं।

श्री म (वीरेन के प्रति)—पूरी से पुनः और चिट्ठी आई है। लिखते हैं, 'Don't trouble yourself about rented house, come soon.' (भाड़े के मकान की चिन्ता बिना किए शीघ्र चले आइए।) (भक्तों के प्रति) राय बहादुर सखीचांद जगन्नाथ मन्दिर के मैनेजर-सेवक हैं, उनका call (बुलावा) माने Lord of the universe (जगन्नाथ) का call (बुलावा) है। हम विश्वास नहीं कर पाते, जीव भाव है कि ना! जैव धर्म का लक्षण ही यही—संशय होता है पग पग पर, विश्वास नहीं होता।

सखीचांद बुलाते हैं (सहास्य) अब जगन्नाथ ले जाएं तभी तो हो। जगन्नाथ का प्रसाद और दूध मिल जाए और क्या चाहिए ? अन्न और दूध । दूध क्या कुछ कम वस्तु !

श्री म (वीरेन के प्रति)—हम जिसे अज्ञान कहते हैं उनकी कृपा से वही जीव एक जन्म में संभव है मनुष्य हो गया। और एक जन्म में भक्त हो गया। और एक जन्म में साधु बना दे सकते हैं उसे। विद्या अविद्या के पार होने पर उन्हें देखा जाता है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—सुन्दर हुई आज मां की कथा। (जगबन्धु के प्रति) यही जो रिपोर्ट करना है, यह क्या समस्त ही ठीक ठीक होता है ? जिसका जैसा भाव उसी भाव की बातों की अधिक रिपोर्ट होती है। यह बड़ा कठिन कार्य है, सबका कर्म नहीं।

अमृत—पण्डित शशधर से ठाकुर ने कहा था, अब है भक्तियोग, कर्मयोग नहीं।

श्री म–कर्म in the comprehensive sense (व्यापक भाव में) सबको ही करना पड़ता है। जप ध्यान पूजा पाठ ये सब भी कर्म हैं। फिर भी गृहस्थों का जो आदर्श (शास्त्रोक्त) कर्म है, अब उसके पालन करने की शक्ति जीवों में नहीं है। इसीलिए जिन्होंने विवाह नहीं किया है उन्हें विवाह करने को मना किया था। जिन्होंने विवाह कर लिया है, दो एक सन्तान हो जाने पर भाई-बहनवत् रहने को उनसे कहा। अर्जुन राजा था, उसमें कर्म की शक्ति थी। और फिर द्वापर युग था। उनको इसीलिए गृहस्थी करने को कहा था श्री कृष्ण ने अनासक्त भाव में।

रात्रि 10 बजकर 15 मिनट; 22 सितम्बर, 1923 ई०।

(3)

अगले दिन रविवार। श्री म का शरीर कुछ दिनों से उतना ठीक नहीं चल रहा। वार्धक्य का रोग कभी कुछ थोड़ा बढ़ जाता है कभी कम हो जाता है। यह लेकर ही स्कूल का कार्य, बाड़ी का कार्य, कितना ही देखते हैं। और भक्तों की बातें सोचते हैं—कैसे वे अवसर पावें, और ईश्वर चिन्तन कर सकें। वे भक्तों को दिन में अन्ततः आठ घण्टे ईश्वरीय कथा सुनाते हैं। कभी कभी तो प्रायः सारा दिन रात ही ईश्वरीय कथा

का प्रवाह चलता रहता है। इससे उन्हें परिश्रम बोध नहीं होता प्राण मानो जीवन्त हो उठता है, ठाकुर की कथा कहते कहते। नितान्त असुख के कारण उतनी बातें न कर सकें तो भक्तों से पाठ व भजन करने के लिए कहते हैं, वे सुनते हैं। आज श्री म का शरीर तनिक अधिक अस्वस्थ है, बिछौने पर लेटे हुए हैं मॉर्टन स्कूल के तीनतल के कोने के कमरे में। भक्तसभा उसी कमरे में बैठी है। छोटे जितेन, रमणी, शुकलाल, योगेन और भी अन्य कई जन भक्त चटाई पर भूमि पर बैठे हैं। श्री म का विस्तर भी भूमि पर है। कुछ परे अमृत, फिर जगबन्धु आ गए वेदान्त सोसाइटी से साढ़े सात बजे। सब के अन्त में आए डाक्टर विनय और छोटे नलिनी। आज अनन्त चतुर्दशी, 1330 (बं०) साल।

श्री म (जगबन्धु के प्रति)—वही गाना गाओ ना—"गुरुपद भरोसा करो।" (रमणी को दिखाकर) ये और आप। रमणी और जगबन्धु ने वही गाकर समाप्त किया। श्री म पुन. बोले, "वह भी हो जाए—मां आमार बड़ो भय होयेछे।" (मां मुझे बड़ा भय लग रहा है।) वह भी समाप्त हो गया। फिर कहा, शेष के दोनों पद repeat (पुनरावृत्ति) करते रहिए। दोनों जने तन्मय होकर गा रहे हैं :—

जन्म जन्मान्तरेर जत कर्म मा बकेया बाकीर जेर टेनेछे।
श्रीरामप्रसाद बोले, मनेर माझी काली नाम भरसा आछे॥
मां, काली नाम भरसा आछे।*

श्री म और स्थिर नहीं रह सके। बिछौने पर उठ कर बैठ गए और उसी कीर्तन में योगदान करने लगे। अब तक सब भक्तों ने भी योगदान कर लिया। कीर्तन की धूम मची है। बरामदे में लालटेन का आलोक हो रहा है। उसकी आभा में दिखाई पड़ रहा है, श्री म के दो नयनों से बह बह कर प्रेमाश्रु विगलित हो रहे हैं।

कीर्तन थम जाने पर भी श्री म कुछ काल स्थिर हुए बैठे रहे। भक्तगण भी शान्त हैं। अब फिर बातें होने लगीं। गत कल मां की

---

*भावार्थ—श्री रामप्रसाद कहते हैं, मां, जन्म जन्मान्तरों के जितने कर्म बकाया हैं या उनका बाकी का लेखा चल रहा है, उनके लिए मन में काली नाम का भरोसा है। मां, काली नाम का ही भरोसा है।

वाणी का अनुकीर्तन होने के कारण वेदान्त सोसाइटी की बात सुन नहीं सके थे। तभी आज वह सुन रहे हैं। जगबन्धु उसके नोट पढ़कर सुना रहे हैं।

प्रश्नोत्तर क्लास। शनिवार 5 : 30 संध्या।

वेदान्त सोसाइटी, सैण्ट्रल एवेन्यू।* प्रश्नकर्त्ता सभ्यगण, वक्ता स्वामी अभेदानन्द महाराज।

प्रश्न—भोग की वस्तुओं के त्याग करने की preliminary stage (प्रथमावस्था) क्या है ?

उत्तर—भोग-त्याग बाहर की वस्तुओं से नहीं होता। मन की वासना का त्याग ही त्याग है। सब ही सुख खोजते हैं, इसको उसको देखते हैं यदि सुख मिले। इस प्रकार जब समझ लेते हैं कि पृथ्वी की कोई भी वस्तु सुख नहीं दे सकती, तब ही सुख की खान भगवान में मनोनिवेश करते हैं। तब संसार छूट जाता है अपने आप ही। स्वाधीनता में सुख है, दास को सुख नहीं। मैं ईश्वर का दास हूं, संसार का दास नहीं, इसका ही नाम है स्वाधीनता। इसी में सुख है, इसमें ही आनन्द। और सब दुखमय। 'And don't you know ? Ye shall know the truth and the truth will make ye free.' (ब्रह्मज्ञान ही मुक्ति है।)

ऋषिकेश में एक मारवाड़ी भक्त साधुओं को कम्बल दे रहा था। एक साधु ने नहीं लिया। उनके सामने धूनी थी, मात्र कोपीन पहने था। मारवाड़ी ओवरकोट, शॉल आदि चढ़ा कर आया था। कम्बल ग्रहण करने के लिए साधु से आग्रह अनुरोध करने लगा। साधु ने तब भक्त से पूछा, "अपना मुख क्यों नहीं ढ़का इतना शीत है ? सारा शरीर ढ़का हुआ है। मुख को भी ढ़को।" वह बोला, "मुख पर शीत नहीं लगता, अभ्यास हो गया है।" साधु तब बोले, "अभ्यास के द्वारा तुम मुख पर शीत सहन करना सीखे हो। वैसे ही मैंने समस्त शरीर पर शीत सहन करना सीखा है।" किसी तरह भी साधु ने कम्बल नहीं लिया। ये अपने मन को अन्य दिशा में ले गए हैं। इन सब में सुख नहीं है देखकर।

*चितरंजन दास एवेन्यू।

ठाकुर कहते, कैसे हैं, जानते हो ? जैसे चौपड़ की गोटी । सारे घरों में घूम फिर कर, तब पकती है । वैसा ही जीव भी है, सब घरों में घूम फिर कर, देखकर अन्त में ईश्वर के पास उसे जाना पड़ेगा। सब को ही जाना पड़ेगा—कोई एक जन्म में कोई दस जन्मों में । घूमना ही पड़ेगा, अन्त में जाना ही पड़ेगा । तुम संसार करो किन्तु लक्ष्यशून्य न होना । जो कुछ करो सब उनका कार्य जानकर करो तब ही मुक्त हो जाओगे । और "लैजा मुड़ो बाद"* देकर—आगे पीछे का छोड़कर तब लोगे, इससे बन्धन नहीं होगा ।

प्रश्न—What is the synthesis of yoga, योग का समन्वय क्या है ?

उत्तर—इसका अर्थ यही है—ज्ञान योग, राज योग, भक्तियोग और कर्मयोग नाना पथों से योग होता है । सब के भीतर सब ही समान रूप से रहेंगे ऐसी कोई बात नहीं है । किसी किसी में किसी एक का ही आधिक्य दिखाई देता है । किन्तु कम अधिक सब ही एकत्र रहते हैं। जो ज्ञानयोगी है जीवनधारण के लिए उसे भी कर्म करना पड़ता है और फिर राजयोग का ध्यानादि भी करता है और ईश्वर में भक्ति भी रखता है । इसी प्रकार they are inter-connected—एक के संग दूसरे का सम्पर्क है । यही जैसे तुम, इच्छा करने से गृहस्थ में रहकर कर्मयोग के द्वारा भी कर सकते हो, किंवा भक्तियोग अथवा राजयोग के द्वारा भी कर सकते हो । और फिर सब छोड़कर पेड़ तले बैठकर भी कर सकते हो ।

परमहंस देव के पास जाने से पहले सोचा करता था, जो साधु होगा उसके सिर पर लम्बी लम्बी जटाएं रहेंगी और हाथ में चिमटा, सर्वांग भस्म मल कर बाघ छाल अथवा कम्बल पर बैठा रहेगा । उनके पास जाकर देखा वैसा कुछ भी नहीं है । सोचा यह फिर कैसा साधु ? जटा, चिमटा यह तो कुछ भी नहीं है । और फिर खाट पर गद्दी पर बैठे हैं । पैर में काला स्लीपर है । क्रमशः सब समझ गया । प्रथम कितनी कठोरता की है । दिनों पर दिन पड़े रहे धरती के ऊपर पेड़ तले बाह्य-ज्ञान शून्य ।

प्रश्न—मनुष्य को मनुष्य प्रणाम क्यों करता है ?

*लैजा मुड़ो बाद=बीच-बीच का, सार भाग, पूंछ सिर को छोड़कर ।

उत्तर—देवता, साधु और राजा को प्रणाम करते हैं, कारण इनमें ईश्वर की शक्ति रहती है। बाप-मां को प्रणाम करते हैं कृतज्ञता से, भक्ति से। और कितने ही नियम हैं परिचय के लिए। अंग्रेज लोग हैण्डशेक करते हैं friendship (बन्धुत्व) के चिह्नस्वरूप। उनके पूर्व-पुरुष जब बर्बर थे तब वे सब ही एक sword (तलवार) बाईं ओर लटकाए रखते थे। किसी के साथ हठात् मेल हो जाता तो तत्क्षण उसी sword (तलवार) को बाहर निकाल लेते थे। जब जान लेते शत्रु नहीं है तब हाथ में हाथ पकड़ लेते, अस्त्र छोड़कर। यह बन्धुत्व का चिह्न, (sign of friendship) अब यही चलता है।

मुसलमान सलाम करते हैं अर्थात् अल्लाह के दास की श्रद्धा करते हैं। साधु को मिलने पर कहता है, "ॐ नमो नारायणाय।" वैष्णव लोग बोलते हैं, "सीता राम", "राधे श्याम" किंवा "हरे कृष्ण" इत्यादि। प्रणाम ईश्वर के उद्देश्य में किया जाता है। और एक मत है कि किसी लाभ के लिए प्रणाम करते हैं।

ठाकुर साधुसंग करने के लिए कहा करते। बोलते, साधुगण आग का कुण्ड और संसारी भीगी काठ। आग के निकट जाने से जल क्रमशः सूख जाता है। साधुसंग करने से मन की विषय-वासनाएं सूख जाती हैं। भीगी काठ अथवा विषय वासना द्वारा कलुषित मन। और कहते, "इन्हीं तीनों जगहों पर जाते हुए—देवता, साधु और राजा—हाथ में कुछ ले जाना चाहिए। ठाकुर ने कह दिया था हम लोगों से, यहां आते हुए थोड़ा कुछ हाथ में लाना चाहिए—अन्ततः लवंग, इलायची या एक हरड़ ही। और कुछ देने की शक्ति न हो तो कम से कम यह तो करना ही चाहिए। हमारे देश के लोग ये सब भूल गए हैं। फल देना चाहिए देवता के स्थान पर। क्यों? उसका अर्थ है, हे भगवान् मेरे कर्मों का जितना सुफल है सब तुम्हें देता हूं। फूल माने क्या? यही ना, मन रूपी फूल। Abstract (अमूर्त भाव) में मन सब समय बैठता नहीं। जभी concrete (प्रतीक) रूप कर लेता है। यह फूल मनफूल का ही concrete form (प्रतीक रूप) है। ठाकुर सब बातें बतला गए हैं। उनकी बातें जो सुनेंगे वे बच जायेंगे। वे थे personification of truth and morality, honesty and purity, truthfulness

and real spirituality (सत्य और धर्म, सत्यता और पवित्रता, सत्यभाषण और यथार्थ आध्यात्मिकता का मूर्तिमान विग्रह)।

प्रश्न—दैव और पुरुषार्थ क्या है ?

उत्तर—(क) अंग्रेज destiny (अदृष्ट को) दैव कहते हैं। वे मानते हैं कि एक personality (व्यक्ति) है जो सब चलाता है। (ख) मुसलमान दैव को "किस्मत" कहते हैं। वे भी वैसा ही एक व्यक्ति मानते हैं। (ग) हिन्दुओं में एक section श्रेणी दैव अर्थ में अदृष्ट (fate) विधि, विधाता नामक personified (मूर्त) कुछ मानता है। वे ही व्यक्ति का fate (अदृष्ट) निश्चय कर देते हैं। षष्ठी देवी प्रसूति-गृह में मस्तक पर सब लिख देती है। (घ) किन्तु वेदान्त कहता है, दैव कर्मफल का ही अन्य नाम है। वेदान्त यह सब नहीं मानता। वेदान्त कहता है, Law of Karma (कर्मफल) द्वारा ही सब कुछ होता है। पूर्वकथित personality (व्यक्ति) कर्मफल का ही personification (मूर्तरूप) है, वेदान्त का यही मत है।

पुरुषार्थ का अर्थ है self-exertion, personal effort (निजी चेष्टा) खूब दरकार। तथापि खराब काम में नहीं। ideal (आदर्श) निश्चय करके साधनपथ पर अग्रसर होना हो तो इसकी खूब आवश्यकता है, इसी पुरुषार्थ की। दैव दैव करते करते लोग अकर्मण्य, आलसी हो गए हैं। खूब पुरुषार्थ चाहिए। चेष्टा बिना कुछ नहीं होता।

इस वर्ष कणखल गया। एक दिन (स्वामी) कल्याणानन्द के संग अपना पूर्व तपस्या का स्थान ऋषिकेश देखने गया। एक टांगा किया गया। घोड़ा तो था खराब, वह बदल कर एक अच्छा घोड़ा लिया गया। चौदह मील का रास्ता। पथ में एक नदी पार करनी पड़ती है। पथरीला रास्ता, उतना अच्छा नहीं था। नदी पार कर रहे थे तब एक स्प्रिंग टूट गया। पीछे ही एक और टांगा आ रहा था खाली। उस पर ही चढ़ गए। फिर ऋषिकेश गए। लौटते हुए रात हो गई। रास्ता भी फिर खूब भयसंकुल है, बाघ रहते हैं। गाड़ी में फिर रोशनी भी नहीं। बहुत कष्ट से रात को आना हुआ। एक पण्डित जी वहां पर थे। तब सुनकर वे बोले, महाशय, आप दिशाशूल में बाहर गए थे। आप के संग में महापुरुष थे इसी कारण लौट आए, इन्द्र के बाप की भी क्षमता नहीं

लौट आने की। मैं यह सब मानता नहीं। कल्याणानन्द का मन खूब प्रसन्न था, इसीलिए हमारा ऋषिकेश दर्शन हो गया, इतनी बाधा विघ्नों के भीतर भी।

एक व्यक्ति खजूर के पेड़ के नीचे 'आ' किए लेटा हुआ है। खजूर गिरेगा तो खाएगा। और एक जन, जिसमें पुरुषार्थ था वह पेड़ पर चढ़कर एक गुच्छा तोड़कर बैठके खाता है। तथा दूसरे व्यक्ति के मुख में भी देता है। पुरुषार्थ चाहिए। तुम अब वेद शास्त्र छोड़कर बहुत आलसी हो गए हो दैव विश्वास करते करते। पंजिका-जंत्री ही अब तुम्हारा सवस्व वेद हो गई है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—देखिए, कितनी personal (व्यक्तिगत) घटनाएं मिल गईं। किन्तु ठाकुर पंजिका मानते थे। एक दिन कलकत्ता से दक्षिणेश्वर जा रहे हैं। नाव में एक कैंप खाट चढ़ा दी। ठीक करवाने के लिए उसे कलकत्ता भेजा गया था। दक्षिणेश्वर में पहुंचकर ठाकुर को पता लगा उस दिन मघा नक्षत्र है। बोले, ओ मां, मैंने देखा वह मानो मुझे ग्रास करने आ रही है, 'आ' किए। तब लौटा दी। अच्छा दिन देखकर फिर लाई गई। लोकशिक्षा के लिए वैसा किया गया था। (सहास्य) सुना जाता है साहब लोग भी कोई कोई ये सब बातें मानते हैं, नौका, जहाज डूब जाने के भय से। एक साहब ने हिन्दू मुनीम की बात न सुनकर मघानक्षत्र में माल का चालान दे दिया था। फिर जहाज समुद्र में डूब गया। उसके पश्चात् फिर वैसा नहीं करता था।

(4)

मोटे सुधीर नवविधान ब्राह्मसमाज से लौटे हैं। उनसे वहां की रिपोर्ट सुनी। फिर बातें हो रही हैं।

श्री म (सुधीर के प्रति)—सुन्दर गीत हुआ था, 'मा, जननी माथाय दिये हात करो आशीर्वाद पूर्ण होय जेनो मनस्काम।' (मां, जननी सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दो कि जैसे मनोकामनाएं पूर्ण हो जाएं।) (भक्तों के प्रति) मां से नहीं कहेंगे तो किस से कहेंगे ? ब्राह्म-समाज में जाने पर sermon (वक्तृता) का subject (विषय) और गाना, ये दोनों सुनने चाहिएं। यहां पर भी (नवविधान में भी) ठाकुर का भाव प्रवेश कर गया है कि ना, तभी तो मां, मां करते हैं। प्रमथ-

बाबू के pulpit (वेदी) पर बैठे समय उनकी बातें सुननी चाहिएं। ठाकुर का कितना प्यार पाया है उन्होंने। एक भक्त ने आकर रिपोर्ट दी थी, एक दिन वेदी पर बैठे हुए वे बोले, 'तुमने बहुत दिन तो निराकार-निराकार कर लिया है, अब मां मां बोल कर नाचो।' यही बात ठाकुर ने उन्हें सिखाई थी। केशव सेन दक्षिणेश्वर जाते, ब्रह्मज्ञानी सोचते एक pleasure trip (प्रमोद भ्रमण) के लिए जाते हैं। एक दिन सब प्रतीक्षा कर रहे थे केशव बाबू कब आते हैं। बहुत प्रतीक्षा कर लेने पर वे आए। ठाकुर तब हंसकर बोले, तुम्हारे लिए हम सब खचमच कर रहे हैं। घर में जमाई आने के पूर्व जैसे होता है। उनका उपहास कर रहे हैं।

श्री म (अमृत के प्रति)—आज भी हो जाए ना थोड़ा मां की कथा का स्मृति-कीर्तन।

अमृत ने आरम्भ किया, फिर एक के पीछे एक सब भक्त योगदान करने लगे।

28. मां कहती हैं, जिनका नाम ज्ञात है उनके लिए जप करती हूं। जिनका नाम नहीं पता उनके लिए ठाकुर से यह कह कर प्रार्थना करती हूं, 'ठाकुर मेरी अनेक सन्तानें हैं, कौन कहां है मैं नहीं जानती। तुम उन सब का मंगल करो।'

29. (भाटपाड़ा के) बड़े ललित बाबू ने कहा, मां जप ध्यान मैं तो नहीं कर सकूंगा। मां बोलीं, 'अच्छा, तुम्हें कुछ भी करना नहीं होगा।'

30. जुगी पाड़ा* से पूजा के समय चीज वस्त आने पर औरों ने ली नहीं, किन्तु मैंने ले ली थीं और बरामदे में रखने के लिए कह दिया था।

31. एक भक्त पागल हो गया था। उसने माला लौटा दी थी। मंत्र भी वापिस देना चाहता था। मां बोली, 'वह क्या वापिस लिया जाता है, बच्चे।'

32. जिसने मंत्र पा लिया है, जो ठाकुर के शरणापन्न है, उसका ब्रह्मशाप भी कुछ नहीं कर सकता।

*जुगीपाड़ा = जुलाहे आदि निम्न जाति वालों का मुहल्ला।

33. अन्तिम समय ठाकुर को दर्शन देना ही पड़ेगा जो उनके शरणागत हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—आहा, कैसी promise (शपथ) ! ठाकुर भी कह रहे हैं, 'प्रतिज्ञा करके कहता हूं, जो मेरा चिन्तन न करेगा वह मेरा ऐश्वर्यलाभ करेगा, जैसे पिता का ऐश्वर्य पुत्र लाभ करता है।' इतना करके बोले हैं तब भी क्या विश्वास होता है लोगों को ? भक्तों के लिए कितना स्नेह मां का। एक भक्त जयरामवाटी से दीक्षा लेकर लौट रहा है। मां रोती रोती घर के बाहर तक आ गईं उसे विदा देने और जितनी दूर तक दृष्टि गई उसके पथ की ओर देखती रहीं। दो एक दिन का परिचय, किन्तु गर्भधारिणी मां से अधिक स्नेह। लौकिक बुद्धि भी और फिर कितनी प्रखर। एक बार कह रही है, जप तप कुछ भी करना नहीं होगा। और फिर बोलीं, जीवन में शान्ति चाहने पर करना ही होगा। किस सुन्दर भाव से two extremes (दो विरुद्ध भावों का समन्वय) कर दिया।

भक्तों का स्मृति कीर्तन पुनः चल रहा है।

34. ठाकुर बोले, घर में रहने से ही होगा। स्वामी जी बोले, संन्यास न होने से होगा नहीं—यह विरोध क्यों ? इस प्रश्न के होने पर मां बोलीं, विरोध नहीं, दोनों जन एक बात ही बोले हैं। घर में जो रहेंगे उनके मन में संन्यास। अनासक्त होकर उन्हें संसार करना होगा।

35. निद्रित व्यक्ति खाट पर सोया पड़ा है। खाट समेत उसे अन्य स्थान पर ले जाया गया। निद्रा भंग होने पर वह क्या हठात् समझ सकेगा कि अन्य स्थान पर आ गया है ? वैसे ही गृहस्थ में रहते हुए मोह निद्रा बिना टूटे समझ में नहीं आता कि माया मोह से कितना आगे बढ़ चुका है या भली प्रकार बढ़ रहा है।

36. प्रश्न हुआ, कैसे ईश्वर लाभ होता है। मां बोलीं, किसी प्रकार से भी नहीं, किसी प्रकार भी उन्हें पाया नहीं जाता। फिर भी यदि उनकी कृपा हो जाए तब ही होता है।

37. एक दिन मां बोलीं, मेरा ध्यान करने से ही होगा। बात हठात् उलट कर फिर बोलीं, ठाकुर का ध्यान करने से ही होगा।

श्री म (भक्तों के प्रति)—कहते हैं, ठाकुर और मैं एक। यह बात स्पष्ट करके पहले भी बोली है, ठाकुर और मैं अभेद।

श्री म कुछ क्षण मौन हुए रहे। पुनः बातें हो रही हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—संन्यास अर्थात् मन में त्याग। गृह में रहकर संन्यासी खूब कम, प्रायः दुर्लभ। जनकादि का हुआ था, ठाकुर ने कहा था। फिर भी जो गेरुआधारी, जिन्होंने बाहर से त्याग किया है, **ceremony** (संस्कार) किया है उनसे **expect** (आशा) की जाती है। ठाकुर ने बताया, पंचवटी में साधु बैठा कपड़ा सिलाई करता है और गल्प करता है, फलाने बाबू ने खूब खिलाया—हलुआ, जलेबी, कचौरी (सब का हास्य)। इनका बाहर से त्याग हुआ है। भीतर से नहीं। (डाक्टर के प्रति) क्या है गीता में ?

डाक्टर कार्तिक—न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति॥
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते॥*

श्री म (अन्तेवासी के प्रति)—एक जन बी.ए. परीक्षा देगा। बाप बोला, तुम्हें और कुछ नहीं करना होगा। सब छोड़कर इस कमरे में बैठकर पढ़ो। अनन्य मन से पढ़ता है केवल। और एक जन घर का सब काम करता है और बीच बीच में पढ़ता है। वह फर्स्ट हो गया। यह भी होता है—खूब कम किन्तु। जो खेलता है वह कानी कौड़ी से भी खेलता है, यह भी है। उनकी इच्छा से क्या नहीं होता ? (डाक्टर के प्रति) सुना है प्रायः रोज प्रातः एक जन स्टीमर में टहलते हैं और समस्त गीता आवृत्ति करते हैं। उनको

*भावार्थः—कर्मों को आरम्भ ही न करने से मनुष्य निष्कर्मता को प्राप्त नहीं होता। न ही (कर्मों को) छोड़ने मात्र से सिद्धि प्राप्त करता है। कर्मेन्द्रियों पर नियंत्रण करके भी जो मूढ मनुष्य इन्द्रियों के विषयों का मन से चिन्तन करता रहता है, वह मिथ्याचारी कहलाता है। —गीता 3-4/6

देखने की इच्छा होती है। यदि कोई उनसे कहे, एक बूढ़ा आपको मिलना चाहता है। चलिए न एक बार। नाम कहने की जरूरत नहीं कौन मिलना चाहता है। गीता में ही तो है, 'तुल्य-निन्दास्तुति-मौनी (गीता 12:99) और फिर है, मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः। (गीता 14:25) गीता जब पढ़ते हैं तब फिर वह बात कहेंगे क्योंकर (मानापमान की बात) ?

श्री म (भक्तों के प्रति)—ठाकुर को देखा है, किसी ने पुकारा और झट मुड़कर खड़े हो गये। एक बार एक स्त्री ने पुकारा था उसके उपपति को ला देने के लिए (हास्य)। और एक बार रासमणि का नाती त्रैलोक्य औरतें आदि सब लेकर आए, कोठी में आमोद प्रमोद होगा। कहला भेजा, छोटे भट्टाचार्य जी को ले आओ। ठाकुर से कहते हो जा हाजिर। बोले, क्यों महाशय, क्यों बुलाया है। त्रैलोक्य ने कहा आपका गाना सुनूंगा। ठाकुर ने उत्तर दिया, यह क्या भई? क्यों वे (औरतें) गाना करेंगी और हम सुनेंगे। यह न होकर मेरा गाना! (हास्य) फिर इन्होंने भी गाया, उन्होंने भी गाया। चले आ रहे हैं तब उन्होंने मिष्टिमुख करवाना चाहा। किन्तु इन्होंने खाया नहीं। पीछे पीछे एक व्यक्ति जलपान ठाकुर के कमरे में ले आया।

स्मृति कीर्तन अब फिर चला।

38. एक भक्त ने आत्महत्या की थी। एक जन ने कहा इससे उसका बुरा होगा। मां सुनकर बोलीं, नहीं, बुरा नहीं होगा—ईश्वर के लिए जो की है।

39. दुर्गाचरण (नाग महाशय) को खूब मिर्चें देकर चच्चड़ि[1] बना देने के लिये ठाकुर ने कहा। तैयार होने पर ठाकुर ने जीभ से छूकर तनिक खाई, तब फिर दुर्गाचरण ने प्रसाद पाया।

40. मास्टर (श्री म) की पुस्तक (कथामृत) में मानो ठाकुर ही बातें कर रहे हैं। मास्टर ने एक हजार रुपया दिया था घर बनवाने के समय। अब भी महीना महीना तीस-पैंतीस रुपया देता है।

---

[1]चच्चड़ि=सूखी भाजी।

श्री म (भक्तों के प्रति)—एक भक्त ने व्याह की बात ठाकुर से पूछी थी। ठाकुर ने व्याह की नामगन्ध का भी विषय नहीं उठाया। बोले, मन का थोड़ा सा तूफान है—काम-टाम ऐसा होता ही रहता है। सब ठीक हो जाएगा अन्त में। ऐसा तूफान एक-आध होता ही है शरीर रहने से। कैसा आश्चर्य, विवाह की बात फिर उठाई ही नहीं। कहते, गृहस्थ ज्वलन्त अनल। तो फिर व्याह करके उसमें प्रवेश करने को कैसे कहें ? एक भक्त की स्त्री ने आने के लिये लिखा था, पति के संग रहकर गृहस्थी करेगी। पति विदेश में रहता था। भक्त ने जानना चाहा ठाकुर का मत क्या है। ठाकुर बोले, 'कैसे तुम्हें कहूं अग्निकुण्ड में प्रवेश करो।'

श्री म (नयनहास्य से—डाक्टर के प्रति) आपको चिट्ठी किस सम्बोधन से लिखी है ?

डाक्टर—श्री चरण कमलेषु। (डाक्टर की पत्नी भी आकर पति के संग रहना चाहती है।)

श्री म (सहास्य)—खूब नरम भाव।

जनैक भक्त—किसने लिखा है ?

श्री म (मज़ाक से)—यह तो मेरा एक प्राईवेट विषय है (हास्य)। सुधीर बाबू ने मिहिजाम में कहा था, यह मेरा प्राईवेट विषय है। (हास्य) हम सब थे anxious (उद्विग्न) उसके लिए। और तब वही बात कही थी (हास्य)।

योगेन (श्री म के प्रति)—जी, आपने मेरी रक्षा की है। मेरे व्याह का सब ठीक था। आपकी बातों से ही नहीं हुआ।

योगेन की वयस पचास के ऊपर है। दूसरे विवाह की बात हो रही थी। योगेन अब नित्य गंगा स्नान और साधुसंग करते हैं, तथा मठ और दक्षिणेश्वर दर्शन करते हैं।

श्री म (योगेन के प्रति व्यंग्य से)—नहीं, आप अब कर सकते हैं, निर्लिप्त हो गए हैं !

रात्रि दस, बेलेघाटा, कलकत्ता।
23 सितम्बर, 1923 ई०, रविवार।

अष्टम अध्याय

जगत् का श्रेष्ठ संवाद—सर्वस्व छोड़कर ईश्वर को पुकारो

(1)

मॉर्टन स्कूल की छत खूब खुली है। बीच में बैठने पर कलकत्ता शहर का कुछ भी दिखाई नहीं देता। अगले दिन एक भक्त अकेले छत पर बैठे हैं, श्री म की प्रतीक्षा में। अब सन्ध्या 6-15। श्री म निज कक्ष में बैठे ईश्वर चिन्तन कर रहे हैं। कक्षद्वार भीतर से बन्द है। देखते देखते किरण तीन जन संगियों सहित स्टुडेंट्स होम में आ पहुंचे। सब ही नवयुवक, कॉलेज में पढ़ते हैं। किरण विनय के छोटे भाई हैं। कुछ बाद योगेन आ गए। एक घण्टा बीत गया। अब 7-15। इस समय श्री म बाहर आए। आ रहे हैं और दूर से ही युक्तकर से नमस्कार, नमस्कार उच्चारण कर रहे हैं। भक्तगण खड़े हो गए। निकट आकर श्री म कह रहे हैं, कब से आए हैं आप लोग ? बैठिए बैठिए।

आज 24 सितम्बर, 1923 ई०; 7वां आश्विन, 1330 (बं०) साल, सोमवार।

आज पूर्णिमा। चांद की स्निग्ध किरणों से आकाश ढका हुआ है। कलकत्ता महानगरी मानो एक विराट शुभ्र चंदोवे के नीचे अवस्थित है। चंदोवे के ठीक मध्यस्थल पर पूर्णिमा का चांद कुछ सुवृहत् उज्ज्वल दीपकवत् प्रदीप्त है। और फिर चांद का प्रकाश स्वच्छ कांच के ऊपर पड़कर कहीं कहीं झिकमिक झिकमिक कर रहा है। वैद्युतिक आलोक आज हीनप्रभ है।

श्री म उत्तरास्य चेयर पर बैठे हैं, और भक्तगण तीनों ओर बैंचों पर बैठे हैं। श्री म के मुख पर चन्द्रकिरण पड़ रही है, आंखें छलछल भगवद्भाव में विभोर। चांद श्री म को बड़ा प्रिय है। बोले, इसी चांद ने ठाकुर को देखा था—हमारा परम सुहृद। आज श्री म को देखकर

मन में लग रहा है, वेदव्यास मानो आए हुए हैं, भक्तों को 'श्री रामकृष्ण भागवत' सुनाने के लिए। श्री म युवक भक्तों के साथ अति आनन्द से बातें कर रहे हैं।

श्री म (युवकों के प्रति)—तुम सुनो, ये बोलेंगे मठ की बातें। (योगेन के प्रति) मठ में गए थे आज? (सब के प्रति) सुनने से आठ आना होता है। किसी किसी का बारह आना, चौदह आना भी होता है। दो आने मात्र बाकी रहता है। जिनका realisation (अनुभव) है उनका चौदह आना हो जाता है। (लड़कों के प्रति) यही तो हुई world (जगत्) की most important event (सर्वश्रेष्ठ घटना)। क्रिकेट के खेल की list of events (विषय तालिका) होती है ना? वैसे ही world's list of events (विश्व की घटना समूहों) में यही है most important (सर्वश्रेष्ठ)। क्योंकि साधु लोग सब छोड़कर ईश्वर को पुकारते हैं। ये सब मठ में रहते हैं। ईश्वर के संग commune (योग) करते हैं। (मजाक से) आप क्या कहते हो मोशाय, योगेन बाबू? (जगबन्धु के प्रति) आप क्या कहते हैं मोशाय?

भक्तगण विनीत भाव से मृदुस्वर से बोले, "जी हां।"

अब शुकलाल ने प्रवेश किया।

श्री म (शुकलाल के प्रति) बैठिए, बैठिए। आइए विराजिए। समझे यह ही हुआ 'the most important event in the world' (विश्व का श्रेष्ठ संवाद)। लगता है आप समझ नहीं सके। बोलिए तो?

शुकलाल—ईश्वर की कथा, उनकी पूजा इत्यादि।

श्री म (उज्ज्वल बड़े दोनों नयन और भी फैलाकर)—नहीं, पूजा तो सब ही करते हैं। जहां पर सर्वत्यागी वास करते हैं और उनके संग commune (योग) करते हैं, उसका संवाद। यही तो हमने discover (खोज) करके निकाला है। अन्य किसी ने अभी तक खोज नहीं पाई। (जनैक भक्त के प्रति)—स्थितप्रज्ञस्य का भाषा……उसके बाद क्या?

भक्त—………………समाधिस्थस्य केशव।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम्॥[1]

[1]गीता 2 : 54

श्री म (सब के प्रति)—उनकी ही खबर के लिए उत्सुक रहते हैं। मठ में रहते हैं वे सब। हम नित्य वही समाचार पाते हैं।

श्री म आहार करने तीन तल पर उतर गए। भोजनोपरान्त द्वितल के पश्चिम के बड़े कमरे में जाकर बैठ गए भक्तों के संग फर्श पर चटाई पर। ईश्वरीय कथा हो रही है।

(2)

श्री म (योगेन के प्रति)—तो फिर आप इन्हें (शुकलाल को) मां की कथा सुनाइए।

अब स्मृति कीर्तन आरम्भ हुआ। इतिपूर्व और भी दो दिन हुआ है। योगेन ने आरम्भ किया, अन्य भक्तों ने भी योगदान किया। विनय और सुधीर आ गए। स्मृति कीर्तन शुरु हुआ।

4 . एक साधु काशी में थे मां के संग। ये पिण्ड देने गया आए थे। चलते समय मां से कह आए, मां जैसे सब ही पिण्ड पाएं। रात को साधु स्वप्न देखते हैं, मां सब के बीच में बैठी हैं—जप कर रही हैं। प्रेत आत्माएं उनसे सब मुक्ति मांग रही हैं, और वे मुक्ति दे रही हैं। किसी को पीछे देंगी कह रही हैं। अनुनय विनय से फिर उसी समय ही दे रही हैं।

42. जहां पर अब मठ है वहां पर पहले केलों का बाग था। मां दक्षिणेश्वर जब जाया करती थीं नाव से, तब एक दिन ठाकुर को यहां टहलते हुए देखा था। तत्पश्चात् स्वामी जी (विवेकानन्द) ने यह जगह खरीद ली। मां को वहां ले जाकर चारों ओर सब घुमा फिरा कर दिखा कर बोले, यह लो तुम्हारी जगह। अब अपनी जमीन पर आकर रहो।

43. एक साधु ने मां से पूछा था, अच्छा मां, तुम क्या चींटियों की भी मां हो ? मां बोलीं, हां बेटा, मैं चींटियों की भी मां हूं।

श्री म—मैं कभी कभी नौकर के द्वारा चीज वस्त भेज देता। मां नौकर को आसन पर बिठाकर ठाकुर के समस्त उत्कृष्ट प्रसाद द्वारा परितृप्त करतीं—पास बैठकर खिलातीं। अन्य लोगों की

भांति नहीं—नौकरों के लिए अन्य रकम का आहार, अपने लिए अन्य प्रकार का। मां के पास ऐसा नहीं था—सब एक रकम।

"एक बार मठ से एक गाय लाकर उद्बोधन में रखने की बात हुई। मां यह बात सुनते ही बोलीं, ना, ना, वह वहां पर गंगादर्शन करती है, स्वाधीन भाव में विचरण करती है। और साधुसंग हो रहा है। यहां पर तो एक कोठरी में बन्द करके गले में रस्सी बांधकर रखोगे। यह नहीं होगा। ऐसा दूध मैं पी नहीं सकूंगी। फिर लाने नहीं दी।

"इससे पता चलता है, मां चींटियों की भी मां है।"

(44) यतीन पागल हो गया था—घूमता फिरता रहता था। रास बिहारी महाराज बाग-बाजार घाट से पकड़कर मां के पास ले गए। तत्पश्चात् अच्छा हो गया।

(45) श्री हट्ट से एक भक्त मायेर बाड़ी[1] गए। उनकी दीक्षा लेने की इच्छा थी। किन्तु कहने का साहस नहीं किया—बाहर बैठ गए। मां ने आकर कहा, उठकर आओ बेटा, उठकर आओ। भक्त उठे नहीं। मां के कई बार कहने पर भक्त बोले, मां, मैं हीन जात का हूं। मां ने उत्तर दिया, नहीं नहीं बेटा, तुम घर के लड़के हो। स्नान करके आ जाओ।

(46) बलराम ठाकुर के पांव में हाथ देकर प्रणाम[2] नहीं करता था। ठाकुर समझ गए, उसको पांव पर हाथ सहलाने के लिए कह देते। वह तब राखाल, बाबूराम, नरेन इन्हें बुला देता।

(47) उद्बोधन में नलिन्दी एक दिन पाखाना परिष्कार करके गंगा स्नान करने के लिए गई। मां सुनकर बोलीं, क्या नल पर स्नान करके गंगा (जल) के स्पर्श से ही नहीं होता था। मैं जब उस देश (मां का जन्म-स्थान जयराम घाटी) में थी, तब कितना सूखा गू लग जाता था। हाथ पैर धोकर गोबिन्द, गोबिन्द बोलती। सब शुद्ध हो जाता।

---

[1]मायेर बाड़ी=उद्बोधन

[2]बंगाल में बड़ों के पांव के तलवों को छूकर (चरणरज लेकर) प्रणाम करते हैं।

श्री म—जिन्हें शुचिबाई[1] है उन्हें यह स्मरण रखना उचित। हाथ पैर धोकर मुख पर जल छिड़क, उनका नाम करने से सब पवित्र हो जाता है।

(48) वृन्दावन में गोविन्द जी के मन्दिर में हग दिया था एक बच्चे ने। सब को ठाकुर दर्शन में असुविधा हो रही थी। गोलाप ने तब अपनी मलमल की धोती फाड़कर वह साफ कर दिया। दूसरे लोग बातें करने लगे, उसके लड़के ने हगा है। मैं बोली, नहीं, सबको विघ्न पड़ता है, इसलिए उसने परिष्कार कर दिया है। आजकल गंगा के घाट पर गू हो तो गोलाप परिष्कार कर देती है। उसका स्वभाव ही सुन्दर हो गया है।

(49) मां सबकी अच्छाई की ओर ही देखतीं[2]। एक जन की चर्चा में कहा था, उपपत्नी के लिए इसकी कैसी सेवा, देखा।

डाक्टर, बड़े जितेन और अमृत आ गए।

(50) गौरी मां की बातों में मां बोलीं, नहीं री नहीं, गौरदासी (गौरी मां को ठाकुर और मां गौरदासी कहा करते थे) का क्या त्याग है? उसके पास कितने अलंकार थे, उसने सबके सब दे दिए हैं।

श्री म—आहा! सब भला ही देखती हैं— Good side (भली दिशा) ही देखती हैं।

(51) अमेरिका जाकर पूजा करेगा, इसलिए जनैक भक्त के अनुरोध से अपनी फोटो खिचवाने के लिए मां राजी हुई थीं। फोटो देखकर पीछे कहा, मेरा शरीर और भी सुन्दर था; फोटो से अनेक अच्छा। जब फोटो ली गई थी, तब शरीर ठीक नहीं था। योगीन के असुख में रात रात जागने इत्यादि से शरीर खूब क्लांत था।

(52) नरेन जब उस देश में अकेला था तब ठाकुर प्रायः ही उसको दर्शन देते थे।

(53) राम की पुस्तक में लिखित कुमारी पूजा का विवरण ठीक नहीं।

---

[1]शुचिबाई=छूतछात की बिमारी।

[2]बलराम अपने को अति हीन समझते थे और ठाकुर को पवित्रता की खान।

(54) गिरीश के अनेक पाप लेने पड़े थे, इसी कारण ठाकुर को इतना भोगना पड़ा।

(55) खराब स्त्रियों के द्वारा पांव छूकर प्रणाम करने से मां को कुछ यन्त्रणा होती थी। किन्तु मां कहतीं, यह शरत् को न बताना, नहीं तो फिर वह लोगों का आना बन्द कर देगी।

अब राम बाबू की पुस्तक में से गिरीश बाबू चरित पढ़ा गया।

आजके स्मृति कीर्तन का अधिक भाग ही विनय ने किया है। जभी श्री म उनकी प्रशंसा कर रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)— विनय बाबू और डाक्टर बाबू ने दूध द्वारा मां की सेवा की थी। रोज सवेरे दूध लेकर 'उद्बोधन' में जाते। इसीलिए तो विनय बाबू को इतनी बातें याद हैं। सेवा करने से प्यार उत्पन्न होता है। और प्यारे व्यक्ति की बातें हों तो मन में अधिक रहती हैं। गाने में हैं:—

आमार भक्ति जेवा पाय से जे सेवा पाय होये त्रिलोकजयी।
भक्तिर कारणे नन्देर भवने नन्देर बाधा माथाय बोई॥

अर्थात् मेरी भक्ति जिसे मिल जाती है वह जो सेवा प्राप्त करता है उससे वह त्रिलोकजयी बन जाता है। मैं भक्ति के कारण नन्द के घर में नन्द की बाधायें स्वयं अपने सिर पर लेता हूं।

रात्रि 9:40, सभा भंग हुई।

(3)

कालेज स्क्वेयर, थियॉसोफिकल हॉल। अब सन्ध्या। पण्डित कुलदारंजन मल्लिक भागवतरत्न ने वक्तृता दी। विषय 'वैष्णव कविता'। श्री म ने एक भक्त को वह सुनने के लिए भेजा था। ये लौटकर आ गए आठ बजे। आज 27 सितम्बर, 1923 ई०, 10वां आश्विन, 1330 (बं०) साल, बृहस्पतिवार।

भक्त ने देखा' श्री म दोतल के पश्चिम हाल में बैठे हैं। फर्श पर चटाई के ऊपर चारों ओर भक्तगण—बड़े जितेन, योगेन, शची, छोटे जितेन, अमृत, सुधीर आदि आदि। बऊबाजार के तीन जन भक्त भी

आए हुए हैं। दादी को चारों ओर से घेर कर शिशुगण मस्त होकर जैसे कहानी सुनते हैं वैसे ही भक्तगण श्री म की 'कथामृत' पान में मस्त हैं—जैसे जगत् की होश नहीं, किसी को भी।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—उनके अनन्त काण्ड। उनके क्या फिर एक-दो काज। एक दिन दक्षिणेश्वर में छोटी खाट पर बैठे हैं ठाकुर और नीचे बैठे हैं एक भक्त। भक्त कहने लगे, "सुना जाता है ईश्वर के अनन्त काण्ड हैं। आपका भी देखता हूं वही है।" ठाकुर बोले, "ठीक कहते हो, अनन्त व्यापार ईश्वर के। जानते हो कैसे? एक दिगन्तव्यापी मठ है। उसके मध्य में एक प्राचीर (दीवार) है, और उसमें एक बड़ा गोल छिद्र है। बोलो तो वह क्या है?" भक्त तत्क्षण बोल उठे, "वही तो आप"। झट पीठ थपथपाते हुए कहने लगे, "वाह, तुम्हारी तो सुन्दर बुद्धि—ठीक कहा।" बीच बीच में पूछा करते, "बोलो तो मैं क्या, पूर्ण कि अंश, वजन बताओ?"

बड़े जितेन—एकजन तान्त्रिक साधु ने कहा था, ठाकुर का सब अच्छा है, किन्तु गृहस्थ बिलकुल ही नहीं किया। ईश्वरीय भाव में ही सारा जीवन बिता दिया।

श्री म—क्यों गृहस्थ कैसे नहीं किया? कामारपुकुर में स्त्री भक्तों से कहा था, "मैं तो तुम्हारे बीच में मुडकी माखा* हो गया हूं।" उस साधु ने क्या ठाकुर को देखा है?

बड़े जितेत—जी नहीं।

श्री म—नहीं देखा तो फिर क्या? सब ही क्या फिर समान दाम दे सकते हैं? एक हीरे के दाम दिए थे नौ सेर बैंगन, बैंगन वाले ने। कपड़े वाला बोला—नौ सौ रुपया। जौहरी ने एकदम एक लाख रुपया। तो भी सब को ही credit (शाबाश) देनी चाहिए—जो जितना समझा है।

सुरेन बाबू (दास गुप्त) एक हैं—इंग्लैंड, जर्मनी आदि स्थानों पर पढ़े लिखे। इनकी जब छः वर्ष आयु थी तब से ही हमने इनको देखा है। दो एम० ए० पास किए हैं। बचपन में ऐसी ऐसी बातें बोलते थे ठीक योगियों जैसी। बैस्ट से हमें लिखा था, "कथामृत जिन्होंने

*मुड़की माखा=मरुण्डा, गुड़ की खीलें।

बोला, वे अवतार हैं। आप लेखक, आपको जानता हूं आप अवतार नहीं हैं। तो फिर जिनके मुख से यह निकली है वह निश्चय ही अवतार हैं।"

श्री म तीन तल पर चढ़ रहे हैं। ज्येष्ठ पुत्र प्रभास बाबू देओघर जा रहे हैं, वायु परिवर्तन के लिये। श्री म उन्हें विदा करेंगे। श्री म की इच्छा से भक्तगण आगमनी गाते हैं। वे ऊपर से ही सुन रहे हैं।

गान—गिरि गणेश आमार शुभकरी।
पूजे गणपति पेलाम हैमवती चाँदेर माला येनो चांद सारि सारि ।।
विल्ववृक्ष मूले पातिये बोधन, गणेशेर कल्याणे गौरीर आगमन,
घरे आनबो चण्डी कर्णे शुनबो चण्डी,
आसबे कत दण्डी योगी जटाजूटधारी ।।[1]

गान— के गो आमार मा कि एलि।
एक बार आय मां मनेर कथा बोलि ।।
अनेक दुःख दिए श्यामा जदि दया प्रकाशिलि।
तबे मां होये मां मायेर मत छेलेर कथा शोनो मा काली ।।
दांड़ा गो मा हृदकमले पूजि मानस कुसुम तुलि।
भक्तिचन्दन माखाइये पदे दिबो पुष्पाञ्जलि ।।
करिबो सुमहत् होम चित्कुण्डे अनल ज्वालि।
पूर्णाहुति दिबो ताहे जय काली जय काली बोलि ।।
प्राणान्त ए दक्षिणान्त कर्मफल मा तुइ सकलि।
मायेर छेले प्रेमिक एखन, जार काछे काल कृतांजलि ।।[2]

---

[1]भावार्थ—दक्ष की पत्नी अपने पति से कह रही है, हे गिरिराज मेरा गणेश बड़ा शुभकरी है, इसकी पूजा करके सुवर्ण मिला है। उसी के मंगल के लिए बेले के नीचे बोधन करके गौरी को यहां पीहर ला रही हूं। घर में चण्डी को जब लाऊंगी तब जाने कितने दण्डी, योगी और जटाधारी हमारे घर पर पधारेंगे।

[2]भावार्थ—क्या यह मेरी मां है जो यहां पर आई है? मां एक बार आओ तुम से अपने मन की बातें कहूं। यदि श्यामा ने बहुत दुख देकर कृपा अर्पण की है तब मेरी मां काली मुझे अपने बेटे की भांति सुनो और मेरे हृदय कमल

(शेष 157 पृष्ठ पर)

श्री म नीचे आ गये। कहते हैं, "रामबाबू की पुस्तक पढ़ ली जाए।" जगबन्धु रामचन्द्रदत्त लिखित श्री रामकृष्ण जीवन वृतान्त पढ़ते हैं। शशी महाराज (स्वामी रामकृष्णानन्द) की गुरुभक्ति पाठ चल रहा है। लेखक शशी की गुरुभक्ति और गुरुसेवा की उच्छ्वसित प्रशंसा करते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—शशी महाराज की बातों की जो इतना विवरण देकर वर्णना की है, वे समस्त अन्य साधुओं के विषय में हैं। अर्थात् झगड़ा था कि ना। (दीर्घहास्य सहित) राम बाबू जब पुस्तक लिख रहे थे तब मठ से साधु जाकर कह आए थे, "हमारा नाम-वाम मत देना।" राम बाबू एक दिन भी वराहनगर मठ में नहीं गये।

ठाकुर कहते, "राम थोड़ा सा अभिमानी है।" अधर सेन के घर पर ठाकुर जायेंगे राम बाबू को बताया नहीं गया। उस पर राम बाबू ने कहा था, "सारा राखाल का दोष है। उस पर भार था। उसने कुछ नहीं बताया।" ठाकुर सुनकर बोले, "हां राखाल तो दूध पीता शिशु है, अब भी गला दबाने से दूध निकल पड़ता है, उसका दोष नहीं लेते।" फिर बोले, "जानते तो हो कि जहां पर हरिनाम होता हो वहां पर बिना निमंत्रण के भी जाया जाता है।"

एक बार राम बाबू विमाता की यंत्रणा से अस्थिर हो गये थे। जाकर ठाकुर से कहा, "अच्छा, वह बाप के घर चली जाए ना।" (सहास्य) सुरेश बाबू के भाई गिरीन्द्र बोल पड़े, "अपनी बहू को ही भेज दो ना बाप के घर।" सुनकर ठाकुर बोले, "वह कैसे हो? हंडी यहां पर और ढक्कन अन्य स्थान पर, यह नहीं होता। बाप-मां के संग न बने तो उन्हें पृथक् घर ले दो। और खाने की पूरी व्यवस्था कर दो।" किस प्रकार सुन्दर ढंग से मिला रहे हैं।

पर खड़ी हो जाओ, ताकि मैं तुम्हें अपने मन के फूलों द्वारा पूजूं। और भक्ति चन्दन लगाकर तुम्हारे चरणों में पुष्पांजलि दूं। मैं अपने हृदय में इस बड़े यज्ञ को करने के लिए पवित्र अग्नि जला लूं तथा पूर्णाहुति "जय काली जय काली" बोल कर दूंगा। ओ मां जीवन का अन्त, पुजारी की दक्षिणा तथा कर्मफल सब कुछ तुम हो। तुम्हीं सब हो। मां का पुत्रप्रेम पूर्ण है और काल उसके सामने हाथ जोड़े खड़ा है।

राम बाबू एक दिन स्वामी जी (विवेकानन्द) के संग चीत्कार करके तर्क कर रहे थे। ठाकुर सुनकर बोले, "ठहरो ठहरो, अभी अभी तो बीमारी से उठे हो। इतने जोर से बातें नहीं करते।"

बड़े जितेन—तब फिर इसके पढ़ने से लाभ क्या ?

श्री म (गम्भीर भाव से)—पढ़ेंगे नहीं तो क्या ? ठाकुर क्या फिर एक ही प्रकार से प्रकाशित हैं। विभिन्न भक्तों के भीतर से विभिन्न भावों में प्रकाशित हैं ? उनका ही भाव तो है सब। उसे क्या नहीं देखना होगा ? चाहे थोड़ा झगड़ा भाइयों के मध्य रहता ही है। बाप के पाँच लड़के क्या फिर सब समान होते हैं ? रेत में चीनी मिली हुई है। केवल चीनी चीनी ही लेना। अधिकांश भाग ही चीनी है। भाइयों में क्या नहीं होता ?

राम बाबू का त्याग कितना ? कुछ भी रखा नहीं। सारा समय बाग में (योगोद्यान में) बैठे रहते। कालेज (मैडिकल) से लौटते समय घर में कुछ थोड़ा सा जलपान करते। और बाकी समय बाग में बैठे उन्हें पुकारते। ठाकुर का नाम एक जन के मुख से सुन लेते ही उसको कितना प्यार करते। अन्तिम समय जब खूब असुख हो गया तब बोले "मुझे बाग में ले चलो। मैं वहां पर ही देहत्याग करूँगा।" किसी ने इस बात पर कान नहीं दिये। अन्त में स्वयं ही लंगड़ाते-लंगड़ाते पालकी करके वहां चले गये सात दिन पूर्व। वहां पर ही शरीर गया। उनकी स्त्री सेवा करती थी। राम बाबू महात्मा ही हैं। गृहस्थ में रहकर किस प्रकार त्याग करना चाहिये वह सिखा गये हैं।

श्री म कुछ क्षण चुप रहे, पुनः बातें करने लगे।

श्री म (पाठक के प्रति)—एक दिन कहा था केशव सेन को, शिव और राम का मिलन हो गया है। किन्तु उनका शोरगुल तो थमता ही नहीं—राम के बन्दरों का और शिव के भूतों का। अर्थात्, केशव और विजय का तो मेल हो गया है, किन्तु उनके शिष्यों का मेल नहीं हुआ।

मणि मलिक ब्राह्म भक्त। खूब पुराना व्यक्ति। पण्डित शशधर तब खूब नवीन उद्यम से हिन्दू धर्म के संबंध में लैक्चर देते थे।

दोनों की एक दिन बातचीत होते देखकर ठाकुर बोले, "उसका जो मत है, वही ठीक है।" इस आयु में नहीं बदलेगा जानकर शशधर को तर्क करने से मना कर दिया।

उनके (ठाकुर के) कितने काज। सबको ही देखते हैं। उनमें कोई भी "दलादलि" नहीं।

"एक हांडी में बैंगन, आलू, परवल सब उबल रहे हैं। जल खदखद कर रहा है। वे सब नाच रहे हैं। ज्यों ही लकड़ी नीचे से हटा ली त्यों ही सब चुप। हमें भी वे उसी प्रकार नचा रहे हैं—'यंत्रारूढानि मायया।'*
रात्रि पौने दस।

(4)

मॉर्टन स्कूल की चार तल की छत। अब संध्या साढ़े छह। श्री म एक साधु के संग बैठे बातें कर रहे हैं। साधु हिन्दुस्तानी वृद्ध। चित्रकूट पहाड़ पर रहते हैं। वे एक श्लोकी रामायण और एकश्लोकी भागवत सुना रहे हैं। तब फिर एक बहुत सुन्दर गल्प सुनाने लगे—मनुष्य प्रथम दो पैरों पर चलता है। तब खूब मुक्त भाव में चलना फिरना कर सकता है। ब्याह ज्यों ही हुआ, गले में रस्सी पड़ गई। पशुवत् तब चार पांव हो गए। इच्छानुसार चलना फिरना कर नहीं सकता, सर्वदा पीछे खींच। छह पैर हो गए जब लड़का हुआ। तब जल के कीड़े की भांति घूम घूम कर मरता है। फिर लड़के का ब्याह हुआ तो आठ पांव हो गए। मकड़ी की भांति तब स्वयं ही बद्ध हो जाता है अपने ही जाल में। अपने ही लड़के बच्चे तब उसको पकड़कर खाते हैं। इतना आहार मिले कहां से, जभी उसको ही खा लेते हैं। गृहस्थी की यही अवस्था।

साधु ने मिष्टिमुख किया। अब भवानीपुर जायेंगे। वहां पर ही आसन किया है। माखन संग में जाएंगे। श्री म ने उठकर नमस्कार किया, साधु ने विदा ली।

आज 28 सितम्बर, 1923 ई०, 11वां आश्विन 1330 (बं०) साल, शुक्रवार।

*गीता 18 : 61

भक्तों की मजलिस दोतल के पश्चिम के कमरे में लगी है। बड़े अमूल्य, छोटे रमेश, शालखा के भक्त, ये पूर्व से ही प्रतीक्षा कर रहे थे। बड़े जितेन और विरिंचि कविराज आ गए। क्रमशः छोटे जितेन, छोटे नलिनी, डाक्टर और विनय आए। जगबन्धु वहां पर ही रहते हैं। श्री म भक्तों से घिरे हुए ईश्वरीय कथा कह रहे हैं। अब रात्रि आठ।

मठ के किसी भक्त ने एक प्रतिष्ठान के कर्म-सचिव का पदत्याग किया है। इसी सम्पर्क में बातें हो रही हैं। भक्तों की आलोचना श्री म निविष्टमने सुन रहे हैं। पुनराय कथा कह रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ईसु क्राइस्ट ने कहा है, 'For after all these things do the Gentiles seek.' 'But seek ye first the Kingdom of God.' ये तो विषयी चाहते हैं। तुम्हारा काम्य हो ईश्वर। ठाकुर कहते, 'ओगुनो अत भेबो ना।' — 'ओगुनों' माने जागतिक वस्तुएं, क्षुद्र भाव में कहते। जैसे—टैक्निकल वैक्निकल आदि। ये तो संसार में हैं ही, रहेंगी भी चिरकाल। किस प्रकार उनकी प्राप्ति हो (ईश्वर की) उसकी चेष्टा करना उचित। ईश्वर क्या नहीं देखते कि टैक्निकल आदि का प्रयोजन है। इसके लिए उन्होंने अलग लोग रखे हैं। भक्त लोग खाली उन्हें लेकर रहेंगे, सर्वकर्मों में। उनकी प्राप्ति के लिए जो कर्म है भक्त वही लेकर रहेगा।

"ईश्वर सब के लिए फिकर करते हैं। गृहियों के लिए भी उन्हें फिकर है। गृहियों के ऊपर ही नजर अधिक है। कारण वे बद्ध जो हो गए हैं। एक दिन कितने ही 18-19 वर्ष के लड़के भक्त बैठे हैं, इनमें से एक ने ब्याह कर लिया है। उससे ठाकुर बोले, "तेरे लिए ही है जितनी भी भावना। तूने ब्याह जो कर डाला है।" विवाह कर लिया है, इस कारण क्या उसका केस (case) take up (ग्रहण) नहीं करेंगे? पहले उसे किया है। साधु, जिन्होंने विवाह नहीं किया उनका केस इतना जटिल नहीं।

"गृहस्थियों को तो फिर उपाय भी बता दिया है। कहा था, ज्यों ही एक या दो सन्तान हो जायें—त्यों ही भाई बहन की भांति रहे, और

नहीं। और कहा था, बीच बीच में निर्जन में चले जायेंगे।" पन्द्रह दिन की छुट्टी मिली, झट दौड़ गए। एक दिन भी कम नहीं। (डाक्टर के प्रति) इसका मतलब बहनोई के घर नहीं—एक आग से अन्य आग में। यह सोचकर निकलकर चले जाना चाहिए—मेरे मरने पर भी तो गृहस्थ चलेगा ही। (बड़े जितेन के प्रति) ये हमारे डाक्टर बाबू कैसे दो-एक मास को काशी चले जाते हैं बीच बीच में। जिन्होंने साइन बोर्ड लगाकर व्यवसाय कर रखा है, चले जाने पर उनका प्रसार कम हो जाएगा, इस भावना से नहीं जा सकते। एक डाक्टर प्रायः ही चला जाता है, रोगी आकर उसे नहीं पाता, तो कहेगा पागल हो गया है। इस कारण ही कोई कोई फंस जाते हैं। और फिर कोई कोई ऐसे हैं सब ठेल ठाल कर निकल जाते हैं।"

श्री म (भक्तों के प्रति)— एक जन ने गेरुआ लिया था। उसने ठाकुर से पूछा, मेरा कितना बाकी है? ठाकुर बोले, "अभी भी बाकी है। कामना वासना क्या जाती है? मज्जागत हुई सूखी पड़ी रहती है।" एक जन एक भाण्डे में घी रखता था। घी समाप्त हो गया। अन्य एक व्यक्ति को घी की आवश्यकता हुई। उसने घी मांगा। पहले व्यक्ति ने जवाब दिया, "घी नहीं है।" जिसने घी मांगा था उसने कहा, "अपना घी का पात्र धूप में रखो।" धूप में रखते ही कलकल करके एक पाव घी बाहर निकल आया। वासना भी ऐसे ही मज्जागत हुई रहती है! तो भी ज्ञानाग्नि द्वारा गलाकर बाहर फेंक दी जाती है। वही ज्ञानाग्नि जलती है तपस्या से। तपस्या करने पर ही ठीक होता है। साधु होने से ही क्या वासना चली गई? यह नहीं। पथ पर खड़ा हुआ है मात्र। वहां से सुविधा रहती है। ये ही सब वासनायें फिर फीडर (आहार) पाने पर जाग उठती हैं। जैसे मैदान में एक गर्त्त सर्वदा जल से पूर्ण रहता है। क्यों? क्योंकि वहीं से perpetual supply (निरन्तर जल की मदद) जो मिलती रहती है। तभी जलपूर्ण। जब तक out of sight (आंख से दूर) तब तक out of mind (मन से दूर)। सामने आते ही फिर दुबारा फट से जाग उठती है।

श्री म (अमूल्य के प्रति)—अनेकों की प्रकृति कर्म की होती है। वे लोग altruistic work (परोपकार) करना पसन्द करते हैं। Flood relief (बाढ़ पीड़ितों की सेवा, हस्पताल, डिस्पैन्सरी आदि वे करते हैं। इसलिए क्या सर्वदा ही करेंगे? करते करते ज्योंहि आशा मिट गई त्योंहि दौड़। देखो ना, मठ के साधु कर्म करते ही रहते हैं। और फिर कभी झट से बाहर चले जाते हैं। एक दल काज करता है, एक दल तपस्या करता है।

श्री म (जनैक अविवाहित युवक के प्रति)— जिनका ब्याह नहीं हुआ है वे क्यों जायेंगे इस आग में जलने के लिए? ठाकुर ने कहा था, "जिनका ब्याह नहीं हुआ है वे केवल आमोद-प्रमोद के लिए इस आग में जलने के लिए न जायें।" (छोटे रमेश के प्रति) क्या कहते हो रमेश बाबू? यन्त्रणा भोग करने के लिए क्यों जायें? कर्म प्रकृति में हो तो कुछ काम-काज करके वासना का ह्रास करो। और फिर जिन्होंने एक बार विवाह किया है, स्त्री वियोग हो गया है, वे दुबारा क्यों जायें नए फंदे में पड़ने। किन्तु जिनकी प्रकृति में है, द्वितीय विवाह करके संभवतः ग्यारह बच्चों के बाप ही हो जायें।

श्री म (योगेन के प्रति)—दुःख कष्ट शरीर धारण करने पर है ही। "जिन्हें वे प्यार करते हैं उन्हें वे दुख देते हैं।" "इससे मन में चैतन्य रहता है।" पाण्डवों को ही देखिए ना, श्री कृष्ण संग संग हैं तो भी दुखों का अन्त नहीं। तनिक खाने का कष्ट, यह भी फिर दुःख। एक जन चाहे रो ही पड़े, यह कहकर कि आज मेरे लिए केवल साग भात ही हुआ। आहा, कैसा दुःख रे! आत्मा को न जानना ही सबसे बड़ा दुःख। खाने पहनने के सुख को ही फिर क्या सुख कहते हैं? आत्मा का सुख ही सुख है। क्योंकि वही तो चिरकाल रहेगा। विद्यासागर महाशय ने उन दिनों की पांच सौ रु० की नौकरी छोड़ दी— प्रिंसीपल थे। बोले, "अपमान सहने जाऊं, क्यों गुलाम होने जाऊं? मैं नूनभात खाऊंगा।" कैसा तेज! यथार्थ भक्त जैसे चातक। इतना सारा जल है, किन्तु वह कोई भी पिएगा नहीं—स्वच्छ जल चाहिए, वृष्टि का विशुद्ध जल।

श्री म (सबके प्रति)—ठाकुर बोले थे, "ठीक से बैठे रहो जो जहां

पर है, हिलो मत; जैसे कर्णधार कहता है, तूफान के समय, खबरदार हिलो मत, डूब जाओगे। संसार में भी वैसे ही जो जहां पर है स्थिर हुए रहो। अर्थात् और बन्धन में न पड़ें। दो एक बच्चे हो गए तो और नहीं। अब भाई बहन की तरह रहो। काज, कर्म, व्यवसाय वाणिज्य भी और न बढ़ाया जाए। खाना चले—इतना हो तो बस।

बड़े अमूल्य—सब ही वह पालन नहीं कर सकते। फिर स्त्री दरकार होती है रोटी राटी के लिए। ऑफिस में काजकर्म करने वाला हो तो इसकी आवश्यकता है ही।

श्री म (सहास्य)—हां। फिर जिसमें तेज है उसे कुछ भी ग्राह्य नहीं। यह व्यवस्था क्या सबके लिए है?

श्री म नैश भोजन करनें ऊपर गए हैं। उनके कहने के अनुसार भक्तगण भागवत पाठ कर रहे हैं—ग्यारहवें स्कन्ध का उन्नीसवां अध्याय। लौटकर मोहन से बोले, "क्या पढ़ा गया? सार कहिए।"

मोहन - भगवान् उद्धव को ब्रह्मवाद उपदेश कर रहे थे। बोले, मैं ही परब्रह्म। मैं आकाशवत् पूर्ण आत्मस्वरूप। मुझको सर्वभूतों में एवं अपनें में दर्शन करोगे। इस रूप से दर्शन होने से जो विद्या उत्पन्न होगी उसके प्रभाव से तुम्हारे निकट सब ही ब्रह्ममय हो जाएगा।

और बोले, यह मानव देह असत्य और क्षणभंगुर है। तथापि इस देह के द्वारा ही मुझको प्राप्त किया जाता है। जानो एक मात्र में ही सत्य, मैं ही अविनश्वर हूं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—सार कथा। यह ही भागवत का प्राण है। ऐसी बातों की धारणा निर्जन में जाकर होती है। नाना झंझटों में रहकर नहीं होती। ये सब भोग के अड्डे हैं। यहां पर केवल आहार विहार आदि ही चलता है जैसे पशु करते हैं। दिन रात देहचिन्ता—खाली देहसुख।

"मिहिजाम में देखा है, बकरे आदि सारा दिन खाते हैं। निर्जन में जाने से अन्तर पकड़ा जाता है। (विनय और जगबन्धु को दिखलाकर) ये सब थे मिहिजाम में।* दिन-रात खाते ही खाते हैं, कैसे,

*श्री म दर्शन, प्रथम भाग द्रष्टव्य—मिहिजाम खण्ड।

क्यों ? (बड़े जितेन के प्रति)—आप तो शायद गए ही नहीं ? आहा, फिर जाया जाय तो अच्छा। कहां पर ले जाएंगे, यह वे ही जानें। पुरी से बुलावा आया है। पुरी में पकाना नहीं पड़ता, इससे ही एक बड़ा हंगामा मिट जाता है। खाना लेकर ही तो हैं सब गड़बड़। गृहस्थी का काम करते करते बारह बज जाते हैं, रसोई में इससे पूर्व भी इसी का आयोजन। किन्तु पुरी में अधिक पकाना-वकाना नहीं। Lord of Universe (जगन्नाथ) की पाकशाला में सब रसोई होती है।

"हमने सखी चांद (मन्दिर के मैनेजर) को लिखा था, ये (दुर्गापद) आ रहे हैं। ये आपके संग आलाप करेंगे। ये हमारे फ्रेण्ड (मित्र) हैं। सखीचांद ने उत्तर दिया है, "मुझको भी फ्रेन्ड बना लीजिये ना।" और लिखा है, "यदि अकेले आएं तो मेरे पास ही ठहरें।"

श्री म (सहास्य)—ओ मां, भेड़िये की बात याद आ गई। भेड़िये ने कुत्ते से कहा था, बहुत अच्छा। तुम खा-खा कर खूब हृष्ट-पुष्ट हो जाओ। मुझसे तो नहीं चलेगा यह। मैं ऐसा खाना भी नहीं चाहता, और न गले में शृंखला ही चाहता हूं।

"दूसरों के घर रहने पर स्वाधीनता नष्ट हो जाती है। उनके नियमों के "अन्डर" चलना पड़ता है। इस समय घर रहना होगा, इस समय खाना होगा आदि बन्धन आ पड़ते हैं। फिर दूसरों की सेवा जितनी कम ली जाए उतना ही अच्छा है। कारण जो सेवा करते हैं, उनके लिए कुछ obligation (मजबूरी) आ जाती है। दस तरकारियों से भोजन कराना, सेवा करना इससे वे और भी बढ़ जाती हैं।

"सबसे अच्छा है स्वयं पकाकर खाना। इससे ऐसा भाव भी नहीं आता, और सत्त्व की भी हानि नहीं होती। जिसके हाथ का खाया जाता है उसकी सत्ता आती है। इसीलिए स्त्रियों के हाथ से अनेक जन नहीं खाते। क्या पता कैसा व्यक्ति है। जभी तो बहुत जन स्वयं ही पकाकर खाते हैं। ठाकुर कहते हैं यह बहुत अच्छा है।"

श्री म (युवक के प्रति)—ठाकुर ने मुझ से कहा था, "निज हाथ से रांधकर खाओगे–दूध भात और गावा घी।" तब रिपन

कॉलेज में पढ़ाता था। एक मैस (mess) में रहता था—नीचे का एक कमरा भाड़े पर लेकर। दीवार पर एक कील पर पतीली टंगी रहती।

"जिन्हें पांच जनों के बीच रहना होता है उनके लिये नहीं यह व्यवस्था। नौकर केवल पतीली मांजता है। कोई पूछता है तो कहता है, "हमारे बाबू जी की पतीली है। आजकल वे स्वयं हाथ से पकाकर खाते हैं कि ना।" (हास्य) पांच जनों को विरक्त (परेशान) नहीं करते। जो अकेले रहकर स्वपाक खा सकते हैं, उनके लिये यह व्यवस्था अच्छी है।"

श्री म (भक्तों के प्रति)—पुरी में ऐसा झंझट नहीं हैं। महाप्रसाद खरीदकर खाओ। फिर पुरी में सब ही बड़ा है—मंदिर, भोगराग, समुद्र, कितने ही मठ।

"तीर्थवास सहज नहीं। अमुक बड़ा व्यक्ति है, उसके संग आलाप करता हूं, यह भाव यदि आए तो वहां जाना ही क्यों? यहां पर ही अच्छा है। फिर वहां पर लड़कियों से मिलने की खूब सुविधा है। बड़े लोगों के घरों की सुन्दरी, लड़कियां वहां जाती हैं। मन भी उसी ओर जाएगा और फिर दस जने जानेंगे कि एक खूब बड़ा भक्त इस घर में रहता है। उनका आना जाना होगा। लड़कियां भी अन्त में आएंगी। ऐसा बहुत कुछ विचार करने के लिए है। तीर्थ ऐसी ही बात है। इतना कुछ भाव विचार करके तब तीर्थ करने जाना। नहीं तो फिर, remedy is worse than the disease. "रोगी यदि बैठा था वैद्य ने आकर लिटा दिया" हो जाता है। (रोग से इलाज बुरा)।

डाक्टर बक्शी–तब तो फिर चुप बैठे रहना ही भला। वे जब लेंगे तभी होगा।

श्री म (भक्तों के प्रति)—मां ठाकुरुण ने एक जन से कहा था, ब्याह न कर बेटा, ब्याह न कर। फिर रात को सो भी नहीं सकेगा, शान्ति से। इस ज्वलन्त अग्निकुण्ड में मत ढुक, बच्चे। एक ने ब्रह्मचर्य व्रत लिया देखकर बोली थीं, "ले बेटा अब रात को सो सकेगा।"

श्री म क्या सोच रहे हैं? पुनः बातें करने लगे।

श्री म—अनासक्त होकर रहना चाहिए संसार में। जनक राजा

को विदेह कहा जाता था, अर्थात् उनकी देहबुद्धि नहीं थी। भरत ने राम का राज्य चौदह बरस देखा, किन्तु निज कोई भी भोग नहीं लिया। नगर में रहने से मन में भोग वासना उठेगी देख सुनकर, जभी नगर छोड़ दिया। नन्दी ग्राम में कुटीर बनाकर रहे। कठोर साधन। सारा दिन मुख में 'राम राम' और आहार सामान्य फलमूल। मन्त्री परामर्श के लिए जाते। वह भी एक घण्टा मात्र।

"सब करेगा भोग नहीं लेगा—यही आदर्श। परिवार के दस जनों के मनोरंजन के लिए स्वयं को अधिक परिश्रम करना पड़ता है। उसके लिए तो मालिक ही responsible (दायी) हैं। जैसा सिखाया है वे वैसा ही करते हैं। आदर्शहीन जीवन। भगवानलाभ जीवन का आदर्श है, यह जिनका ठीक हो गया है, उनका सब कुछ अन्य प्रकार का होता है। वे minimum (कम से कम) भोग लेंगे। और maximum (अधिक से अधिक) समय, शक्ति और अर्थ आदर्श लाभ पर व्यय करेंगे।"

सभा भंग, रात्रि दस।

(5)

बैठक आज भी दो तल के पश्चिम के बड़े कमरे में हुई है। उपस्थित हैं बड़े जितेन, छोटे नलिनी, सुरपति, योगेन, रमणी और संगी। अब रात्रि आठ। अन्तेवासी ने वेदान्त सोसाइटी से लौटकर देखा श्री म चटाई पर बैठे हैं, विद्यापीठ के अध्यक्ष स्वामी सद्भावानन्द जी के संग बातें कर रहे हैं।

श्री म (साधु के प्रति)—अब कोई मानता नहीं। किन्तु success (सफलता) होने पर कहेंगे, वे बड़े भले हैं। आहा, कितना परिश्रम किया, कितना कुछ किया। फिर किया भी और क्या जाय ? जगत् की धारा ही ऐसी है। जो जगत् के कल्याण के लिए कुछ करते हैं, ऐसी बातें ग्राह्य करने से उनका नहीं चलता।

(स्वगत) साधु लोग अपनी इच्छा से ऐसा करते हैं ? गुरु के

मुख से सुना है, ऐसे कार्य से चित्त शुद्ध होता है, तभी करते हैं। इसीलिए तो क्या सर्वदा करेंगे ?

ठाकुर के एकजन संन्यासी-संतान की कथा हो रही है।

श्री म—वे मानो बालक हैं। इतना सोच विचारकर वे बातें नहीं कर सकते। सुन्दर स्वभाव।

जनैक भक्त—अमुक प्रतिष्ठान रामकृष्ण मिशन के अन्तर्भुक्त होकर कार्य करेगा, आज इसी मर्म के सूचनापत्र का पाठ सुना गया।

अपर भक्त—इसीलिए शरत् महाराज के यहां उस दिन सब गए थे। यही ठीक हुआ है।

श्री म (सानन्द)—बड़ा अच्छा, बहुत अच्छा हुआ। इतने भाग बंटवारे क्या ठीक हैं ? एक की ब्रांच होना ही अच्छा है।

जनैक भक्त—मठ के संग सम्पर्क नहीं था इस कारण अनेक लोग ही वहां नहीं जाते थे।

श्री म—मठ के ये सभी दक्षकर्मी हैं। मठ ने इस देश का कितना काम किया है। जो अनेक सत्कार्य करते हैं वे कृती हैं। (सहास्य) ठाकुर ने कहा था, "अमुक बाई जी का नाच हो चुका है, अब फिर इसका क्यों ?" (सब का हास्य)। केशव सेन की बातें लोग जितने मनोयोग से सुना करते थे छोकरों की बातें क्या उतने ही मनोयोग से सुनते थे ?

श्री कृष्ण जब बोलते तब pin-drop silence (निथर नीरव) होता। क्यों ? क्योंकि ये दक्ष हैं। बहु सत्कार्य किए हैं। सुभद्राहरण के पश्चात् यदुवंश की मीटिंग हुई। सात्यकि, बलराम आदि ने उत्तेजना-पूर्ण वक्तृताएं दीं। सभा में महा गड़बड़ हो गई। श्री कृष्ण ज्योंहि खड़े हुए त्योंहि सब ठण्डे। वे बोले, "अच्छा, आप लोग तो सत्पात्र खोज ही रहे थे।" यह बात बोलते ही बलराम आदि सोचने लगे, "हो गया, इन्होंने उन्हीं का पक्ष लिया है। अब और कुछ नहीं होगा।" फिर श्री कृष्ण और बोले, "रूप में, गुण में, विद्या-बुद्धि में, वंश-मर्यादा में, नामयश में, वीरत्व में ऐसा और कौन है ? फिर हरण करके विवाह भी शास्त्र में है।" उनकी बात सुनकर सब ठण्डे हो गए।

इसीलिए मठ की बात लोग अधिक सुनना चाहते हैं।

अब एक व्यक्ति ने स्वराज्य दल, वामपंथी दल, अस्पृश्यता-वर्जन, गोहत्या निवारण—ऐसे ही नाना विषय उत्थापन कर दिए। योगेन उसमें आह्लाद के साथ योगदान करने लगे।

श्री म—देखता हूं योगेन बाबू सब पॉलिटिकल खबरों में भी खूब up-to-date (आधुनिक) हैं। (सहास्य, भक्तों के प्रति) अमुक काम करूँ या नहीं किसी के यह जिज्ञासा करने पर ठाकुर बोलते, "हां कर सकते हो यदि इससे ईश्वर लाभ हो।" यही एक बात। अन्य कोई बात नहीं, अन्य चिन्ता नहीं। "कैसे ईश्वर लाभ हो," यही एक भावना। जिससे वह हो वही करना।

"कम कष्ट गया है? ठाकुर के रहते डाक्टर और औषध का खर्च चलता नहीं था। कोई तब पहचान नहीं सका था। राम को पहचान पाए थे मात्र बारह जन, ऋषि। ज्योंहि चले गए ठाकुर त्योंहि कितना ऐश्वर्य होने लगा। तीन तीन लाख रुपया भी मठ के लिए देते हैं अब। उनके रहते कोई नहीं देता था।"

श्री म—विदेशों में ठाकुर साधुओं को क्यों भेज रहे हैं? स्वामी जी ने उसका जवाब दिया था। कहा था, "मैं यदि इस देश में वक्तृता देता तो कोई नहीं सुनता। किन्तु ज्योंहि उस देश के समाचारपत्र वाले मेरी वक्तृता की बातों की आलोचना करने लगे, त्योंहि इस देश के सब ने मुझे मानना आरम्भ कर दिया।"

"इतने दिन भारत योरोप के आदर्श से दब गया था। योरोपियन जो करते, जो खाते पहनते वही अच्छा है, इस प्रकार के भाव से **hypnotised** (अभिभूत) हो गए थे लोग। जब देखा वे लोग ही स्वामी जी के बूट बाँध देते हैं, तब इस देश के लोग सोचने लगे—देखते हैं तब तो फिर हमारे मध्य भी ऐसे ऐसे लोग हैं। हम जिनकी पूजा करते हैं वे ही उनकी पूजा करते हैं।

"इसीलिए ठाकुर साधुओं को वैस्ट, पश्चिम में भेज रहे हैं। लोग अंग्रेजी आदर्श के अन्धे हैं। उस देश में कुछ काल रह आने पर इनकी बातें शीघ्र कान में लेंगे। इसीलिए भेज रहे हैं।"

श्री म (सब के प्रति)—जो ठाकुर का चिन्तन करते हैं, जिन्होंने

उनको आदर्श बनाया है वे क्या सामान्य लोग हैं ? वे सर्वोत्तम हैं। कितना बड़ा आदर्श ! भगवान मनुष्य होकर आए—जो अखण्ड सच्चिदानन्द वाक्य मन के अतीत हैं। कितने ही वर्षों के पश्चात् एक बार आते हैं। उनको आदर्श बनाना क्या सहज बात ! ईश्वर के निकट पाण्डित्य आदि क्या ? चैतन्यदेव को प्रकाशानन्द ने प्रथम वेदान्त पढ़ने का उपदेश दिया। चैतन्यदेव सबसे पीछे बैठे थे। बोले, "मुझे हीन अधिकारी जानकर गुरुदेव ने भक्ति लेकर रहने को कहा है।" कुछ दिन पश्चात् उनके ही पांवों में प्रकाशानन्द लोट पोट हो रहे हैं, उन्मादवत् हरिनाम में नृत्य करते हुए। अवतार को पहचाना नहीं जाता, वे ही न पहचनवा लें।

रात्रि दस।

कलकत्ता।
29 सितम्बर, 192. ई०।
12वां आश्विन, 1330 (बं०) साल, शनिवार।

नवम अध्याय

आदर्श गृही भक्त और आदर्श संन्यासी

(1)

बेलुड़ मठ से एक वृद्ध संन्यासी आए हैं। श्री म चार तल की छत पर उनके संग आनन्द से बातचीत कर रहे हैं।

अब संध्या पौने सात। आज 1 अक्तूबर, 1923 ई०, 14वां आश्विन 1330 (बं०) साल, सोमवार। नलिनी, योगेन, सुरेन और जगबन्धु बैठे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ये मठ में रहते हैं। मठ कैसा है? जैसे मरुभूमि में oasis (मरूद्यान)। मरुभूमि में रेत के ढेर धू धू करते हैं, कहीं भी कुछ नहीं। पथिक प्यास और भूख से मृतप्राय। झट से उसे देखकर वहां पर गया। आहा! कैसा सुन्दर जल और चारों ओर सब्ज वृक्षसमूह! और फिर उस पर मीठे फल। जाकर तृप्त हुआ, प्राण बचा। मठ भी गृहस्थ मरु के ज्वलन्त अग्निकुण्ड में "ओएसिस" (मरूद्यान) की न्याईं है। गृहस्थी की त्रिताप ज्वाला में जले भुने लोग मठ में जाते हैं, शांति के लिए। गृहस्थी लोगों की शांति के लिए ही तो भगवान ने मठ साधु इत्यादि की सृष्टि की है। मठ मानो मरुभूमि में ओएसिस।

श्री म अपने मन के भीतर उतरकर जाने क्या देख रहे हैं, पुनः बातें कर रहे हैं।

श्री म (सब के प्रति)—मेरी आयु तब सत्रह अठारह। एक "फ्रेन्ड" (बन्धु) के संग काशी गया। उसके दादा जी काशीवास करते थे। अस्सी के ऊपर आयु। एक विधवा कन्या रसोई आदि करती, सेवा करती। हमारे जाते ही कितना प्यार-यत्न—खूब अच्छा खिलाया पिलाया। फिर वृद्ध बोले, देख हरि तुझे कह देता हूं—

खबरदार, मेरे पास जैसे घर से चिट्ठी-पत्री न आवे। सब छोड़कर यहां पर आया हूं, उनका नाम करने। अब उनका नाम करूं कि घर की चिन्ता करूं? आज चिट्ठी अमुक का असुख। कल चिट्ठी इस विषय में आपका मत क्या है? इत्यादि। कह देना कि और चिट्ठी न आए। मैं तो सुनकर काँपने लग गया। सोचने लगा, व्यक्ति कैसा निष्ठुर है। किन्तु पीछे with added experience growing a little wiser (अभिज्ञता के बढ़ने के साथ-साथ अधिकतर बुद्धिमान होने पर) देखने लगा कि कैसी असली बात वृद्ध ने कही थी। ये हैं महापुरुष व्यक्ति।

श्री म (संन्यासी के प्रति)—ठाकुर की आयु तब पच्चीस छब्बीस। दक्षिणेश्वर में रहते, अनेक साधु आते जाते तोतापुरी के आने से पूर्व। उनके ही मुख से सुनी बात है। पंचवटी में तब एक साधु रहते थे, गोपाल की सेवा किया करते। ठाकुर उनके पास जाते, उनका उपदेश सुनते। और सेवा करते—यही जल-वल ला दिया करते। तीन दिन सेवा करके फिर गए नहीं। साधु बोले, क्यों, तुम आते क्यों नहीं? ठाकुर ने उत्तर दिया, यही तो आया था तीन दिन के लिए—तीन दिन तो हो गए हैं। और क्यों करूं? तीन दिन माने गुरुसेवा तीन दिन कर ली। फिर गए नहीं अर्थात् वे बड़े कट्टर हैं। जो भाव लिए हैं, उसके बाहर नहीं जाएंगे। उनकी खण्ड साधना है—fragmentary worship, उनकी अखण्ड साधना नहीं। उसके लिए ठाकुर केवल तीन दिन गए थे। अल्लाह मंत्र भी तीन दिन जप किया था। उन्होंने सब पथों की खबर ली है।

राखाल महाराज का एक साधु था—'नारिकेल डांगा' में घर। उनके लड़के सब एम०ए०—शैमे पास थे। ये संन्यास लेकर सेवाश्रम में काशी में थे। घर से रुपया जाता। वे कुकर में पकाकर खाते। रुपया जो जाता वह अन्य कार्य में व्यय नहीं होता। केवल आहार पर जितना लगता उतना ही लेते। फिर वहां पर ही देह गई। ऐसे कितने ही महत् लोग हैं।

हमारे मुहल्ले में विधु बाबू (वसु) थे। उनके लड़के भी खूब मोटा वेतन पाते। कोई विलायत चला गया था—एम०ए० पास।

यह सब छोड़ काशी चले गए। पौत्री के विवाह पर घर आने के लिए लिखा गया। उन्होंने उत्तर दिया, आकर क्या होगा ? मैं आशीर्वाद करता हूं, तुम सब आनन्द से रहो। फिर आए नहीं। आकर फिर करते भी क्या ? उससे अच्छा है न आना। और वे लोग सब सुख से रहें—यही है असल आशीर्वाद। वह तो कर ही दिया है। आते तो शायद और भी असुविधा होती। ऐसे ऐसे महापुरुषों की बातें सुनते हैं।

संन्यासी—कहते हैं, काशी में मरने से शिवत्व प्राप्ति होती है ?

श्री म—ठाकुर ने बताया है, उन्होंने (काशी में) देखा था, शिव मुमुर्षुओं के कान में 'तारक-ब्रह्म' नाम सुना रहे हैं। जो ठीक-ठीक संन्यासी हैं, केवल पोशाक में नहीं, वे जहां पर भी देहत्याग करेंगे, भगवान दर्शन देंगे।

संन्यास क्या सहज बात ? पहले नियम था, निरुद्देश होकर रहना होगा बारह वर्ष। ठाकुर के पास एक जन जाते थे, पीछे संन्यास भी हुआ। हरिद्वार की ओर दो बरस घूम फिर कर कलकत्ता आ गए। बेलुड़ मठ में थे। कभी-कभी एक एक दिन के लिए घर जाते। हमें तब ही भय हुआ था। ओ मां, अन्त में गेरुआ त्याग करके सफेद धोती पहन ली। पहले थे दो लड़के फिर आठ हो गए। (सब का उच्च हास्य)। (सब के प्रति) यह हंसने की बात नहीं। वे स्वयं तो खूब भले मनुष्य थे। इस पर क्या हंसना चाहिए ? ठाकुर ने लोक शिक्षा के लिए ऐसा करवाया। संन्यास क्या सहज बात ? मन की सब वासनाओं के जाने पर संन्यास होता है।

आलमबाजार मठ से दो जनों ने संन्यास लिया। बहुत घूम घूम कर एक जन वन देखकर भय पा गया। प्राणों की माया—भें-भें करके रो दिया और संगी से कहने लगा, मेरे तो बाप मां हैं। जनमानव शून्य वन में से था पथ। उसके ऊपर थका हुआ, चल भी नहीं सकता। अन्त में काशी गया। वहां से घर लौट आया। अनेक पुत्र कन्या हुए। ऑफिस में कर्म भी हुआ।

ठाकुर ने कहा था, वासना, जैसे बर्तन में घी लुका रहता है। एक जन का घी का भाण्डा था। घी समाप्त हो गया। उसके

किसी मित्र को थोड़ा घी चाहिए था। उसने घी माँगा। दूसरे ने कहा, नहीं है। पहले ने कहा, भाण्डा धूप में रख दो। झट कल-कल करके एक पाव घी बाहर आ गया। ऐसे ही है वासना, सूखकर छिपी रहती है। धूप लगने पर अर्थात् विषय के संग संयोग होने पर फिर बाहर आ जाती है। फिर भी तपस्या कर लेने से ज्ञानाग्नि उत्पन्न हो जाती है, उसमें सब भस्म हो जाता है।

(2)

अब तक श्री म ने संन्यास की कठोर दिशा का प्रदर्शन किया था। श्रोतृमण्डली के किसी किसी में संन्यास की कामना है। उनकी पीछे आदर्श में अश्रद्धा न हो जाए, इसीलिए वर्तमान समयोपयोगी संन्यास का सहज सरल चित्र भी अंकित कर रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—पहले के संन्यास के बड़े बड़े नियम थे, उसमें तो चाहे भय था। आहार, वासस्थान की चिन्ता थी। अब का संन्यास फिर क्या है—जैसे बोर्डिंग हाउस में रहते हैं कि ना लोग, वैसे रहना। स्कूल कॉलेज के बोर्डिंग में रहने की भांति। और फिर दो पैसे खर्च करने पर घर की खबर भी मिल जाती है। और विवाह न करे, यही तो। फिर ऐसे तो असंख्य लोग हैं जो ब्याह नहीं करते। यह फिर क्या बड़ी बात! उनकी संख्या नितान्त कम नहीं—as plenty as black berries—काले जामुनों की भांति प्रचुर है। अथवा जैसे 'fro n the blue bed to the brown'.—इस कमरे से उस कमरे में जाना। 'विकार ऑफ वेकफील्ड' में है। कितने मठ हैं उनमें से एक में रहो, खाने पहनने की चिन्ता नहीं।

मोहन—पूर्व बंग के एक शिक्षित साधु मठ में संन्यास के पश्चात् कलकत्ता में एक बन्धु के घर में निमंत्रित होकर गए थे। थाल में कितने ही प्रकार का भोजन परोसा गया, प्रायः कुछ भी खाया नहीं। मात्र दो एक फल उठा लिए।

श्री म—आहा, कैसे serious (व्याकुल) संन्यासी! इसीलिए साधुसंग का प्रयोजन है। यही देखकर जो शिक्षा हुई, लाख लैक्चरों

से भी वह नहीं होगी। इसी घटना को सोचते सोचते अन्य लोगों का भी ऐसा ही होगा।

मोहन—मठ में और एक साधु हैं। वे भी पूर्व बंग के हैं। उनके आत्मियों की प्रभूत सम्पत्ति है, किन्तु किसी प्रकार भी अटका नहीं सके।

श्री म—पूर्व बंग आजकल खूब। मठ के साधु प्रायः ही उस देश के हैं। कितने serious (व्याकुल) साधु हैं। पश्चिम बंग वालों को कुछ भय है।

भारतवर्ष पृथिवी के मध्य श्रेष्ठ है, यह बात आजकल अनेक ही स्वीकार करते हैं। और फिर भारत के लोग बंगाल का श्रेष्ठत्व स्वीकार करते हैं। इसीलिए बंगाल देश का पृथिवी में श्रेष्ठ स्थान है। ऐसा न होता तो तीन जन अवतार यहां पर आते—बुद्ध, चैतन्य और श्री रामकृष्ण ?

श्री म (भक्तों के प्रति)—घर के निकट होने से ही सारी गड़बड़ होती है। शरीर अस्वस्थ हुआ, चाहे दांत ही जरा कन कन करने लगा, झट मन में आता है चलो कुछ दिन जाकर रह आएं। तनिक ठीक होते ही चला आऊँगा। एक बार जाने से ही सर्वनाश। यही ये (संन्यासी) ही जैसे कहते हैं, एक बार जाने की इच्छा हुई थी।

संन्यासी (सहास्य)—जी हां। अमाशय से भोगते भोगते एक बार हुई थी।

श्री म (संन्यासी के प्रति)—कठोपनिषद् की कथा तो सुनी है ?

संन्यासी (सिर हिलाकर बोले)—जी, सुनी है।

श्री म—कहते हैं, वहां पर नचिकेता की कथा है। तीन दिन का उपवासी नचिकेता। प्रण किया, ब्रह्मज्ञान लाभ नहीं हुआ तो यह देह नहीं रखूंगा—ऐसी ही दृढ़ प्रतिज्ञा। किशोर लड़का, बारह बरस आयु। यम ने कहा, तुम अतिथि, ब्रह्मचारी, भूखे रहोगे, खाओ। नचिकेता ने जवाब दिया, यह शरीर तो रहेगा नहीं, खाकर क्या होगा ? ब्रह्मज्ञान चाहिए। यम हार मानकर बोले, तुम यथार्थ पात्र हो। प्रथम प्रेय वस्तुओं का लोभ दिखाया, कामिनी-कांचन

का लोभ—गाड़ी, घोड़ा, राज्य, सुन्दरी स्त्री, पुत्र आदि का। किन्तु उसे किसी प्रकार भी गिरा नहीं सके। अन्त में यम बोले, बेटा तुमने जो किया है, वही ठीक है। किसी प्रकार भी प्रेय नहीं लिया, श्रेय अर्थात् भगवान को मांगा। ब्रह्मज्ञान लाभ हुआ।

महामाया की ऐसी माया। एक बार नीचे जाना शुरु करने पर बिल्कुल ही नीचे गिर जाने तक पता भी लगनें नहीं देती कि कहां आ गया है। ठाकुर कहते जैसे कलमबाड़ा पथ अर्थात् sloping (ढालू)। किले में नीचे उतरते समय पता नहीं लगता। बहुत नीचे उतर जानें पर तब तीन तल का घर दिखाई देता है। तब समझ पाता है, कितना नीचे उतर गया है।

दुर्गापद मित्र (हीलिंग बाम) श्री पुरी दर्शन करनें गए हैं। इन्होंनें भुवनेश्वर मठ से पत्र लिखा है। उसका पाठ हुआ। अब पुरी भुवनेश्वर* गया आदि तीर्थों की कथायें हो रही हैं। फिर ठाकुर के नाम का प्रसंग उठा।

जगबन्धु (श्री म के प्रति)—ठाकुर का नाम रामकृष्ण कैसे हुआ ?

श्री म—घर का ही दिया हुआ नाम हमें तो प्रतीत होता है। घर के सब का ही नाम प्राय: 'राम' है—रामकुमार, रामेश्वर, रामकृष्ण। उनके लड़के रामलाल, शिवराम। हलधारी ठाकुर का चचेरा भाई। बड़े थे तभी दादा कहकर बुलाते थे। रानी रासमणि ने काली बाड़ी की रजिस्ट्री की दलील में रामकृष्ण नाम उल्लेख किया है। तोतापुरी तब तक आए नहीं थे। बंगाल में एक जने के कई कई नाम भी रहते हैं।

ठाकुर की दो बहनें थीं। एक का नाम कात्यायनी और एक का नाम सर्वमंगला था। सर्वमंगला को बहुत प्यार करते थे ठाकुर। ये ही सब भाई बहनों में छोटी थीं। इनका एलोमेलो (सरल) स्वभाव था माता की भांति। (सहास्य) ठाकुर ने बताया था, कात्यायनी के पति का स्वभाव अच्छा नहीं था। घूमते फिरते रहते थे। एक बार जमाई कामारपुकुर में आए। ठाकुर की मां अति सरल थीं। देखते ही बोलीं, क्यों बेटा, पंख टूट गया है क्या ? उड़

*श्री म दर्शन 14वां भाग द्रष्टव्य।

नहीं सकते ना ? रुपया पैसा नहीं, आमोद-प्रमोद नहीं होता। कात्यायनी ने सुनकर भाई की बहू को बताया, देखो तो मां की अकल। अभी तो आए हैं, और ऐसी बात सुना रही हैं। शायद इसी क्षण चले जायें। हंसते हंसते ठाकुर कभी कभी ऐसी बातें किया करते थे।

काशीपुर बाग में ठाकुर को इतना असुख था। तब भी रामलाल दादा से कहते हैं, अरे, रामलाल, उनकी खबर ले (बहनों के बाल बच्चों की)। नहीं तो वे कहेंगे, हमारे मामा के घर में कोई नहीं है। पूजा के समय एक एक धोती दे।

इतना असुख, तब भी जिज्ञासा करते हैं, "उस बेर के पेड़ पर बेर तो हुए हैं ?" उन्होंने उस घर को क्यों रखा ? यह क्या फिर माया का घर है ? वहां का एक भी धूलिकण सिर पर पड़ जाए तो उद्धार हो जाएगा, इसीलिए यह घर रखा है। और फिर रघुवीर की सेवा भी है।

ठाकुर को हृदय मुखर्जी की मां ने पहचान लिया था। ये बड़ी बहन थी—फुफ़ेरी। ठाकुर अपनीं छाती दिखाकर बतलाते, इसके भीतर क्या है, दीदी जानती थी। हृदय की मां ने पाओं पर फूल चढ़ाकर पूजा की, बड़ी बहन थी तब भी। उस समय ही ठाकुर ने अपनी छाती पर हाथ लगाकर दिखाकर कहा था, देखो, इसके भीतर जो हैं वे कहते हैं, तुम काशी में जाकर देहत्याग करोगी। वैसा ही हुआ। काशी ऐसा स्थान है। (संन्यासी के प्रति) देख लिया, काशी में देहत्याग की बात ठाकुर ने कही है। ऐसी महिमा काशी की।

अब रात्रि प्राय: नौ। डाक्टर कार्तिक बक्शी आए हैं। वे आज मठ और दक्षिणेश्वर गए थे। उन्हीं सब तीर्थों की बातें हो रही हैं।

श्री म (डाक्टर के प्रति)—कालीबाड़ी में पूर्ववत् रौशनचौकी और कीर्तन हो तो बड़ा अच्छा हो। किरण बाबू ने ले लिया है तो मानो हमारा ही हुआ है। आहा, सब के होठों पर वही बात है। भक्त लोग खूब आनन्द मना रहे हैं। हमारी भी इच्छा है, उसी रौशनचौकी को देखकर एक बार बाहर (एकान्तवास को) जायें। किन्तु उसे देखकर। ठाकुर किरण बाबू से कितना कार्य करवा रहे

हैं। उनकी कितनी तपस्या थी, तभी तो कालीबाड़ी को मैनेज (प्रबन्ध) करने का भार पाया है। हम प्रार्थना करते हैं वे बहु काल तक स्वस्थ शरीर से मां की सेवा करें। पूर्ववत् झाड़फानूस हो तो अच्छा। ठहरो ना, देखोगे वे क्या क्या करते हैं। किरण बाबू हैं कवि, फिर भक्त भी। सब कुछ बहुत सुन्दर सजायेंगे। भक्त न हो तो क्या होता है? इतने दिन जो लोग थे उनका क्या दायित्व था? अपना काम हो गया तो बस।

योगेन—हां जी, अब मैं अपने रहने के लिए वहां एक स्थान कर सकूं तो बस।

श्री म—ना, ना, अब विरक्त न करें। निश्चिन्त होकर एक बार किरण बाबू बैठें। फिर सब होगा क्रमशः। किरण बाबू का साधुसंग कितना हुआ है। उनका अपना घर तो मानो साधुओं का ही स्थान है। सुधीर महाराज, कपिल महाराज आदि प्रायः ही वहां पर रहते हैं। और फिर खूब गम्भीर। हमें लग रहा है हमारा ही हो गया है, किरण बाबू को मैनेजर ले लेने पर।

डाक्टर बक्शी—आप की यह बात महापुरुष महाराज को बताने पर वे बोले, यह नहीं तो क्या! हमारा ही हो गया है। मां की सेवा में कितना कष्ट होता! मां से इतने दिन कहा करता, मां तुम यहां बेलुड़ में खाकर दक्षिणेश्वर में जाकर सोओ।

श्री म (भक्तों के प्रति)—आप लोग अब जा सकते हैं दक्षिणेश्वर में, जैसे मठ में जाते हैं daily (रोज)। किन्तु रोशनचौकी पहले चाहिए।

डाक्टर—सप्ताह में एक दिन होगा।

श्री म—भक्तों के जाने से जाग्रत होती हैं। भक्त में उनका अधिक प्रकाश! ठाकुर बोलते, "कूड़ो फेलो, माछ आसबे।" (चारा फेंको, मछली आएगी।) गंभीर जल में से रक्तवर्ण चक्षु बड़ी रोहू मछली अर्थात् भगवान् दर्शन होगा। भक्त के आकर्षण से भगवान् जाग्रत होते हैं।

इसी समय अमृत और विनय आ गए।

रामचन्द्र दत्त लिखित श्री परमहंस देव का जीवन वृत्तान्त आज भी पाठ हो रहा है। 'टाका माटि, माटि टाका*' 'कामिनी काञ्चन ई-संसार' ठाकुर के ऐसे सब महावाक्यों की व्याख्या चल रही है। अब रात्रि दस।

(3)

बेलेघाटा के विशिष्ट भक्त शुकलाल और मनोरंजन कई दिनों से श्री म के पास नहीं आए। ये प्रायः नित्य ही आते रहते हैं। श्री म जभी उनके संवाद के लिए व्याकुल हो गए हैं। अपराह्ण में अन्तेवासी को उनका संवाद लेने के लिए भेज दिया था। वे उन्हें लेकर गाड़ी करके आए हैं। अब सन्ध्या साढ़े सात।

आज 2 अक्तूबर, 1923 ई०, 15वां आश्विन, 1330 (बं०) साल, मंगलवार।

श्री म दोतल के घर में बैठे हैं। निकट योगेन और अन्य एक जन हैं। बेलेघाटा के भक्तों को देखते ही बोल रहे हैं।

श्री म (सब के प्रति)—कथामृत के प्रूफ देखते देखते एक नूतन लाइन मिल गई आज। इतने दिन दबी पड़ी थी। Question (प्रश्न) हुआ—किस कर्म से उन्हें पाया जाता है? ठाकुर बोले, जप ध्यान इत्यादि अनेक कर्म हैं। निष्काम होकर करने पर उन्हें पाया जाता है। किन्तु और भी एक है, गुरु ने जो कर्म करने के लिए कहा है, उसी कर्म से उनकी प्राप्ति होती है।

यह बात पढ़ते ही यदुपति बाबू की बात स्मरण हो आई। भवानीपुर में घर है। बहुत सम्पत्ति। नाना विषयों को सोचते सोचते अन्त में पागल हो गए। अनेक कर्मों में जड़ित हो गए थे। भाइयों ने देखरेख के लिए एक सेवक रख दिया था। अपनी बुद्धि से करने जाओ तो ऐसा ही होता है।

जभी गुरुवाक्य सुनना चाहिए। यही जो भवसमुद्र, इस से पार होने के लिए क्या अपनी शक्ति है! उसके लिए हा गुरु (अवतार-

*रुपया मिट्टी, मिट्टी रुपया।

ठाकुर)। गुरु ने पथ बोल दिया है। निज बुद्धि काफी नहीं। समझ गए वीरेन बाबू ?

श्री म ने सम्बोधन तो किया वीरेन को, किन्तु लक्ष्य शुकलाल भी हैं। वीरेन कलकत्ता हाईकोर्ट के एटोर्नी हैं, बालकपन से श्री म के विशेष आज्ञाकारी हैं। आयु तीस के ऊपर। और शुकलाल धनवान् व्यक्ति, अनेक कारोबार, जमींदार। आयु पचास के ऊपर, स्थूलकाय।

श्री म (भक्तों के प्रति)—एक जन दक्षिणेश्वर में ठाकुर के पास गए। पूछा, महाशय उपाय क्या ? Ready answer (तैयार जवाब) दिया, गुरुवाक्य पर विश्वास। कहते, 'ओ गुलो एतो भेबो ना।' (जीविकादि की इनकी चिन्ता न करो।) 'For after all these things do the Gentiles seek.' But seek ye first the kingdom of God.' (यह तो साधारण जन करते हैं, परन्तु आप तो प्रथम ईश्वर प्राप्ति का संधान करो।)

ईशान मुखर्जी से कहा था, वे सब छोड़ो 'शालिशी-टालिशी' (पंचायत-वंचायत)। ईशान मुखर्जी एक दिन बोले, सब ही तो इनकी (ठाकुर की) इच्छा से होता है। ठाकुर तत्क्षण वैसे ही जोर से बोले, 'इनकी नहीं, इनकी मां की'।

अमृत (दृढ़ता से)—जी, कुछ भी कहिए, सब ही गुरु की इच्छा से होता है।

श्री म (अधिकतर दृढ़भाव में) यही तो। किन्तु फिर भी अपनी बुद्धि से करने लगो तो सब मुश्किलें आ पड़ती हैं।

मन-मुख एक करके, सब ही गुरु की इच्छा से होता है - यह बात बोलना बहुत दूर की बात है। मन में है अपनी इच्छा, और मुख से बोलना गुरु की इच्छा—इससे नहीं होता। जब तक मन-मुख एक नहीं होता—तब तक गुरुवाक्य पर विश्वास करके उसका पालन करने की चेष्टा करना उचित और प्रार्थना, "प्रभो, मुझे गुरुवाक्य पालन करने की शक्ति दो।'

प्रभु जगद्बन्धु के भक्तगण अमहर्स्ट्र स्ट्रीट से नगर संकीर्तन करते हुए दक्षिण की ओर जा रहे हैं। एक भक्त ने यह देखकर श्री म से

आकर कहा। श्री म सड़क वाले दो तल के बरामदे से खड़े दर्शन कर रहे हैं। भक्तगण करतालों के साथ गा रहे हैं—हरि बोल, हरि बोल, जय जय जगबन्धु बोल।

श्री म (भक्तों के प्रति)—करेंगे नहीं, वे ही तो सब गुरुओं के रूप में प्रकाशित हुए हैं। होंगे नहीं (नाना सम्प्रदाय)! तुम्हें अच्छा नहीं लगता तो क्या उन्हें भी अच्छा नहीं लगेगा? सब ही एक जन को पुकारते हैं। अपने मत के संग न मिलने से ही क्या सब मिथ्या हो जायेंगे? सब घरों में यही कहते हैं कि मेरी मां का जैसा स्नेह है वैसा और कहीं नहीं। घर घर में सभी यही बात बोलते हैं। अपना अपना (आदर्श) सबके लिए अच्छा है। इसलिए दूसरा खराब है, ऐसा नहीं। फिर नाक सिकोड़ने से चलेगा नहीं। वे प्रभु जगद्बन्धु के पास बैठे थे, इतना स्नेह पाया था। बोलेंगे नहीं—जय जगद्बन्धु। उनका यह बोलना क्या फिर भूल है? सब ही सत्य। जिसका जितना आधार होता है उतना ही वह पाता है। स्क्वेयर (चोकोर) पात्र में जल का आकार स्क्वेयर होता है और फिर रोमबस[1] रैक्टैंगुलर[2] जैसा आधार, वैसा आकार। उतना ही समाएगा। इसमें किसी का दोष नहीं।

जिन्होंने श्री म को बुलाकर यह दृश्य दिखाया था मानो उन्हें ही लक्ष्य करके श्री म ये बातें बोल रहे हैं। उनके भीतर क्या कोई विद्वेषभाव प्रच्छन्न था? भक्त क्या श्री म का महामूल्य उपदेश सोच रहे हैं—सब ही एक जन को पुकारते हैं।

(4)

अगले दिन श्री म उसी घर में बैठे हैं। पास ही योगेन, मणि आदि भक्तगण बैठे हैं। संध्या साढ़े सात। वेदान्त सोसाइटी से जगबन्धु लौट आए हैं। अल्पक्षण मध्य स्वामी सद्भावानन्द, छोटे नलिनी, विरिंची कविराज, बड़े जितेन, मनोरंजन, विनय और डाक्टर आकर उपस्थित हो गए।

---

[1]रोमबस Rhombus=विषमकोण।
[2]रैक्टैंगुलर=समकोण, आयताकार।

सद्भावानन्द जी के संग विद्यापीठ की बातें हो रही हैं। देओघर की नूतन जमीन के दानपत्र की रजिस्ट्री में कुछ प्रतिबंधक आ गया है। ये परेशान और क्लान्त हो गए हैं। हताश भाव से श्री म के साथ ये ही सब बातें कर रहे हैं। श्री म उनको नाना भावों से समझाकर उद्दीप्त कर रहे हैं।

श्री म (स्वामी सद्भावानन्द के प्रति)—ये सब फिर और अधिक क्या ? इसका ही नाम कर्मकाण्ड है। बाधाविघ्नों के लिए पहले से ही तैयार रहना चाहिए। Different (विभिन्न) प्रकृति के साथ deal (व्यवहार) करना पड़ता है कि ना। परोपकार, सेवा ये सब क्या सुख की बातें हैं ? ऐसे प्रतिबन्धक भले के लिए ही होते हैं। इससे अपना मान अभिमान चूर्ण होता है। तब यथार्थ निष्काम भाव जाग्रत होता है। काम करो तो ये सब बाधा विघ्न हैं और बिना किए रहा भी नहीं जाता। इसी अवस्था में ही ठीक सेवा का भाव आता है। अनासक्त होकर तब करता है। जभी गीता में भगवान ने कहा है—'आरुरुक्षोमुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते।'* इसी प्रकार कार्य करते करते चित्त शुद्ध होने पर उनमें मन जाता है तब 'शमः कारणम् उच्यते।' तब भी काज करता है। किन्तु उससे मन उतना विचलित नहीं होता। पहले से ही सब बाधा विघ्नों के लिए तैयार रहता है। उनका नाम लेकर, उनमें मन को युक्त रखकर प्राणपण से किए चला जाता है। लाभ हो या नुकसान, उस ओर इतना ख्याल नहीं रहता। ख्याल रहता है उनके ऊपर।

तुम उनके पास बिल्कुल भी गए नहीं, बातें की नहीं।......... उनके निकट बैठो, बातें करो, पान तम्बाकू खर्च करो (हास्य)। उसमें दोष नहीं, साधु साधु से कहे उसमें दोष नहीं। स्वार्थ के लिए करने से दोष होता है। यहां पर तो वैसी कला नहीं है। विद्यासागर महाशय कहते, भाई भाई झगड़ा करते हैं, कोई भाई किसी के साथ भी बोलता नहीं, यह क्या ? उन्हें समझाकर बताओ। उन्हें शायद idea (धारणा) ही नहीं है कि कितने कष्ट से यह जमीन संग्रह की गई है। उन्हें कहने में दोष नहीं, हिन्चा साग सागों में नहीं।

*गीता 6 : 3

शरीर क्लांत हो गया है परिश्रम कर करके। कुछ दिन विश्राम करो। तत्पश्चात् चाहे फिर दुबारा चेष्टा करो। जो जमीन दे रहे हैं, उनसे कह दो कुछ दिन बाद रजिस्ट्री होगी। अब कुछ असुविधा है।

कार्य करना चाहिए कर्त्ता की भांति, निज को अकर्त्ता मानकर। शरीर की पोशाक में रजोगुण का प्रयोजन है। बहुत से सत्त्व गुण समझते नहीं। रजोगुण का आवरण तभी आवश्यक है। इलाहाबाद में एक खूब भले वकील थे—खूब स्कालर (पण्डित)। किन्तु self-assertiveness (प्रभुत्व परायणता) न होने के कारण, हाईकोर्ट के जज हो नहीं सके। Individuality, (व्यक्तित्व) थोड़ा सा होना ही अच्छा है। कितने काण्ड करके यह काज (विद्यापीठ) किया है। अब इतनी सी बात से मन खराब न करो। चेष्टा करो—जमीन रजिस्ट्री हो जाएगी। यह तो घर की ही बात है।

श्री म और भक्तगण गा रहे हैं—"गुरुपद भरोसा करो" इत्यादि। रात्रि दस।

(5)

अब संध्या सात। दो तल की सीढ़ियों के दाईं ओर के कमरे में श्री म पूर्वास्य बैठे हैं, चटाई पर। पास अन्तेवासी। श्री म अकेले आगमनी गा रहे हैं, पीछे अन्तेवासी ने भी योगदान किया।

गान—ए बार आमार उमा एले आर उमा पाठाबो ना।
बोले बोलुक लोके मन्द कारो कथा सुनबो ना।।
यदि आसेन मृत्युञ्जय उमा नेबार कथा कय।
माये झिये करबो झगड़ा जामाइ बोले मानबो ना।।*

गान—जीवन-वल्लभ तुमि दीन शरण हे।
प्राणेर प्राण तुमि ओ प्राणरमण हे।।
सदानन्द शिव तुमि शंकर शोभन।
सुन्दर योगीजन चित्त विमोहन।।

---

*भावार्थ—अब की बार उमा के आने पर फिर उमा को भेजूंगी नहीं। लोग बुरा कहते हैं तो कहें, किसी की बात नहीं सुनूंगी। यदि मृत्युञ्जय (शिव) आकर उमा को ले जाने की बात कहेंगे तो मां-बेटी झगड़ा करेंगी। जमाई कहेगा तो उसको जमाई का मान नहीं दूंगी।

अब मणि, योगेन, वीरेन और बऊबाजार के दो तीन भक्तों ने गृह में प्रवेश किया। अल्पक्षण के बीच अमृत, बड़े जितेन और रमणी आ गए। उसके पश्चात् ही डाक्टर और विनय आकर उपस्थित हो गए। श्री म ने ईश्वरीय कथा आरम्भ की।

श्री म (युवक के प्रति)—हम ठाकुर की एक गुह्य बात सोच रहे थे। एक दिन अनेक भक्त बैठे थे। हठात् ठाकुर बोले, 'चौदह सेर वीर्य चाहे निकल जाना भला है, तब भी स्त्रीसंग न हो, बच्चा न हो।'

और फिर कहा था : उस देश (कामारपुकुर) में लाहाओं के घर में गुड़ की मिट्टी का घड़ा जमीदारी से आता है। सारा बरस चलता है, उसी गुड़ से। घड़े के नीचे छेद कर देते हैं, उसके नीचे धरती पर एक बर्तन रख देते हैं। सारा रस उसमें गिर जाता है। बाकी का घड़े में मिश्री बन जाता है। वैसे ही बहता है तो बह जाए वीर्य। उनकी ओर मन रहने से उससे कुछ हानि नहीं होती। जो रहेगा वह मिश्री होगा। और ऐसा अन्न के दोष से होता है। किन्तु स्वेच्छा से नहीं—सपने वपने में होता रहे। स्त्री-संग न हो।

यह अमूल्य उपदेश दो क्लास के भक्तों के लिए दिया था। अन्तरंग न हो तो ऐसी बातें नहीं बोलते थे। प्रथम, जिन्होंने विवाह किया ही नहीं। और द्वितीय, जिनकी दो एक सन्तानें हो गई हैं। उसके पश्चात् भाई-बहनवत् संयमी होकर रहें। ध्यान रहे, बहुतों को ही तो स्त्री-पुत्रों के संग रहना पड़ता है, उन्हें इसी प्रकार ब्रह्मचर्य पालन करने को कहते। कहते, भय नहीं। मां का नाम करो। मां के पादपद्मों में मन रहने से ही हुआ। और कुछ करना नहीं होगा। वे ही रक्षा करेंगे।

बाल बच्चे होने पर उनका प्रतिपालन और शिक्षा है। लड़की को ब्याह देने पर भी छुट्टी नहीं—ससुराल की सब खबर रखनी पड़ती है। स्नेह का ऐसा आकर्षण होता है। तब फिर भगवान में मन जाएगा कैसे? जो मन उन्हें देना होगा वही मन तो जाएगा सन्तान में। ऐसे फिर कैसे भगवान-दर्शन होगा? यह दुर्लभ मनुष्य जन्म में ही केवल होता है। ऐसी बातें जिस किसी से नहीं कहते थे। अपने अन्तरंगों से ही केवल कहते, जिन्हें जगदम्बा उनके पास ले,

आई थी। उन्हें ईश्वर-दर्शन करवाकर जगत् के कल्याण में लगाएंगे कि ना, तभी उनके लिए इतनी चिन्ता। वे सब लोग तो जगत् के कल्याण के लिए ही आए हैं।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—अनेक लोग ही डाक्टर के पास उपदेश लेने जाते हैं। वह हो सकता है कह दे स्त्रीसंग करो, ऐसा pollution (स्वप्नदोष) जब हो रहा है। अथवा विवाह करने को ही कह दे। (डाक्टर बक्शी के प्रति) क्या कहते हो, डाक्टर बाबू ?

डाक्टर—जी हां। हमारी मैडिकल साइन्स तो हुई ही है शरीर को लेकर। इससे ऊपर इनकी दृष्टि नहीं है। शरीर जिस प्रकार से ठीक रहे यही चिन्ता। आत्मा, ईश्वर, मुक्ति, परमानन्द-लाभ-इन सब बातों का विचार नहीं है।

श्री म—तब तो कैसे उनकी बात सब सुनेंगे ? जो केवल देहसुख को लेकर व्यस्त हैं वे सुनें। भक्त थोड़ी सी सुन सकते हैं। ज्यों ही ईश्वर के पथ में बाधा होगी, झट छोड़ देंगे। केवल डाक्टर या औषध ही नहीं, भक्तगण सब कुछ छोड़ देते हैं, जो भी ईश्वर प्राप्ति में प्रतिबन्धक हो। कारण, ईश्वर लाभ ही तो है highest objective (सबसे बड़ा उद्देश्य) जीवन का।

शरीर रहते ऐसा होता है। शरीर तो अपना नहीं—बाप, दादा के कितने संस्कार रहते हैं, उनका रक्त है, heredity (वंशदोष) है। और sight and scenes (बाहर के दृश्य) आदि भी हैं। अनेक समय स्त्री को देखकर उसके संग बातें करने की इच्छा होती है। किन्तु प्रतिबन्धकों के कारण बातें नहीं की जातीं। वही इच्छा ही, वे दृश्य ही फिर रात्रि में dream (स्वप्न) बनकर आयेंगे। किन्तु ईश्वर में मन रहने पर, उनकी शरण लेने से वे ऐसी मारात्मक विपदाओं से रक्षा करते हैं। भक्तों को किसी तरह भी उद्देश्य से नहीं टला सकते। आहा, ऐसे अमूल्य उपदेश और कहां पायेंगे ? कैसा सीधा कर गए हैं पथ। कौन कह सकता है ऐसी बातें, अवतार छोड़ ? जो जीव के जन्म से मुक्ति पर्यन्त समस्त पथ जानते हैं, केवल वे ही इस बन्धन से मुक्ति का पथ दिखा सकते हैं। ईश्वर छोड़ और कोई नहीं जानता इस समग्र पथ का संधान। वे युग युग में जीव को यह बात सुनाने आते हैं।

अवतार, यह क्या फिर हमने दस जनों ने बनाया है। नहीं, यह नहीं, हमारी बात का क्या मूल्य ? वे निज बोले हैं, मैं अवतार हूं। ठाकुर अन्तरंगों के निकट अपना परिचय देते थे कि ना। कहते, जो अखण्ड सच्चिदानन्द वाक्य मन के अतीत, वे ही इस शरीर में आए हैं। 'स्वयं चैव ब्रवीषि मे'[1] अर्जुन ने कहा था, तुम अपने मुख से कहते हो 'अवतार हूं' जभी विश्वास होता है।

जब वे स्वयं आते हैं तब इतना शास्त्र पढ़ने की आवश्यकता नहीं होती। उनकी वाणी ही शास्त्र है। और वे आकर शास्त्र की व्याख्या करते हैं। युगोपयोगी नूतन light (आलोक) देते हैं। सिद्धान्त तो सब चिरकाल से एक ही है, किन्तु पथ का सन्धान बोल देते हैं—नूतन सहज पथ की सृष्टि करते हैं, समय के उपयोगी बनाकर। कुछ लोग उनकी सहज सरल बातों पर विश्वास करके चलते हैं। उनकी मुक्ति हो जाती है। अपर जन भी इनको देखकर काफी आगे बढ़ जाते हैं।

अवतार की कृपा होने पर ही ईश्वर की कृपा होती है। वे ही गुरुरूप में आते हैं। इसी गुरु कृपा से ही मन उनकी ओर चला देते हैं। देखिए ना, ब्रह्मा विष्णु शिव देह धारण करें तो उन्हें भी इन सब में पड़ना पड़ता है। ठाकुर ने जभी तो कहा, 'पंचभूतेर फांदे ब्रह्म पड़े कांदे'। (पंचभूत के बन्धन, ब्रह्म करे क्रन्दन।)

जभी इच्छा करके इन विषयों पर झपट्टा नहीं मारना—इसमें हाथ नहीं देना। यही थोड़ी सी चेष्टा करना। आन्तरिक चेष्टा कर रहा है, देखकर उनकी कृपा होती है। इससे यदि कभी गिर भी जाए तो वे उठा देते हैं। भक्त के, शरणागत के दोष वे नहीं लेते—जैसे मां शिशुसन्तान के दोष नहीं देखती। भक्त के दोष दोष नहीं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—जीव की normal state (स्वाभाविक अवस्था) है समाधि। पंचभूत में पड़कर यह abnormal (असाधारण) हो गई है। बारोआरी[2] में देखा नहीं—मां दुर्गा के संग देवता लोग आए हुए हैं, सब ही समाधिमग्न हैं। चालचित्र[3]

---

[1]गीता 10 : 13
[2]बारोआरी दुर्गापूजा का सामूहिक उत्सव।
[3]चालचित्र=दुर्गा मां की प्रतिमा की पृष्ठभूमि का चित्रपट।

में बहुत सुन्दर दिखाते हैं। इसका अर्थ है, 'चेष्टा करके ऐसी समाधि लाभ करो।' यही तुम्हारा भी स्वरूप है। ऐसी चेष्टा, ऐसी तपस्या चाहिए। तपस्या द्वारा मन को उनमें समाहित करना, यही मनुष्य का है सर्वश्रेष्ठ कार्य।' तपस्या न करना ही आश्चर्य का विषय। तपस्या माने अपने घर लौट जाने की चेष्टा।

अब मठ की बातें हो रही हैं। ठाकुर कलकत्ता में जिन जिन स्थानों पर गए थे, वे सब ही महातीर्थ हैं—श्री म कह रहे हैं।

जगबन्धु—सुना है, विद्यासागर महाशय का बादुरबागान का मकान एक भले व्यक्ति के हाथ में आ गया है। जी, घर जैसा अब है, क्या ठाकुर के आगमन के समय भी वैसा था?

श्री म—सामान्य बदला है। ठाकुर ने जिस दरवाजे से प्रवेश किया था वह छोटा था। अब उसमें दीवार चिन दी गई है। बाहर आए थे पश्चिम के बड़े फाटक से। वह मकान एक national asset (जातीय अमूल्य सम्पद) है। कर्मियों के लिए कितना बड़ा उद्दीपन का स्थान है। कितना परोपकार हुआ वहां से। और फिर sacred (पवित्र), ठाकुर आए थे तभी तो। खूब भले व्यक्ति के हाथ में पड़ना ही अच्छा है।

श्री म वेदान्त सोसाइटी की गतकल की रिपोर्ट सुन रहे हैं। एक भक्त पढ़कर सुना रहे हैं। ये सब नोट लिखते हैं।

स्वामी अभेदानन्द जी बोले, Concentration (एकाग्रता शक्ति) प्राप्त करनी हो तो ब्रह्मचर्य आवश्यक है। ब्रह्मचर्य खूब help (सहायता) करता है। इसके बिना धारणा नहीं होती। छोटी आयु में विवाह करने से समस्त वीर्य निकल जाता है? पुत्र कन्या के रूप में। उससे concentration (एकाग्रता) नष्ट हो जाती है। मैंने देखा है, ब्रह्मचर्य हो तो मन में तेज रहता है। धारणा का अभ्यास करना हो तो इन दोनों का ही प्रयोजन है। मैं तो साधु हुआ ही हूं इसीलिए। मैंने देखा संसार में रहकर यह ठीक नहीं होता, बड़ा ही कठिन, जभी संसार त्याग कर दिया। जीवन में अनेक कष्ट गए हैं। किन्तु मन की शांति हमने ही पाई है। पैदल चल चल कर काशी गया हूं, कितने तीर्थ किए हैं, पैर रक्तारक्त—कभी भी तो अभ्यास नहीं था। और फिर मधुकरी से

जीविका निर्वाह करना। ऋषिकेश में कितना असुख गया प्राणान्तकर औषध और पथ्य कुछ भी नहीं। पड़ा हूं—'औषधं जाह्नवीतोयं वैद्यो नारायणो हरिः', बोलकर। बड़ा दुर्गम स्थान था तब। थोड़े से साधु ही वास करते थे, सब में ही तीव्र वैराग्य—शरीर जाता है तो जाय ईश्वर को चाहता हूं। मधुकरी में जो मिलता उससे ही निर्वाह करता जगन्नाथ, रामेश्वर, द्वारका, और फिर हिमालय केदारबदरी—इन सब तीर्थों को पैदल चलकर किया है। कभी कोई टिकट ले देता तो गाड़ी पर चढ़ जाता—जहां रेल है। एक बार चौरासी कोस व्रजमण्डल की परिक्रमा नंगे पांव की, बाबाजियों संग। देखा है सर्वावस्था में ही मन में शांति थी।

ब्रह्मचर्य बड़ा आवश्यक है। कलकत्ता में आजकल अनेक मत हो गये हैं। कोई कोई बोलता है, योग भोग दोनों ही करो। ब्रह्मचर्य आदि पालन करने की आवश्यकता नहीं। हम कहते हैं, इससे यदि हो तो अच्छा है, करते क्यों नहीं ? किन्तु इससे होता नहीं जो बाबा। मन स्थिर करना बड़ा ही कठिन। विशेषतः आजकल के दिनों में। लोगों का मन सर्वदा चंचल, जभी नाना संशय आ पड़ते हैं। एक भाव पकड़कर रख नहीं सकता। आज यह, कल वह, धारणाशक्ति नहीं। धारणा न रहे तो शांति किस प्रकार होगी ? धारणा बिना भगवानलाभ नहीं होती।

मनुष्य जीवन का उद्देश्य है ईश्वरलाभ करना। ईश्वर में मन जाने पर ही तो उनको प्राप्त करेगा। और फिर उनमें मन रखने के लिए संयम का प्रयोजन है। ब्रह्मचर्य प्रयोजन। अधिक वीर्य क्षय होने से मन स्वाभावतः ही चंचल हो जाता है। जभी concentration (एकाग्रता) नहीं होती।

उस देश में, वैस्ट में लोग आजकल concentration (एकाग्रता) में खूब आगे बढ़ गए हैं। नूतन नूतन discovery और invention (खोज आविष्कार) जो करते हैं, उनकी अद्भुत concentration (एकाग्रता) है। वे तो मानो एक एक जन ऋषि हैं।

इमरसन (Emerson) की लाइब्रेरी में गया था। देखा सब पुस्तकें हैं—गीता, उपनिषद्, विष्णु पुराण इत्यादि। सब ही

translation (अंग्रेजी में अनुवाद)। इमरसन का गीता का एक प्रिय (favourite) श्लोक है ब्रह्म के संबंध में—

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥*

कारलाइल के संग मिलने पर इसी श्लोक का अनुवाद बोले थे। कारलाइल समझ नहीं सके। अनेक important poems (बढ़िया बढ़िया कवितायें) हैं उनकी।

हमारे देश की इस समय बड़ी ही अधःपतन की अवस्था है। देश को उठाने के लिए ही इस सोसाइटी की प्रतिष्ठा हुई है। तुम सबको प्यार करोगे और परस्पर एक दूसरे को प्यार करोगे, ऐसी प्रतिज्ञा फिर करनी होगी। यहां के मेम्बरों को मन में रखना होगा एक परिवार के लोग हैं—जात-वात नहीं। सब ही एक बाप के बेटे। लोगों को ठगना, झूठ बोलना, डकैती ये सब छोड़ने होंगे। प्रत्येक का भिन्न मत रह सकता है। इसलिए क्या मेल नहीं रहेगा ?

परमहंसदेव कहते, "मत पथ"। यही देखो हम उनके direct disciples (साक्षात् शिष्य) सब हैं—शिवानन्द, सारदानन्द, मास्टर महाशय, मैं। विवेकानन्द, रामकृष्णानन्द, ब्रह्मानन्द, तुरीयानन्द, गिरीश बाबू ये सब गत हो चुके हैं। हमारा सब का मत भिन्न था। किन्तु ऐसा प्रेम, ऐसा प्यार परस्पर था कि दुनिया में कहीं भी खोजने पर नही मिलेगा। यह केवल मैंने ही देखा था। स्वामी जी ने अमेरीका जय की। मुझे बुलाकर ले गए। मेरी उस देश में जाने की इच्छा नहीं थी। किन्तु उनको प्यार करता था, उनकी बात टाल नहीं सका। अनिच्छा होते हुए भी जाना पड़ा। वहां मुझे बिठाकर देश (भारत) चले आए। पच्चीस बरस वहां उनकी बात पर कार्य किया। जभी उनका नाम आज भी वहां पर है। छाती का खून देकर रखा है, नहीं तो कुछ भी नहीं रहता। मत चाहे भिन्न हों किन्तु परस्पर का प्यार चाहिए। यह हमारा वैसा ही था।

और एक बात। गुरु और शिष्य के मध्य खूब sincere (सरल)

*गीता 2 : 20

भाव रहे तो काज होगा। स्वामी जी बहुत से बन्धु लेकर जाते ठाकुर के पास। ठाकुर उनके संग बात ही नहीं करते थे। वे अपमानित बोध करते। इसलिए स्वामी जी गुस्से हो जाते ठाकुर के ऊपर। ठाकुर बोलते, 'उनका इस जन्म में नहीं होगा, तो मैं क्या करूं ?'

हमारे मन में कितने भाव उठते, ठाकुर सब बोल दिया करते। किशोर लड़के थे हम सब। जभी पूछ लेते, "महाशय, आप कैसे जान गये हमारे मन की बात ?" ग्रामीण भाषा में जवाब देते, 'तेरी आंखें हैं काँच की तरह, उनमें से भीतर का सब देखता हूँ।' पूर्व जन्म तक की बातें मुझे बता दीं—मैं क्या था पूर्व जन्म में। और एक जन को उसके मां बाप कौन थे वह बात बता दी थी। उन जैसा क्या और कोई होगा, बोलो ? एक बार देखते ही बोल देते कौन क्या हैं। भीतर शक्ति हो तो पहचान लेते थे। इसीलिए हम लोगों को लिया था। इतने लोग जाते, सब का ही हुआ है क्या ? वे कहते, मलय पर्वत की हवा बहे तो सब पेड़ चन्दन हो जाते हैं। किन्तु केले का पेड़ नहीं होता। केशवसेन से कहा था, "तुम मनुष्य पहचानते नहीं, सब को ही शिष्य करते हो, और तभी इतनी दलादलि है।"

श्री म (भक्तों के प्रति)—कैसी सुन्दर बातें हैं। ठाकुर की बातों की ही व्याख्या। मैं बूढ़ा हो गया हूं, चल नहीं सकता। जभी ये हमें लिख के लाकर सुनाते हैं। सब नालियों से एक ही छत का जल गिर रहा है, सब ही ठाकुर की बातें। (भक्तों के प्रति)—आप लोग क्यों नहीं सुनने जाते, इतने निकट हैं ? जभी तो कहते हैं, आंखों के होते अन्धा और कानों के होते बहरा।

डाक्टर कार्तिक बक्शी आज भी दक्षिणेश्वर गए थे। वहां से सीधे यहां आए हैं। दक्षिणेश्वर की बातें हो रही हैं।

श्री म (डाक्टर के प्रति)—तो फिर आज किरण बाबू तीन चार घण्टे थे। सब देख रहे हैं धीरे धीरे। आप रौशन चौकी की बात कहना। हमारी खूब इच्छा है यह पहले हो और कीर्तन भी। आप लोगों की भी यही इच्छा है, और हम लोगों की यही प्रार्थना है। यह बात किरण बाबू से कहना।

रौशन चौकी की बातें होने लगीं। श्री म बोले, "कथामृत की काली बाड़ी का विवरण पाठ हो जाए।[1]" मणि पढ़ रहे हैं। सबके पीछे पढ़ा :—काली बाड़ी आनन्द निकेतन हुआ है। राधाकान्त, भवतारिणी, महादेवों की नित्य पूजा, भोगराग आदि और अतिथिसेवा। एक ओर भागीरथी का बहुदूर पर्यन्त पवित्र दर्शन। और फिर सौरभाकुल सुन्दर नानावर्णों रंजित कुसुमविशिष्ट मनोहर पुष्पोद्यान। उस पर फिर और एक जन चेतन पुरुष अहर्निश ईश्वर प्रेम में मतवाला हुआ रहता है। आनन्दमयी का नित्य उत्सव!

नहबत से रागरागिणी सर्वदा बजती हैं। एक बार प्रभात में बजती है मंगलआरती के समय। फिर प्रातः नौ बजे जब पूजा आरम्भ होती है। फिर दोपहर के समय जब भोग आरती के बाद ठाकुर ठाकुराणियां विश्राम करने जाती हैं। और फिर वेला चार के समय नहबत बजती रहती है—जब विश्राम के पश्चात् उठते हैं और मुख धोते हैं। उसके पश्चात् फिर संध्यारती के समय। अन्त में रात को नौ बजे जब शीतल[2] के पश्चात् देवताओं का शयन होता है, तब भी फिर नहबत बजती रहती है।

अब रात्रि पौने दस।

कलकत्ता।
4 अक्तूबर, 1923 ई०, बृहस्पतिवार।
17वां आश्विन, 1330 (बं०) साल।

1. श्री श्री रामकृष्ण कथामृत, प्रथम भाग द्रष्टव्य।
2. शीतल=देवता का संध्या समय का भोग।

दशम अध्याय

विदेही श्री म

(1)

मॉर्टन स्कूल। तीन तल के उत्तर की दिशा के कोने के कमरे में श्री म विश्राम कर रहे हैं। अब अपराह्ण सवा चार। आज 5 अक्तूबर, 1923 ई०, 18वां आश्विन 1330 (बं०) साल, शुक्रवार। बेलुड मठ से दो संन्यासी आए हैं—स्वामी ओंकारानन्द और स्वामी मुकुन्दानन्द। अन्तेवासी उन्हें श्री म के निकट ले गए। उन्होंने सादर अपनी चटाई पर बिठा लिया। श्री म आनन्द से स्वामी ओंकारानन्द की पीठ पर हाथ फेर रहे हैं और सस्नेह पूछ रहे हैं, "कैसे हो, शरीर अच्छा है, बा-बा।" ये मॉर्टन स्कूल के पुराने छात्र हैं।

एक साधु ने गृहस्थाश्रम त्याग करके कुछ अधिक आयु में संन्यास लिया है। अब शरीर खूब अस्वस्थ होने के कारण घर लौट जाने का संकल्प किया है। उनके संबंध में बातें हो रही हैं। क्रमशः राधाकान्त देव की बातें उठीं।

श्री म (संन्यासियों के प्रति)—राधाकान्त देव सब छोड़कर वृन्दावन गए, बैठे बैठे उन्हें पुकारेंगे। एक दिन बेटा जा हाजिर। बोला, इतना रुपया ऋण हो गया। झट एक चैक लिख दिया। किन्तु रोष से बोले, "यहां पर क्यों ? मैं आया हूं, उनका नाम करूंगा। और फिर यहां पर भी धावा करना। रास्ते में बेटे से वह चैक खो गया। दुबारा जाने का साहस नहीं हुआ, बाप के लाल चक्षु जो देखकर आया था।

लार्ड लॉरेन्स ने आगरे में दरबार किया। राधाकान्त बाबू को लिखकर भेजा, तुम्हारे आए बिना नहीं होगा। उन्होंने प्रथम तो आपत्ति की जाने में। अन्त में पण्डितों का मत लेकर जाना

स्थिर हुआ। क्षेत्र-संन्यास था, छोड़कर जा नहीं सकते थे। पण्डितों ने मत दिया, आगरा माने अग्रवन। वृन्दावन-मण्डल द्वादश वन लेकर गठित हुआ है, अग्रवन एक है। उन्होंने कहा जा सकते हो। सभा में प्रवेश करते ही सब खड़े हो गए—लाट समेत।

लाला बाबू थे और भी एक। उन्होंने बहुत छोटी उमर में देहत्याग किया था। तेइस चौबीस वर्ष, तब आयु थी। पिता से एक दिन नौकरों को एक एक बढ़िया धोती देने के लिए कहा था। बाप ने कहला भेजा, 'उससे कहो रोजगार करके दे।' यह बात सुनते ही झट घर छोड़ दिया और ईस्ट इण्डिया कम्पनी में नौकरी ले ली। बाप के मरने पर घर आए। इसी बीच एक लाख रुपया वार्षिक जिससे आय हो ऐसी जमीदारी स्वयं उपार्जन कर ली। थोड़े दिनों में ही सब कर लिया। वृन्दावन में रहते। वहां रहकर ही स्टेट मैनेज करते। स्त्री ने वहां पर रहने में आपत्ति की, वहां पर खटमल हैं। उसको भी जभी कलकत्ता भेज दिया। ये ही रानी कात्यायनी हैं। दक्षिणेश्वर में ठाकुर के कमरे में जो सफेद पत्थर की बुद्ध मूर्ति है, वह रानी कात्यायनी ने दी थी ठाकुर को।

हमारे संग का एक जन (ठाकुर का भक्त) संन्यास लेकर घर में आना जाना करता था। अन्त में वहां पर ही रह गया।

दूर रहना चाहिए। प्रथम तो स्नेह जानने ही नहीं देता अपना रूप। फिर उसी में बद्ध हो जाता है।

अब मठ और स्वामी जी की कथा हो रही है।

श्री म (संन्यासियों के प्रति)—स्वामी जी ने मठ क्यों किया? आहा, क्या-क्या जो कष्ट पाए हैं उन्होंने। सारा भारतवर्ष घूमकर साधुओं का कष्ट देखकर मठ बनाया। जिससे लड़के एक मुट्ठी खाकर निश्चिन्त होकर उनका चिन्तन कर सकें। जानते थे लड़के यह कष्ट नहीं सह सकेंगे। जभी मठ। अमेरिका में ही कुछ कम कष्ट हुआ? आहार नहीं, वासस्थान नहीं, वस्त्र नहीं, शीत सामने। कोई परिचित भी नहीं और फिर पॉकेट (जेब) खाली। सीतापति (स्वामी राघवानन्द) को कह दिया है कि स्वामी जी के समय के उनके फ्रेण्डस जो थे, उनमें से कौन कौन हैं, देखो और आलाप करो। वे

हमारे अति प्रिय हैं। लगातार watch (लक्ष्य) किया है कि ना उन्होंने। बोस्टन, न्यूयॉर्क, लॉसएन्जेल्ज़, सान्फ्रासिस्को, शिकागो आदि स्थानों पर वे थे। उन्होंने कितनी सेवा की है स्वामी जी की। तभी तो वे हमारे परम आत्मीय हैं।

यदि कोई कहे, स्वामी जी ने क्या किया है? एक बात में उसका उत्तर है, भारत की हिप्नोटिज्म (मोहनिद्रा) तोड़ गए हैं। यही है उनका प्रधान अवदान। फिर उन्होंने ही सर्वप्रथम अंग्रेजी के द्वारा वेदान्त का गूढ तत्त्व, भारत की सभ्यता का प्रचार किया। यही फर्स्ट टाइम। उनकी भाषा कैसी ओजस्विनी। प्रत्येक ही लाइन मानो बातें करती हैं, ऐसी जीवन्त। कैसे अधःपात में यह देश गिर गया था। लड़किएं तक बिगड़ गई थीं अंग्रेजों के आदर्श से। कम दुर्गति? स्वामी जी ने उसका क्या किया? अंग्रेज को देखकर हम भय से कांपते थे, स्वामी जी ने वह भय दूर किया। उन्हीं अंग्रेजों ने आकर फिर उनके पांव का जूता बांध दिया। स्वामी जी गंगा में स्नान करने जाते हैं, वे लोग आकर उनका शरीर अंगोछे से रगड़ देते हैं। और फिर अंग्रेज महिलाएं हुक्का सजा देतीं।

अमेरिका के थाउजेण्ड आइलैंड्स पार्क में कोई कोई उनके दर्शन करने गए थे। उन्होंने कहा था, 'We have come to you with the same regards with which we would have gone to Christ if he would be living today.' (क्राइस्ट यदि आज जीवित होते तो उनके पास जिस श्रद्धा से हम जाते उसी श्रद्धा से ही आपके पास आए हैं।) अर्थात् तुम ही हमारे क्राइस्ट हो—You are the Christ of us! वे तब फिर और आपत्ति नहीं कर सके। कैसी गंभीर श्रद्धा!

स्वामी जी ने स्वयं कहा है, ठाकुर मेरी गर्दन पकड़कर सब काज करवा ले रहे हैं। ठाकुर जो अवतार हैं इसका प्रमाण बाहर से कुछ देखना हो तो स्वामी जी का wonderful life अलौकिक जीवन है। और सब से बड़ा प्रमाण है ठाकुर की निज मुख की बात। वे निज बोले हैं, "मैं अवतार।"

एक समय भारत के लोग मन में सोचते थे, अंग्रेजों का सब ही अच्छा है। What Shakespeare says शेक्सपीयर ने क्या कहा है? मिल, जेम्स—इनकी खूब दुहाई देते। स्वामी जी ने वह तोड़ दिया। मुझे लगता है, जेम्स भी अन्त में बोले थे, life की problems solve (जीवन को समस्या का समाधान) एकमात्र वेदान्त करता है और कोई नहीं। आहा, कैसी शक्तिशाली भाषा स्वामी जी की! मृत शरीर में प्राण संचार कर देती है। कारलाइल (Carlyle) की भाषा भी उसके पास नहीं ठहरती। स्वामी जी भारत की दृष्टि शक्ति को अपने अतुल आध्यात्मिक ऐश्वर्य की ओर आकृष्ट कर गए हैं—यही स्वामी जी का अवदान है।

अब मिष्टीमुख करके साधुओं ने विदा ली।

कथामृत छप रहा है। अन्तेवासी को कितने ही प्रूफ दिए। वे स्वयं भी देख रहे हैं। अब संध्या साढ़े छह। संध्या के बाद दोतल की सीढ़ी के दाईं ओर के कमरे में भक्तगण समवेत हुए हैं। विनय, जगबन्धु, शालखा के भक्त, डाक्टर अमृत आदि आदि आए हैं। श्री म आकर चटाई पर बैठे। वृद्ध शरीर, सारा दिन काम किया है, तभी क्लान्त हैं। वे भक्तों के संग इधर उधर की बातें कर रहे हैं।

श्री म (डाक्टर के प्रति)—अपने घर की उनको (स्त्री को) कब लायेंगे?

डाक्टर—ओ मां, ऐसे ही रक्षा नहीं। तो फिर और उधर।

श्री म—एक बार मां अशुभ दिन में दक्षिणेश्वर आई थीं। इसीलिए दो दिन पश्चात् ठाकुर ने दुबारा देश भेज दिया, यात्रा बदल करके आने के लिए।* मां भारी अभिमानिनी थीं, दो बरस फिर इधर आई ही नहीं। फिर ठाकुर ने हठात् लिखा, "हृदय चला गया है। मुझे बड़ा कष्ट होता है। देखने वाला कोई नहीं है। तुम शीघ्र चली आओ।" खबर मिलते ही आ गईं। आहा, कैसे स्नेह-बन्धन में जो बांधा था भक्तों को, कहने की बात नहीं।

जगबन्धु (डाक्टर का पक्ष समर्थन करते हुए)—ठाकुर स्त्री का

*अशुभ दिन की यात्रा का दोष हटाकर फिर दुबारा आने के लिए।

जगन्माता के रूप में दर्शन करते थे, तो इसीलिये क्या और कोई कर सकता है वैसे ?

श्री म (व्यंग्य से)—नहीं। जिन्होंने किया है उनके लिए है यह बात।

रात्रि साढ़े नौ।

अगले दिन संध्या को, जगबन्धु के हाथ में एक प्रूफ देकर बोले, आज इसमें एक बात मिली। आपकी नजर में नहीं पड़ी लगता है। ठाकुर बोल रहे हैं, 'ज्ञान, विचार वा ध्यान द्वारा उनको समझना एक। और फिर जब स्वयं दर्शन दे दें वह समझना और एक।' योगेन को लक्ष्य करके बोल रहे हैं, "यह मन में लाना ठीक नहीं, मेरे विना चलेगा नहीं। इस काम को मैं ही करता हूं। ये सब रजोगुण के लक्षण हैं।"

(2)

श्री म दोतल की सीढ़ी के पास कमरे में बैठे हैं चटाई पर। निकट ही वीरेन, मणि और छोटे नलिनी हैं। अब रात्रि नौ। डाक्टर, विनय और जगबन्धु ने एक संग आकर प्रवेश किया। जगबन्धु मठ से लौटते हुए काशीपुर से इनके संग आए हैं। श्री म डाक्टर कार्तिक बक्शी के संग बातें करते हैं।

आज 7 अक्तूबर, 1923 ई०, 21वां आश्विन 1330 (बं०) साल, रविवार।

श्री म (डाक्टर के प्रति)—सुनते हो डाक्टर बाबू, जिन्होंने विवाह नहीं किया उनका फिर विवाह न हो, यही ठाकुर ने कहा। और जिन्होंने कर लिया है, उनके बाल बच्चे न हों, ठाकुर ने यह भी कहा था। और फिर जिनकी सन्तान हो गई है, दो से अधिक न हों। अथवा जिनकी स्त्री गत हो गई है, वे और विवाह न करें, ये समग्र थे उनके धर्मपथ के practical (व्यावहारिक) उपदेश।

रुपये पैसे के कष्ट की बातों में कहते, 'औगुनो एतो भेबो ना।' (उनके लिए इतनी चिन्ता मत करो।)—रुपया जमा करूंगा, बड़ा घर बनाऊंगा इत्यादि। वरन् चिन्ता करो किस प्रकार उनका लाभ हो।

श्री म (सब के प्रति)—ऐसा ही सब कुछ बोलते, जिससे निवृत्ति हो। निवृत्ति की बात ही आदि से अन्त तक है। कुलगुरु वा अन्य साधु आशीर्वाद करते हैं, धन, पुत्र, लक्ष्मी लाभ हो। ठाकुर के उपदेश, निवृत्ति के उपदेश हैं, जिससे केवलमात्र भगवान में मन जाए, उसकी बातें। इसीलिए ठाकुर के ऐसे उपदेश लोग "लाइक" (पसन्द) नहीं करते। चमड़ी में है, भक्त प्रार्थना करता है—रूपं देहि, धनं देहि, यशो देहि'·········और 'भार्यां मनोरमां देहि।' सकाम भक्त यही सब मांगता है।

यही जो गृहस्थी लोग सब इतनी पूजा करते हैं किस लिए ? ताकि जिससे ये सब प्राप्त हों उसी के लिए। सकाम पूजा, संसार का सुख चाहते हैं केवल। यह सब तो आता है और जाता है। किन्तु ईश्वर का ज्ञान, भक्ति-निष्काम भक्ति का सुख अनन्तकाल स्थायी होता है। जभी तो साधु उनके पादपद्मों में पूजा करते हैं। जिससे शुद्धा भक्ति लाभ हो, जिससे शुद्ध ज्ञान लाभ हो। यह सम्पद् हो तो यहां पर भी आनन्द है, परलोक में भी आनन्द है।

मथुर बाबू को दरिद्र-नारायण की सेवा करने के लिए कहा। मथुर बाबू ने उत्तर दिया, इतना रुपया नहीं है। उसी क्षण बोल दिया, 'एक जमींदारी बिक्री करके उनकी सेवा करो।' एक पेट खाना, एक एक सिर जितना तेल और एक एक धोती देने को कहा। फिर मां से कहने लगे, 'मां, मुख को इतना खोल दिया है, जो सो निकल जाता है।' आहा, ये सब गृहस्थ लोग रुपए पैसे को कितना प्यार करते हैं। कहां तो कहूंगा रुपया-पैसा, जमींदारी बढ़े। यह न कहकर बोल दिया जमींदारी बेच दो। तत्पश्चात् मां ने मुख बन्द कर दिया।'

वीरेन—जी, मनुष्य क्या यह बात 'उसके लिए इतनी चिन्ता मत करो' strictly (ठीक ठीक) पालन कर सकता है ?

इस बात का उत्तर श्री म स्पष्ट रूप से न देकर गाने में दे रहे हैं। श्री म गा रहे हैं:—

आय मन बेड़ाते जाबि।
काली-कल्पतरुमूले रे मन चारि फल कुड़ाये पाबि ।।
प्रवृत्ति निवृत्ति जाया, ताय निवृत्ति रे संगे लबि।
ओ रे विवेक नामे तार बेटा रे तत्त्वकथा ताय शुधाबि ।।*

श्री म (सब के प्रति)—भगवान की कृपा होने पर चारों फल ही मिलते हैं—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। "निवृतिरे संगे लबि" कहा है, उसका अर्थ है जितना हो सके कम से कम विषय भोग लिया जाय—minimum जिसकी जैसी अवस्था उसके अनुरूप जितनें कम में चले उतना लेना। माने, पहले कैसे उनका दर्शन हो उसकी चेष्टा करना, तत्पश्चात् अन्य कथा।

ठाकुर ने कहा था, मैं यदि सोलह टान (आना) करूं तब शेष अवधि सात-आना पर जाकर ठहरेगा। और प्रवृत्ति की बात यदि कुछ बोलूं तब तो सब ही धेई धेई करके नाचेंगे। बाइबिल में है, 'But one thing is needful, which shall not be taken away from her' मेरी ने जो पकड़ा है वह ही चिरकाल रहेगा। यह ही मनुष्य के लिए एकमात्र वांछनीय है।

मार्था और मेरी दो बहनें क्राइस्ट की शिष्यायें थीं। मेरी क्राइस्ट को मिलकर अनिमेष नयन से उनकी ओर ताकती रहती और प्रेमाश्रु विसर्जन करती। उनका भगवान में प्रेम हो गया था। यही प्रेम ही अविनश्वर है, चिरकाल रहेगा। और सब दो दिन का।

श्री म (जगबन्धु के प्रति)—हां, शनिवार को क्या क्या सब बातें हुई वेदान्त सोसाइटी में, कहिए।

जगबन्धु—एक जन ने प्रश्न किया था, मृत्यु के पश्चात् प्रेतलोक है कि नहीं, यही सब।

श्री म—ठाकुर बोलते, एगुलो (ये तुच्छ विषय) interesting (प्रीतिकर) चाहे हैं, किन्तु इनका प्रयोजन क्या? किस प्रकार उनकी

*भावार्थ—आ रे मन टहलने चलें। हे मन काली रूप कल्पतरु के मूल में चारों फल इकट्ठे ही मिलेंगे। प्रवृत्ति और निवृत्ति दो पत्निएं हैं, उनमें से निवृत्ति को ही संग लेंगे। अरे मन, विवेक नामक उसका बेटा है उससे तत्त्व की बात पूछेंगे।

प्राप्ति हो इसी की चेष्टा करे। वही बात कहना, वही बात सुनना। ठाकुर की वही एक बात है। (सहास्य) खूब रसिक पुरुष थे, रस भरकर बातें कहते। बोले थे, यदुमल्लिक के संग मेल होने पर, उनसे ही पूछो ये सब बातें। "यदुमल्लिक" माने भगवान। "ओ सब कथा" माने भगवान के ऐश्वर्य की बातें। सर्वदा straight to to the target (एकदम आदर्श में) पहुंचा देते मनुष्य का मन। केशव बाबू से कही थी यह बात।

रात्रि साढ़े नौ।

दो दिन बाद नौ अक्तूबर। श्री म भक्तों के संग "ध्रुव चरित्र" पिक्चर देख रहे हैं रिपन थियेटर में। यह मछुआ बाजार में अवस्थित है, ईशान मुखर्जी के घर के सामने। इसी घर में ठाकुर का शुभागमन हुआ था। श्री म के संग जगबन्धु, डाक्टर, विनय, मणि, शची और सुधीर आए हैं। बायस्कोप देखकर लौटते हुए रात्रि के बारह हो गए। डाक्टर इतनी रात में फिर घर नहीं गए, जगबन्धु और विनय के संग मॉर्टन स्कूल में दो तल की बैठक में रहे। श्री म ने कुछ बिछौना भेज दिया। बायस्कोप आरम्भ होता है 9 बजे। लौटते समय श्री म ने बताया, "यह चित्र प्रथम विलायत में हुआ था। साहब लोग अच्छे सजे हैं। आहा, यमुना कैसी सुन्दर दिखाई देती है।" चित्र देखने से पहले श्री म भक्तों के संग, स्कूलबाड़ी में ध्रुव चरित्र का पाठ सुनकर गए थे।

उसके अगले दिन श्री म दो तल के कमरे में बैठे हैं। आज बुधवार। अपराह्ण सवा छह। अन्तेवासी ने कमरे में प्रवेश करके देखा, श्री म योगेन से मृदुस्वर में कुछ कह रहे हैं। फिर मुख धोने के लिए उठकर चले गए। श्री म के निर्देश से जगबन्धु, सुधीर, मणि और योगेन गान गा रहे हैं। उन्होंने प्रथम गाया, "गया गंगा प्रभासादि काशी कांची केबा चाय,' फिर, 'मजलो आमार मनभ्रमरा श्यामापद नीलकमले।' श्री म वापिस आकर कथा कह रहे हैं।

श्री म (योगेन के प्रति)—इस प्रकार करना ठीक नहीं। आपको यदि लिखकर दें कुछ, written order तब ही बोलिए, नहीं तो नहीं। लिखकर देने पर भी avoid करना, बचकर चलना उचित।

मनुष्य के संग कितने प्रकार से (tuct) कौशल करके चलना पड़ता है। वहां (कालीबाड़ी) का अन्य कर्मचारी हो तो कहा जा सकता था।

हजार दोष हों तो भी इनके (ठाकुर के वंशधरों के) दोष नहीं देखते। इनको पहचानता ही था कौन इतने दिन। कितने बड़े वर्ग में जन्म। अब पूजित होने पर इनका देवभाव जाग उठेगा। इनके शत अपराध हों तो भी नहीं लेते। एलेग्जेण्डर दी ग्रेट ने कहा था, "सैल्युक्स, मां की आंख का एक बूंद जल गिरने से तुम्हारे कागज पत्र सब बह जायेंगे—हजार चिट्ठी ही लिखो चाहे कुछ भी करो। उनको पहले शांत करो। मां बड़ा परेशान करती थी उसको। अधीर हो उठा था। उस पर भी एलेग्जैण्डर ने यही बात बोली।

उनका कितना बड़ा वंश, कितने बड़े व्यक्ति (ठाकुर) जन्मे हैं उनके घर में। ठाकुर ने सारा जीवन मां से केवल ज्ञान शक्ति मांगी हैं 'मां, मुझे भक्ति दो।' रुपये पैसे के लिए प्रार्थना कभी भी नहीं की। घर में उन लोगों को कितना कष्ट, खाने पहनने का, और उस पर फिर मलेरिया से सब मर मर। उससे ही तो रामलाल के पिता पैंतालीस बरस के चले गए। बड़े भाई कॉलरे (हैजे) से पहले ही चले गए थे। भगिनीपति आठ रुपया महीना पर नौकरी करते। कैसा कष्ट, किन्तु तब भी एक दिन के लिए भी ठाकुर ने रुपए पैसे नहीं मांगे। बोलते, वे तो मांगने के योग्य ही नहीं। ठाकुर ने कहा था, यदि जानता कि यह सब रहेगा तब तो कामारपुर को सोने से मंडवा देता, मां से कहकर। किन्तु यह सब कुछ भी रहेगा नहीं, अनित्य है। उफ, कैसा जीवन! कौन कह सकता है यह बात भगवान छोड़?

भक्त हो तो हद है दाल भात की बात बोलते। नरेन्द्र से कहा था, मां ने बोला है, "डाल भात होले होय। एर बेशी ना।" (दाल रोटी हो तो काफी है। इससे अधिक नहीं।) वह भी इसलिए कि निश्चिन्त मन से उनका नाम कर सकेगा।

बड़े जितेन ने घर में प्रवेश किया।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—वे ही क्या पहचान पाते? वे समझते हमारा भाई, चाचा, मामा—परिवार के लोग जिस प्रकार

समझते हैं। क्राइस्ट, चैतन्य, इन्हें भी पहचान नहीं पाये थे परिवार के लोग। रामलाल को कोई कोई तो कहते भी, "क्यों रे, सुनते हैं, तुम्हारे चाचा का तो अब खूब नाम यश हो रहा है, कितने भक्त हैं। तुम्हारा अब खूब समय है। तुम लोगों को फिर क्या चिन्ता ?" उत्तर आया, "नहीं भाई, जिसको जिसमें सुख है वह उसी को लेकर ही व्यस्त है। हम तो जैसे थे वैसे ही हैं।" गांव के लोग कहते, "क्यों जी, इतने बड़े बड़े तो लोग सब आना जाना करते हैं। उनसे कहकर रुपया तुम्हारे लिए नहीं दिलवा सकते ?" कभी-कभी कहते, "कलकत्ता के लोग कैसे मूर्ख हैं। यही गदाई इसे हम तो बचपन से देखते हैं। इसे लेकर इतनी नाचानाची ?" (हास्य)।

ठाकुर अपनी मां को लेकर काशी गये थे। राम चैटर्जी संग थे।

ठाकुर को सर्वदा समाधि होती, यह देखकर ठाकुर की मां बोलीं, "हां रे केष्टो, तू ऐसा हुआ रहता है। मेरे मरने पर कौन देखेगा ?" "केष्टो" कहकर ठाकुर को पुकारती थीं। ठाकुर कहते, "क्या जानूं मां, मैं इतना कुछ नहीं जानता। रामलाल से कहो वह देखेगा। अर्थात् सर्वदा जगदम्बा की बात सोचते हैं। अन्य बात कैसे सोचेंगे ? राम चैटर्जी ने हमें बताई थी ये सब बातें।"

डाक्टर और विनय ने प्रवेश किया।

श्री म (भक्तों के प्रति)—यह जो दक्षिणेश्वर का मैनेजमैण्ट भक्तों के हाथ में आया है, अब भक्तों की position (अवस्था) बड़ी delicate (संकटजनक) हो गई है। अन्य लोग जो सांसारिक स्वार्थ लेकर हैं उनकी बात अलग। किन्तु ठाकुर के भक्तों की position (अवस्था) बड़ी ही delicate (संकटजनक) है। किरण बाबू को खूब सावधान होकर चलना उचित। यही काज ही एक महापरीक्षा और कठोर तपस्या है। किसी भी व्यापार में रामलाल छोटे न हों। यहां तक कि वे यदि कोई काम न भी करें, तो भी भक्तों को स्वयं कर लेना उचित, उनके बदले।

श्री म (जगबन्धु के प्रति)—एक गाना हो जाय। सब गा रहे हैं।

गान—शिवसंगे सदा रंगे आनन्दे मगना, मा।
सुधापाने ढलो ढलो ढले किन्तु पड़े ना।।
विपरीत रसातुरा पदभरे कांपे धरा।
उभये पागलेर बारा लज्जा भय आर माने ना।।[1]

श्री म—यह है ठाकुर का एक favourite (प्रिय) गान। यही जो स्त्री पुरुष का मिलन है, ठाकुर इसे शिव शक्ति का मिलन देखते हैं।

गदाधर आ गए। श्री म और भक्तगण सब आगमनी गा रहे हैं।

गान—केमन् करे परेर घरे छिलि उमा बोलो मा ताइ।
कतो लोके कतो बोले शुने प्राणे मरे जाइ।।
केमने मा धैर्य धरे जामाइ नाकि भिक्षा करे,
ए बार निते एले परे बोलबो उमा घरे नाइ।
चिताभस्म माखि अंगे जामाइ फिरे नाना रंगे,
तुइ नाकि मा तारि संगे सोनार अंगे माखिस छाइ।।[2]

श्री म—इस गाने को बकुल तले के पोस्ते पर बैठकर स्वामी जी ने गाया था। सुनकर ठाकुर समाधिस्थ हो गये थे।

गान—ए बार उमा एले आर उमा पाठाबो ना।
बोले बोलुक लोके मंद कारो कथा शुनबो ना।।[3]

---

[1]भावार्थ—शिव के संग में मां, सदा रंग के आनन्द में मग्न रहती है। सुधा पीने के कारण डगमग डगमग कर रही हैं किन्तु गिरती नहीं। अत्यधिक रतिभाव मग्न पग रखने से धरती कांपती है। दोनों ही पागलों से भी बढ़कर हैं। लज्जा और भय बोध नहीं करते।

[2]भावार्थ—ओ उमा बता तू दूसरे के घर में कैसे रहती थी, यह बात बता। कितने लोग कितना कुछ कहते हैं सुन सुन कर मेरा तो प्राण ही निकल जाता है। मां किस प्रकार धैर्य रखे यह जानकर कि जमाई भिक्षा करता है। अब की बार लेने आएगा तो फिर कह दूंगी उमा घर नहीं है। शरीर पर चिता भस्म मलकर जमाई तो नाना रंगों में फिरता रहता है। मेरी बेटी, तू भी क्या उसके संग अपने इन सोने से अंगों पर भस्म मलती है ?

[3]भावार्थ—अब की बार उमा आ जाएगी तब फिर नही भेजूंगी। लोग मन्दा बोलें तो बोलें, मैं किसी की बात नहीं सुनूंगी।

गान—अभयार अभय पद कर मन सार।
भवभय सब दूरे जाबे रे तोमार[1] ।। इत्यादि

गान—आमार मन जदि जाय भूले।
तबे वालिर शैयाय कालीनाम दिओ कर्णमूले ।।
ए देह आपनार नय रे, सदा रिपु संगे चले।
तबे आनरे भोला जयेर माला, (देह) भासाइ गंगाजले ।।
भय पेये राजा रामकृष्ण भोलार प्रति बोले।
आमार इष्ट प्रतिदृष्टि खाटो कि आछे कपाले ।।[2]

गान—आमार माके कि देखेछिस तोरा बोल सत्यि करे।
मायेर नवनव नव रूपे भुवनमन हरे ।।
मा तो आमार नय रे कल्पनार चिन्मयी हास्यवदना,
मायेर स्नेहचक्षे प्रेमवक्षे अमिय झरे ।।
हासि मुखे करे भुवन आलो (मायेर) कोले शोभे भक्तदल,
मायेर प्रसारित प्रेम बाहू आमादेर तरे ।।
आय रे आय ओ जगतवासी तोरा देखे जा एकबार आसि,
आमादेर जननी रूपराशि पराण भरे।
जे देखेछे सेइ मजेछे जन्मेर तरे ।।[3]

---

[1]भावार्थ—हे मन अभया के अभयपद को सार कर लो। भवभय सब दूर हो जाएंगे तेरे।

[2]भावार्थ—मेरा मन यदि भूल जाय, तो रेत के बिछौने पर कानों में काली का नाम दे देना। यह देह मेरी नहीं है रे, सदा शत्रु संग रहता है। इसीलिए तो अरे भोला जय की माला ले आ, इस देह को गंगा जल में डुबा दूं। डर कर राजा रामकृष्ण ने भोला के प्रति कहा, मेरी इष्ट के प्रति दृष्टि छोटी है भाई। भाग्य में न जाने क्या है ?

[3]भावार्थ—मेरी मां को क्या तुमने देखा है, सच सच बता। मां का नव नव रूप भुवन का मन हर लेता है। मेरी माँ तो कल्पना की नहीं है। वे तो चिन्मयी हास्यवदना हैं। मां के स्नेह चक्षुओं से प्रेमवक्ष पर अमृत झरता है। हंसी मुख से भुवन को आलोकित करती है। माँ के अंक में भक्तों के दल शोभित हैं। मां के प्रेमबाहु हमारे लिए प्रसारित हैं। आओ रे आओ, ओ जगत्वासियो आओ, तुम एक बार आकर प्राण भर कर देख जाओ हमारी जननी की रूपराशि। जिसने देखा वही इसमें मग्न हो गया, अनन्त जन्मों के लिए।

भक्तगण सब भूले हुए गा रहे हैं। श्री म के चक्षुओं में आनन्दाश्रु। वे कभी कभी इस गाने के अन्तिम दो एक पद गाते हैं और फिर स्थिर होकर बैठे रहते हैं—चक्षु मुख चमक रहा है। अति मधुर कण्ठ से यही एक बात बोलकर धीरे धीरे ऊपर चढ़ रहे हैं—यही है हमारी मां का रूप, जो ठाकुर के संग आई थीं।

रात्रि 10 बजकर 15 मिनट।

(३)

आज कलकत्ता वेनिस नगरी में परिणत है। सुबृहत् राजपथ समूह जलमग्न हैं। दोनों ओर अट्टालिका समुद्र के मध्य से नदी बह रही है। ऐसी ही असंख्य नदियां हैं। किसी किसी स्थान पर जल जमा होकर गहरा हो गया है। उस पर छोटी नौका अनायास ही चल सकती है। ट्राम, घोड़ा गाड़ी आदि गाड़िएं प्रायः बन्द हैं। अपराह्ण पांच बजे से मूसलाधार वर्षा हो रही है। अब प्रायः आठ। वृष्टि अब भी हो रही है। महानगरी मानो किसी राजचक्रवर्ती का प्रमोद का कानन हो गया है। कारण, शोभायमान करने के लिए मानो सब कृत्रिम नदियां प्रवाहित हैं।

जो ऑफिस में कर्म करते हैं वे अति कष्ट से लौट रहे हैं। कोई कोई पोशाक, बूट आदि की पोटली बांधे सिर पर रखे जल काट काट कर चल रहे हैं। कोई सब पहने बिल्कुल भीगते हुए जा रहे हैं। किसी किसी रास्ते पर सवारी की मोटरें दोनों ओर जल के फव्वारे सृष्टि करती हुई चली जा रही हैं। मॉर्टन स्कूल के सम्मुख इतना जल है कि धोती ऊपर उठाकर चलते हुए लज्जा रक्षा रखना कठिन हो गया है। अमहर्स्ट स्ट्रीट के उत्तर प्रान्त में लाहाओं के प्रासाद के निकट तैरने योग्य जल है।

इस दुर्दिन में भी कई जन भक्त मॉर्टन स्कूल में आए हैं सत्संग इच्छा से। मणि और योगेन निकट ही रहते हैं। वे आए हैं। बड़े अमूल्य ऑफिस से लौटते हुए वृष्टि के पूर्व आकर पहुंच गये थे। जगबन्धु यहां पर ही रहते हैं। किन्तु वर्षा से पहले कार्य के उपलक्ष्य

से बाहिर चले गये थे। वे अभी अभी लौटे हैं। अब साढ़े आठ। श्री म बरामदे में खड़े हुए यह दृश्य देख रहे हैं।

श्री म (जगबन्धु को देखकर सहास्य)—आप भी जल में भीगते हैं ? आहा, मानो मछली बनकर आए हैं।

श्री म दो तल की बैठक में जाकर बैठ गये भक्तों में संग। शास्त्र की व्याख्या में नाना जनों के नाना मत हैं, कौन सा लिया जाय, बड़े अमूल्य ऐसी ही बातें कर रहे हैं।

श्री म (अमूल्य के प्रति)—पण्डितों की शास्त्र व्याख्या वह सब तो है ही और रहेगी भी। वे केवल टीका टिप्पणी और श्लोक आवृत्ति करते हैं। अवतार जब आते हैं तब और एक नूतन लाइट (ज्योति) मिलती है।

तपस्या बिना किए वेदादि शास्त्रों के अर्थ की उपलब्धि नहीं होती। जभी तो अवतार आते हैं। आकर शास्त्र का अर्थ करते हैं।

प्रथम साधन भजन करके सिद्ध होकर तब ही लैक्चर दिया जा सकता है। शशधर को जभी तो ठाकुर ने कहा था, और थोड़ी सी शक्ति संचय करो। पहले उनका आदेश पाओ फिर तब लैक्चर देना। सिद्ध बिना हुए कौन सा भला, कौन सा मंदा, यह जाना नहीं जाता ना, तभी। पहले अपने आप बोधे बोध करना चाहिए, तब फिर अन्य को उपदेश। रेत चीनी मिले हुए हैं। रेत छोड़कर चीनी लो। किन्तु कच्ची अवस्था में ये सब समझा नहीं जाता। जभी तो जैसे blind leading the blind 'अन्धेन नीयमानाः यथान्धाः' हो जाता है।

श्री म—(भक्तों के प्रति)—आप लोगों को वह भय नहीं हैं। आप लोग सर्वदा उनका चिन्तन करते हैं। ठाकुर को पुकारते हैं। कसौटी पा ली है। जैसे सोना मिलते ही कसौटी पर घिसकर परीक्षा करके तब लेता है, वैसे ही जो मिले सो आप अपनी कसौटी पर मिला कर लें। जभी तो वे कहते हैं, मेरा ध्यान करने से ही होगा। और कुछ करना नहीं होगा। उनकी वाणी क्या झूठ हो सकती है ? सब सत्य।

एक भक्त सोच रहे हैं—कैसा आश्चर्य ! बहिर्जगत् के इस दुर्योग में भी भक्तों के अन्तर्जगत् में साम्य संस्थापन की कैसी चेष्टा इन महापुरुष की।

श्री म (जगबन्धु के प्रति)—अवतार का और एक काम है। वे आकर कर्म कम कर देते हैं। किस प्रकार लोग अवसर पायें वह बता देते हैं। यही जो body wearing and soul killing labour (हाड़ प्राणघाती परिश्रम) इसमें रहकर भी किस प्रकार उन्हें पुकारने का समय मिलता है यह बता देते हैं।

डेविड कॉपरफील्ड ने सुख और दुःख की परिभाषा और तत्त्व, definition and philosophy सुन्दर रूप से कहे थे। एक पुस्तक में है, एक सौ पाउंड income (आय) और निनानवे पाउंड उन्नीस शिलिंग छह पैन्स expenditure (व्यय)। Balance (बाकी) रहा छह पैन्स। Result—happiness, फल सुख। और एक सौ पाउंड income (आय), एक सौ पाउंड छह पैन्स Expenditure (व्यय)। No balance (बाकी कुछ भी नहीं)। Result—misery (फल—दुःख।)

यही है human calculation (मनुष्य का हिसाब)। अभी सुख, अभी दुःख। किन्तु ठाकुर देखते, किस प्रकार उन्हें पुकारने का समय हो। वे तो सुख स्वरूप हैं।

दाल भात का प्रवन्ध होने से ही हुआ। एक सौ रुपया मिलता है, किसी प्रकार चलता है। तीन स्थानों पर तीन ट्यूशन करने पर तीन तीसे नब्बे रुपए हुए। एक सौ प्लस (जमा) नब्बे आय हुई। (मनुष्य के हिसाव) में तो यह अच्छी है। किन्तु समय कहां उनको पुकारने का ? भक्त लोग जिससे इस प्रकार का विचार न करें और जिससे उनको पुकारने का समय पाएं ठाकुर अवतार पुरुष यही देखते हैं सर्वप्रथम।

वड़े अमूल्य—'भागवत-भक्त-भगवान' केशव सेन ने इसे तो स्वीकार कर लिया। किन्तु गुरु-कृष्ण-वैष्णव बोलते ही क्यों बोले, बस बस आज यहीं तक।

श्री म—कृष्ण को अवतार रूप से नहीं मानेंगे। मनुष्य कैसे ईश्वर हो सकता है, यही संशय है।

बड़े अमूल्य—ठाकुर सुन्दर argument (युक्ति) द्वारा सब समझाते।

श्री म - उनकी argument (युक्ति) क्या हमारे जैसी ? सब revelation (देव अनुभूति)—सब सत्य। बोलते, इसी मुख द्वारा भगवान बातें करते हैं।

वेद माने revelation (भगवद् वाक्य)। ऐसा अनन्तकाल से हो रहा है, जभी वेद अनन्त। किसी किसी ने जरा रिकार्ड किया है। वे सर्वदा ही बातें करते हैं। उनकी बातें योगी जन सुन पाते हैं—गंभीर रात्रि में। अब डाक्टर और विनय आकर उपस्थित हो गए। उनका सर्व शरीर नग्न और जलसिक्त है। काशीपुर में वासा—प्रायः साढ़े चार मील दूर। टैक्सी करके एक रुपया चौदह आना देकर माणिकतला और अमहर्स्ट स्ट्रीट के मोड़ के निकट आए। फिर गम्भीर जल। अंगोछा पहन, कुर्ते धोती की पोटली सिर पर रख, किसी प्रकार तैरकर आ उपस्थित हुए हैं। वे ही बिल्कुल मीनवत् भीगे हुए आए हैं। श्री म उन्हें देखकर प्रथम विस्मित फिर आनन्दित हुए। उठकर, उनके पास खड़े होकर शीघ्र धोती पहनवाई, पीछे बीमार न हों। सब कमरे में बैठ गए, आज पहले जो जो ईश्वरीय बातें हुई थीं, सब बातें फिर कहीं। और बोले, खाकर तो आए हो ? फिर तो उस दिन (बायस्कोप देखने वाले दिन) की भांति यहां पर ही लेट जायें यदि घर जाना नितान्त ही आवश्यक न हो।

आहा, ठाकुर इस प्रकार देखकर रोया करते—इतना कष्ट करके आए हैं, देखकर। दमदमा से सिपाही तीन घण्टे की छुट्टी पाकर कष्ट से उनके दर्शन करने आते। ठाकुर मां के निकट उनके लिए प्रार्थना करते, मां इनका तो किन्तु मंगल करना ही पड़ेगा। ये लोग इतना कष्ट करके तुम्हारे पास आते हैं।

आज श्री म को सर्दी हुई है। उसके लिए तेल मलें या औषध खायें भक्तों से पूछ रहे हैं। कहते हैं, आप कोई होम्योपैथिक औषध की व्यवस्था जानते हैं ?

देओघर विद्यापीठ से स्वामी सद्भावानन्द ने लिखा है, "यहां पर चले आइए। यहां पर आने से शरीर अच्छा हो जाएगा।" श्री म सोच रहे हैं क्या करें।

नौ बजे सभा भंग हुई। डाक्टर, विनय और गदाधर ने दो तल के कक्ष में जगबन्धु के संग रात्रिवास किया।

(4)

आज श्री म को सर्दी-ज्वर हुआ है। तीन तल के उत्तर के कोने वाले कक्ष में ही रहे। ऊपर वा नीचे नहीं गए—बिछौने पर लेटे हुए हैं। दोपहर पश्चात् डाक्टर बक्शी घर से स्टोव, पिसी हुई काली मिर्च और मिश्री तथा बेदाना लेकर आ गये। गरम गरम मिर्च-मिश्री श्री म पान कर रहे हैं। असुख में श्री म अति सामान्य औषध व्यवहार करते हैं, वह भी अधिकांश होम्योपैथिक अथवा कभी कभी आयुर्वेदिक। किन्तु पथ्यादि की व्यवस्था पालन करते हैं।

अब वेला दो। श्री म ने एक भक्त शिक्षक को स्कूल के ऑफिस से बुलवा लिया। वे बिछौने पर लम्बे होकर स्वयं प्रूफ देख रहे हैं, कॉपी पकड़ी है शिक्षक ने। श्री म के चक्षुओं के दोनों कोनों से वह बहकर जल गिर रहा है। शिक्षक को नाश्ता खाने को दिया, बड़े बड़े दो टुकड़े बेगुन भाजा (तले हुए बैंगन) के संग में चार (पूरियां)।

प्रथम भाग (कथामृत) पंचदश खण्ड पढ़ा जा रहा है। डाक्टर महेन्द्र सरकार की कथा। मृत्युसम रोगयंत्रणा लेकर ठाकुर डाक्टर सरकार के संग आनन्द से गम्भीर तत्त्वालोचना करते हैं। देखते ही देखते श्री म बिछौने पर उठकर बैठ गये। जैसे रोग है ही नहीं—वदनमण्डल सुप्रसन्न। प्रूफ देखना बन्द करके बातें करने लगे।

श्री म (स्वगत)—हाय, मुझे यही जरा सी सर्दी, उससे ही उठ नहीं पाता। और ठाकुर को कितना कष्ट, तब भी कितनी बातें करते हैं।

श्री म का सत्तरवां वर्ष बीत गया है। मुहूर्त भर में चेहरा बदल गया। रोग जैसे नहीं है। शिक्षक तो अवाक् होकर सोच रहे हैं, यह

कैसा बहुरूपी का भाव। ऐसा वृद्ध शरीर, असुख। बात करते हुए कितना कष्ट क्षीण स्वर। आहार हुआ नहीं। ये सब उपसर्ग चले गए। युवक का तेज मानो वापिस आ गया है। मुखमण्डल उज्ज्वल। यही क्या विदेह ? श्री म पुनराय आनन्द से बातें कर रहे हैं।

श्री म (शिक्षक के प्रति)—सादा बाड़ी में हाथ में जब बिच्छू ने काटा था—कितनी यंत्रणा। कितने जन कितनी औषध देते हैं, किसी से भी कुछ होता नहीं। ठाकुर का रोग क्लिष्ट चेहरा, उस पर फिर भाव समाधि और फिर परमानन्द में ईश्वर नाम गुण कीर्त्तन—ये सब बातें ज्योंहि मन में आईं झट सब कष्ट दूर हो गए। मुझे जैसे कुछ भी नहीं हुआ। बिच्छू के डंक की कितनी यंत्रणा, उसका लेशमात्र भी नहीं। वही एक हुई थी अति अद्भुत परीक्षा।

निकट एक छोकरा बैठा है। श्री म के परिवार का काज करता है। खूब भक्त है। श्री म उसे प्यार करते हैं। किन्तु परिवार के दूसरों की इच्छा नहीं है कि वह रहे। कैसे दस जनों के संग रहना चाहिए उसे यह उपदेश दे रहे हैं।

शिक्षक चिन्तन कर रहे हैं, समझा, इसे ही समदर्शी कहते हैं। यह सामान्य एक कर्मचारी। इसके प्रति कैसा स्नेह, कैसा प्रेम—जैसे अपना जन।

श्री म (छोकरे के प्रति)—आहार के पश्चात् निद्रा भी ठाकुर-वाड़ी में ही कर लो। क्रोध वश में करना हो तो क्या करना, जानते हो ? जप करना चाहिए क्रोध आने पर। और क्रोधी व्यक्ति को वश में करना हो तो गुप्त रूप से उसकी सेवा करनी चाहिए। उसका काम करके रख देना चाहिए। बाजार से दाल, चावल, घी, नून, तेल, आटा आने पर वे लोग भंडार में इन सब को तुला रख देते हैं। तुम बाजार से ढकने खरीदकर ढक कर रख दो। इनको ये सब बातें मत कहो। और अवसर होने पर जप करो—ठाकुर मन्दिर के बरामदे में बैठकर।

मां ठाकुरुण बैठती थीं वहां पर। कितनी रातें काटी हैं ठाकुरबाड़ी में। यह एक तीर्थ है। वहां पर बैठकर सिद्ध हो सकता है। पार्टीशन होने के पूर्व स्वामी (विवेकानन्द) जी भी उस बाड़ी में सर्वदा

जाया करते थे। फिर राखाल महाराज (स्वामी ब्रह्मानन्द), काली (स्वामी अभेदानन्द) गिरीश बाबू, बाबू राम (स्वामी प्रेमानन्द), निरंजन, खोका (स्वामी सुबोधानन्द) हरि महाराज (स्वामी तुरीयानन्द) आदि ठाकुर के भक्तगण सब ही सर्वदा जाते थे। इससे अगली पीढ़ी के शुकुल, सुधीर, काली कृष्ण आदि आना जाना करते रहे। डा० कांजिलाल की दीक्षा उसी ठाकुर-बाड़ी में हुई।

शिक्षक—वहां पर जिन्होंने पूजा की थी वे भी साधु हुए हैं ?

श्री म—हां, कृष्णानन्द, सनत (स्वामी प्रबोधानन्द), महेन्द्र बाबू (मॉर्टन के शिक्षक) ये सब।

उस घर में क्या कम काण्ड हुए हैं। कहीं कुछ भी नहीं, खिड़की ठक ठक हिल रही है। बाहर के लोग सोचते हैं घर में हो रहा है, घर के लोग मन में सोचते हैं बाहर हो रहा है। कितने दिन लगातार यही चलता रहा। विजातीय जन के जाने पर—अर्थात् जो साधन भजन नहीं करते ऐसे लोगों के जाने पर घर की चीज बस्त तोड़कर आंगन में फेंक देते—ईंट, चूना, सुरखि, चाबी का गुच्छा। कथामृत के कागज एक घर में रखे रहते। वहां से भी चीजें फेंक देते। डाक्टर बाबू (कार्तिक बक्शी) जानते हैं। फकीर बाबू (मॉर्टन के शिक्षक) बरामदे में बैठे हैं। हठात् एक बड़ी जामबाटि (कांसी का बड़ा कटोरा) आ गिरा सामने धम करके। ठाकुर के घर की वस्तुएं सब उलटी पलटी हुई रहतीं। गिन्नी (श्री म की धर्मपत्नी, श्री श्री ठाकुर की भक्त) ने बताया, कभी कभी ठाकुर घर की सांकल जाने कौन दिए रखता है। खुला रख कर आई थी, जाकर देखती हूं सांकल दी हुई है। यह सब देखकर महेन्द्र बाबू साधु हो गए। तब भी क्या लोगों को चैतन्य होता है ?

सुनता हूं ठाकुर के संग नन्दी भृंगी रहते हैं। वे विजातीय व्यक्ति को हटा देते हैं ऐसा कर करके। तब family (परिवार) था उसी घर में। ज्यों ही उन्हें हटाकर मैं गया तब कहीं भी कुछ नहीं। आठ दस दिन ऐसा हुआ था। मुहल्ले के सब लोग अवाक्।

अब अपराह्न तीन।

श्री म तीन तल के कोने के कमरे में ही सारा दिन रहे अस्वस्थ। संध्या के बाद भक्त सभा भी उसी कमरे में बैठी। बड़े जितेन, विनय, मनोरंजन, बड़े अमूल्य, योगेन, मणि आदि आए हैं। जगबन्धु बेलेघाटा होकर लौटे हैं। शुकलाल को संवाद देने के लिए श्री म ने भेजा था। रात्रि अब नौ। श्री म आनन्द से ईश्वरीय कथा कह रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—अवतार भी आकर बोलें तो क्या लोग सुनते हैं? लैपर लैजेरस एक जन था। एक धनी के घर था। महाव्याधिग्रस्त कोढ़ी लैजेरस द्वार पर खड़ा होकर भिक्षा मांगने लगा। किन्तु दी नहीं। क्षुधा से वह मर गया। उसको स्वर्ग में अब्राहम ने गोद में उठा लिया। धनी का पीछे मरण हुआ। वह नरक में गया। वहां पर उसे जल की पिपासा लगी। वह जल जल करके चीत्कार करने लगा। आर्त्तनाद सुनकर लैजेरस जल देने के लिए अग्रसर हुआ। अब्राहम बोला, अरे ओ तुम कहां जा रहे हो? स्वर्ग से नरक चाहे दीखता तो है किन्तु जाने का उपाय नहीं है—impossible! धनी तब अनुरोध करने लगा, तुम और एक उपकार करो। पृथ्वी पर जाकर मेरे आत्मीय जनों को कह आओ, स्वर्ग नरक है। ये धोती बगल में दबाकर रवाना हुए। अब्राहम फिर बोले, तुम्हारे यह बात बोलने पर वे लोग तुम्हें imposter (प्रवंचक) सोचेंगे।

अवतार आकर कह गए हैं, सुना नहीं किसी ने। फिर तुम्हारी बात से होता है? अवतार की बात ही सुनता है कौन?

बेलुड़ मठ के आमों का ठाकुरवाड़ी में भोग दिया गया। भक्तगण वही प्रसाद लेकर बिदा हुए। रात्रि दस।

अगले दिन शनिवार। श्री म का शरीर आज काफी अच्छा है। दो तल की सीढ़ी के दायें कमरे में उतर आए हैं। भक्त लोग अनेक ही आए हैं। भाटपाड़ा के ललित, बड़े जितेन, वीरेन, मनोरंजन, सुरपति, भूपति महाराज के भक्त सुरेन, गंगोली, अमृत, दुर्गापद, जगबन्धु आदि उपस्थित हैं। योगेन आज श्री दक्षिणेश्वर गये थे। उनके साथ श्री म की वहां की ही बातें हो रही हैं। अब संध्या सात।

श्री म (भक्तों के प्रति)—किरण बाबू का मैनेजमैंट माने मठ का ही मैनेजमैंट। प्रायः ही सुनता हूं रामलाल दादा मठ में आते हैं। सब विषयों में ही मठ से consult (परामर्श) करते हैं। ठीक हुआ है। किसी एक individual (विशेष व्यक्ति) के पास न रहकर एक (संघ के हाथ) में पड़ा है। इससे अच्छा होगा।

श्री म (दुर्गापद के प्रति)—अजी, नहबत कब बजेगी ? वह हो तो अच्छा हो। आहा, वही ध्वनि ! मेरे दो dreams (स्वप्न) थे। एक तो दक्षिणेश्वर मठ के हाथ में आ जाए। और एक काशीपुर बागान। एक realised (पूर्ण) हुआ है और एक बाकी है। वहां पर एक बरस घर गृहस्थी की थी ठाकुर ने। कांकुड़गाछी* वे मठ के हाथ में न देकर भूल कर रहे हैं।

किरण बाबू ने लिया माने मठ का ही लेना हुआ। ठाकुर कहते, हाथी के दो रकम के दांत हैं, बाहर के और भीतर के। बाहर के दांत शोभा बढ़ाते हैं। किन्तु काम करते हैं भीतर के दांत। किरण बाबू बाहर की शोभा, किन्तु भीतर के दांत मठ।

भूपति महाराज के शिष्य श्री पुरी का महाप्रसाद लेकर आए हैं—एकदम टाटका (ताजा) प्रसाद। भक्तों के संग में श्री म ने महानन्द से उसको ग्रहण किया। श्री म अति आह्लाद सहित बोल रहे हैं, "जगन्नाथ ने प्रसाद भेज दिया है। Repeated call (पुनः पुनः आह्वान) और फिर प्रसाद।" यही बात बोलते बोलते उत्तरास्य होकर पश्चिम के दरवाजे के पास आकर खड़े हो गए। पुनः दक्षिणास्य होकर बैठ गए। तत्पश्चात् इधर उधर की बातें चलीं। श्री म बोले, "अवतार कहते हैं, मेरा चिन्तन करो। और कुछ करना नहीं पड़ेगा। ठाकुर का यह वाक्य ही चिन्तन करते करते आप लोग घर जायें।"

रात्रि दस।

कलकत्ता, मॉर्टन स्कूल।
12 अक्तूबर, 1923 ई॰, शुक्रवार।
25वां आश्विन 1330 (बं॰) साल।

---

*अब कांकुडगाछी मठ के हाथ में है।

एकादश अध्याय

बेलुड़ मठ में दुर्गोत्सव और दक्षिणेश्वर में वन-भोजन

(1)

श्री म मॉर्टन के तीन तल के उत्तर के कमरे में लेटे हुए हैं। शरीर अस्वस्थ है। लेटे लेटे ही कथामृत के प्रूफ देख रहे हैं। कापी पकड़ी हुई है जगबन्धु ने। प्रथम भाग का शेष फॉर्म देखना समाप्त हुआ, शान्ति उसे लेकर बालकृष्ण प्रैस में गए। अब अपराह्न छह।

दो तल की सीढ़ी के दाईं ओर के कक्ष में भक्तगण प्रतीक्षा कर रहे हैं। आज 14 अक्तूबर, 1923 ई०, 27वां आश्विन, 1330 (बं०) साल। रविवार होने के कारण अनेक ही आए हैं। भाटपाड़ा से ललित बाबू आए हैं और आसाम के एक डाक्टर काफी देर से बैठे हैं। पाइकपाड़ा से भी एक भक्त आये हैं। अस्वस्थ शरीर लेकर ही छह बजे के पश्चात् श्री म दो तल पर उतरे, और आनन्द से ईश्वरीय बातें करने लगे।

आसाम के डाक्टर—ईश्वर, ब्रह्म क्या है ?

श्री म—वह बात क्या मुख से बोली जाती है ? ठाकुर से पूछने पर कहते, यह बोलने की चीज नहीं। जिसको दर्शन हुआ है वही जानता है। तपस्या करनी चाहिए, निर्जन में गोपन में व्याकुल होकर रो रोकर। ठाकुर स्वयं करके दिखा गए हैं। पंचवटी में पड़े रहते। कितने सांप ऊपर से चले जाते, होश नहीं। उन्होंने सोलह आना किया था, औरों को तो दो-चार आना करना ही उचित।

उपनिषद् में है- young (युवक) ऋषिगण समिधा हाथ में लेकर वृद्ध ऋषि के निकट उपस्थित हुए। देखते ही बोले, तुम बेटा, एक बरस तपस्या करके आओ तब प्रश्न पूछो। ऐसा ही व्यापार है। एक बरस तपस्या कर ले तभी प्रश्न ठीक होता है। नहीं तो

बोलना कुछ था, कह दिया कुछ। yonng (युवक) ऋषिगण शास्त्र आदि पढ़कर गए थे कि ना। एक बरस तपस्या माने चेष्टा करने पर ही तब जिज्ञास्य विषय स्थिर होगा। तब ही फिर जिज्ञासा ठीक होती है।

ठाकुर कहते, इस कलकत्ता के लोग बड़े लैक्चर देते हैं। बीडन स्ट्रीट में एक लड़का लैक्चर दे रहा था। ठाकुर सुनकर बोले, ओ मां, इसी बीच सब हो गया—उसका यौवन, बार्धक्य। लैक्चर देने से सुनेगा कौन? शशधर पण्डित एक जन थे, ठाकुर ने उनसे पूछा, सुना है तुम लैक्चर देते हो। आदेश पाया है क्या? उन्होंने उत्तर दिया, नहीं। ठाकुर बोले, तब तुम्हारी बात सुनेगा कौन? ऐसा ही काण्ड है।

ठाकुर कहते, भगवान दर्शन के उपरान्त जो जन काज कर्म करते हैं, वे केवल उनके आदेश से करते हैं; जैसे नारद, शुकदेव आदि। शुकदेव ने नारद से सुना, भगवान ने कहा है, शुकदेव परीक्षित को भागवत सुनायेंगे। जभी उन्होंने भागवत सुनाई थी। उससे सब जीवों का ही कल्याण हुआ। आदेश जिन्होंने पाया है, उन्हें ये सब कर्म करने में दोष नहीं। आदेस पाने से मूर्ख के कण्ठ में सरस्वती निवास करती हैं। ईशु की बात सुनकर, वे बारह बरस के किशोर थे, तब बड़े बड़े पण्डित लोग अवाक् हो गए थे। ज्यूज (यहूदियों) के बड़े बड़े डाक्टरों ने कहा था, 'Is not this the carpenter's son? Whence then hath this man all these things? Never man spoke like this man. For he taught them as one having authority. बढ़ई जोसेफ के इस निरक्षर लड़के में इतना ज्ञान कहां से आया? सब अलौकिक व्यापार!

शुकलाल, शची, योगेन और छोटे ललित ने एक संग गृह में प्रवेश किया।

श्री म (शुकलाल के प्रति)—Question (प्रश्न) हुआ था क्या काम करूँ? ठाकुर सुनकर बोले, काम का तो अन्त नहीं। काम करता चित्त शुद्धि के लिए। चित्तशुद्धि सामान्य काज से भी हो सकती है। तो फिर क्या प्रयोजन अधिक करने का? गुरु जो काज करने को कहें,

वह करने से ही बन्धनमुक्त हो जाता है। काज का तो अन्त नहीं, एक के बाद और एक आ जाता है। Success (सफलता) होने पर और भी उत्साह होता है। यही करते करते हठात् एक दिन चला गया। और कुछ भी तो नहीं हुआ। कर्म तो अनन्त हैं। और अनन्तकाल रहेंगे भी। गुरु जो कहें, सो ही हमारे लिए करना उचित।

डाक्टर और विनय ने प्रवेश किया—क्षणिक बाद ही वीरेन्द्र और अमृत आ गए।

श्री म (नवागतों के प्रति)—छोकरे दो एक पन्ने अंग्रेजी पढ़कर 'duty duty' कर्त्तव्य, कर्त्तव्य करते हैं। किसी की ड्यूटी कौन करता है, उसकी नहीं खबर।

उस देश (वैस्ट) में एक कहावत है "dying in harness" घोड़ा गाड़ी खैंचते खैंचते लगाम सहित हठात् मर गया। अर्थात् काज करते करते मर गया। मैक्समूलर ने हिबर्ट लैक्चर में इसी बात की समालोचना की है। क्या बहादुरी है ऐसी बातों में ?

ऋषि जो कह गए हैं—ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, कैसा सुन्दर है! सब छोड़कर केवल वही काम करता है कि जिससे उनका लाभ हो। ऋषियों के वाक्य सब सत्य।

मैक्समूलर यहां के ही व्यक्ति हैं। ठाकुर ने उन्हें उस देश में भेजा था। ऋषियों का धर्म उस देश में प्रचार करेंगे इसीलिए। ठाकुर क्या केवल इण्डिया के लिए ही सोचते हैं। योरोप, अमेरिका के लिए भी सोचते हैं। सब ही तो उनके हैं। जभी मैक्समूलर को वहां पर रखा। सुना जाता है आजकल जर्मनी के bettermind (मनीषीगण) इण्डिया की ओर दृष्टि किए हुए हैं।

आसाम के डाक्टर (अस्पष्ट भाव से)—तो फिर हमारे जीवन का उद्देश्य है भगवान लाभ करना ?

श्री म—ठाकुर बोलते, ईश्वर दर्शन ही मनुष्य जीवन का सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य है। अनेक ही hallucination (मन का भ्रम) कहते थे ठाकुर के दर्शन आदि को। ठाकुर के मां से (जगदम्बा से) पूछने पर मां बोलीं, वह कैसे होगा बेटा ? मैं जो बोलती हूं वह सब ही

तो मिलता जो रहा है। जगदम्बा, ईश्वर ठाकुर को दर्शन देकर ठाकुर के मुख द्वारा जो जो बातें बोलते हैं, वे सब ही तो फिर मिलती जा रही हैं, वास्तव में हो रही हैं। तो फिर कैसे मन का भ्रम कहा जाय ?

आसाम के डाक्टर—हम कितने धन्य हैं। इनके श्री मुख से ये सब बातें सुन रहे हैं ?

श्री म—धन्य क्या केवल एक प्रकार से ही ! विवेक चूड़ामणि में है, प्रथम, धन्य मनुष्य देह लाभ ! द्वितीय, मुमुक्षत्व—ईश्वर के लिए व्याकुल ! तृतीय, इस देश में जन्म। जहां पथ घाट तथा सड़क पर निकलते ही उद्दीपन होता है। यही देखिए न कल (विल्वषष्ठी) से यह कलकत्ता शहर कैलाश सदृश हो जाएगा। गली गली में जगदम्बा की पूजा होगी। कलकत्ता अब स्वर्ग सदृश हो जाएगा। और कितने महापुरुष इस देश में हैं। रास्ते घाट में सर्वत्र साधुदर्शन होता है। उन्हें देखने से भगवान की याद आती है। और कहां मिलेगा जगत् में ऐसा ?

वैस्ट में क्या है ? भोग और भोग। यहां पर प्रधान बात है त्याग। उस देश की civilisation (सभ्यता) भोगप्रधान है, भारत की सभ्यता त्यागप्रधान है।

चतुर्थ धन्य, अवतार आए हैं यहां पर एकदम टाटका (ताजा)। परमहंस देव अवतार थे कि ना ? उनको क्या फिर किसी ने बनाया था अवतार ? जैसे पांच जन मिलकर अवतार खड़ा करते हैं आजकल। आहा, वैसा होने से क्या वे कृतार्थ हो जाते, नहीं ऐसा नहीं। ठाकुर स्वयं बोले हैं, 'मैं अवतार।' अर्जुन ने कहा था श्रीकृष्ण से, जब तुम कहते हो कि तुम अवतार हो, तो अवतार ही हो '—स्वयं चैव ब्रवीषि मे।' (गीता 10 : 13) यह क्या मनुष्य का बनाया अवतार ?

श्री म (भक्तों के प्रति)—ब्रजेन्द्र बाबू के घर में एक पुस्तक में पढ़ा था, (प्रथम विश्व) युद्ध के समय ब्रिटिशों का युद्ध का दैनिक खर्च बढ़ते बढ़ते डेढ करोड़ से तीन करोड़ हो गया। फ्रांस, जर्मनी

सब का ही ऐसा खर्चा हो गया था। अन्त में वे कहते हैं, 'अंग्रेज लोग इण्डिया से क्या लाए ? यही ना, कितने ही 'कडर मडर,' माने रुपया पैसा। और यही तो उस पैसे का परिणाम—काटाकाटी, मारामारी। रक्त शोषण करके लाए थे और मारकाट पर अब खर्च हुआ। क्या लाभ हुआ, सब तो गया। और बीच से दूसरों के हिंसा द्वेष के पात्र हो गए। उनके पास जो अमूल्य धन, अतुल ऐश्वर्य eternal life अमृतत्वम् है उसका संधान नहीं पाया। वह व्यक्ति जो भी हो सज्जन है।

श्री म (भाटपाड़ा के ललित के प्रति)—हां, ललित बाबू, आपकी गाड़ी का समय हो गया क्या ? समय हो तो आप वही दुर्गा की प्रार्थना ही बोलिए ना।

ललित आवृत्ति कर रहे हैं—

न मंत्रं नो यंत्रं तदपि च न जाने नूतिमहो।
परं जाने मातस्तदनुसरणं क्लेशहरणम्॥* इत्यादि।

सब उसको सुन रहे हैं और ध्यान कर रहे हैं। आवृत्ति शेष हुई। पुनः ईश्वरीय कथा चल रही है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—स्वामी विवेकानन्द कुछ दिन काली का ध्यान करके बोले, महाशय, मेरा कुछ नहीं हो रहा है। ठाकुर बोले, होगा धैर्य धर कर करो। और बोले, तुम जिसे ब्रह्म कहते हो, मैं उसे ही काली कहता हूं।

ठाकुर तब काशीपुर में अस्वस्थ थे। एक जन ने कहा, "दक्षिणेश्वर चलिए ना।" ठाकुर ने पूछा, 'क्यों ?' उसने उत्तर दिया, "मां हैं वहां ?" ठाकुर बोले, 'मां क्या यहां नहीं ?'

बड़े ललित ने प्रणाम करके विदा ली। श्री म भी आहार करने के लिए ऊपर गए। अब पौने आठ। जाते समय कह गए, देवी भागवत पाठ हो जाए। भक्तगण देवी भागवत पाठ सुनते हैं।

*मां, मैं मंत्र यंत्र, स्तुति आदि कुछ भी नहीं जानता, किन्तु तेरा अनुसरण क्लेशहारी है, यह जानता हूं।

अन्तेवासी कुछ क्षण परे ऊपर जाकर श्री म से कहते हैं, भक्तों की इच्छा है, आज नीचे आप फिर न जायें—शरीर अस्वस्थ है। वे सब प्रणाम कह रहे हैं।

श्री म फिर नीचे नहीं आये। सभा भंग हुई नौ बजे। डाक्टर की गाड़ी में विनय और जगबन्धु आज काशीपुर जा रहे हैं।

अगले दिन बिल्वषष्ठी। विनय और जगबन्धु काशीपुर से प्रथम स्टीमर से मठ गये। तीन के समय वे मॉर्टन स्कूल में लौट आए। मध्याह्न भोजन डाक्टर के घर काशीपुर में किया। श्री म तीन तल के बरामदे में बैठे हैं दक्षिण की ओर मुख किए बेंच पर। पास ही प्रभास बाबू, श्री म के जमाई योगेन बाबू एवं दोनों के लड़के सब खड़े हुए हैं। श्री म उनके संग कुछ क्षण बातें करके भक्तों को लेकर पश्चिम के कमरे के उत्तर के दरवाजे के सामने बरामदे में चेयर पर बैठे कथावार्ता कर रहे हैं। विनय और जगबन्धु पश्चिम के कमरे के भीतर बैठे हैं। मठ की सब खबर तन्न तन्न (पुंखानुपुंख) करके ली। श्री म बोले, "आहा, सुकुल महाराज चले गए। साधु के लिए फिर कौन रोता है ? कितने दिनों से कह रहे थे—complain कर रहे थे शरीर ठीक नहीं है।"

नीचे अमहर्स्ट स्ट्रीट से कुली एक स्टीम रोलर खींचकर ले जा रहे हैं। परिश्रमलाघव के लिए दो दलों में विभक्त होकर 'सारिगान'* गा रहे हैं। बढ़िया सुनाई दे रहा है। श्री म सुन रहे हैं और क्या सोच रहे हैं—चक्षु स्थिर। गम्भीर निश्वास छोड़कर दुःखपूर्ण स्वर में बोले, कैसा सुन्दर गा रहे हैं वे लोग। मानो कहते हैं, "शरीर धारण करने पर परिश्रम करना ही होगा। दुःख कष्ट रहेगा ही—विषण्ण मत होओ।"

गदाधर ठाकुरबाड़ी से फल मिठाई प्रसाद लेकर आए। श्री म ने भक्तों के संग उसे ग्रहण किया। विनय और जगबन्धु को पुनः मठ में भेज दिया। अब की बार शची भी संग में गए। मठ में आज देवी-बोधन है। ठाकुर-घर के बरामदे में बोधन का आयोजन हो रहा है। ब्रह्मचारी क्षुदिराम पूजक और स्वामी प्रणवानन्द तंत्रधारक हैं।

*'सारिगान' = सुग्गी का गाना। 'शुक-सारि' गीति है।

(2)

बेलुड़मठ आनन्द की हाट। आज दुर्गापूजा आरम्भ हुई है। सप्तमी तिथि। ठाकुर-घर और मठवाड़ी के मध्यस्थल पर होगला* का मण्डप तैयार हुआ। नाना रंगों के वस्त्रों से मण्डप का अभ्यन्तर सुसज्जित है।

मां दुर्गा की मृण्मयी मूर्त्ति उज्ज्वल पीतवर्ण। दशहस्ते दस हथियार। मूर्त्ति आठ फुट ऊंची। मां के दायें और बायें लक्ष्मी और सरस्वती, गणेश और कार्त्तिक। पदतले महिषासुर। देवी सिंह-वाहिनी। पृष्ठभूमि में शिव आदि देवगण समाधिस्थ।

यह दुर्गोत्सव बंगालियों का जातीय उत्सव है। संन्यासी लोग प्रायः उसे नहीं करते। स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका से लौटकर इस जातीय उत्सव में ब्रह्मशक्ति की अर्चना सम्पादन करके जाति के नवजागरण का सूत्रपात किया है। श्री रामचन्द्र ने जैसे महादेवी श्री दुर्गा की पूजा करके उनके आशीर्वाद से रावण का वध किया था, स्वामी जी ने भी क्या बंगालियों तथा भारत के तमोरूपी असुर का विनाश करने के लिए देवी की अर्चना की ? आज तक प्रायः प्रतिवर्ष मठ में यह पूजा चल रही है।

बहु भक्त कलकत्ता से आए हैं पूजा दर्शन के संकल्प से। सुगन्ध धूपधूना और पुष्पादि के सौरभ से मठभूमि भरपूर है। भक्तगण सम्मुख बैठे पूजा दर्शन कर रहे हैं। कोई कोई काली कीर्तन कर रहे हैं। ठाकुर की अनेक सन्तानें उपस्थित हैं। महापुरुष महाराज (स्वामी शिवानन्द) मठ में ही रहते हैं। शरत महाराज (स्वामी सारदानन्द) और काली महाराज (स्वामी अभेदानन्द) कलकत्ता से आए हैं!

पुजारी मठ के ही एक ब्रह्मचारी, गरद (रेशमी वस्त्र) पहने हुए आसन पर बैठे हैं, पास ही तंत्रधारक मठ के एक संन्यासी हैं। पूजामण्डप से देवी का ध्यान मंत्र सुनाई देता है:—

*होगला = जल का एक पौधा जिससे छप्पर छाया जाता है या चटाई बनाई जाती है।

ॐ जटाजूटसमायुक्तां अर्धेन्दुकृतशेखरां।
लोचनत्रयसंयुक्तां पूर्णेन्दुसदृशाननाम् ॥
अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनां।
नवयौवनसम्पन्नां सर्वाभरणभूषिताम् ॥

× × × ×

अष्टाभिः शक्तिभिस्ताभिः सततपरिवेष्टिताम्।
चिन्तयेत् जगतां धात्रीं धर्मकामार्थमोक्षदाम् ॥

श्री म ने अभी मठ में आगमन किया है? वीरेन बोस की मोटर में। अब बारह बज गए हैं। मठवाड़ी के उत्तरपूर्व के कोने के कक्ष में, 'विजिटर्ज रूम' में भजन हो रहा है। वहां पर काली महाराज आदि बैठे हैं। "उच्चांगेर भजन" चल रहा है। श्री म को देखते ही, "अरे ये तो मास्टर महाशय, आइए आइए," कहते हुए आसन छोड़कर उठ खड़े हुए एवं दोनों ने परस्पर गाढा आलिंगन किया। महापुरुष महाराज ने अपने हाथ से एक गद्दी बेंच पर बिछा दी। दोनों जन बैठ गए। देखते ही देखते काली महाराज, खोका महाराज (स्वामी सुबोधानन्द) और किशोरी बाबू 'अबदुल' आ उपस्थित हुए।

काली महाराज के संग अनेक बातें होने लगीं। श्री म उनकी देह को दबाते हुए पूछ रहे हैं, कैसे हो? काली महाराज हाथ बढ़ाकर बोले, "यह देखिये मेरा हाथ।" श्री म नाड़ी देखते हैं। इस प्रकार नाना हंसी-मजाक होने लगा।

काली यहाराज—आपका शरीर कैसा है?

श्री म—For an old man (एक वृद्ध व्यक्ति का) जैसा होता है, वही।

काली महाराज—मास्टर महाशय, बूढ़ा क्या कहते हैं आप! अच्छा बताइए आप बूढ़े हैं? आत्मा का बूढ़ा जवान है क्या?

श्री म (सुर से, हंसी मजाक से)—वि-चा-र करो ना। वि-चा-र करो ना।

श्री म (भक्तों के प्रति)—शायद ठाकुर मन्दिर बन्द हो गया है।

श्री म (काली महाराज के प्रति)—तुम जयरामवाटी कितनी बार गये ?

काली महाराज—दो वार। एक बार आपकी स्त्री आदि संग गई थीं। आँटपुर जाना हुआ था।

श्री म अब उठकर मठ का भंडार, रंधनशाला, बाग, पाखाना सब देखते हैं। उत्सव की रंधनशाला भी देखी।

देवी की पूजा और भोग हो गया है। अब आरती हो रही है। उसके उपरान्त ही विस्तृत प्रांगण में भक्तगण प्रसाद पाने के लिए बैठे—प्राय: डेढ़ सहस्त्र पुरुष। पास के "सोनार बागान" में स्त्री भक्तगण बैठी हैं। वे भी पांच सौ से अधिक।

स्वामी शिवानन्द, सारदानन्द, अभेदानन्द, सुबोधानन्द, किशोरी बाबू, मास्टर महाशय आदि ठाकुर की साक्षात् सन्तानें एक संग गंगा तट के द्वितल के बरामदे में आकर बैठ गए—बड़े बेंच पर। सम्मुख पतितपावनी जाह्नवी। "लॉन" में भक्त कोई बैठे हैं, कोई दक्षिणेश्वर दर्शन कर रहे हैं। उत्तरपूर्व कोण में गंगा के अपर पार से झाउ-वृक्षों का अग्रभाग और मंदिर-शीर्ष सुन्दर दर्शन हो रहा है। अब अपराह्ण प्राय: चार।

अमेरीकी महिला मिस मैकलिओड आ उपस्थित हुईं। श्री म ने उठकर उनकी अभ्यर्थना करके पास बिठा लिया। वे वृद्धा महिला स्वदेश और स्वजन छोड़ भगवान के लिए यहां पर वास करती हैं। मठ में ही रहती हैं। स्वामी जी की अमेरिका की विजय के फल हैं ये लोग।

हाथ मिलाने के पश्चात् आनन्द से ये लोग बातें करते हैं।

Miss Macleod—Well Mr. M., Why do you not write about Swamiji ? Only you have written about Ramakrishna.

M.—The key is in His hand. One day in the Cassipore gardens Swamiji had the transcendental experience by Thakur's grace. Then Thakur remarked, "I hold the key. The treasury will not be opned

until you have finished my work.' So the key rests with Sri Ramakrishna.[1]

Miss Macleod—Well Mr. M., what was the most outstanding feature of Sri Ramakrishna ?

M.—God-consciousness ! Not for a single moment he lost it.

स्वामी अभेदानन्द आकर उसी बेंच पर बैठ गए ।

Miss Macleod (to Swami Abhedananda)—Well, what was the most outstanding feature of Sri Ramakrishna ?

वे प्रश्न समझ नहीं पाए, तभी दुबारा बोलीं ।

Miss Macleod—Mr. M. says he was always God-conscious. What was he to you ?

Smami Abhedananda—A God-intoxicated man !

Miss Macleod—And how did be teach—by question and answer, or how ?

---

[1]मिस मैकलिओड—अच्छा, मिस्टर एम (श्री म) आप स्वामी जी के सम्बन्ध में क्यों नहीं लिखते ? आपने केवल श्री रामकृष्ण के सम्बन्ध में ही लिखा है ।

श्री म—चाबी ठाकुर के हाथ में है । काशीपुर बागान में ठाकुर की कृपा से स्वामी जी को एक दिन निर्विकल्प समाधि हुई थी । तब ठाकुर ने कहा था, 'चाबी मेरे हाथ में । जब तक तुम मेरे कार्य को शेष नहीं करते तब तक खजाना बन्द रहेगा ।' जभी कहता हूं सब कार्यों की चाबी श्री रामकृष्ण के हाथ में है ।

मिस मैकलिओड—अच्छा, मिस्टर एम श्री रामकृष्ण के जीवन का सर्वश्रेष्ठ वैशिष्ट्य क्या है ?

श्री म—निरवच्छिन्न ब्रह्मज्ञान । एक मुहूर्त के लिए भी वे ब्रह्मचैतन्य से विच्युत नहीं हुए ।

Swami Abhedadanda—No, he would go on speaking, and by that our questions were being answered of themselves. Once I asked him how did be know what was passing on in our mind? He told us, 'I can see everything through your eyes, your eyes are like glass windows.'*

अब स्वामी सारदानन्द आ गए। फिर वही प्रश्न किया।

Miss Macleod—Well Swami Saradananda, what was the most outstanding feature of Sri Ramakrishna?

वे भी प्रश्न भलीभांति नहीं समझ पाए। तभी पुनः बोलीं।

Miss Macleod—Mr. M. says, God-consciousness.

Swami Saradananda—Yes, that was the principal aspect. But there were other sides also according to the particular temperament of the bhaktas.*

M.—All ideals were centred round him.

---

*मिस मैकलिओड (स्वामी अभेदानन्द के प्रति)—अच्छा आपको श्री रामकृष्ण चरित्र की कौनसी दिशा सर्वश्रेष्ठ लगती है ?

मिस मैकलिओड—मिस्टर एम कहते हैं वे निरवच्छिन्न ब्रह्मज्ञान थे। आपके लिए वे क्या थे ?

स्वामी अभेदानन्द—ब्रह्ममद में मतवाले एक मनुष्य के रूप में।

मिस मैकलिओड—और किस प्रणाली से वे शिक्षा देते—प्रश्नोत्तर द्वारा अथवा अन्य उपाय से ?

स्वामी अभेदानन्द—नहीं, वे अपने मन से बोलते जाते। इससे ही हमारे सब प्रश्नों का समाधान होता जाता। एक दिन मैंने उनसे पूछा, कैसे वे हमारे मन की बातें जान लेते हैं। इस पर उन्होंने उत्तर दिया, मैं तुम्हारी आंखें देखकर सब जान लेता हूं। तुम्हारी आंखें मानो कांच की खिड़कियां हैं।'

मिस मैकलिओड—अच्छा स्वामी सारदानन्द, श्री रामकृष्ण के जीवन का उज्ज्वलतम भाव क्या था ?

मिस्टर एम. कहते हैं, निरवच्छिन्न ब्रह्म चेतनता।

Miss Macleod (nodding)—Yes, true !*

अब श्री म गंगा के घाट पर बैठे हैं। गंगा स्पर्श और प्रणाम कर रहे हैं। इस समय हाथ में जप कर रहे हैं। फिर अंगोछा पॉकेट से निकालकर जल में भिगो रहे हैं। अब ऊपर चढ़ रहे हैं।

घाट के ऊपर पोस्ता पर स्वामी अभेदानन्द प्रतीक्षा कर रहे हैं—संग में मि० डाउलिंग हैं। श्री म के ऊपर चढ़ आने पर साहब का उनके साथ परिचय करवा दिया। दो चार बातों के पश्चात् पुनः स्वामी अभेदानन्द श्री म के संग बातें कर रहे हैं।

स्वामी अभेदानन्द—मास्टर महाशय आप बूढ़े, कहते क्या हैं? बोलो, आपकी आत्मा बूढ़ी हुई है ? आप जन्म की खबर रखते हैं क्या, सुना है कभी ? किन्तु मैं ऐसा मन में नहीं सोचता। "बूढ़ा बूढ़ा" करने पर बूढ़ा हो जाता है।

श्री म (सहास्य)—उसके लिए ही क्या भाग आए हो अमेरिका से—गले में कुछ होने की संभावना से ?

गुरुभाइयों के मध्य हंसी दिल्लगी का अभाव नहीं—उपहास परिहास कितना कुछ ! ठाकुर की भांति उन सबका भी भाव सरस है। इन सब के भीतर भी यिशेष देखने का एक विषय है। परस्पर कैसी श्रद्धा और प्रेम ! एक दूसरे को मानो ठाकुरवत् ही श्रद्धा करते हैं और प्यार करते हैं। हंसी तमाशा करते करते श्री म और स्वामी अभेदानन्द मठ के बरामदे में आ उपस्थित हुए। मि० डाउलिंग ने विदा ली।

मिस मैकलिओड श्री म के संग दक्षिण की ओर जा रही हैं। श्री म को अपने आवास स्थल "गेस्ट हाउस" में ले जाएंगी। मठ की दक्षिण सीमा पर दो तल पर है उनका निवास। श्री म मां के मन्दिर को प्रणाम और प्रदक्षिणा करते हैं।

---

*स्वामी सारदानन्द—हां, उनका सर्वप्रथम भाव तो वही था निश्चय ही किन्तु भक्तों की रुचि अनुसार उनमें और भी असंख्य भाव प्रकटित हुए थे।

श्री म—सब महान् आदर्शों का समन्वय विग्रह श्री रामकृष्ण थे।

मिस मैकलिओड (सिरसंचालनपूर्वक)—हां सच है।

श्री म "गेस्ट हाउस" के द्वितल पर। भक्तिमती मैकलिओड अमेरिका से एक तख्तपोश ले आई हैं। उस पर सुन्दर बिछौना है। उसके सम्बन्ध में बातें हो रही हैं।

Miss Macleod—On this couch Swamiji (Swami Vivekananda) used to sleep in our house.[1]

M.—(touching and saluting) My hairs stand on their ends to touch it[2]

Miss Macleod (to M.)—Look here. How beautiful is the image of Swamiji on this glass ! And it was presented to me from the Bangalore jail.[3]

श्री म के साथ अनेक भक्त हैं, वे भी स्पर्श और प्रणाम करते हैं। स्वामी जी की एक प्रतिमा कांच में ढली हुई है।

एक चन्दन की लकड़ी का toy-couch (खिलौना तख्तपोश) श्री म के हाथ में दिया। उसके पश्चात् इंग्लैंड के स्टाफोर्ड (stafford) नामक स्थान के महाकवि शेक्सपीयर के गृह की एक फोटो देख रहे हैं। यह गृह अब मिस्टर और मिसिज़ लिगेट ने खरीद लिया है। ये अमरीका के विशिष्ट भक्त श्रीमती मैकलिओड के भगिनीपति और भगिनी हैं। उसी मकान की बातें हो रही हैं।

Miss Macleod—We have installed a stone statue of Swamijj there. That room is named, 'Prophet's Chamber.' The Holy Mother gave me a pitcher. That is also preserved there.[4]

---

[1]मिस मैकलिओड—हमारे गृह में स्वामी जी इसी तख्तपोश पर शयन किया करते थे।

[2]श्री म (तख्तपोश स्पर्श करके प्रणाम के बाद)—तख्तपोश स्पर्श करने मात्र से मेरा शरीर रोमांचित हो रहा है।

[3]मिस मैकलिओड (श्री म के प्रति)—यह देखिए कांच के ऊपर अंकित कैसी सुन्दर छवि स्वामी जी की है। बंगलोर जेल से मुझे यह उपहार मिला था।

[4]हमने स्वामीजी की एक पत्थर की मूर्ति शेक्सपीयर वाले इस घर में स्थापित की है और उसी कमरे का नाम रखा है, "प्रोफेट्स चैम्बर" (पैगम्बर-गृह) श्री श्री मां ने मुझे एक पीतल की कलसी दी थी वह भी उसी गृह में रखी हुई है, मां की पुण्य स्मृति के रूप में।

स्वामी जी ने अमेरिका में एक पाइन वृक्ष के नीचे खड़े होकर वक्तृता दी थी। वह वृक्ष अब नहीं है। उसके स्थान पर दूसरा एक पाइन वृक्ष उत्पन्न हो गया है। इस वृक्ष के कई एक पत्ते पवित्र स्मृति चिह्न स्वरूप हैं—मानो यक्ष का धन। भक्ति से गद्‌गद् स्वर में मिस मैकलिओड श्री म से कह रही हैं, 'These are the few leaves of Swamiji's pine. Are they not the sacred relics of Swamiji ?'

M.—Yes, very very sacred !*

श्री म ने नंगे पांव सम्मानयुक्त हाथ से उन पत्तों को ग्रहण करके मस्तक पर धारण किया। साधु और भक्तगण भी स्पर्श और प्रणाम करते हैं।

अब विदाई। मिस मैकलिओड आकर सीढियों के पास खड़ी हो गईं। श्री म ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया। भक्तों ने भी हाथ जोड़कर नमस्कार किया। श्री म के इंगित से वे लोग पुनः भूमिष्ठ होकर मिस मैकलिओड को प्रणाम करते हैं। बाहर आकर श्री म बोले, "भारत के भक्ति शास्त्र में शुद्धा, प्रेमा भक्ति का उज्ज्वल दृष्टान्त हैं गोपीगण। वे ही अब इन सब भक्तिमती महिलाओं के रूप में जन्मी हैं। अभी हम लोगों की प्रणम्या हैं। ठाकुर गोपियों का नाम होते ही सिर नीचा करके प्रणाम किया करते थे।"

प्रेमानन्द मैमोरियल के नीचे के तल के उत्तर का टाइलों का बरामदा। पास का कमरा डिस्पैंसरी है। उसी बरामदे में बैंच पर श्री म बैठे हैं। पास के अन्य एक कमरे से स्वामी धर्मानन्द बाहिर निकले—हाथ में लाठी, उस पर भार देकर आए हैं। वे अस्वस्थ हैं। श्री म को प्रणाम करके कहते हैं, 'आपने संतप्त लोगों को कितनी शांति दी है।' श्री म ने उत्तर दिया, 'ठाकुर आए थे इसीलिए। ये सब उनका काज, उनकी ही महिमा। मनुष्य यंत्र, वे ही यंत्री।'

*(और देखिए, स्वामी जी के पाइन वृक्ष के ये कुछ पत्ते—कैसा पवित्र निदर्शन उनकी पुण्य स्मृति का। क्यों, क्या नहीं ?)

(श्री म—निश्चय। उनकी पुण्य स्मृति का अति पवित्र निदर्शन हैं ये।)

अब संध्या छह। श्री म मोटर में बैठे हैं। मुक्तकरों से साधुओं और भक्तों को प्रणाम कर रहे हैं। मोटर चल दी, संग में वीरेन।

(3)

आज दुर्गा नवमी। 18 अक्तूबर, 1923 ई०। भक्तों ने आज श्री दक्षिणेश्वर में वन-भोजन का आयोजन किया है। उनमें से अनेक ही दुर्गा पूजा के लिए मठ में वास कर रहे हैं। अति प्रत्यूषे भोर में प्रथम जहाज से सुखेन्दु, छोटे जितेन, मनोरंजन, राखाल, छोटे नलिनी, अमृत और गदाधर दक्षिणेश्वर चले गए हैं। शची और जगबन्धु दस वाले स्टीमर से मठ से गए। उसके कुछ क्षण बाद दुर्गापद, डाक्टर, छोटे ललित और बड़े नलिनी आ गये। प्रायः साथ साथ शुकलाल भी आ उपस्थित हुए। ये प्रचुर संदेश और रसगुल्ले लाए हैं। श्री म आए साढे ग्यारह बजे डाक्टर की घोड़ागाड़ी में। संग बड़े जितेन और विनय हैं।

श्री म ने नंगे पांव ठाकुर के कमरे में प्रवेश किया। प्रणाम और प्रदक्षिणा करके मां काली के मंदिर की ओर जा रहे हैं। पथ में विष्णु मन्दिर में श्री राधाकान्त को प्रणाम करके चरणामृत लिया। सामने ही द्वादश शिव मन्दिर हैं। महादेव के उद्देश्य में हाथ जोड़कर अभिवादन किया। और फिर मां काली के मन्दिर में। बरामदे में देवी को दाएं हाथ रख, भूमिष्ठ हो प्रणाम करके, दरवाजे के पश्चिम की ओर उत्तरास्य बैठ, आंखें बन्द किए ध्यान कर रहे हैं। इस मन्दिर में रामलाल दादा का ज्येष्ठ पुत्र नकुल पुजारी हैं। वे पास आकर बोले, "जेठामोशाय, प्रसाद निन्।" (ताऊ जी, प्रसाद लीजिए।) नकुल ने श्री म के ललाट पर सिन्दूर का तिलक अंकित किया, और हाथ में चरणामृत दिया।

श्री म नट मन्दिर में टहल रहे हैं। पश्चिम की ओर से भीतर के स्तम्भों की प्रदक्षिणा की। अमृत ने पूछा, "आपने कहां ठाकुर को देखा था, जब पूछा कि आज और गान होगा क्या?" मध्यस्थ दिखाकर बोले, "यहां पर।"

अब प्रांगण पार होकर "चांदनी" में से श्री म गंगा के बड़े घाट

पर उतरे। गंगा जल स्पर्श और मस्तक पर धारण करके हाथ मुख धो लिए। उसके पश्चात् प्रणाम करके हाथ पर जप कर रहे हैं।

लौटते हुए रास्ते में ठाकुर के कमरे के गोल बरामदे की सीढ़ी पर हाथ छुआकर मस्तक पर लगाया। नहबत में दरवाजे के सामने बाहर खड़े होकर मस्तक द्वारा प्रणाम किया। अति दुखित कण्ठ से बोले, "मां ठाकुरुण सारा दिन इसी सीढी पर बैठीं जाप किया करतीं। बैठे बैठे वात (रोग) हो गया। वह फिर सारा जीवन गया ही नहीं। इतना सा कमरा, सारा चीजों से भरा रहता। भक्त स्त्रिएं भी कोई कोई रहतीं। और फिर पानी में मछलिएं भी— कल-कल शब्द हो रहा है। ठाकुर के लिए झोल होगा। उः कैसा अमानुषिक धैर्य, सहिष्णुता, कैसा संयम, कैसा त्याग और कैसी सेवा!"

श्री म ने बकुलतला के घाट पर भूमिष्ठ होकर प्रणाम किया। फिर ठाकुर के निजहस्तरोपित पंचवटी के पत्र समूह स्पर्श किये और भूमिष्ठ होकर पंचवटी के मूल में उत्तर दिशा में प्रणाम किया। ठाकुर की ध्यान कुटीर के बरामदे के प्रान्त को स्पर्श और प्रणाम करके ऊपर चढ़े एवं बन्द कमरे के दरवाजे को स्पर्श करके प्रणाम किया। नीचे उतर कर उसी कुटीर की प्रदक्षिणा कर रहे हैं। पूर्व दिशा के बन्द जंगले की फांक से दर्शन और प्रणाम करके दक्षिण के उन्मुक्त जंगले में से कमरे के भीतर दर्शन किया। अब एक शिव मूर्ति रखी है। "ठाकुर के समय भीतर कुछ भी नहीं था। यह घर ही नहीं था। माटी का कोठा था।" यह कहकर सामने वाली विस्तृत गोलाकार वेदी परिक्रमा करके ठाकुर के साधनपीठ पुरातन वट वृक्ष तले उपस्थित हुए।

श्री म बोले, "पहले इस स्थान पर नीलकर साहेब लोग रहते थे। यह वट वृक्ष और वेदी उसी समय की है। यही वेदी ही ठाकुर का आदि साधन पीठ है।" श्री म वेदी परिक्रमा करते हैं। पश्चिमोत्तर कोने से डेढ़ हाथ दक्षिण में मस्तक द्वारा प्रणाम किया। जिसके नीचे वेदी के ऊपर बैठकर ठाकुर घोर तपस्या किया करते थे। वटवृक्ष की उसी शाखा को आलिंगन किया और बार-बार प्रणाम किया। यही शाखा ही आश्विन के झड़ तूफान में टूट गई थी एवं गंगा की ओर

वेदी के ऊपर बहुकाल से गिरी हुई है। अब सूख गई है। उसके ही अंग से गंगा की ओर नूतन एक और वृक्ष उत्पन्न हो गया है। वेदी के उत्तर पश्चिम कोने में कितने ही दिन लगातार भगवान श्री रामकृष्ण ने इसके ही नीचे बैठकर मां के लिए कितना व्याकुल क्रन्दन किया है, जैसे जननी के लिए शिशु करता है। तत्पश्चात् कितना दर्शन, स्पर्शन और बातें—कितनी दिव्य लीला! यह स्थान अति पवित्र। श्री म विभोर हुए बोल रहे हैं, "शायद, यहां पर बैठने वाला अन्य कोई जन्मा ही नहीं। तभी क्या प्रकृति इस भग्न शाखा द्वारा इस सुपवित्र स्थान की रक्षा कर रही है ?"

वेदी परिक्रमा चल रही है। पूर्व दक्षिण कोने पर मस्तक टेक करके श्री म प्रणाम कर रहे हैं। वेदी पर चढ़ने के लिए दो सीढ़ियां हैं, एक दक्षिण में एक उत्तर में। दोनों ही सीढ़ियां विल्वतला को जाने वाले रास्ते के पास दायें हाथ को हैं। श्री म ने दक्षिण की सीढ़ी के दूसरे, तीसरे और चौथे सोपान पर हाथ स्पर्श करके मस्तक पर लगाया। फिर भूमिष्ठ होकर प्रणाम किया। इस स्थान पर परमहंसदेव प्रायः ही बैठते और श्री चरण रखते। केशव सेन, विजय गोस्वामी आदि भक्तों के साथ यहां पर बैठकर कितनी ईश्वरीय बातें की हैं।

श्री म बेलतला की ओर जा रहे हैं। चलते चलते झाउतला को जाने वाले रास्ते में गंगा की ओर कुछ दूर अग्रसर हो गए। बोले, "इसी स्थान पर (रास्ते के पूर्व की ओर) रेलिंग का एक घेरा था। उसमें पैर अटक जाने से ठाकुर गिर गये। और उससे ही हाथ टूट गया। भाव में थे, शरीर की ओर होश नहीं था।

बिल्वतल। यह श्री रामकृष्ण का अन्यतम महासाधनपीठ है। तंत्र के जितने भी साधन हुए थे प्रायः यहां पर ही हुए। इसी स्थान पर ही उस पंचमुण्डी का आसन स्थापन किया था। विल्ववृक्ष के चारों ओर दो फुट ऊंची एक गोलाकार वेदी है। श्री म पश्चिम दिशा से प्रदक्षिणा कर रहे हैं बिल्ववृक्ष को दायें हाथ रखकर। पूर्व दक्षिण की ओर आकर भूलुण्ठित होकर प्रणाम कर रहे हैं। इसी स्थान पर एक दिन भगवान श्री रामकृष्ण को सशरीर खड़े हुए देखा था। 'श्री म वेदी के ऊपर बैठे ध्यान कर रहे हैं। हृदय में जिनका

ध्यान कर रहे हैं, नयन खोलते हैं, तो उनको ही सम्मुख खड़े हुए देखते हैं। आहा, मनुष्य जीवन में यह दृश्य कितना सुदुर्लभ !' ध्यान-निरत भक्त-प्रवर ध्रुव ने भी एक दिन वृन्दावन में नयन खोलते ही इष्टदेव नारायण को सम्मुख दण्डायमान देखा था। आज तक श्री म नतमस्तक होकर इसी स्थान को प्रणाम करते आ रहे हैं। भक्तों ने कई बार देखा है कि कीचड़मय यह स्थान हो तो भी विना परवाह किये श्री म इस स्थान को भूलुण्ठित होकर प्रणाम करते हैं। आज भी वैसा ही कर रहे हैं।

अब प्रदक्षिणा शेष करके उत्तर की ओर से बिल्ववृक्ष को स्पर्श करके उत्तर दिशा में आसन करके ध्यान करने के लिए उत्तरास्य बैठ गए। चारों ओर बहुभक्त हैं—कोई वेदी के ऊपर, कोई नीचे बैठा है। श्री म बोले, "इस स्थान पर तनिक उनकी चिन्ता कीजिये।" सब ने मण्डली करके कुछ काल ध्यान किया। कुछ काल पश्चात् श्री म निःशब्द उठ गए, वेदी पर दक्षिण की ओर से होकर गुडलियों चढ़कर बिल्वमूल को स्पर्श किया। अब हंसपुकुर की ओर जा रहे हैं। संग दो एक जन भक्त हैं—डाक्टर, जगबन्धु आदि।

लक्ष्मी दीदी यहीं पर ही रहती हैं दक्षिणेश्वर की बाड़ी में। ये ठाकुर की भतीजी और सेविका हैं। मास्टर महाशय के आगमन की बात सुनकर बड़े नलिनी के हाथ प्रसाद भेज दिया—मुड़ि और मुड़की (मुरमुरे और मीठी खीलें)। श्री म ने हंसपुकुर के पूर्व तीर पर खड़े होकर वह प्रसाद ग्रहण किया। भक्त अब भी बिल्वमूल में ध्यान कर रहे हैं।

इस समय श्री म ने कालीबाड़ी में प्रवेश किया। वे रंधनशाला, भंडार, खजांची का घर देख रहे हैं। जगबन्धु और डाक्टर इसी बीच गंगा में डुबकी लगाकर पुनः मां काली के मन्दिर के सम्मुख आकर श्री म के संग मिल गए। होम अभी अभी शेष हुआ है। भोगान्ते आरती हो रही है। मां को प्रणाम करके श्री म ने पुनः ठाकुर घर में प्रवेश किया। छोटी घाट के पूर्व उत्तर कोने के पास श्री म बैठे हैं, यहां से गंगा दर्शन बढ़िया हो रहा है। ठाकुर के सशरीर अवस्थान काल में भी श्री म इसी स्थान पर ही पायदान (पापोश) पर बैठा करते थे।

श्री म ध्यान कर रहे हैं। इतनी देर में ठाकुरघर भक्तमण्डली से परिपूर्ण हो गया। सब ही ध्यान कर रहे हैं। गृह में अब एक प्रशान्त गम्भीर भाव विराजमान है।

अनेक क्षण अतीत हो गए। श्री म की इच्छा से छोटे ललित एक भजन गाते हैं। 'महादेव परमयोगीन महदानन्दे मगन।' रामलाल दादा ने गृह में प्रवेश किया—हाथ में मां काली का "अन्नभोग" का प्रसाद है। श्री म ने उसे हाथ में लेकर माथे से लगाया। डाक्टर ने उसके पश्चात् उसे हाथ में पकड़ लिया। श्री म बोले, "अब वहां का समस्त निवेदन कर दिया जाय।" सब उठ गये। एक जन ने पूछा, "कौन कौन सी छवि ठाकुर के समय की हैं?" श्री म ने उत्तर दिया, (यह राम-सीता), यह (प्रह्लाद), ये सब ही (ध्रुव, ईशु, चैतन्य संकीर्तन)।"

श्री म उत्तर के दरवाजे से बाहिर निकले और बरामदे में कर जोड़े खड़े हैं। जगबन्धु ने पूछा, "स्वामी जी का गाना सुनकर ठाकुर को खड़े हुए कहां समाधि हुई थी?" बरामदे के दक्षिण पूर्व कोने में उनको ले जाकर भूमिष्ठ होकर प्रणाम किया और बोले, "यहां पर ठाकुर खड़े हुए हैं। पीछे दीवार। तब स्थिर, नयन पलकहीन। एक दिव्य आनन्द की छटा मुखमण्डल पर। शांति और प्रेम मानो मूर्त्त हैं।"

उत्तर के बरामदे के पूर्वोत्तर कोने की दीवार पर एक पुष्पलता और मोर कोयले से आंका हुआ है। लोग कहते हैं वह ठाकुर के हाथ का आंका हुआ है। जगबन्धु ने जभी प्रश्न किया, "वह क्या ठाकुर के हाथ का आंका हुआ है?" श्री म बोले, "वैसा ही सुना है।" श्री म का साक्ष्य ऐसा ही। जिसको निज चक्षु से दर्शन नहीं किया, अपने कानों से नहीं सुना, उस विषय पर बोलना पड़े तो इसी प्रकार बोलते, "सुनेछि एइ रूप" "ताइ सुनेछि केउ केउ एरूप बोलेन" इत्यादि। (ऐसा सुना है, वही सुना है, कोई कोई इस प्रकार कहता है।)

अब उसी बरामदे के खुले चबूतरे के उत्तर पूर्व कोने पर हस्त द्वारा स्पर्श करके प्रणाम किया। और बोले, "ठाकुर यहां पर खड़े होकर भक्तों को विदा किया करते थे।"

गाजी तला। यहां पर ही आज की रंधनस्थली है। श्री म ने आकर सब रंधनद्रव्य दर्शन किए। बोले, "पंचवटी में आजकल शायद करने नहीं देते।" भक्त बोले, "हमें देंगे।" श्री म कहने लगे, "ठाकुर रहते वहां पर अनेक बार वैसा हुआ है।" दक्षिणेश्वर का सर्वत्र पवित्र होते हुए भी यह स्थान श्री म के मनःपूत नहीं हुआ। पंचवटी में ठाकुर की स्मृति विशेष भाव से विजड़ित है।

और एक त्रुटि हुई है भक्तों से। श्री म बता रहे हैं, "यहां पर उत्सवादि कुछ भी करना हो तो प्रथम गुरुवंश की अनुमति लेनी उचित। फिर उनकी सेवा का बन्दोबस्त करके अन्य सब करना चाहिए। नहीं तो दोष स्पर्श करता है। ठाकुर के वंशधर संतान और भक्त रामलाल दादा हैं। सब से पहले उनकी अनुमति लेनी और उनकी पूजा करनी उचित थी।"

आज के उत्सव में भोगराग और मिठाई आदि का प्रचुर आयोजन है। इस त्रुटि के संशोधन के लिए श्री म के आदेश से फल, मिठाई और दही का अर्धेक रामलाल दादा के उद्देश्य में भेजा गया। और एक भाग सब से पहले ठाकुर घर में निवेदित हुआ।

रामलाल दादा इसी बीच उत्सव स्थली में आ गए। श्री म और भक्तों ने उठकर उनकी अभ्यर्थना करके उत्तम आसन पर बिठाया। मिष्टवाणी से तुष्ट करके फिर कुछ और मिष्टान्न उपहार दिया। और श्री म ने युक्त कर से अनुमति मांगी, "दादा अनुमति कीजिए हम प्रसाद पाएं।" अब भक्तगण आनन्द से प्रसाद पा रहे हैं। कोई कोई अवाक् हो सोच रहे हैं, सामान्य विषय में भी महापुरुष के आचरण त्रुटि रहित।

छोटे ललित ने पका हुआ खाना और मिठाई आदि श्री भगवान के उद्देश्य में निवेदन किया। भक्तगण पश्चिममुखी होकर आसन पर बैठ गए। श्री म बोले, "ना, यह ठीक नहीं हुआ। पुकुर के पक्के चबूतरे के ऊपर सब मण्डली करके बैठिए। रसोई बनी खिचड़ी, बैंगन भाजा, गोभी भाजा, पापड़ भाजा, आलू गोभी का डालना* और आलुबुखारे की चटनी। दही, संदेश, रसगुल्ले, केले आदि प्रचुर

*तला हुआ बैंगन, गोभी और पापड़, आलू गोभी रस वाले।

आये हैं। श्री म के लिए दूध रखा हुआ था। उन्होंने आज दूध नहीं लिया। वह दूध सबने थोड़ा थोड़ा करके ग्रहण किया।

रामलाल दादा बैठे हुए नाना प्रसंग से सबको आनन्द दान कर रहे हैं। छोटे जितेन, छोटे ललित और डाक्टर परोस रहे हैं। परम परितोषपूर्वक भक्तों ने प्रसाद पाया। भगवान के जयगान से भोजन समाप्त हुआ। किन्तु आसन पर से कोई उठा नहीं। ईश्वरीय प्रसंग हो रहा है। श्री म बोल रहे हैं, "देखिए, उन्होंने हमारे mind (मन) की constitution (गठन) ऐसी बनाई है कि जो practical touch (व्यवहारिक स्पर्श) न हो तो किसी भी वस्तु का mind (मन) पर impression (प्रभाव) नहीं पड़ता। यही जो यहां पर बैठकर खाया गया इससे ही कितने काल तक मन पर छाप लगी रहेगी। बातें जो हो रही हैं वे सब भूल जायेंगी।

"वह देखिए यदु मल्लिक की बागान बाड़ी (गाजीतला के दक्षिण तीर पर)। वहां पर ठाकुर प्रायः ही जाते। यदु मल्लिक को प्यार करते थे। उसके अतिरिक्त दरवान बड़ा भक्त था।"

एक घण्टा लगा आसन से उठते हुए। सब हाथ मुख धो रहे हैं। अब अपराह्ण दो।

एक जन वैरागी आकर भजन गा रहे हैं—हाथ में गोपी यंत्र (एक तारा)। गौर लीला का गाना एक घण्टा हुआ।

श्री म उठकर (कोठी) बाएं हाथ रखकर उत्तर की ओर अग्रसर हो रहे हैं। हंसपुकुर बायें हाथ रखकर पंचवटी में प्रवेश किया—फिर बकुलतला में। घाट के उत्तर पूर्व के रास्ते पर पश्चिम में बैठने वाली एक उच्च वेदिका है। श्री म पूर्व की दिशा में मुख करके उस पर बैठ गए, पीछे गंगा। बोल रहे हैं, "इकतालीस वर्ष पूर्व ठाकुर को इसके ऊपर बैठे देखा था। आज भी वह याद है खूब। इतना काल हो गया है किन्तु मेरे मन में लग रहा है जैसे कल हुआ हैं। आध घण्टा बैठे। तीन बजे बारवेला* लग गया है। जभी बोले, "ना, अब जाना हो नहीं सकता। मन्दिर खुलने पर जाया जाएगा—मां को प्रणाम करके उनकी अनुमति लेकर।"

*बार वेला=महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए किसी दिन का एक अशुभ समय, विशेषतः बृहस्पतिवार को।

श्री म बकुलतला के घाट से कोठी में जा रहे हैं। बरामदा अतिक्रमण करके दक्षिण-पश्चिम गृह में प्रवेश किया। गृहतल दोनों हाथों से स्पर्श करके वही हाथ सिर पर लगाया। पश्चिम का दरवाजा खोलकर गंगा दर्शन कर रहे हैं। भक्तों से बोले, "देखिए कितना सुन्दर गंगा-दर्शन।" जल में प्रतिबिम्बित शरत् की उज्ज्वल सूर्यकिरण। गलित चांद की राशिवत् गंगा रंगे भंगे तरंगे प्रवाहित।

श्री म बता रहे हैं, "इसी कमरे में ठाकुर सोलह बरस थे—अट्ठारह सौ उनहत्तर (1869) तक। ठाकुर की मां भी संग में इसी घर में रहती थीं। कितना नाम, कितना चिन्तन, कितना दर्शन हुआ है इसी कमरे में।" बरामदे में खड़े होकर कालीबाड़ी की शोभा दर्शन कर रहे हैं—शायद पूर्वस्मृति जाग्रत कर रहे हैं। पुनः गृह में प्रवेश किया। बोले, "भाग्य में न जाने और हो कि ना।"

ठाकुर के कमरे में प्रवेश करके प्रणाम और प्रदक्षिणा की तथा हाथ जोड़कर ठाकुर के सामने जैसे विदा लिया करते थे उसी प्रकार विदा ली। अब विष्णु घर में। यहां पर भी वही किया। प्रांगण में खड़े होकर सदाशिव के उद्देश्य में प्रणाम करके विदाई की अनुमति ली। श्री म ठाकुर के कमरे के पूर्व के बरामदे के सम्मुख डाक्टर की घोड़ा गाड़ी पर चढ़ गए। छोटे जितेन बोले, "फोटो लिया जाएगा।"

श्री म गाड़ी में बैठे—संग में बड़े जितेन। अनिच्छा होते हुए भी भक्तों के आग्रह से राजी हुए। फोटो ली गई। "जय श्री गुरु महाराज की जय।" बोलकर गाड़ी चल दी। डाक्टर भी साथ हो लिए।

श्री म दक्षिणेश्वर आकर मानो मतवाले की भांति झूमते झूमते चलते हैं। दृढता नहीं, मुख में प्रायः बात नहीं, किन्तु आनन्द में भरपूर। चक्षुओं की दृष्टि अन्तर्मुखी—उससे मानो ठाकुर की नरलीला अब भी देख रहे हैं जीवन्त। श्री म का चलन, बलन, कथन, सकल व्यवहार अति ससम्भ्रम—मातृपितृभक्त वयस्क पुत्र का जैसा होता है माता पिता के सामने। श्री म के स्वाभाविक गाम्भीर्य ने आज और भी गंभीर भाव धारण कर लिया।

श्री म कहते हैं, "दक्षिणेश्वर का प्रति धूलकण है पवित्र तथा जाग्रत और जीवन्त, श्री भगवान के चरण-स्पर्श से। यहां के वृक्ष लता ही देव-ऋषि और भक्तगण हैं—जो श्री भगवान का लीलामृत दर्शन और उपभोग करने के लिए खड़े हैं। ये सब अवतार लीला के साक्षी हैं।" जभी क्या श्री म यहां के वृक्षों को आलिंगन और प्रणाम करते हैं सर्वदा ?

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता।
18 अक्तूबर, 1923 ई०।
पहला कार्त्तिक 1330 (बं०) साल।
शारदीय नवमी, बृहस्पतिवार।

द्वादश अध्याय

केवल ईश्वर-दर्शन ही नहीं, फिर बातें भी करना

(1)

मॉर्टन स्कूल। दो तल का कमरा। श्री म नवविधान ब्राह्मसमाज से अभी अभी लौटे हैं। सीढ़ी के पास के कमरे में अठारह-उन्नीस जन भक्त उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। अब संध्या पौने सात।

आज शुक्ला द्वादशी। दो दिन हुए विजया हो गई है। 21 अक्तूबर, 1923 ई०, चौथा कार्तिक 1330 (बं०) साल, रविवार।

श्रीहट्ट से तीन भक्त आए हैं, एक वृद्ध हैं। सुखेन्दु, शुकलाल, मनोरंजन, छोटे नलिनी, सुधीर और बड़े नलिनी हैं। फिर आए बड़े अमूल्य, अमृत, डाक्टर और विनय। जगबन्धु यहां पर रहते हैं।

श्री म श्रीहट्ट के भक्तों के संग आनन्द से बातें कर रहे हैं। उस देश के भक्तों का संवाद ले रहे हैं और ठाकुर के प्रचार कार्य की बातें पुंखानुपुंख पूछ रहे हैं। अब हठात् बातों का मोड़ फिर गया।

श्री म (श्री हट्ट के भक्तों के प्रति)—मैं ब्राह्मसमाज में गया था। एक गाना हो रहा था, सुना—'अविश्रान्त डाको तारे सरल व्याकुल अन्तरे।' (सतत पुकारो उन्हें सरल व्याकुल हृदय से।) कैसा सुन्दर गान। ठाकुर का भाव ही उस गाने में जीवन्त हो उठा है। वे बोलते, "निरवछिन्न तैलधारावत् उनको पुकारो।" जलधारा में भी अवच्छेद है, माने अन्तर है, किन्तु तैलधारा में वह नहीं। वैसे ही उनको पुकारो। क्राइस्ट ने भी कहा, 'pray without ceasing' अविश्रान्त पुकारो। संसारी यह नहीं कर सकते, साधु कर सकते हैं। गृहस्थी व्यक्ति—एक जन सोना गला रहा है, तब स्त्री ने आकर कहा, चावल नहीं हैं और औषध लानी होगी। झट उठकर चला गया। फिर सोना गलाना हुआ नहीं। यही सब विघ्न हैं।

एक दिन हम ट्राम में कार्नवालिस स्ट्रीट से जा रहे थे। बीडन स्ट्रीट के निकट आकर ट्राम खड़ी हो गई। हठात् सुनाई दी गाने की यह कली। खूब उच्चस्वर में एक जन गा रहा है—'अविश्रान्त डाको तारे सरल व्याकुल अन्तरे।' ओ मां, आंख उठाकर देखा मनमोहन दे गा रहे हैं। वे हमारे वन्धु, ठाकुर के दर्शन किए हैं। ठाकुर यही बात कहते हैं कि ना। मैं सुनकर आनन्दित होऊंगा जभी उन्होंने गाया। उन्होंने ही उनके मुख द्वारा हमें सुना दिया। उनकी देह गए वहुत दिन हो गए हैं।

ठाकुर पंचवटी में खड़े हैं। एक कुत्ता आया। झट उसके पास जाते हैं यह बोलकर, चलूं, मां इसके मुख द्वारा कुछ कहलवाएगी। वे कुत्ते के मुख से कहलवाती हैं। और मनुष्य के मुख से नहीं कर सकती?

योगेन ने प्रवेश किया। ये नित्य दक्षिणेश्वर जाते हैं। आज पंचवटी परिष्कृत हुई है। अब वहां की बात चली।

श्री म (सब के प्रति)—आहा, इच्छा होती है एक दिन और हम वहां (पंचवटी) में पकायें, परोसें, खायें। वह भी एक रोग है—एक बार जाने से ही फिर जाने की इच्छा हो रही है। उस दिन गाजीतला में हुआ। वहां के वृक्ष लता सब मन में कैसे बैठ गए हैं। इसका कारण हुआ—अनेक क्षण रहना, पकाना, खाना, चलना फिरना इन सब से होता है। वही पंचवटी में एक दिन करने की इच्छा हो रही है। दक्षिणेश्वर के सब स्थान ही पवित्र हैं। तो भी पंचवटी, बेलतला, ठाकुर का कमरा सब जमजम* करते हैं। बेलतले में रांधने नहीं देंगे, पंचवटी में बढ़िया होता है। स्वामी जी ने किया था। अतिकष्ट से दो रुपए संग्रह हुए। उससे ही दाल चावल खरीदकर कितना आनन्द! उस समय के दो रुपये ही कितने! उस दिन हमारा बहुत अधिक हो गया था। इतना नहीं, simple (साधारण) होना चाहिये। इतना नहीं। पतली खिचड़ी, जरा सा घी और थोड़ी मिठाई।

श्री म (युवक के प्रति)—ठाकुर का कमरा खूब बढ़िया है। उसी स्थान पर बैठकर ठाकुर जगदम्बा के संग बातें किया करते।

*जमजम करते हैं=दिव्यभाव से भरपूर हैं, भव्य, पवित्र भाव का प्रकाश।

भक्त लोग सेवा जानते नहीं। किन्तु वे जोर करके करवा लिया करते।

श्री म (भक्तों के प्रति)—एक बार एक जन भक्त दक्षिणेश्वर में कुछ दिन थे। उस समय पंचवटी में कई पश्चिमस (पश्चिमी भारत) के साधु आए। ठाकुर ने उनसे कहा, देखो साधु सेवा करना अच्छा है, क्या कहते हो? भक्त ने जवाब दिया, जी हां। फिर उसने रुपए दिए। साधुओं ने चावल, दाल, आटा आदि खरीद कर पकाया। ठाकुर ने भी वही खाया। और फिर भक्त के लिए रख दिया। रात को उसे दिया। तब एक कहानी सुनाई। द्रौपदी की दुःखपूर्ण दुरवस्था है—दुःशासन वस्त्रहरण कर रहा है। वे रो रो कर कह रही हैं, भगवान लज्जा रखो। श्री कृष्ण थे निकट ही। पूछने लगे, तुमने कभी किसी साधु को वस्त्र दान किया है क्या? द्रौपदी बोली, एक दिन एक साधु का कौपीन जल में बह गया था। मैंने तब अपने पहनने के वस्त्र से आधा फाड़कर उन्हें दिया था। श्री कृष्ण सुनकर बोले, तब फिर भय नहीं। वस्त्र को दुःशासन जितना ही खींचता है, उतना ही बढ़ता जाता है।

कहानी कहते ही पूछने लगे, 'बोल तो मैंने क्या कहा?' अर्थात् मन पर impressed (रेखापात) हुआ है कि नहीं, देख रहे हैं। Lead (चालित) करते हैं धीरे धीरे।

अधर सेन अंग्रेजी पढ़े हुए। यदुमल्लिक के घर में ठाकुर के संग गए। सिंहवाहिनी को प्रणाम तो किया, किन्तु कुछ दिया नहीं। उसी समय ठाकुर बोले, तुम ने कुछ दिया नहीं मां को? अधर बोले, जी, प्रणाम करके कुछ देना चाहिए, यह मैं नहीं जानता। फिर एक रुपया दिया।

शशी महाराज उस ओर (तर्जनी से दक्षिण दिशा दिखाकर, अमहर्स्ट स्ट्रीट और हैरिसन रोड के मोड़ पर) रहा करते थे। चार पैसे की बरफ कपड़े में लपेटकर पैदल पैदल दक्षिणेश्वर जाया करते थे। उहः, कैसी धूप—पसीने से एकाकार। उसकी जरा सी बर्फ बचती। ठाकुर कितनी उत्सुकता (आग्रह) से उसे खाते। उनकी सेवा करके ये लोग एक एक जन कितने बड़े हो गये हैं।

बीच बीच में कहते, देखो, बोलने से अभिमान न हो पीछे, तभी बोलता नहीं। यहां आओ तो एक पैसे अथवा दो पैसे का कुछ हाथ में लेकर आना चाहिये इलायची आदि जो भी हो। अधिक लाने को नहीं कहते। पीछे कोई पैसा खरचने के भय से आए ही न। कभी बोलते, एक हरड़ ही चाहे हाथ में ले आओगे।

श्री म (श्री हट्ट के भक्तों के प्रति)—आहा, वे जानते थे भक्त लोग सेवा नहीं जानते हैं—आकर केवल बैठे रहते हैं। जभी जोर करके करवा लेते। कभी कहते, अंगोछा धो ला तो। पांव कन-कन कर रहा है, थोड़ा हाथ फेर दो तो। (जिह्वा और ओष्ठ के संयोग से अफसोस सूचक ध्वनि करके) इसीलिए तो गुरु का ऋणशोध नहीं होता।

एक बार एक भक्त ने दक्षिणेश्वर में कुछ काल वास किया था। रुपया समाप्त हो गया, अथवा अन्य कुछ प्रयोजन हुआ। जभी उन्होंने कलकत्ता जाना चाहा। ठाकुर सुनकर भय से विस्मित होकर बोले, क्या कहा। क्यों जाओगे कलकत्ता? माने उनका लगातार एक भाव चल रहा है। वह टूट जाएगा जाने से। जभी, कहा 'क्यों जाओगे?'

और एक दिन भक्त से दक्षिणेश्वर रहने के लिये कहा। भक्त बोले, घर में असुख विसुख है। ठाकुर बोले, तो मुहल्ले के लोग देख लेंगे यदि ऐसी वैसी कोई बात हुई। तुम रह जाओ। अर्थात् परिवार वर्ग तो पाओगे ही सर्वदा, मुझे तो सर्वदा नहीं पाओगे। 'But me, ye have not always.'

एक भक्त सब छोड़ छाड़कर ठाकुर की सेवा किया करते। और एक गृही भक्त ने उसको एक नूतन चट्टी जूता लाकर दिया। वे भक्त नंगे पैर ही किया करते थे हर समय सेवा, जूता पहने ही कब? एक दिन एक जूते को गीदड़ ले गया। ठाकुर को यह पता लग गया। फिर एक घण्टा तक खोजने से वह जूता मिल गया और हाथ में उठाकर ले आए। सर्वत्यागी भक्त यह देखकर बोल उठे, यह क्या किया आपने? यह कहकर वह जूता ठाकुर के हाथ से ले लिया। ऐसे भक्तवत्सल, आहा!

श्री म कुछ काल तक नीरव रहे—क्या सोच रहे हैं? पुनः बातें कर रहे हैं।

श्री म (योगेन के प्रति)—आपको resignation letter (पद-त्याग पत्र) दे देना उचित है। महापुरुष महाराज ने जब यह बात कही है तो फिर उसमें सोच विचार करना उचित नहीं। शीघ्र देना उचित। इन्होंने कितनी तपस्या की है। कैसे मंगल होगा भक्तों का, यह वे देख सकते हैं। जभी आपको connection (सम्पर्क) छोड़ने के लिए कहा है। और जैसा व्यवहार आपके संग हो रहा है, आप ही कहते हैं, उससे लगता है आपके ऊपर उनको और विश्वास नहीं है। ये सब साधु लोग सरलता चाहते हैं। ये जब छोड़ने को कहते हैं, तब अविलम्ब छोड़ना उचित। अमृत बाजार में एक written letter (पद-त्याग पत्र) देना उचित—I beg to submit my resignation etc. (मैं सविनय पद-त्यागपत्र प्रदान करता हूं।) मात्र main point (मुख्य कारण) ही उल्लेख करें।

श्री म (सब के प्रति)—मनुष्य क्या सब समझ सकता है? सोचता है जो कर रहा है वही ठीक है। अन्य के मत के संग न मिले तो कहता है, वे ठीक नहीं। ये लोग महापुरुष, कौन सा भला है यह ये समझ सकते हैं। कितनी तपस्या की है! ठाकुर के दर्शन किये हैं। उस पर और फिर सारा जीवन तपस्या में ही कट गया। काशी में जंगल में अनाहार से कितने कष्ट से तपस्या की। उसी स्थान पर ही अद्वैताश्रम है। अब तो इतना बड़ा आश्रम हो गया है। उस समय किसी प्रकार भी किराया कम नहीं होता था। वे लोग निश्चय ही साधारण संसारी व्यक्ति से भला समझते हैं।

साधु प्रसन्न न रहे तो शांति नहीं मिलती। साधुओं को सर्वदा प्रसन्न रखना चाहिए। मेल न रहने से, उनका प्यार न मिलने से, उनकी बात सुनकर मन में क्रोध होता है। उससे ही पतन होता है।

अब देवी-भागवत पाठ हो रहा है—नर नारायण इन दो ऋषियों का जन्म, तपस्या और तपोविघ्न। पाठक बड़े अमूल्य।

श्री म (छोटे जितेन के प्रति)—भोग लेकर रहने से ही भय। इन्द्र को जभी भय हुआ पीछे, नर नारायण कहीं उससे भी बड़े न हो जायें। इसीलिये तपस्या में विघ्न उत्पादन कर रहे हैं।

मदन की वह वाणी अति सत्य। बोले, ब्रह्मा, विष्णु शिव सब को मैं मोहित कर सकता हूं। किन्तु देवीभक्त को नहीं कर सकूंगा। अर्थात् जीव महामाया में बद्ध होता है। अब वही महामाया स्वयं ही जिसे अभय देती है, उसका अनिष्ट कौन कर सकता है ?

श्री म (भक्तों के प्रति)—ब्रह्मा का मानस पुत्र है धर्म। धर्म के वीर्य से और दक्ष कन्या के गर्भ से जन्म नर नारायण का। भगवान के अंश में उनका जन्म है। देखिए, उनकी ही तपस्या में कितने विघ्न। सामान्य व्यक्ति की तो बात ही क्या ?

जभी ठाकुर बोलते, मां शरणागत, मां शरणागत। लोक शिक्षा के लिए ही ऐसा करते। कहते अपनी भुवनमोहिनी माया में मुग्ध न करो। महामाया की यह प्रचण्ड लीला देख पाते थे कि ना इन्हीं आंखों से—जैसे हम सब देखते है घर मकान मनुष्य सब।

श्री म (युवक के प्रति)—तपस्या में भी सावधान, अहंकार न हो। नारायण ऋषि को अहंकार हुआ था तपस्या करके। उससे उर्वशी की सृष्टि की। खूब सावधान होकर तपस्या आदि करनी होती है। काम, क्रोध, अहंकार तपस्या के महाशत्रु हैं। पतन हो जाता है इनसे।

ये सब पुराण पढ़ना खूब अच्छा है। सावधान हुआ जाता है, इन सब की जानकारी हो तो। मन में होगा कि इतने बड़े ऋषि नारायण, उनकी ही यह अवस्था, फिर हमारी तो बात ही क्या ! सर्वदा शरणागत होकर रहना चाहिये।

(2)

श्री म दो तल के घर में प्रवेश कर रहे हैं। संग संग शुकलाल और जगबन्धु ने भी प्रवेश किया। जगबन्धु काम के लिए बेलघाटा गए थे। शुकलाल को संग लेकर लौटे हैं। अब संध्या सात। आज 22 अक्तूबर, 1923 ई०, पांचवां कार्तिक, 1330 (बं०) साल, सोमवार, शुक्ला त्रयोदशी।

श्री म फर्श पर बैठे हैं। पास ही छोटे जितेन, सुधीर, बड़े अमूल्य, योगेन, विद्यापीठ के बलाई महाराज, छोटे ललित आदि बैठे हैं। श्री म बलाई के साथ बातें कर रहे हैं।

श्री म (बलाई के प्रति)—कृष्णानन्द ने चिट्ठी लिखी है, मानभूम में तपस्या कर रहे हैं। स्थान तो खूब सुन्दर है। भिक्षा का भी सुबन्दोबस्त हो गया है। रात को केवल दूध पीते हैं। लिखा है, यहां से बाघ की गरज सुनी जाती है। ऐसा ही एक स्थान चाहा था। भगवान ने जभी वही जुटा दिया है। और फिर लिखा है, सब सुविधा हो गई है। अब मन की सुविधा हो जाय तो बस।

ये सब देखना चाहिए। जभी तपस्या का एक idea (भाव) होता है। सब ही अनुकूल है, अब मन अनुकूल हो तो बस। सच्ची बात है।

श्री म (सब के प्रति)—नीचे के मन की गति सर्वदा ही नीचे की ओर—विषय में रहती है, उसको ऊपर उठाना होगा। यह होता है उनकी कृपा से और चेष्टा करनी चाहिए। एक दिन सबको ही ईश्वर के पास जाना होगा। वही जो सब का घर है वही है मन का निज निकेतन।

ठाकुर बताते उस देश में (कामारपुकुर में) तलता (लचीला) बांस होता है, खूब सीधा। मछली पकड़ने के लिए उसको बांका करके बंसी बांधकर जल में गाड़े रखते हैं। मछली चारा खाती है। ज्योंहि जरा सी खींच पड़ती है त्योंहि चट करके ऊपर उठ जाता है। एकदम सीधा हो जाता है। मनुष्य का मन भी वैसा ही है। मन की स्वाभाविक दृष्टि ऊपर की ओर है। किन्तु मछली के लिए निम्नदृष्टि हो गई है। मछली माने वासना। वासना से ही कर्म और उससे ही बन्धन।

श्री म (साधु के प्रति)—अवतार आकर यही message (संवाद) देते हैं, ईश्वर के संग बातें की जाती हैं। दर्शन ही नहीं केवल, और फिर बातें भी। घर भरा लोग बैठे हैं। ठाकुर बोल रहे हैं, 'माइरि

बोलछि मा एसेछेन। एइ जे आमार संगे कथा कइछेन।' (प्रतिज्ञा करके कहता हूं मा आई हैं। यही जो मेरे संग बातें कर रही हैं।)

ठाकुर सर्वदा उसी भाव में रहते। कभी समाधि, कभी गान, कभी नृत्य कभी कथावार्ता—सर्वदा मां के संग में युक्त। एक मिनट के लिए भी उनसे अलग नहीं हुए। निशिदिन उसी में मन।

मां से कहा था, 'मैं मूर्ख। मां तुम मुझे बता दो वेद वेदान्त पुराण तन्त्र में क्या है।' माँ बोलीं, ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या, यह वेदान्त का सार है। सच्चिदानन्द कृष्ण, यह पुराण का सार है। और तन्त्र का सार सच्चिदानन्द शिव है। तथा ब्रह्म और शक्ति अभेद। कहते, मां ने मुझे सब अवगत करवा दिया है। और कहते, उनकी कृपा होने से ज्ञान की कमी नहीं होती। मां आप ही राशि ठेल देती हैं, जैसे उस देश में धान की राशि ठेल देते हैं।

श्री म योगेन के संग बातें करते हैं। साहस पाकर योगेन ने पदत्याग पत्र की एक प्रतिलिपि श्री म के हाथ में दी। श्री म ने विरक्त होकर उसे दूर फैंक दिया। बोले, "इसे देखकर क्या होगा ?"

योगेन अपने वैयक्तिक व्यापार में भी महापुरुष को खींचना चाहते हैं। यही उनका दोष है। वैसे तो ये भक्त हैं। किसी एक प्रतिष्ठान के संग संश्लिष्ट थे। इसलिए बहुत से साधु ही उन्हें पसन्द नहीं करते। श्री म ने जभी इस सम्बन्ध को छोड़ने के लिए कहा था।

योगेन (रोदन स्वर से)—दसवीं के दिन उन्हें अपने मुख से ही कहते सुना है, भला मन्दा सब ही वे करते हैं। उनकी इच्छा से ही सब होता है। किन्तु उनमें भला मन्दा नहीं है। यदि वही हो तब फिर विजया के दिन मठ में मुझे रुलाया क्यों ? उस दिन शत्रु को भी ऐसा डांटते नहीं। और प्रतिष्ठान क्या मेरी इच्छा से हुआ है, ईश्वर की इच्छा से ही हुआ है। तो फिर वे क्यों मेरे ऊपर इतने कठोर हैं ?

श्री म—हां, वे ही सब करते हैं। उनके दो डिपार्टमैंट हैं, विद्या और अविद्या। विद्या जैसे जप, तप साधुसंग तीर्थ ये सब। विद्या भी माया, किन्तु उससे मनुष्य मुक्त होता है। अविद्या से बन्धन

होता है। संसारी व्यक्ति क्या फिर उसे पहचान पाते हैं ? सब के जानने का उपाय नहीं। जभी तो साधु देख पाते हैं, उससे आपका कल्याण होगा, इसलिये छोड़ देने को बोला है। आपके ऊपर शत्रु भाव नहीं। बात न सुने तो क्या किया जाय ? उत्तम वैद्य कठोर होते हैं, छाती के ऊपर गोड़े गाड़कर औषध खिलाते हैं। साधुओं की बात सुनने से आपका महाकल्याण होगा। इसमें उनका क्या स्वार्थ ? आपकी भलाई के लिए ही कहा है।

आज भी देवी-भागवत पाठ हो रहा है—नर नारायण का उपाख्यान। पाठक जगबन्धु। शेष होने पर श्री म बातें कर रहे हैं।

श्री म (योगेन के प्रति)—देखिए, शास्त्र कहता है, तपस्या बिना किए भला मन्दा समझ में नहीं आता। जभी नारायण ऋषि ने तपस्या की थी। इसलिए जिन्होंने बहुत तपस्या की है, उनकी बात हमें सुननी उचित। हमारे मंगल के लिए ही वे सब कुछ बोलते हैं। ये आपके कल्याण के लिए ही सम्पर्क छोड़ने को कहते हैं।

ब्रह्मा विष्णु शिव सारे आद्याशक्ति के पास प्रकृति बनकर रहते हैं माने, surrender (आत्मसमर्पण) किया है। उसके बिना उपाय क्या ? सृष्टि के भीतर रहने पर यह करना ही होगा। ठाकुर भी प्रकृति भाव में थे दो बरस। शरीर पर ओढ़ना दिए रहते और गहना पहनते। पीछे ये ही गहने मां ठाकुरुण को दिए थे।

श्री म (मोहन के प्रति)—हां, आप लोग जो मठ में ये कयेक दिन तपस्या करके आए हैं उसकी बात बताइए। क्या क्या हुआ ? (गम्भीर भाव से योगेन के प्रति) ये लोग सब मठ में रहते हैं कि ना तपस्या के भाव में। यही जो महायज्ञ हुआ है दुर्गापूजा, इसमें इन सब ने योगदान किया था कि ना।

डाक्टर और विनय ने प्रवेश किया। संग संग अमृत भी आ गए।

मोहन—बाहर का व्यवहार देखकर बूझा नहीं जाता कि महापुरुषगण कितने बड़े हैं। हो सकता है तनिक से ही नाराज हो गये, दूसरे मुहूर्त्त में ही एकदम जल। मन में कुछ भी नहीं रहता मानो शिशु, कितने कृपावान।

श्री म (बालक की भांति उत्सुकता से)—बोलियें ना क्या हुआ था, बोलिए।

मोहन—पूजा के समय मठ में एक दिन रात्रि में एक अर्धपागल मिस मैकलिओड के घर में प्रवेश कर गया था। घर खुला था। प्रवेश करके इसमें उसमें हाथ मारने लगा। वे सोई हुई थीं। उन्होंने गले का लाकेट खोलकर पास ही रखा हुआ था, स्वामी जी की छवि।

श्री म—फिर क्या हुआ, शीघ्र बोलिए।

मोहन—अंधकार में चमकता हुआ देखकर पागल उसे उठाने गया। वृद्धा की भी निद्रा भंग हो गई और चीत्कार कर उठीं। तब और लोग जाकर पागल को पकड़ कर नीचे ले आए।

सवेरे उसको पकड़कर पूजा मण्डप के सामने आम-तल पर ले आए। महापुरुष महाराज इधर उधर टहल रहे थे। हाथ में बेंत की एक मोटी लाठी थी। वे क्रोधित हुए हैं तभी लाठी द्वारा धमक दे रहे हैं। बोले, बदमाश, मेमें तो अलंकार पहनती नहीं। क्या चोरी करने गया था? दे दो, बदमाश को पुलिस में दे दो। मिस मैकलिओड पास ही खड़ी थीं। वे बीच में रोक कर बोलीं, 'No, no, not to the police. He entered as a thief but he came out as a saint because he stole away Swamiji'. (नहीं, नहीं पुलिस में नहीं। गया था चोरी करने किन्तु निकला साधु होकर। कारण, उसने स्वामी जी को जो चुराया है)। महापुरुष एक दम गल गए यह बात सुनकर।

मुझ से बोले, बेटे को गंगा में स्नान करा लाओ। मैं कपड़े भेज देता हूं। गंगा में तब पूर्ण ज्वार था। भय था पीछे कहीं यह व्यक्ति जल में बह न जाय। तभी एक धोती उसकी कमर में बांध कर उसको स्नान करवाया। इस बीच महापुरुष महाराज ने उमेश महाराज के हाथ एक बढ़िया नूतन धोती, चादर और कुर्त्ता भेज दिया। उसे वे कपड़े पहनाकर मठ में ले गया। अब महापुरुष महाराज ने एक थाल खाना भेज दिया, प्रचुर उत्तम मिठाई आदि। उसने खूब परितोष पूर्वक खाया। उसके पश्चात् खोज करके पता लगा कि वह बऊ बाजार

का है । तब एक सेवक के द्वारा गाड़ी करके उसको कलकत्ता भेज दिया ।

श्री म (योगेन के प्रति)—देखिए कैसा दृश्य ! कैसी दया ! आहा, 'महापुरुष' कहते हैं इसलिए । ये सब वज्रवत् कठोर और फिर कुसुम से भी कोमल। प्यार से नहलाकर खिलाकर, नूतन धोती कुर्त्ता पहनाकर, घर भिजवा दिया । ऐसा कौन कर सकता हैं साधु बिना ? वे चाहते हैं सरलता । यह न देख पाएं तब कठोर भाव धारण कर लेते हैं ।

और मिस मैकलिओड का कैसा गाढ़ा प्रेम, कैसा महत् और ऊँचा भाव । स्वामी जी का लाकेट चोरी किया है उसपर वे कहती हैं Saint (साधु) हो गया । धन्य महिला ।

श्री म (सत्र के प्रति) जमी यो कहता हूं मठ में सर्वदा जाने के लिए । सभी अमूल्य सम्पद हैं वहां पर। मानो सच्चा ड्रामा हो रहा है भगवान को लेकर ।

गीता में जभी भगवान् कहते हैं, स्थितप्रज्ञ के सब व्यवहार देखने चाहिएं, तभी समझ में आता है स्वयं कहां खड़ा है। बाहर से देखनें में लगता है, गुजियां सब एक जैसी हैं, किन्तु देखिए भीतर कितना अन्तर !

श्री म—और कुछ हुआ ?

मोहन—कविराज महाशय को एक नूतन चादर दी महापुरुष महाराज ने । और कुछ मिठाई दी !

श्री म—कितना बड़ा पण्डित—महामहोपाध्याय । इतनी वयस, कैसी व्याकुलता संन्यास के लिए । और कुछ बातचीत हुई ?

मोहन—महापुरुष महाराज ने दशमी के दिन मुझे रोटी लाने के लिए कलकत्ता भेजा । लौटते समय उद्बोधन होकर डाक्टर और विनय को संग लेकर नौका से मठ आया । तब महापुरुष महाराज पश्चिम के बरामदे में बेंच पर बैठे थे। सामने कितने ही भक्त नीचे फर्श पर बैठे थे । रंगून से दो भक्त आए थे—एक जन वृद्ध, दूसरा प्रौढ़ । ये सब बातें कर रहे थे ।

महापुरुष (भक्तों के प्रति)—काजकर्म सब ही उनका है। उसमें भला मन्दा नहीं। वे इस द्वन्द्व के ऊपर हैं। किन्तु उनकी महामाया से हमें भला मन्दा दिखाई देता है। वे निज तो आनन्द स्वरूप हैं। उनका सब भला है। हमारी अहं बुद्धि ही जितना भी गोलमाल करती है। इससे ही भला मन्दा दिखता है। जभी कहा था, इसे ईश्वर का दास बनाकर संसार में रहो।

प्रौढ़ भक्त—कोई उपाख्यान कहानी बनाकर बोलें तो अच्छा याद रहता है—जैसे अाजामिल की कहानी। पौराणिक कथा सुनने की इच्छा होती है।

महापुरुष—वह तो आप जानते ही हैं। फिर यह सब एक दिन में तो होता नहीं। और मेरी तो एक ही बात है, कुछ करना अच्छा।

प्रौढ़ भक्त—तारकब्रह्म नाम क्या है ?

महापुरुष—उसका अर्थ नहीं जानता। काशी में मरने पर शिव यही नाम सुनाते हैं कान में, यह जानता हूं। ऋषियों अवतारों ने एक-एक नाम का प्रचार किया है। ये सब नाम जप करने से, चिन्तन करने से मुक्ति होती है। असली बात तो है कुछ करना। खाली बोलने, सुनने या पढ़ने से करना भला—यही जप ध्यान।

प्रौढ़ भक्त—नाम में रुचि हो कैसे ?

महापुरुष महाराज—पहले तैरना सीख कर जल में उतरना नहीं होता। भला लिखना सीख कर फिर लिखता नहीं। पहले खराब लिखते-लिखते तब फिर हाथ पकता है।

प्रौढ़ भक्त—ईश्वर को पुकारने की सत् इच्छा को कैसे ?

महापुरुष महाराज—साधुसंग करते-करते होती है। कभी-कभी साधुसंग करें। ऐसा करने से एक नशा हो जाता है मद का, गांजे का जैसे नशा होता है। तब रोज साधुसंग करने की इच्छा होगी। यह बिना किए ईश्वर अच्छे नहीं लगते। एक दिन में क्या होता है ? जहां अच्छा लगे वहां ही साधुसंग करें।

श्मशान वैराग्य है एक प्रकार का। कोई मरा तब संसार क्षणमात्र अनित्य बोध हुआ। तत्पश्चात् ज्यों का त्यों। मनुष्य को कभी-कभी

संत् इच्छा होती है, फिर सब भूल जाता है। ठाकुर बोलते, जैसे स्प्रिंग की गद्दी। जब तक मनुष्य बैठा था तब तक नीची थी। ज्यों ही उठा त्यों ही स्प्रिंग भी संग-संग उठ गया।

श्री म (भक्तों के प्रति)—धन्य आप लोग। ऐसा सब सत्संग हो रहा है और ऐसी सब अमूल्य बातें सुनी जाती हैं। सबसे बड़ा लाभ उनका काज, उनका दैनन्दिन जीवन दिखाई देता है। इससे जैसा होता है हजार पढ़ने से भी वैसा नहीं होता। हम भी हैं धन्य ये सब कथा सुन पाते हैं। उन्होंने मठ किया है तभी यह सब हो रहा है। आहा, कैसी बातें ये सब – महापुरुष ने जो बोला—"*कुछ करना भला।*" साधुसंग करें। इन सबका प्रत्यक्ष फल उनका निजी जीवन है। तभी तो बोले इतना जोर देकर यह बात। साधु अर्थात् ठाकुर का संग करके ही तो ये सब इतने बड़े साधु हुए हैं। जभी साधुसंग करना बड़ा ही दरकार।

(3)

श्री म चार तल की सीढ़ी के कमरे में बैठे हैं। अनेक भक्त आए हैं--बड़े जितेन, शुकलाल, मनोरंजन, डाक्टर, विनय, जयबन्धु आदि।

आज 19 नवम्बर, 1923 ई०, सोमवार। अब तनिक शीत पड़ा है—बाहर बैठा नहीं जाता।

अब रात्रि नौ बजे। आसाम के डाक्टर बालीगंज से एक बन्धु को लेकर आए हैं। प्रथम यौवन में डाक्टर के संगी का पदस्खलन हो गया था। अब संभल गए हैं। दोनों की आयु प्रायः तीस है। संगी अतिभक्तिपूर्ण भाव से श्री म के साथ बातें कर रहे हैं।

संगी (श्री म के प्रति)—आपको देखकर मन में हो रहा है, ठाकुर को देख रहा हूं।

श्री म (प्रशान्तगम्भीर भाव में)—वह फिर क्या नहीं होगा? दक्षिणेश्वर में ऐसे अनेक भक्त जाते हैं जो वहां के वृक्षों आदि को आलिंगन करते हैं। (श्री म निज भी करते हैं।) वे मन में सोचते हैं उनको (ठाकुर को) आलिंगन कर रहे हैं। वृक्षों ने तीस वर्ष तक उनके दर्शन किए हैं, स्पर्श भी पाया है। उनके शरीर की हवा वृक्षों के शरीरों

पर लगी है। पथ पर उनके दर्शनों के लिए ही मानो वे खड़े हुए हैं। सब रास्तों से ही वे गए हैं। वहां का प्रति धूलकण जीवन्त surcharged with spirituality है।

आप जो ऐसा देखेंगे इसमें फिर आश्चर्य ही क्या ? वे कहते, आंखों पर लाल चश्मा पहन लेने पर सब लाल दिखता है। और फिर "न्यावा" (पाण्डुरोग) लग जाता है, आंखों में। "न्यावा" क्या, जानते हो ? सभी तब पीला दिखता है। आप को वही हुआ है। जो उनके निकट इतना बैठे हैं उनको देखने से क्यों नहीं होगा आपको उद्दीपन ?

हम अनेक लैक्चर सुनते थे केशव सेन प्रभृति के, ठाकुर के पास जाने के पूर्व। मन में होता सुन्दर बोलते हैं। किन्तु उनके (ठाकुर के) पास जाकर देखा, ऐसी बातें तो कभी भी सुनीं नहीं—प्राणों में जैसे गुँथ जाती हैं। ऐसी आशा, ऐसा भरोसा उनकी बातों में। उनकी कथामृत स्निग्ध, शीतल और "तप्तजीवन" ही है, निश्चय।

पहले, सब वक्तृता आदि सुन कर लगता था ईश्वर जाने कितनी दूर हैं। ओ मां, वहां जाकर मन में होने लगा वे अति निकट हैं, जैसे दर्शन हो रहे हैं। बीच-बीच में ठाकुर बातें करते हैं ईश्वर के संग। घर-भरा लोग सब उस दृश्य को ही बैठे हुए देख रहे हैं।

उहः, कैसी व्याकुलता ईश्वर के लिए। ऐसी व्याकुलता कहीं भी देखी नहीं। जैसे जगदम्बा के अंक में शिशु खेलता है। खेलते-खेलते हठात् क्रन्दन—सन्देश चाहिए। संदेश दिया गया। हाथ में ही है, थोड़ा सा भी नहीं खाया। ऐसे समय मां की बात मन में हुई, तब फेंक कर, "मां, मां" बोलकर रोने लगा। और कुछ भी अच्छा नहीं लगता मां छोड़। पहले जिस को देख कर भय पाता था, वह यदि अब आकर कहे, आ तुझे मां के पास ले चलूं, झट उसका गला पकड़ लेता है। सब छोडकर चल दिया मां के पास। मां के लिए व्याकुल। वैसी व्याकुलता ठाकुर की।

और वैराग्य कैसा तीव्र ! पहनी हुई धोती तक भी रख नहीं सके। सारी आप ही खुल जाती। दिगम्बर टहलते हैं. जैसे पंचवर्षीय शिशु।

दो दिन परे। आज इक्कीस नवम्बर। श्री म दोतल के घर में पूर्वास्य बैठे हैं। नित्यकार भक्तगण उपस्थित हैं।

गृहस्थ में रहकर ईश्वर दर्शन बड़ा ही कठिन। तो भी उनकी कृपा से किसी किसी को होता है। वह खूब कम। अनेक अभ्यास और साधना करने पर कुछ होता है। ऐसी ही बातें हो रही हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—गढ़ के मैदान में गए थे ठाकुर, संग में दो तीन जन भक्त थे। विलसन सर्कस दिखाने के लिए भक्त ले गए थे। आठ आने की सीट पर बिठाया गया गैलरी में। खूब आनन्द से सब देखा। इकतालीस बरस पूर्व अट्ठारह सौ ब्यासी (1882) के अक्तूबर में। फिर बाहर आकर कहा था, "देखो, कितनी चेष्टा करके, साधना करके तब बीबी एक पैर से चलन्त घोड़े पर खड़ा होना सीखी है। संसार वैसा ही है। उहः, कैसा अभ्यास! घोड़ा एक रिंग के चारों ओर बेदम दौड़ता है, मानो तीर छूटा हो। बीबी इसके ऊपर वैसे ही स्वाभाविक रूप से चढ़ती उतरती है, जैसे मनुष्य एक जलचौकी के ऊपर चढ़ता और उतरता है।"

संसार ज्वलन्त अग्निकुण्ड। अभ्यास हो तो देह पर आग उतनी नहीं लगती। खूब अभ्यास चाहिए, प्राणप्रण से अभ्यास, सोलह आना मन देकर करना चाहिए। तब ही होता है। वे दो-चार मनुष्य वैसे कर देते हैं, लोक-शिक्षा के लिए।

आहा, इकतालीस बरस हो गए हैं। हमारे मन में हो रहा है जैसे कल ही हुआ है। (कुछेक भक्तों को दिखला कर) तब इनमें से किसी का जन्म नहीं हुआ था। यहां से एक लाइन खींचने पर उस ओर वालों का (उत्तर वालों का) किसी का जन्म नहीं हुआ था तब। वे सब तब थे in the womb of futurity (भविष्यत् के गर्भ में)। अब दाढ़ी मूछें निकल आई हैं। जरा सी बात कहते ही बाबा अभिमान कितना।

शुक लाल और बड़े जितेन श्री म के दाईं ओर बैठे हैं। आयु पचास होगी। और जगबन्धु, डाक्टर, विनय, छोटे अमूल्य, मणि और छोटे रमेश श्री म के बाईं ओर बैठे हैं, श्री म पूर्वास्य।

दूसरे दिन रास पूर्णिमा। थोड़ा शीत पड़ा है। श्री म को देह पर स्वेटर, सिर पर मफलर है। दोतल की सीढ़ी के दाईं ओर कमरे में

बैठे हैं। पास ही शुक लाल, बड़े जितेन, छोटे अमूल्य, डाक्टर, छोटे रमेश, विनय, छोटे जितेन, जगबन्धु आदि बैठे हैं।

श्रीमद्भागवत पाठ हो रहा है लालटेन के प्रकाश में। रास-पंचाध्याय। गृह निस्तब्ध। पाठ्य विषय के साथ श्री म मानो एक हो गये हैं—जल में बरफ गल कर जैसे एक हो जाती है। हिलन डुलन नहीं, स्थिर। सीधे होकर बैठे हैं। आंखें आधी बन्द, दोनों हाथ अंजलिबद्ध, अंक में स्थापित। वदनमण्डल, प्रसन्नोज्ज्वल। देखने से लगता है पठनीय विषय कानों में मानो प्रवेश नहीं कर रहा। अथच आनन्दोत्फुल्ल मुखमण्डल। दीर्घकाल इसी प्रकार बैठे रहे। पाठ शेष हो गया तब भी श्री म उसी भाव में बैठे हैं।

अब आंखें खोल कर श्री म मृदु मधुरकण्ठ से बातें कर रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ठाकुर कहते, गोपी प्रेम की एक बून्द कोई पा ले तो उथल पुथल मच जाती है। आहा, कैसा प्यार भगवान के लिए। पति, पुत्र, गृह, पिता-माता, परिजन सर्वस्व त्याग कर दिया। ऐसी प्रिय जो निज देह उसका भी होश नहीं—स्त्री या पुरुष। उनमें मन मग्न। उनमें प्रेम होने से आप सब छूट जाता है, त्याग हो जाता है—जैसे झड़ पड़ते हैं पत्र पुष्प। जोर करके त्याग नहीं सहज स्वाभाविक त्याग। प्रेमा भक्ति की मुकुटमणि रास लीला।

यह प्रेम बंगला देश में ही थोड़ा सा दिखाई देता है। और कहीं भी वैसा नहीं है। पश्चिम में और दक्षिण में शिवकांची, विष्णुकांची, रामेश्वर, कन्याकुमारी, मीनाक्षी, चिदम्बरम्, बालाजी सर्वत्र ही दास्य भक्ति है। गोपी प्रेम का आस्वाद पाया बंगाल ने। यहां से उधर गया—वृन्दावन में।

डी० एल० राय के गाने में है, "एमन देशटि कोथाय खुंजे पाबे नाको तुमि। सकल, देशेर राणि से जे आमार जन्मभूमि॥ (ऐसा देश तुम्हें खोजने से भी नहीं मिलेगा। मेरी जन्मभूमि सारे देश की रानी है।) यही है "सकल देश की रानी"। World (जगत्) के बीच India (भारत) सर्वश्रेष्ठ उसमें श्रेष्ठ बंगाल।

चैतन्य लीला का मूल यही प्रेमा भक्ति है। उनके संग ही यह वृन्दावन में गई।

शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य और मधुर ये ही हैं पांच भाव। उनके मधुरभाव में ही रासलीला होती है। उसका पूर्ण विकास यहां पर हुआ था। चैतन्य देव बारह बरस इस भाव में थे, महाभाव में।

एक भक्त सोच रहे हैं, श्री म आज चैतन्य लीला की स्मृति में मग्न हैं। ठाकुर ने श्री म को चैतन्य के दल में देखा था। जभी क्या यह अवस्था?

श्री म—क्राइस्ट के भक्तों को भी किसी-किसी को प्रेम हुआ था। मेरी को प्रेम हुआ था। क्राइस्ट ने निज बोला है, "Mary has chosen that good part, which shall not be taken away from her". मेरी का यह प्रेम अनन्त काल रहेगा। भगवान प्रेम स्वरूप हैं।

(जनैक भक्त के प्रति)—ये ही सब फिर retrospective (पीछे मुड़कर) देखने से आनन्द होगा, उद्दीपन होगा—हमने रास के दिन पाठ सुना था, यह मन में स्मरण करके।

हिमपुंज के शीतल स्पर्श हृदय में वहन करके भक्तों ने अपने स्थान पर गमन किया, पूर्णिमा का चांद देखते-देखते।

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता।
22 नवम्बर, 1923 ई०, पूर्णिमा, बृहस्पतिवार।
छटा अग्रहायण,
1330 (बं०) साल।

त्रयोदश अध्याय

गदाधर आश्रम में रास पूर्णिमा में श्री म

(1)

श्री म सुबह ट्राम में चढ़ कर गए, गढ़ के मैदान में टहलते जा रहे हैं। टहलते-टहलते एस्प्लेनेट में स्वामी कमलेश्वरानन्द के संग मिले। ये गदाधर आश्रम के अध्यक्ष हैं। यह श्री रामकृष्ण मठ की अन्यतम शाखा है। श्री म स्वामी कमलेश्वरानन्द को अत्यन्त स्नेह करते हैं। ये धरणा देकर बैठ गए श्री म को आज गदाधर आश्रम जाना ही होगा। जोर करके ले गए। श्री म उनके प्रेम के आकर्षण से बच नहीं सके।

आज 23 नवम्बर, 1923 ई०; शुक्रवार।

मॉर्टन स्कूल से भक्तगण दल के दल भवानीपुर जा रहे हैं—गदाधर आश्रम में। डाक्टर, विनय और छोटे अमूल्य स्कूल बाड़ी में श्री म को न पाकर गदाधर आश्रम में आए थे। वे अपने वासस्थान को लौट रहे हैं काशीपुर। आना जाना चौदह पन्द्रह मील होगा। अब दस। सुधीर और जगबन्धु ठनठनिया काली बाड़ी से ट्राम में चढ़े, भवानीपुर जाएंगे।

पूर्णिमा आज भी दो प्रहर पर्यन्त थी। गदाधर आश्रम में रास-पूर्णिमा उत्सव आज भी चल रहा है। मठ के निम्नतल पर राधाकृष्ण की युगलमूर्त्ति स्थापित हुई है। पूजा, भोगराग आदि हो गया है। आज यहां पर अखण्ठ भागवत पाठ चल रहा है। आज यहां पर संध्या के बाद श्याम नाम कीर्तन हुआ।

श्री म ने दो तल पर आसन किया है—सीढ़ी के दाएं ओर के कमरे में। यह आश्रम के महन्त का कमरा है। श्री म के लिए यह कक्ष छोड़कर महन्त ने तीन तल के टीन के कमरे में आश्रय लिया है।

दो भक्तों ने श्री म के कक्ष में प्रवेश किया। श्री म उनको देखकर

बोले, "जाइए, ठाकुर को प्रणाम करके आइए। ओ, ठाकुर तो अब सो रहे हैं।"

द्वारका बाबू ने ठाकुर को एक दिन कहा था, आपने तो दक्षिणेश्वर में मां काली को जगा दिया है। यहां पर भी मां को जाग्रत कर दीजिए। ठाकुर ने उत्तर दिया, "कुडों फेलो"। (चारा फैंको)। तो फिर अपने आप ही रक्त वर्ण चक्षु बड़ी रोहू मछली आएगी। अर्थात् ईश्वर जाग्रत होंगे।

द्वारका बाबू मथुर बाबू का बड़ा लड़का, रासमणि का दौहित्र और जगदम्वा का पुत्र थे। इन्होंने चानके[†] में मां काली की प्रतिष्ठा की थी।

दस जन भक्तों के मां को पुकारने से वे जाग्रत होते हैं। तीर्थ में वे सर्वदा जाग्रत हैं। कितने भक्त पुकारते हैं वहां पर! और फिर जहां पर वे जाग्रत होती हैं, वही स्थान तीर्थ हो जाता है, जैसे दक्षिणेश्वर। यह काली घाट जाग्रत स्थान है—कारण, मां रहती हैं।

आन्तरिक होना चाहिए। प्राणपण से पुकारना चाहिए। भक्त के अधीन भगवान। प्राणपण से पुकारते देखकर दर्शन दिए बिना रह ही नहीं सकते। जैसे शिशु को रोता हुआ देखकर, अछाड़-पछाड़ खाता हुआ रो रहा है, मां आए बिना रह ही नहीं सकती। वैसा क्रन्दन चाहिए। सुना है, शेष जन्म में ऐसी व्याकुलता होती है।

अगले दिन सवेरे गीता क्लास हो रही है नीचे के कमरे में। एक तख्तपोश के ऊपर बैठे स्वामी कमलेश्वरानन्द गीता व्याख्या कर रहे हैं। श्री म आकर फर्श पर पूर्वास्य बैठे। अनेक साधु और भक्तगण उपस्थित हैं। तृतीय अध्याय के कर्मयोग की व्याख्या चल रही है। श्री म एक भक्त के कान में बोले, "आप पूछिए, तो फिर संन्यास की दरकार क्या?" भक्त के प्रश्न पर स्वामी कमलेश्वरानन्द बोले, "ईश्वरार्पण बुद्धि से कर्म करते-करते ईश्वर में भक्ति होती है। तब कर्म अपने आप ही झड़ पड़ता है, जैसे गर्भवती स्त्रियों का होता है। प्रथम-प्रथम थोड़ा-थोड़ा कर्म त्याग होता है। अन्त में सर्वकर्म त्याग, जोर करके संन्यास करना नहीं पड़ता। भीतर से अपने आप हो जाता है।"

[†] चानके = एक जगह का नाम।

समय नौ। कालीघाट में मां काली के मंदिर के भीतर श्री म खड़े हैं सबसे ऊपर की सीढ़ी पर उत्तर के कोने में। मां का दर्शन कर रहे हैं। असंख्य लोग आ रहे हैं, जा रहे हैं। खूब भीड़ है। स्वामी कमलेश्वरानन्द ने मां के पदतले बैठकर पूजा की। श्री म को एक बार भीतर मां के पास ले गए। मणीन्द्र और जगबन्धु संग हैं। सुधीर बाहर जूतों के प्रहरी रहे। एक जन भक्त आकर खड़े हो गए, वे भीतर से दर्शन करके आए हैं।

श्री म एक भक्त के संग परिक्रमा कर रहे हैं। मंदिर के पूर्व की ओर खड़े होकर मन्दिर शीर्ष दर्शन कर रहे हैं। परिक्रमा शेष करके पूर्व दिशा के फाटक से श्री म बाहर आ रहे हैं। दरवाजे के सामने एक गाय सींग से आघात करने लगी थी। एक भक्त ने दोनों हाथों से दोनों सींगों को पकड़ कर उसे पीछे हटा दिया। श्री म मोटर में चढ़कर गदाधर आश्रम के लिए चल पड़े।

(2)

गदाधर आश्रम का द्वितल गृह। श्री म गलीचे पर बैठें हैं पूर्वास्य। सम्मुख कई साधु और भक्त बैठे हैं। जगबन्धु, विनय, छोटे नलिनी, सुधीर आदि भी हैं। भवानीपुर के कई जन आए हैं। उनमें एक इन्जीनियर हैं, आयु पैंसठ होगी। ये खूब शौकीन व्यक्ति, दाढ़ी फ्रैंचकट किन्तु शुभ्र। संग में युवक पुत्र। ये कुछ अधिक बातें करते हैं।

आज 25 नवम्बर, 1923 ई०; रविवार।

कलकत्ता से एक साहब-भक्त को संग लेकर एक अन्य जन आए हैं। इन साहब भक्त का नाम है मि० डाउलिंग (Mr. Dowling)। गत दुर्गापूजा पर ये बेलुड़ मठ में श्री म के संग परिचित हुए थे। स्वामी अभेदानन्द ने आलाप करवाया था। आज श्री म के दर्शन करने के लिए मॉर्टन स्कूल गए। वहां पर उन्हें न पाकर एक भक्त के संग यहां पर आए हैं। इन्जीनियर श्री म के संग में नाना वार्त्ता कर रहे हैं।

इन्जीनियर—आपने, जान पड़ता है, "कथामृत" लिखी है ?

श्री म (विनीत भाव से)—जी हां।

इन्जीनियर—खूब उपकार किया है।

श्री म—मनुष्य कुछ नहीं करता। वे करवाते हैं। Credit (बहादुरी) उनकी।

यही विषय लेकर इन्जीनियर महाशय नाना आलोचना कर रहे हैं। एक बात से अन्य बात पर छलांग लगा जाते हैं। फिर और कोई बात। अनवरत कुछ वाग्बैखरी चलती रही। भक्त असह्य बोध करने लगे।

इन्जीनियर महाशय की दृष्टि मि० डाउलिंग के ऊपर पड़ गई। अब रक्षा नहीं। उनके संग में बातें शुरू कर दीं।

Engineer (to Mr. Dowling)—Please, speak something. We wish to hear you.[1]

डाउलिंग खूब बिनयी और अल्पभाषी हैं। ये चुप किए रहे। इन्जीनियर महाशय छोड़ने वाले नहीं हैं। बार-बार परेशान करने पर डाउलिंग का मुख खुला।

Dowling—I have come here to hear, not to speak. I wish to hear about Ramakrishna from him (M.)[2]

इन्जीनियर—आप इनको संस्कृत में दीक्षित कीजिये।

M. (with a smile to Dowling)—They want you to learn Sanskrit[3].

इन्जीनियर का पुत्र—बंगला सीख लेने पर प्रथम "कथामृत" देना इनके हाथ में।

Engineer (to Dowling)— You better learn Bengali.

---

[1][इन्जीनियर (मि० डाउलिंग के प्रति)—आप कृपा करके कुछ बोलिए, हम सुनने के लिए उत्सुक हैं।]

[2](डाउलिंग—मैं यहां पर बोलने नहीं आया, आया हूं श्री रामकृष्ण की बातें श्री म से सुनने के लिए।)

[3]श्री म (स्मित हास्य से डाउलिंग के प्रति)—इनकी इच्छा है आप सस्कृत सीखें।

Dowling—Some say to learn Sanskrit. Others want me to learn Bengali. I have spent much time of my life in nothingness, should I spend the remaining days of my life in being a linguist ?[1]

M. (to Dowling)— Yes, you are right. Sri Ramakrishna said, there is nothing in mere scholarship, but if one does not practice and translate the spirit in one's life, all is in vain.

He told us a parable. A Pundit was once crossing a river in a ferry boat. He asked the boatman by and by, if he had acquired any learning if he had read any of the six systems of Hindu Philosophy. The latter replied in the negative, 'But I have learnt' the boat man added, 'only how to ply the boat and to swim.' Suddenly a storm arose and the boat capsized. The Pundit sank. But the boat man swam to the shore, remarking, 'your philosophy could not save you now',[2]

---

[1]इन्जीनियर (डाउलिंग के प्रति)—आप तो अच्छा है बंगला सीखिए।
डाउलिंग—कोई कहते हैं संस्कृत सीखिए, कोई कहते हैं बंगला। इस अकर्म में ही तो मेरा आधा जीवन कट गया है। बाकी जीवन को भी क्या भाषा सीखने में काटना पड़ेगा ?

[2]श्री म (डाउलिंग के प्रति)—हाँ आप ठीक कहते हैं। श्री रामकृष्ण कहते थे केवल पाण्डित्य में कुछ नहीं है। एक जन सर्वशास्त्रज्ञ हो सकता है। किन्तु यदि शास्त्र का धर्मार्थ अभ्यास द्वारा निज जीवन में प्रतिफलित न कर सके तो फिर सब ही वृथा है।

श्री रामकृष्ण एक कहानी सुनाया करते थे। एक शास्त्रज्ञ पण्डित खेवा नौका करके नदी पार कर रहा था। बातों ही बातों में मांझी से पूछा, क्या तुम कुछ लिखना पढ़ना जानते हो, तुमने षड्दर्शन पढ़े हैं कि नहीं ? मांझी ने उत्तर दिया, मैंने पढ़ा नहीं है किन्तु नौका चलानी और तैरना सीखा है। दैवयोग से हठात् तूफान आ गया और नौका उलट गई। पण्डित जल में डूबने लगा। किन्तु मांझी तैरकर तीर पर आ गया और बोला, "आपका शास्त्रज्ञान अब कहां आपकी रक्षा कर सका ?"

M. (to all)—The moral is that one who knows God knows all. Sri Ramakrishna said, a fool becomes a saint, the wisest of man by his grace. Saraswati, the Goddess of learning, resides there in his tongue. He lacks in no knowledge. (To a Bhakta)– आहा ! साधुसंग किया है कि न तभी तो धारणा हुई है ।

Engineer (to Dowling)—Whom do you love. Kali, Durga or Shiva ?

Dowling—Shiva*

श्री म (सब के प्रति)—देखिए, शिव, ideal of Sannyasins (संन्यासियों का आदर्श) ही जभी इन्हें अच्छा लगता है ।

मि० डाउलिंग ने विदा ली । अब रात्रि साढ़े आठ । भक्तों ने संग जाकर उन्हें ट्राम में चढ़ा दिया ।

दूसरे दिन प्रातः विनय और जगबन्धु श्री म के पास बैठे हैं । मि० डाउलिंग का प्रसंग उठा । श्री म बोले, देखो ठाकुर क्या कर रहे हैं । कहीं एक फूल लगा रखा है । अपने जन को खोज-खोज कर निकाल रहे हैं ।

27 नवम्बर, श्री म मॉर्टन स्कूल में आए हैं । अब समय ग्यारह का होगा । एक शिक्षक पढ़ा रहे थे, चार तल के कक्ष में । श्री म ने उसी घर में प्रवेश किया । लड़कों से बोले, "कुछ दिन पश्चात्

*श्री म (सबके प्रति)—इसका सारार्थ यही है कि जिसने भगवान को जाना है उसने सब कुछ जान लिया है । भगवान को जान लेने पर निरक्षर महापुरुष हो जाता है, ज्ञानीश्रेष्ठ हो जाता है । तब सर्वविद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती उसके कण्ठ में विराज करती हैं । उसको तब ज्ञान की कमी नहीं होती । (भक्त के प्रति)—आहा ! साधुसंग किया है कि न, तभी धारणा हुई है ।

इन्जीनियर (डाउलिंग के प्रति)—आप किस को प्यार करते हैं—काली, दुर्गा या शिव ?

डाउलिंग—शिव ।

परीक्षा है। अब तुम केवल कहानी पढ़ो। ग्रामर-ट्रामर तो बहुत हो गई है। और पुस्तक बिना देखे questions and answers (प्रश्न और उत्तर) करते रहो।" श्री म मॉर्टन स्कूल के रैक्टर (अध्यक्ष) हैं।

अपराह्न पांच। श्री म ठाकुर बाड़ी से लौटे। तीन तल के उत्तर के कक्ष में प्रवेश किया। एक भक्तशिक्षक के द्वारा स्कूल के आफिस से कुछ रुपया मंगवाया। कह रहे हैं, "अब होता नहीं अकेले।" श्री म की आयु सत्तर है। एक भक्त ने कुछ कपड़े-शपड़े बांध रखे हैं। ये सब गदाधर आश्रम जाएंगे। संध्या के कुछ पूर्व ठनठने कालीतला के पास श्री म ट्राम में चढ़े। गदाधर आश्रम के लिए रवाना हुए। पहुंचाने के लिए एक सेवक को संग ले लिया। किन्तु लाहाओं की बाड़ी के सम्मुख उसे उतार दिया। मणि संग में जा रहे हैं।

अगले दिन सवेरे श्री म गदाधर आश्रम के दो तल के घर में बैठे हैं, फर्श पर दक्षिणास्य। कठोपनिषद् पाठ कर रहे हैं। कह रहे हैं "नचिकेता स्त्री, पुत्र, राज्य, आयु कुछ भी नहीं लेंगें, केवल ब्रह्मज्ञान चाहते हैं। इसे ही कहते हैं संन्यास। और इसीलिए कठोपनिषद् संन्यासियों को इतना प्रिय है। वटवृक्ष का allegory (रूपक) कितना सुन्दर 'ऊर्ध्वमूलमधःशाखम्।' अर्थात्, संसार का मूल ईश्वर है, जभी 'ऊर्ध्वमूलम्'। अधःशाखम् माने जिसकी नीचे शाखा है अर्थात् ईश्वर के विपरीत दिशा में संसार की गति।"

"संसार विषयानन्द को लेकर ही है। इसका त्याग होने पर तब ईश्वर का आनन्द—ब्रह्मानन्द मिलता है। संसार के लोग जिस में आनन्द पाते हैं वे ही सब वस्तुएँ नचिकेता को यम ने देनी चाहीं—स्त्री, पुत्र, राज्य, आयु। उन्होंने उन्हें नहीं लिया। वे मूल को अर्थात् सकल आनन्द की खान को मांगते हैं। खण्ड आनन्द नहीं लेंगे। अखण्ड सच्चिदानन्द चाहते हैं।"

अब प्रातः साढ़े आठ। श्री म भ्रमण के लिए निकले। भक्तों को चाओला पट्टी के मोड़ तक अग्रसर करके वे अन्य दिशा में चले गए। भक्त लोग कलकत्ता जा रहे हैं।

रात्रि आठ। गदाधर आश्रम। नीचे के कमरे में भागवत पाठ हो रहा है। श्री म बीच की दीवार की अलमारी के सामने फर्श पर बैठे भागवत सुन रहे हैं, स्वामी गिरिजानन्द पाठक।

एक सरल भक्त पाठ सुनकर कह रहे हैं, "भागवत कैसा सुन्दर ग्रन्थ है। ऐसा ग्रन्थ और नहीं है। भगवान के श्रेष्ठ ऐश्वर्य रासलीला की कथा है।" पाठक बोले, "वह तो ठीक, किन्तु अन्य ग्रन्थ अच्छा नहीं है यह भी नहीं कहा जाता। यह कहना भी उचित नहीं। पाश्चात्य विद्वान् भागवत में नाना संशय लिए बैठे हैं। कोई-कोई कहता है, बोपदेव गोस्वामी ने भागवत की रचना की थी। कोई कहते हैं अनेक अंश प्रक्षिप्त हैं—कारण, बुद्धदेव की कथा का उल्लेख है। कोई-कोई बोलता है, रास लीला भी प्रक्षिप्त है। कारण राधा का नाम एक बार भी भागवत में नहीं है।"

भक्त—किन्तु इससे कितने लोगों का उपकार हो रहा है। कितने लोग मुक्त हो गए हैं भागवत की कथा साधन करके।

पाठक—यह तो निश्चय ही। अन्य धर्म मत आचरण करके भी दूसरे बहुजन मुक्त हो रहे हैं। कितने ग्रन्थ, कितने मत। जिसको जो अच्छा लगे उस पर विश्वास करके पड़ा रहे। अन्य के ऊपर आक्रमण नहीं करना। दूसरे को कुछ बोलने पर वह छोड़ेगा क्यों ? जिसका जैसा जिसका विश्वास उसका उसी के पास।

ऐसी सब बातें हो रही हैं। श्री म को अच्छा नहीं लग रहा—जमीन पर जैसे मच्छली। उदास दृष्टि, उर्ध्वमुख करके बैठे हैं। ये सब बातें कान में प्रवेश नहीं कर रहीं।

गंभीर रात। आश्रम की छत पर काली पूजा हो रही है। स्वामी कमलेश्वरानन्द कुछ काल से सारी रात जागकर काली पूजा करते हैं और नित्य होम होता है। एक घट स्थापित हुआ है। उसके पास ही सिन्दूर रंजित एक त्रिशूल है। काली घाट की मां काली की ओर मुख करके पूजक बैठे हैं। उनकी दक्षिण दिशा में आदि गंगा प्रवाहिता। समय आधी रात। रजनी घोर रूपा, अन्धकार से आवृता। मात्र कई एक जन भक्त, साधु और ब्रह्मचारी बैठकर पूजा दर्शन कर रहे हे।

शीत पड़ा है। आकाश धुन्ध और धुएं से आवृत है। उसी के बीच से तारागण झिकमिक कर रहे हैं। और नीचे होमाग्नि प्रज्वलित है।

इस गम्भीर रात्रि में श्री म दो तल के कमरे में बैठे हैं। पास दो

तीन भक्त हैं। एक जन से बोले, "जाइए ऊपर, कितना काण्ड हो रहा है। पूजा होम कितने दिनों से हो रहा है। शायद आप नहीं जानते। एक बार जाकर दर्शन करके आइए। (विनय के प्रति) विनय बाबू, तुम ले जाओ संग में। दिखा दो जगह।"

पन्द्रह मिनट बैठने से भी कितना (लाभ)। पन्द्रह मिनट करते करते आध घण्टा हो जाएगा।

बहुत लोग, कहते हैं समय नहीं। क्यों, सारी रात तो पड़ी है सामने! फिर क्या छत पर बैठकर कर नहीं सकता। जो खेले सो कानी कौड़ी से खेले।

(3)

गदाधर आश्रम के नीचे के कमरे में राम-नाम संकीर्तन हो रहा है। दो तल के कमरे में श्री म बैठे हैं। विनय और जगबन्धु पास बैठे हैं। श्री म का शरीर अस्वस्थ, सर्दी, खांसी हुई है। रात्रि अब नौ। आज चौथा दिसम्बर 1923 ई०, 19वां अग्रहायण, 1330 (वं०) साल, मंगलवार, कृष्णा एकादशी।

सारी रात श्री म को रोग की यंत्रणा से निद्रा नहीं हुई। भोर प्राय: चार के समय वे फर्श पर बैठकर भजन गाने लगे। आश्रम के सब आकर एकत्रित हो गए। स्वामी कमलेश्वरानन्द श्री म के साथ गा रहे हैं। पास बैठे हैं और सब—विनय, जगबन्धु, मणि, मणीन्द्र, प्रियनाथ आदि। श्री म मस्त होकर गा रहे हैं।

गान—के जाने काली केमन, षड्दर्शन ना पाय दरशन।
मूलाधारे सहस्रारे सदा योगी करे रमण॥
काली पद्मवने हंस सने, हंसी रूपे करे रमण,
आत्मा रामेर आत्माकाली प्रमाण प्रणवेर मतन,
तिनि घटे घटे विराज करेन इच्छामयीर इच्छा जेमन,
मायेर उदरे ब्रह्माण्ड भाण्ड, प्रकाण्डता जानो केमन,
महाकाले जेनेछेन कालीर मर्म, अन्य के वा जाने तेमन॥

प्रसाद भासे लोके हासे, सन्तरणे सिन्धु तरण,
आमार मन बूझेछे प्राण बूझे ना, धरबे शशी होय बामन।*

गान शेष हुआ, व्याख्या चल रही है।

श्री म (कमलेश्वरानन्द के प्रति)—'मन बूझेछे प्राण बोझे ना, धरबे शशी होय बामन,' मन ने तो समझ लिया है किन्तु प्राण नहीं समझता, बौना होकर चांद पकड़ना चाहता है। "मन" और "प्राण" ठाकुर ने सुन्दर दृष्टान्त देकर समझा दिया है। बोले, एक जन मर गया। और मरने की खबर लेकर एक और जन आया। दूसरा एक जन सुनकर बोला, "अरे कहते क्या हो? ऐसा सर्वनाश। ऐसा भला आदमी चला गया।" यह हुआ "मन"। दूसरा एक जन आंगन में झाड़ू दे रहा था। ज्यों ही मरने का संवाद सुना त्यों ही "ऐं"—बोलते ही एकदम बेहोश। झाड़ू हाथ से गिर गई। वही है "प्राण"।

पुनः श्री म गाते हैं अन्तिम दो चरण:—

"प्रसाद भासे लोक हासे, सन्तरणे सिन्धु तरण।
आमार मन बूझेछे प्राण बोझे ना, धरबे शशी होय बामना।"

बार-बार इसे ही गाने लगे मस्त होकर। यह बन्द हुआ। पुनः और एक आरम्भ हो गया। गाने पर गाना चला। जैसे झरने का जल अनर्गल लगातार बाहर निकलता है।

---

*भावार्थ—कौन जानता है काली कैसी हैं, षड्दर्शन में भी उसका दर्शन नहीं मिलता। मूलाधार से सहस्रार (सात चक्र=मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा, सहस्रार) तक योगी सदा रमण करते हैं। काली रूप पद्मवन में वे हंस के संग हंसी रूप में रमण करती हैं। आत्माराम की आत्मा काली हैं, प्रमाण प्रणव (ॐ) के जैसा है। वे घट घट में विराज करती हैं, इच्छामयी की जैसी इच्छा होती है। मां के पेट में ब्रह्माण्ड रूप का भाण्डा है। उसकी प्रकाण्डता जानते हो कैसी है? महाकाल शिव जैसा काली का मर्म जानते हैं, अन्य कौन वैसा जान पाता है? प्रसाद तैर रहा है लोग हंसते हैं कि समुद्र को तैरकर पार करना चाहता है। मेरे मन ने तो समझा है किन्तु प्राण नहीं समझता, वामन (नाटा) होकर शशी को पकड़ना चाहता है।

गान—मन कि तत्त्व करो तारे जेनो उन्मत आधार घरे।
सेजे भावेर विषय भाव व्यतीत अभावे कि धरते पारे॥
अग्रे शशी वशीभूत करो तव शक्ति सारे।
ओरे कोठार भीतर चोर कुठरि, भोरहोले से लुकावेरे॥
षड्दर्शन ना पाय दर्शन आगम निगम तंत्र सारे।
से जे भक्ति रसेर रसिक सदानन्दे विराज करे पुरे॥
से भाव लागि परम योगी योग करे युग युगान्तरे।
होले भावरे उदय लय से जेमन लोहाके चुम्बक धरे॥
प्रसाद बोले मातृभावे आमि तत्त्व करी जांरे।
सेटा चातारे कि भांगवी हांड़ि बोझो नारे मन ठारे ठोरे॥*

श्री म के संग कमलेश्वरानन्द गा रहे हैं :—

गान—देखिले तोमार सेइ अतुल प्रेम आनने।
कि भय संसार शोक, घोर विपद शासने॥
अरुण उदये आंधार जेमन जाय जगत छाड़िये।
तेमनि देव तोमार ज्योति मंगलमय विराजिले।
भक्त हृदय वीतशोक तोमार मधुर सान्त्वने॥
तोमार प्रेम तोमार करुणा हृदये प्रभु भाविले।
उथले हृदय नयनवारि राखे के निवारिये॥

---

*भावार्थ—ऐ मन तुम उनके लिए जो विचार कर रहे हो वह तो मानो अन्धेरे कमरे में उन्मत्त की भांति फिरना है। वह तो भाव का विषय है, उसे भाव बिना अभाव में क्या ग्रहण कर सकते हो? अपनी सामर्थ्य के अनुसार पहले शशी को वशीभूत करो। वह तो कोठे के भीतर चोर कोठरी में है, भोर होते ही छिप जाएगा। उसका दर्शन तो षट्दर्शन, वेद, तन्त्र कोई भी नहीं पाता। वह तो भक्ति रस का रसिक सदानन्द अन्तर में निवास रहता है। उसके भाव के लिए युग युगान्तर से योगी जन योग कर रहे हैं। भाव का उदय हो जाने पर वह ऐसे ही लय कर लेता है जैसे चुम्बक लोहे को पकड़ लेता है। प्रसाद कहते हैं मैं जिसका मातृ भाव में ध्यान करता हूं उस भेद को क्या मैं हे मन सब के सामने चबूतरे पर खोल दूं।

जय करुणामय जय करुणामय, तोमार नाम गाहिये,
जाय जदि जाक् प्राण तोमार कर्म साधने ।।[1]

स्वामी कमलेश्वरानन्द अकेले गा रहे हैं :—

गान—जय काली जय काली बोले जदि आमार प्राण जाय ।
शिवत्व होइबे प्राप्त की वाराणसी ताय;
अनन्तरूपिणी काली, कालीर अन्त केबा पाय,
किंचित् माहात्म्य जेने शिव पड़ेछेन रांगा पाय ।।[2]

श्री म गा रहे हैं :—

गान—सुरा पान करि ना आमि सुधा खाइ जाय काली बोले ।
मन माताले माताल करे, मद माताले माताल बोले ।।
गुरुदत्त बीज लये प्रवृत्ति ताय मशला दिये,
ज्ञानशुँडीते चोपाय भाटि पान करे मन माताले ।।
मूलमंत्र यंत्रे भरा शोधन करि बोले तारा,
प्रसाद बोले एमन सुरा खेले चतुर्वर्ग मिले ।[3]

---

[1]भावार्थ—आपके उस अतुल प्रेम का मुख देख लेने पर संसार के शोक, घोर विपदों मुसीबतों का क्या भय है ? जैसे अरुण के उदय हो जाने पर अंधेरा जगत् छोड़ कर चला जाता है वैसे ही हे देव तुम्हारी मंगलमय ज्योति सर्वदा विराजमान है । आपकी मधुर सान्त्वना से भक्त का हृदय शोक रहित हो जाता है। हे प्रभु तुम्हारा प्रेम और तुम्हारी करुणा चिन्तन करने से हृदय नयनों के जल में उथला पड़ता है । उसे कौन हटा सकता है ? जय करुणामय । जय करुणामय । तुम्हारा नाम गाते हुए और तुम्हारा कर्म करते हुए यदि प्राण जाता है तो जाये ।

[2]भावार्थ—जय काली जय काली बोलते हुए यदि मेरा प्राण जाता है तो शिवत्व प्राप्त हो जाएगा । फिर वाराणसी जाने का क्या काम ? ये काली अनन्तरूपिणी हैं, इस काली का अन्त कौन पा सकता है ? उनका कुछ माहात्म्य जानकर ही शिव उनके लाल चरणों में पड़े हुए हैं ।

[3]भावार्थ—मैं शराब नहीं पीता, मैं तो जय काली कहकर अमृत पीता हूं । मन मस्त हो जाने पर मतवाला बना देता है, शराब के नशे में बेहोश होने पर शराबी कहते हैं । गुरु द्वारा दिया गया बीज लेकर उसमें प्रवृत्ति का मसाला मिलाकर ज्ञान तलवार द्वारा शराब की भट्ठी में पका देने के बाद पीने पर मेरा मन मतवाला हो जाता है । तारा बोलकर मूलमन्त्र को यंत्र में भरकर शोधन करता हूं । रामप्रसाद कहते हैं, ऐसी शराब (सुरा) पी लेने पर चतुर्वर्ग मिल जाते हैं । (धर्म अर्थ काम मोक्ष) ।

गान—शिव संगे सदा रंगे आनन्दे मगना, मां,
सुधा पाने ढलो ढलो, ढले किन्तु पड़े ना ।।
विपरीत रतातुरा पद भरे कांपे धरा,
उभये पागलेर पारा लज्जा भय आर माने ना ।।[1]

अब कमलेश्वरानन्द ने आरम्भ किया। श्री म ने भी संग में पकड़ लिया।

गान—गया गंगा प्रभासादि काशी कांचि केवा चाय।
काली काली काली बोले अजपा जदि फुराय ।।
त्रिसंध्या जे बोले काली पूजा संध्यां से कि चाय,
संध्या तार संधाने फिरे कभु संधि नाहि पाय ।।
दानव्रत यज्ञ आदि आर किछु ना मने लय,
मदनेर यागयज्ञ ब्रह्ममयीर रांगा पाय ।।
काली नामेर एत गुण केवा जानते पारे ताय,
देवादि देव महादेव जार पंचमुखे गुण गाय ।।[2]

ब्राह्म मुहूर्त। देवी पीठ, काली घाट। आदिगंगा तट। भगवान श्री रामकृष्ण देव के सांगोपांग विभोर होकर भगवत भजन कर रहे हैं। कैसा अपार्थिव दृश्य !

---

[1]भावार्थ—शिव के संग में मां सदारंग के आनन्द में मग्न रहती हैं। सुधा पीने के कारण डगमग डगमग कर रही हैं किन्तु गिरती नहीं हैं। अत्यधिक रतिभाव मग्न पग रखने से धरती कांपती है। दोनों ही पागलों से बढ़कर हैं। लज्जा और भय बोध नहीं करते।

[2]भावार्थ—काली नाम निरंतर लेता हुआ यदि कोई शरीर छोड़ सके तो काशी, कांची, प्रभास, गया, गंगा, आदि की कोई चाह नहीं होती। जो व्यक्ति त्रिसंध्या काली का नाम लेता रहता हैं, उसको संध्या वंदना की चाह नहीं रहती। स्वयं संध्या उस व्यक्ति की तलाश में रहती है, पर कभी भी मिलने का मौका नहीं पाती (क्योंकि नाम से वह कभी खाली नहीं रहता)। जप, यज्ञ, पूजा, हवन आदि में उसकी रुचि नहीं रहती। मदन (कवि) का यागयज्ञ तो सब ब्रह्ममयी के रक्त चरण ही हैं। जिस काली नाम का गुणगान स्वयं देवादिदेव महादेव पांच मुखों से गाया करते हैं, उसका रहस्य भला कौन जान सकता है ?

कमलेश्वरानन्द अकेले गा रहे हैं :—

गान—के एलो एलोकेशी न्यांगटा वेशे रणेते।
नाचे सबे, नाशे सबे, शिवा सब संगेते ।।
अधरे रुधिर धारा सर्वांग शोणिते भरा,
शोणित कृपाण धरा, कांपे धरा भयेते ।।
शव दोले कर्णमूले नरशिर शोभे गले,
अनल ज्वलिछे भाले काल फणी कांधेते;
प्रेमिक बोले ओ मां काली, भू-भार करिलि खालि,
करलि ना भार आमार खालि, पारि ना भार बहिते ।।*

यह गाना हो रहा है। श्री म जगबन्धु के कान में बोले, "यह गाना लिख लो।"

अब गान थम गया। कुछ काल नीरव। सब मानो ध्यान कर रहे हैं। फिर बातें हो रही हैं।

स्वामी कमलेश्वरानन्द (श्री म के प्रति)–"इमिटेशन ऑफ क्राइस्ट" पढ़ रहा था। एक जगह समझ नहीं सका। आपको दिखाता हूं। यह कहकर वे पुस्तक खोलकर पढ़ने लगे।

"But if thou abidst in thyself, and does not offer thyself up freely into my will, thine oblation is not entire, neither will there be perfect union between us.

"Therefore a free offering of thyself into the hands of God, ought to go before all thine actions, if thou desire to obtain liberty and grace."

---

*भावार्थ—खुले बिखरे केशों वाली, नग्न वेश में रण में यह कौन आई हैं। शिवानी के संग सब नाच रहे हैं। और सब नाश हो रहा है। अधर पर रुधिर धारा, सारा शरीर खून से भरा हुआ है, रुधिर भरी कृपाण पकड़े हुए हैं और धरती भय से कांप रही है। शव कानों में दोल (हिल) रहे हैं, गले में नरमुंड सुशोभित हैं, मस्तक पर आग जल रही है, फणी रूप काल कंधे पर है, प्रेमी भक्त कहता है ओ मां काली, तुम ने धरती का भार तो हल्का कर दिया है किन्तु तुमने मेरा भार हल्का नहीं किया, मैं तो अब यह भार वहन नहीं कर सकता।

"For this cause so few become inwardly free, and enlightened, because they are loath wholly to deny themselves". —(Book iv, Chapter viii)

श्री म (सब के प्रति)—इसके माने सम्पूर्ण शरणागत हुए बिना उनको नहीं पाया जाता। मन प्राण, देह सब का त्याग चाहिए। गीता में है यही बात:—

'मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।' (मेरे में ही केवल मन लगा, मेरा भक्त हो जा, मुझे ही मन वाणी शरीर से प्रेम कर, मुझे ही भक्ति सहित नमस्कार कर। (गीता 9:34)

देह मन प्राण सब उनके चरणों में डाल देने पर तब होगा। अन्य तब देने पर भी नहीं होगा, मन सम्पूर्ण बिना दिए। बाहर से त्याग आवश्यक। किन्तु मन में त्याग बिना हुए उनकी प्राप्ति नहीं होती।

ठाकुर बोलते, मां, मैं और कुछ नहीं जानता। यही मात्र जानता हूं तुम मां, मैं बेटा। जैसे चलाती हो वैसे ही चलता हूं। जैसा बुलवाती हो वैसा ही बोलता हूं। जैसा करवाती हो वैसा ही करता हूं।

देखो, इसके पश्चात् ही क्राइस्ट बोलते हैं, "Whosoever he be of you, forsaketh not all that he hath, he cannot be my disciple". थोड़ा सा तुम, थोड़ा सा मैं, यह नहीं। सब तुम। सर्वत्यागी ही केवल मेरा शिष्य है।

यह ग्रन्थ जिन्होंने लिखा है वे एक योगी हैं। उनकी मृत्यु के चार सौ बरस or more (अथवा उससे भी अधिक) पीछे यह manuscript (पांडुलिपि) निकली। वे स्वयं जिस भाव में प्रार्थना, चिन्ता किया करते थे वह सब लिख रखते थे—प्रचार के लिए।

ठाकुर का ऐसा ही काण्ड। कहां एक बीज कार्निस (कगर) पर पड़ा, पक्षी ने गिरा दिया। उससे प्रकाण्ड वटवृक्ष कुछ बरस बाद जन्मा। ऐसा ही सब काण्ड उनका है।

श्री म (कमलेश्वरानन्द के प्रति)—वह गाना 'पाबि-नाक्षेपा मायेरे।'

स्वामी कमलेश्वरानन्द ने आरम्भ किया। और सब योगदान करने लगे।

गान—पावि ना क्षेपा मायेरे क्षेपार मत ना क्षेपिले,
सेयान पागल बुँचकी बगल, काज हबेना ओरूप होले ।
शुनिस ने तुइ भवेर कथा, एजे बन्ध्यार प्रसव व्यथा,
सार करे श्रीनाथेर कथा चोखेर ठुलि देना खुले ॥
माया मोह भोग तृष्णा देवे तोरे जतइ ताड़ा,
वोबार मत थाकवि वोसे से कथाय ना दिये साड़ा ॥
निवृत्तिरे लये साथे, भ्रमण कर तत्त्वपथे,
नृत्य कर प्रेमे मेते, सदा काली काली बोले ॥
मजा आछे ए पागले, जानबि आसल पागल होले,
आयेरे पागल छेले बोले, ओई पागली माये नेबे कोले,
फुराबे पागलेर मेला घुचिबे त्रितापेर ज्वाला,
शान्ति धामे करबे लीला ए युक्ति प्रेमिके बोले ॥*

श्री म गंभीर ध्यान मग्न । शिवनेत्र स्पन्दनहीन । सब स्थिर । गाना शेष हो गया तो भी वैसे ही बैठे हैं ।

अगले दिन पांचवां दिसम्बर । श्री म आज प्रातः मॉर्टन स्कूल में आए थे । अपराह्न पांच बजे गदाधर आश्रम को लौट रहे हैं । श्री म को ठनठनिया कालीबाड़ी के पास गढ़ के मैदान की ट्राम में बिठाने के लिए संग में भक्त जा रहे हैं ।

रास्ते में अन्तेवासी से बोले, "तुम सक्रेटरी के पास जाकर खूब

*भावार्थ—अरे भाई तू पागल की भांति पागल हुए विना पागल मां को नहीं पा सकेगा । बगल में पोटली दबाकर बनावटी पागल बनने से तेरा काम नहीं होगा। अरे तूने सुनी नहीं इस जगत् की कहानी, यह तो वन्ध्या के प्रसव पीड़ा जैसी है। श्री नाथ की कथा को सार मान कर अपनी आखों पर बन्धे हुए खोपे (ठुली) खोल दे । माया मोह भोग तृष्णा जितना ही तेरा पीछा चाहे करें तू उस ओर ध्यान न देकर गूंगे की न्याई बैठे रहना । निवृत्ति का साथ लेकर तत्त्व पथ पर भ्रमण करो, प्रेम में मतवाले होकर सदा काली काली बोलते हुए नृत्य करो। इस पागलपन में जो आनन्द है वह असली पागल हो जाने पर ही जानेगा । वही पगली मां तुझे "आ रे मेरे पागल बेटे" कहकर गोद में उठा लेगी । पागलों का मेला समाप्त हो जायेगा और त्रिताप ज्वाला शान्त हो जायेगी । तब तू शांति धाम में लीला करेगा, यह युक्ति प्रेमिक ने बताई है ।

रम होकर कहना, "वे बूढ़े मनुष्य हैं। निज आ नहीं सकेंगे। मुझे यह ात कहने के लिए भेजा है। मेरा नाम जो दिया है उसमें आपत्ति नहीं है। और यह बात भी कहना—सत्तर बरस आयु है, चल नहीं सकते।"

श्री म को वेदान्त सोसाइटी की कमेटी का सदस्य बनाया है। चलते चलते शंकर घोष लेन में प्रवेश किया। पुनः अन्तेवासी से बोले, "नहीं, अभेदानन्द को ही कहना। सेक्रेटरी फिर क्या कह बैठे? यही कहना कि उन्होंने भेजा है यह कहने के लिए। वे बूढ़े मनुष्य हैं चल नहीं सकते। जभी सर्वदा नहीं आ सकेंगे एवं समिति की सेवा नहीं कर सकेंगे। तो भी नाम रहने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। वह रहे तो रहे।"

कॉर्नवालिस स्ट्रीट में श्री म भक्तों से कह रहे हैं, "देखिए इस वयस के लोग मार्ग में प्रायः rare (कम) दिखाई देते हैं।"

श्री म ट्राम में चढ़ गए—भवानीपुर जा रहे हैं।

(4)

गदाधर आश्रम। ठाकुर मन्दिर में श्री म पूर्वास्य बैठे हैं पश्चिम की खिड़की के पास। आज 8 दिसम्बर, रात्रि में काली पूजा होगी। सम्मुख पश्चिमास्य मां काली की छवि चौकी के ऊपर स्थापित है। स्वामी कमलेश्वरानन्द पूजा करने बैठे। रात्रि अब नौ। आश्रम के साधु सब ब्रह्मचारी गण पूजा दर्शन कर रहे हैं। छोटे जितेन, जगबन्धु विनय, मणि आदि भक्तगण भी बैठे हैं। भगवानीपुर के भक्त भी कई एक आए हैं। सारी रात श्री म ने पूजा दर्शन की। भोर साढ़े पांच बजे होम की पूर्णाहुति हुई। सब के संग खड़े हुये श्री म शांति पाठ कर रहे हैं।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।

[अर्थ—पृथ्वी पूर्ण, अन्तरिक्ष पूर्ण, यही जो पूर्ण है—पूर्ण भगवान से आया है। पूर्ण ब्रह्माण्ड आने पर भी अवशिष्ट परिपूर्ण ही रहता है।]

अगले दिन प्रभात में श्री म टहलने बाहर निकले। आज 8 दिसम्बर, 1923 ई०; 22वां अग्रहायरण, 1330 (बं०) साल। शनिवार, शुक्ला प्रतिपदा।

गत रात्रि को काली पूजा देखी है। आज सवेरे टहलते-टहलते हरीश पार्क में आकर उपस्थित हुए, संग में जगबन्धु और विनय हैं। वेटिंग हाउस के उत्तर के मैदान में बैंच पर श्री म बैठे। पार्क में प्रातः लोग नहीं हैं। सूर्य उदय हो रहा है। श्री म एक भक्त से बोले, "यही जो कल रात्रि पूजा हुई है इसे खूब गोपन रखना चाहिए, किसी से कहें मत। (विनय के प्रति) विनय बाबू तुम भी सुन लो। हमारे और कौन कौन थे ? छोटे जितेन बाबू, वे तो चले गए। उनके संग मेल हो तो कहना यही बात। और मणिबाबू से भी कहना। वे तो इस समय यहां हैं।

यह सब खूब secret (गोपन) रखना चाहिए। पब्लिक पूजा होती है उसे सब देख सकते हैं। इसीलिए ही तो ऐसी पूजा रात्रि में होती है। तब सब जा नहीं सकते।

यह स्थान कैसा पवित्र, काली क्षेत्र कितने देशों के लोग आते हैं यहां पर। मां के नटमन्दिर में ध्यान जप, पाठ कितना होता है, इच्छा होती है रोज एक बार जाऊं।

विनय बोले, गिरिजा महाराज ने कहा था, जाते समय टहलते टहलते जाकर रिक्शा में लौट आएं।

श्री म ने उत्तर दिया, "बूढ़ों की सब वासनाएं पूर्ण नहीं होतीं। शरीर में बल नहीं कि ना। जभी मन मन में जाना चाहिए। हम तो वैसा ही करते हैं। मन को भेज देते हैं।"

अब अन्य सब बातें हो रही हैं—राजनीति, इलैक्शन, कौन्स्टिट्यूशन, दलों की पराजय—ऐसी ऐसी। आज युनिवर्सिटी इन्स्टिट्यूशन में बारिशाल के अश्विनी बाबू की स्मृति सभा होगी। श्री म ने भक्तों से कहा, "वहां पर आप सब रहना। देश का मंगल होगा। देश जब ऐसे लोगों का सम्मान करना सीखा है तब मंगल निश्चय होगा। अश्विनी बाबू का चरित्र खूब (high) उच्च है। ये हमारे संग पढ़ते थे, और

ठाकुर का दर्शन लाभ किया था। ठाकुर स्नेह करते थे। उनके पिता ब्रज बाबू को ठाकुर ने अपने पास तीन दिन रख लिया था। कितना ऊंचा वंश। सब भक्तों को लेकर वहां पर जाइएगा।"

आज "दरबार है"। श्री म गदाधर आश्रम में हैं। अपराह्न पांच के समय मुकुन्द, शची, और जगबन्धु मॉर्टन स्कूल से आए हैं। मुकुन्द रामपुर हाट स्कूल के रैक्टर हैं, श्री म के दर्शन करने आए हैं। श्री म शौचागार में हैं।

आश्रम के निम्न तल में भक्तों की मजलिस लगी है। वे सब आनन्दोत्सव कर रहे हैं। विनय, प्रियनाथ, मणीन्द्र, नीलकण्ठ, जानर्दी के सनत् महाराज। ये कांग्रेस प्रेजिडेंट अम्बिका मजुमदार के भतीजे हैं। ये सब बैठकर कुछ जलपान करेंगे। झुरि भाजा, चिना बादाम भाजा* इत्यादि लाया गया है। नवागत भक्तों ने भी उस उत्सव में योगदान किया।

अपराह्न साढ़े पांच। श्री म ने हरीश पार्क में प्रवेश किया। संग जगबन्धु, विनय, मुकुन्द, शची आदि। सूर्य प्रायः अस्तगामी। श्री म ने उत्तर की ओर से पार्क में प्रवेश किया है। सामने ही दो झूले हैं। छोटे लड़के-लड़कियां झूल रहे हैं। कैसा आनन्द उनका! भक्तों ने देखा, शिशुओं का यह आनन्द वृद्ध में संक्रामित हो गया है। श्री म का आनन्द देखे कौन, मानो वे उनके ही एक जन हैं। उनके साथ झूला झूलने के लिए मानो प्राण चाह रहे हैं।

पार्क के भीतर चल रहे हैं दक्षिण की ओर। सामने ही दो बालक कुश्ती लड़ रहे हैं। दोनों कोट पैंट पहने हैं। एक ने दूसरे को धपाक से मिट्टी में गिरा दिया। जिसको गिराया देखने में वह बड़ा है, जिसने गिराया वह छोटा है। गिराते ही फिर खींच कर उठाता है, कपड़े झाड़ता है। श्री म खड़े हुए यह तमाशा देख रहे हैं। बोले, "यह लीडर के अतिरिक्त और क्या होगा बोलो? केवल गिराया ही नहीं, उठाया और फिर झाड़ा भी।"

अब भाई-बहनों की मजलिस। एक दो पग आगे आकर श्री म खड़े हो गए। तीन भाई दो बहनें, बहन सबसे बड़ी। उनके

*झुरि भाजा, चिना बादाम = तली हुई सेवियां और मूंगफली।

संग में आया है। मूंगफलियां खाई जा रही हैं। बड़ी बहन बांट देती है। निबिड़ दृष्टि से जाने क्या देख रहे हैं—शायद उनका भविष्यत्। थोड़ा सा आगे बढ़कर श्री म बोले, "वहां मूंगफली दे रही है। नहीं, रसास्वादन हो रहा है। रूप रस गन्ध शब्द स्पर्श ये ही रस हैं। माणिक पर यही मिट्टी पड़ रही है। यह मिट्टी जब जाएगी तब मणि (ईश्वर) का दर्शन होगा।"

अब बड़ों का टैनिस खेलना। पार्क के दक्षिण प्रान्त में खड़े हुए श्री म ने कुछ क्षण देखा। पार्क के मध्यस्थल में किशोर बैडमिण्टन खेल रहे हैं। श्री म घूमकर आ के उनके पास खड़े हो गए। तीन चार सात-आठ बरस के लड़के आते हैं। सबकी ही साहबी पोशाक, संग में आया। श्री म छलपूर्ण कौतुक से बोले, "क्यों रे, तुम सब साहेब?" लड़के लज्जित होकर मुस्कराते हुए पास से मुड़कर चले गए।

पश्चिम के फाटक से श्री म बाहर आ गए। फुटपाथ पर खड़े सड़क के गाड़ी घोड़े, लोकजन का यातायात दर्शन कर रहे हैं। श्री म के आंख मुख देखकर प्रतीत होता है वे जैसे इन सब सामान्य वस्तुओं के भीतर ऊपर कुछ दर्शन कर रहे हैं। जभी उनकी दृष्टि निबिड़, अर्थपूर्ण और आनन्दोत्फुल्ल। *क्या वे बहुरूपी प्रेममय का ही दर्शन कर रहे हैं।*

हरीश मुखर्जी रोड के सम्मुख अच्छा बड़ा राजपथ है। दोनों ओर बिजली का प्रकाश। दूसरे पार के पश्चिमोत्तर का बड़ा मकान एक वकील का है। वहां पर विवाह का आयोजन हो रहा है। उसी लाइन की दक्षिण की ओर की और एक बाड़ी में भी विवाहोत्सव है। श्री म आह्लाद से बोल रहे हैं, "यह देखो ब्याह का आनन्द। यहां पर हो रहा है और वहां पर भी। आहा, कैसा आनन्द, सर्वत्र शिवशक्ति का मिलन।" मोहन ने उत्तर दिया, "जब होता है तब तो चाहे आनन्द हो। पीछे आनन्द निकल जाता है।" श्री म बोले, ना, उसमें भी आनन्द है। और जब पालकी में चढ़कर जाते हैं वर-कन्या, तब खूब आनन्द, क्या कहते हो शची बाबू ?

गदाधर आश्रम। श्री म ठाकुर की संध्यारती के दर्शन करते हैं। साधु और भक्तों से गृहपूर्ण है। यंत्र संयोग से सब गा रहे हैं।

खण्डन भवबन्धन जगवन्दन वन्दि तोमाय।
निरंजन नररूपधर निर्गुण गुणमय ।। इत्यादि*
(बंगाल के पश्चिम के एक रामायत साधु भी आरती दर्शन कर

*खण्डन भवबन्धन जगबन्धन वन्दि तोमाय।
निरंजन नररूपधर निर्गुण गुणमय ।।1।।
मोचन-अघदूषण, जगभूषण चिदघनकाय।
ज्ञानांजन-विमल-नयन विक्षणे मोह जाय ।।2।।
भास्वर भावसागर चिर-उन्मद-प्रेम-पाथार।
भक्तार्जन युगल-चरण तारण भवपार ।।3।।
जृम्भित युग-ईश्वर जगदीश्वर योग सहाय।
निरोधन समाहित-मन निरखि तव कृपाय। 4।।
भंजन-दुख-गंजन करुणाघन कर्म-कठोर।
प्राणार्पण जगत-तारण कृन्तन-कलि-डोर ।।5।।
वंचन काम-कांचन, अतिनिन्दित इन्द्रिय राग।
त्यागीश्वर हे नरवर, देहपदे अनुराग ।।6।।
निर्भय गत-संशय दृढनिश्चय-मानसवान।
निष्कारण भक्त-शरण त्यजि जाति-कुलमान ।।7।।
सम्पद तव श्रीपद भवगोष्पद-वारि यथाय।
प्रेमार्पण समदरशन जगजन दुख जाय ।।8।
ॐ नमो नमो प्रभु वाक्यमनातीत, मनो वचनैकाधार।
ज्योतिर्ज्योति उजल हृदिकन्दर, तुमि तमो भंजनहार ।।9।।
धे धे धे लंग रंग भंग वाजे अंग संग मृदंग।
गाइछे छन्द भक्त-वृन्द आरति तोमार ।।
जय जय आरति तोमार।
शिव शिव आरति तोमार ।
खण्डन भवबन्धन जगवन्दन वन्दि तोमाय।
जय श्री गुरु महाराज जी की जय ।।10।।

श्री रामकृष्ण स्तोत्रम्

ॐ ह्रीं ऋतं त्वमचलो गुणजित् गुणेड्यः।
न-क्तंदिवं सकरुणं तव पादपद्मम् ।।
मो-हंकषं बहुकृतं न भजे यतोऽहम्।
तस्मात् त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ।।1।।

रहे हैं। शेष होने पर कोई कोई बैठे ध्यान कर रहे हैं। कोई प्रणाम करके निम्नतल पर जाकर बैठ गए।

भ-क्तिर्भगश्च भजनं भव भेदकारि।
ग-च्छंत्यलं सुविपुलं गमनाय तत्त्वम्॥
व-क्त्रौद्धृतन्तु हृदये न मे भाति किंचित्।
तस्मात् त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो॥2॥

ते-जस्रंति त्वरितं त्वप तृप्त तृष्णां।
रा गं कृते ऋतपथे त्वयि रामकृष्णे॥
म-र्त्यामृतं तव पदं मरणोर्मिनाशम्।
तस्मात् त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो॥3॥

कृ-त्यं करोति कलुषं कुहकान्तकारि।
ष्णान्तं शिवं सुविमलं तव नाम नाथ॥
य-स्मात् अहं त्वशरणो जगदेकगम्य।
तस्मात् त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो॥4॥

श्री श्री रामकृष्ण-प्रणामः

ॐ स्थापकाय च धर्मस्य स्वधर्मस्वरूपिणे।
अवतारवरिष्ठाय रामृष्णाय ते नमः॥

ॐ नमो भगवते श्री रामकृष्णाय नमो नमः।
ॐ नमो भगवते श्री रामकृष्णाय नमो नमः॥
ॐ नमो भगवते श्री रामकृष्णाय नमो नमः॥

देवी प्रणाम

ॐ सर्वमंगल-मांगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके।
शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोस्तु ते॥

सृष्टि-स्थिति-विनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते॥

शरणागत-दीनार्त्त परित्राण-परायणे।
सर्वस्यार्त्ति-हरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

जय नारायणि नमोऽस्तु ते, जय नारायणि नमोऽस्तु ते।
जय नारायणि नमोस्तुते, जय नारायणि नमोऽस्तुते।
जय श्री गुरु महाराज जी की जय।
जय महामायी की जय। जय स्वामी जी महाराज जी की जय।

नीचे के हॉल में कथामृत पाठ हो रहा है। श्री म दक्षिणास्य वीरासन पर बैठे हैं। मुकुन्द, शची, विनय, जगबन्धु आदि हैं। और आश्रम के कई साधु और ब्रह्मचारी भी बैठे हुए हैं। भवानीपुर के भक्त भी बहुत से आए हुए हैं।

ब्रह्मचारी प्रियनाथ पढ़ते हैं, चतुर्थ भाग। मणि का गुरुघरवास। रात्रि सात।

ठाकुर कह रहे हैं, 'मां सीता की भांति कर दो।' एकदम सब भूल। योनि, हाथ, पैर, स्तन किसी ओर होश नहीं। केवल एक चिन्ता कहां राम !

कामिनी कांचन ही माया। मन से इन दोनों के जाने पर ही योग। आत्मा परमात्मा चुम्बक पत्थर। जीवात्मा जैसे एक सूई, उनके खींच लेने से ही योग। किन्तु सूई पर यदि मिट्टी लगी रहे तो चुम्बक से नहीं खिचती। मिट्टी साफ कर देने पर फिर खिच जाती है। *कामिनी कांचन मिट्टी साफ करनी चाहिए।*

गदाधर आश्रम, भवानीपुर।
12 दिसम्बर, 1923 ई०, बुधवार, शुक्ला पंचमी।
26वां अग्रहायण 1330 (बं०) साल।

चतुर्दश अध्याय

क्राइस्ट औ मेरी मेगडेलन
श्री रामकृष्ण औ गिरीश
श्री श्री मां औ आमजद

(1)

मॉर्टन के दो तल के कमरे में श्री म बैठे हैं। अब अपराह्ण तीन। गदाधर आश्रम से अभी अभी आए हैं। और फिर चले जायेंगे। आज 14 दिसम्बर, 1923 ई०, शुक्रवार। अन्तेवासी से बोले, ठाकुर कहा करते, "तुम लोग कौन और मैं कौन, यह जान लेने से ही होगा। तुम लोगों को अधिक कुछ करना नहीं पड़ेगा।" अर्थात् वे ईश्वर हैं और हम उनके पार्षद हैं, सांगोपांग। वे पिता हम उनकी सन्तान, यहां तक समझ सकने पर हो हो गया। बाकी वे करेंगे।

कितना सहज कर दिया है, कितना उतरे हैं। जानते हैं कि ना कलि के जीव अधिक कुछ कर नहीं सकेंगे। थोड़ा सा साधुसंग करना आवश्यक। साधुसंग और निर्जन में थोड़ी तपस्या—उनको पुकारने की चेष्टा करना। वह हो जाने पर उनकी यही कृपा समझ में आ जाती है। एक बार समझ लेने पर फिर अधिक कुछ करना नहीं पड़ता। जैसे कहा करते, नौका को बहाकर थोड़ा नदी के बीच ले जाओ। तब वह अनुकूल पवन से चलती रहेगी। पाल उठा दो। केवल डांड पकड़े रहो। और तम्बाकू पीओ, गाना गाओ, आनन्द से नौका अपने आप चलेगी। "बैठे धरे बोसा"—डांड पकड़कर बैठना—माने मैं उनका लड़का यह जानना। "तामाक (तम्बाकू) खाओ, गाना गाओ" माने आनन्द में निश्चिन्त मन से संसार में रहो। देखो कितना सीधा कर दिया है। थोड़ा सा करना आवश्यक।

अपराह्ण प्रायः पांच। श्री म गदाधर आश्रम को लौट रहे हैं। सिटी कालेज के पास से बेचु चैटर्जी स्ट्रीट में प्रवेश किया। गुरुप्रसाद चौधुरी लेन के मोड़ पर आकर खड़े हो गए। बायें हाथ

राजेन्द्र मित्र का मकान है। खड़े हुए उसी घर का दर्शन कर रहे हैं। और प्रणाम कर रहे हैं। बोले—यहां पर ठाकुर आये थे। केशव बाबू भी उस दिन उपस्थित थे। *ये सब तीर्थ हो गए हैं।* राजेन्द्र बाबू बंगाल गवर्नमेंट के असिस्टैंट सैक्रेटरी हो गए थे।

श्री म दो चार पग आगे चले। एक भक्त आहिस्ते आहिस्ते श्री म से कहते हैं, कल रात को एक स्वप्न देखा। मेरी देह पर गेरुआ वसन है, संन्यासी हुआ हूं। किन्तु मन के एक अंश को देखा जैसे भय पा रहा है। ऐसा क्यों हुआ—यह विचार करके कि फिर संसार भोग कर नहीं सकूंगा इस कारण ? श्री म ने आह्लाद सहित उत्तर दिया, "ऐसे स्वप्न खूब अच्छे हैं। मैं संन्यासी, मैं भक्त, ऐसा अभिमान उत्तम। मन का वैसा तो थोड़ा बहुत रहता ही है। उसमें दोष नहीं। मैं संन्यासी, यह सुन्दर स्वप्न है।"

श्री म कालीबाड़ी के सामने ट्राम में चढ़े।

14 दिसम्बर, 1923 ई०।

× × × × ×

25 दिसम्बर, मंगलवार। आज बड़ा दिन है। भगवान् ईसु का जन्म महोत्सव कलकत्ता महानगरी में सर्वत्र हो रहा है। उनके भक्त आनन्दोत्फुल्ल हैं। बेलुड़ मठ में गत रात्रि को 'क्रिसमस ईव' (ईसु के जन्म की पूर्व संध्या) अनुष्ठित हुई। श्री रामकृष्ण के भक्तगण भी इन सब उत्सवों में योगदान करते हैं। रामकृष्ण ने कहा था, "मैं, क्राइस्ट और गौरांग एक।"

श्री म आज मॉर्टन स्कूल आए हैं। रात्रि यहां पर रहेंगे। चार तल के सीढ़ी के कमरे में बैठे हुए हैं। भक्त बहुत से दर्शन करके चले गए हैं। अब रात्रि प्रायः नौ। बड़े जितेन, विनय, बड़े अमूल्य, जगबन्धु, बलाई आदि बैठे हुए हैं। बलाई अभी आने जाने लगे हैं।

श्री म का आज अन्तर्मुखीन भाव करुणापूर्ण है। करुणामय भगवान् ईसु की कथा चिन्तन कर रहे हैं। ईसु पतित पावन। मेरी आदि का पाप पंक से उद्धार किया था। ईसु लीलामृत पान और कीर्तन करते करते श्री रामकृष्ण लीला का उद्दीपन हो गया। श्री म के कण्ठ से अमृत कणिकाएं निकलने लगीं।

श्री म (करुण स्वर में)—मनुष्य की क्या वैसी vision (दृष्टि) है ? वे देख पाते थे किसके भीतर क्या है। गिरीश बाबू को इधर के लोग कहते, शराबी, वेश्या के घर जाता है। किन्तु ठाकुर ने देखते ही पहचान लिया—महत् व्यक्ति है, भीतर में 'माल' है।

शिव नाथ शास्त्री ने लिखा था, उनके यहां जब थियेटर के लोग यातायात करने लगे तब हमने जाना बन्द कर दिया। Good boy—बड़े भले लड़के बने और क्या।

वे पतितों को स्थान नहीं देंगे तो कौन देगा ? वे आते ही हैं पतितों के लिए। और फिर साधुओं के लिए। हमने सदा यही बात उनके मुख से सुनी है। चैतन्यदेव ने जगाई-मधाई का उद्धार किया। क्यों ? इसीलिए ना दिखाने के लिए कि मैं पतितों के लिए ही आता हूं।

बड़े अमूल्य—स्वामी जी ने चिट्ठी में एक जगह लिखा है, भगवान् पतितों के लिए ही आते हैं।

श्री म—स्वामी जी ने नूतन बात फिर क्या कही ! जो युग युग में कहा गया है वही कहते हैं। तो भी नूतन ढंग से बोले अंग्रेजी में। देशी भाषा में, बंगला में, अवतार का नाम ही पतित-पावन हुआ।

श्री म (भक्तों के प्रति)—मां के पास एक भक्त गांव में रहता था। मुसलमान, आमजद उसका नाम। मां का काम किया करता, घर मरम्मत आदि। मां मिट्टी के घर में रहती थीं कि ना। आमजद वह काम सब जानता था। मां को भूमिष्ठ होकर प्रणाम करता। अन्य मुसलमान हिन्दू के घर खाते नहीं। किन्तु आमजद मां के घर में ठाकुर का प्रसाद पाता। सब जिस थाली ग्लास में आहार किया करते आमजद को भी उसमें ही खाने को देतीं। खाना हो जाने पर कहतीं, "उठ जाओ बेटा, उठ जाओ।" वह हाथ मुख धोने के लिए उठता। और मां झटपट थाल ग्लास लेकर मांज-धो लातीं। और फिर उन्हीं कपड़ों से ही ठाकुर मन्दिर में चली जातीं—स्नान आदि कुछ नहीं। देखो कैसा आचरण मां का ! किसकी है ऐसी दृष्टि ? प्रथम जीवन में डाकू था। जभी

सब घृणा करते थे उससे। किन्तु मां ने देख लिया था भीतर "माल" है। मां बोलतीं, "मेरे कितने लड़के कितने स्थानों पर रहते हैं—हिन्दू, मुसलमान, ईसाई। सब को ही मुझे देखना होगा, खिलाना होगा, आदर प्यार करना होगा—बालक जो।" आहा कैसी उदार दृष्टि! ग्रामीण नारी। और फिर कट्टर ब्राह्मण की कन्या। लिखी पढ़ी नहीं। किन्तु कैसा विशाल हृदय, कैसी जगत् व्यापी दृष्टि! मनुष्य में ऐसा नहीं होता भगवान् छोड़। जगदम्बा जभी तो सब की मां!

आमजद की देह गई। थोड़ा सा बाकी था। मां के दर्शन करके मुक्त हो गया।

एक बार पांच लड़के गए दीक्षा के लिए। एक लड़का थोड़ा अन्य प्रकार का था। बाहर बिठाए रखा। उसके जाने से, ठाकुर मन्दिर अपवित्र हो जाएगा। वह लड़का बाहर बैठा हुआ रोने लगा। मां ने घर में प्रवेश करके चार जनों को देखा। पूछा और एक कहां है? वे बोले, वह धोबी बाहर है। सुनकर मां छोड़कर बाहर आईं, "आओ बेटा, घर में आओ" कहकर भीतर बुला लाईं। वह जाने के लिए राजी नहीं था। हाथ जोड़कर रो रोकर बोला, नहीं, मां नहीं। मां ने नहीं सुना। सबके संग उसको भी दीक्षा दी।

ऐसी दृष्टि क्या सबकी होती है? मां की थी। सब देखते हैं धोबी, उन्होंने तो भीतर देख लिया। भीतर में माल है। मनुष्य की मलिन दृष्टि है, भीतर देख नहीं पाता। इनके कर्म बाकी थे। मां के दर्शन करके उद्धार हो गया।

श्री म (सब के प्रति)—मेरी क्राइस्ट की एक खूब भक्त बड़े व्यक्ति की बेटी। जैसा रूप था वैसा ही गुण था। मैगडाला (Magdala) नामक राजप्रासाद उसका महल था। पिता माता की मृत्यु के पश्चात् चरित्र खराब हो गया। सुना जाता है, इतनी विलासिनी हो गई थी कि कपड़े आदि और अलंकार सब ग्रीस और रोम से आते थे। मैगडाला प्रासाद के ऊपर से एक दिन देखा, क्राइस्ट भक्तों के संग जा रहे हैं। उससे ही उसका परिवर्तन आरम्भ हो गया। उसे बोध होने लगा कि उसके समस्त पाप चले गए हैं। और उसके स्थान पर क्राइस्ट का पुण्य-स्पर्श प्रवेश कर रहा है। विलासिता छोड़ दी।

सामान्य सैक क्लाथ (टाट) से लज्जा निवारण करती। क्राइस्ट के पास जाने के लिए प्राणों में व्याकुलता हुई। सुयोग खोजने लगी। कैसे जाए? एक तो अभिमान, उस पर फिर "सिनर" (पापी) होने की लज्जा। वेश्याओं को वे लोग "सिनर" बोलते थे।

एक दिन क्राइस्ट साइमन के घर आए। खबर पाकर सैक् क्लॉथ अर्थात् मोटा टाट पहने रोते रोते उनके दर्शनों को आ गई। साइमन ने आपत्ति की। काइस्ट अन्तर्यामी, जानते हैं, वह उनको कितना प्यार करती है। तभी वे भी स्नेह करते हैं। परस्पर देखा नहीं था तब भी। साइमन की आपत्ति सुनकर बोले, "साइमन मेरी एक बात सुनोगे?" "Tell Master," (कहिये गुरुदेव) साइमन ने उत्तर दिया। बात तो यही है, एक जन से एक व्यक्ति ने थोड़ा सा धन उधार लिया है, और दूसरे जन ने खूब अधिक लिया। दोनों का ही उस व्यक्ति ने माफ कर दिया। उन्हें फिर ऋण चुकाना नहीं पड़ा। अब अधिक कृतज्ञ कौन होगा? कौन अधिक प्यार करेगा मालिक को? साइमन ने उत्तर दिया, "जिसने अधिक उधार लिया है।" काइस्ट ने उत्तर में कहा, 'यह तुम स्वयं समझो।'

तत्पश्चात् मेरी आकर पैरों में पड़कर "एक घटी" (खूब) रोई। उसकी आंखों के जल से क्राइस्ट के पांव भीग गए। केशों से उन्हें पोंछ दिया। क्राइस्ट प्रसन्न होकर बोले, 'Woman, thy sin is forgiven.' तुम पापमुक्त।

शरीरत्याग के पश्चात् मेरी ने ही प्रथम दर्शन पाए। कबर के पास खड़े थे क्राइस्ट। उनका ही नाम अन्त में मेरी मैगडेलन हुआ। गोपियों की भांति भगवान में प्रेम हो गया था उनका। उनके संबन्ध में ही क्राइस्ट ने कहा था, 'But one thing is needful: and Mary has chosen that good part' मनुष्य जीवन की सर्वश्रेष्ठ सम्पद है भगवान में प्यार। मेरी का वही हुआ है, भगवान में प्रेम!

यही जो पांव में पड़कर क्रन्दन यह कितना प्यार होने से होता है। योगी जन युग युगान्तर तपस्या करते हैं। इसी प्यार के लिए। प्यार का "न्याबा" (पीलिया) लगने पर तब क्रन्दन आता है। भोगान्त हुए बिन, पीलिया नहीं लगता। मोह से आच्छन्न हुआ रहता है। मोहमेघ गल जाए तब ही जल पड़ता है।

जभी तो क्राइस्ट बोले थे,.........'for he maketh his sun to rise on the evil and on the good, and sendeth rain on the just and on the unjust,' पापी पुण्यात्मा सबके ऊपर भगवान का स्नेह कृपा समान भाव से वर्षित होते हैं, सूर्यकिरण और जलवर्षण की न्याईं।

चैतन्य देव ने जगाई मधाई को माफ किया। जभी तो वे समझे कितनी कृपा हुई है। कितने बड़े पाप का बोझा ले गए।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—ठाकुर के भक्तों में कैसा wonderful change (अद्भुत परिवर्तन) देखने में आता है। उनके संग अभावनीय परिवर्तन घटा है। कितने दिनों से इधर उधर घूम घूम कर देख रहा हूं, ठाकुर की कथा का कैसे विस्तार हो रहा है।

एक दिन मैदान में टहल रहा था। ठाकुर पकड़ कर ले गए, गदाधर आश्रम में। आश्रम के महन्त पकड़ कर ले गए, माने ठाकुर ही ले गए। कितने भक्त आ रहे हैं। ठाकुर की महिमा दिग्दिगन्तरों में प्रसारित हो रही है। जगत् भर जाएगा उनकी महिमा से इसके पश्चात्।

बड़े जितेन—आपका शरीर कैसा है?

श्री म—ठीक ही है। आहा, विरिंची बाबू चले गए। उनकी दी हुई औषध—वही पुलिन्दा, ऊपर उनके हाथ से लिखा अनुपान सब अब भी पड़ा है। वे चले गए।

विरिंची कविराज का कई दिन हुए शरीर त्याग हुआ है। वीस दिन पूर्व गदाधर आश्रम में गए थे, श्री म के दर्शन करने। श्री म को तब सर्दी लगी थी। वे उनको औषध दे आए थे। घर लौट कर हठात् देह त्याग कर दी। ये बड़े जितेन के खूब बन्धु थे। श्री म के दर्शन करने प्रायः ही आते थे।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—आप लोगों की यह भारी त्रुटि है। दुर्गापूजा के समय अपने ग्राम जाते हैं और मलेरिया लेकर लौटते हैं। सुना है रुपया देने से ब्राह्मण पाति (शास्त्रीय व्यवस्थापत्र) लिख देते हैं। दुर्गापूजा को उठाकर कलकत्ता में ले आइए। नित्य पूजा रहनी हो तो

अपने ग्राम में रहे। उसी समय बड़ा मलेरिया होता है, गावों में। रुपया देने से ही हो जाएगा, (व्यवस्था) पत्र दे देंगे। वहां पर जाकर शरीर ही क्यों देना? जिसमें resist (प्रतिरोध) करने की क्षमता होती है वही बचता है।

ठाकुर कहते सोना न गल जाने तक इसके (शरीर) लिए यत्न करना चाहिए। इसमें ही सोना गलाना होता है कि ना, इसी शरीर में। "सोना गलाना" माने भगवान दर्शन। उसके लिए देह का यत्न करना। सोने के गल जाने पर स्वर्णकार मिट्टी का सांचा फेंक देते हैं। तब फिर प्रयोजन नहीं। भगवान दर्शन होता है केवल मनुष्य शरीर में।

श्री म (भक्तों के प्रति)—सारे जगत् में क्रिश्चियन भक्त भगवान को लेकर आनन्द कर रहे हैं। अन्य समय भूल जाते हैं। उत्सव में याद करते हैं। जभी इस उत्सव की व्यवस्था है। ये व्यवस्थाएं भगवान की ही की हुई हैं। मनुष्य कुछ नहीं करता। वे ही बद्ध करते हैं, फिर वे ही उठाते हैं। वे ही गिराते हैं, पतित करते हैं, और फिर वे ही गोद में उठा लेते हैं, उनकी यह लीला चलती है अनन्त काल।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ठाकुर कहते, गोष्ट बड़ी मुश्चिल में पड़ा है। रसिक पुरुष थे कि ना वे। तभी इस प्रकार put (वर्णन) करते। वृन्दावन में जाकर "वृकोद[1]" भेक ले लिया है सब कहते हैं, घर अब फिर जा नहीं सकोगे। वह बोला, ओ मां, यह कैसी बात? एक मास घूम घूम कर एक व्यवस्था मिल गई। किसी एक ने बताया डेढ़ सौ रुपया और एक काहन[2] कौड़ियां हों तो होता है। बहु कष्ट से उसने वह संग्रह करके प्रायश्चित्त किया। तब फिर वह घर लौट आया। रुपया मिलते ही ब्राह्मण लोग व्यवस्था दे देते हैं, सुनता हूं। (बड़े अमूल्य को दिखलाकर) इनकी बरस डेढ़ेक की एक लड़की को प्लीहा ज्वर आदि सब हैं।

बड़े जितेन—(अमूल्य के प्रति)—पूजा के समय ब्याह पर गए थे शायद।

[1]वृकोद भेक=वैष्णव संन्यास। Vaishnava asceticism

[2]काहन=1280 कौड़ियां, 4 कौड़ी का एक गंडा, 20 गंडे का एक पण, 16 पण का एक काहन।

अमूल्य—नहीं।

बड़े जितेन—ऐसे क्या उन्हें (पत्नी को) उस समय जाने देना चाहिए ?

अमूल्य—क्या करूं, उनकी इतनी जिद्द ।

श्री म—उनकी जिद्द क्या सुननी चाहिए हर समय। ऐसे समय में नहीं सुनते। जिद्द करने से ही क्या सुनना होगा ?

(3)

श्री म कुछ चिन्तन कर रहे हैं।

श्री म (सब के प्रति)—मां के पास जाते थे एक भक्त, डाक्टर। घर में दो तीन बरस की एक लड़की है, और स्त्री और मां। जमीन का धान है। भात का अभाव नहीं। एक दिन मां के पास जाकर बोले, "मुझे गृहस्थ अच्छा नहीं लगता।" मां बोलीं, अच्छा दो दिन सबर करो। इसी बीच मां ठाकुरुण के संग आलाप आलोचना करके डाक्टर ने निश्चय कर लिया, गृहस्थ में नहीं रहेगा। दो तीन दिन पश्चात् स्नान करके आने पर, मां ने उसे बुलाकर संन्यास दे दिया। दीक्षा पहले ही हो गई थी।

कुछ दिन रहा। खबर पाकर डाक्टर की माता और स्त्री लड़की को लेकर आ उपस्थित। सब ही पहले से तैयार थे। स्त्री ने जब कहा, हमारा क्या होगा ? मां ने उत्तर दिया, "क्यों, तुम लोगों को खाने पहनने का तो कोई कष्ट नहीं है। उसका काम वह कर रहा है, तुम्हारा काम तुम करो।" स्त्री ने अपने सब अलंकार मां ठाकुरुण के पास रख देने चाहे। मां बाधा देकर बोलीं, "यह कैसे होगा ? तुम लोग अपने भाव में रहो, उसके भाव में वह रहे।"

आहा, ऐसी बात स्त्री होकर कहना ! ठाकुर की संगिनी को छोड़ और कौन बोल सकता है ? विवाह की बात पर कहतीं, "मैं कैसे तुम्हें आग में प्रवेश करने को कहूं ? संसार ज्वलन्त अनल।" लड़के बच्चे होंगे, उन्हें खिलाने पिलाने को जुटाना। हो सकता है वही लड़का अवज्ञाकारी हो गया। लड़की को विवाह देने पर भी रिहाई नहीं। ससुराल की बातें चिन्ता करनी पड़ेंगी। ऐसा ही है सब

संसार। इसे छोड़ने के लिए कौन कह सकता है—मां ठाकुरुण बिना।

फिर, डाक्टर के घर के पास ठाकुर के नाम पर एक आश्र था। वह नष्ट हो रहा था। मां ठाकुरुण ने उसको वहां भेज दिय मां ठाकुरुण उसका भीतर जानती हैं कि ना—वीर भक्त है। उस भेज दिया वहां पर। डाक्टर की मां बीच बीच में मिलने आत कभी स्त्री भी संग आ जाती।

आश्रम खड़ा हो गया। उस भक्त ने डाक्टरी आरम्भ कर दी आठ रुपए उसकी फीस। गरीब हो तो यूं ही। धनी होने पर बोल नहीं, इतना रुपया नहीं दोगे तो नहीं जाऊंगा। सात आठ लड़ वहां पर रहकर पढ़ते-लिखते हैं। बेलुड़ मठ के चार-पांच साधु रहते हैं। तीन सौ रुपया महीना खर्चा है।

श्री म (स्वगत)—मां ठाकुरुण ने स्त्री से कहा, तुम्हें अभा क्या है? खाने-पहनने का तो कष्ट नहीं है। उसकी व्यवस्था ज उन्होंने कर दी है, और उसको जब सद्बुद्धि आई है तब वह उनक ही पुकारे ना थोड़ा सा। आहा, वीर वाणी।

जनैक भक्त—संन्यासी होकर रुपए लेकर रोजगार करना, य कैसे?

श्री म—आश्रम के लिए वह कर सकता है। अनेक क्लास (श्रेणियां) की हैं उन्होंने। अर्जुन को युद्ध करने के लिए कहा, औ उद्धव से कहा बदरिकाश्रम में जाने के लिए। जिसकी धात में जो है, निष्काम भाव से करने पर फल एक ही।

श्री म (भक्तों के प्रति)—यदि कहो, इस प्रकार स्त्री का त्याग करना निष्ठुरता है। उसका उत्तर—क्यों स्त्री के संग देह से देह लगाए बिना सोने से प्यार नहीं होता। तुम्हारे भाव से तुम रहो। वह ईश्वरचिंता करके धन्य हो जाएगा। स्त्री के संग झगड़ा करके नहीं। उसको प्यार करके ईश्वर के काज में लगाना चाहिए।

जब तक देह रहेगी तब तक स्त्री के संग झगड़ा रहेगा। पति
; मरने पर झगड़ा कैसा करेगी ? इसी बीच उस साले का तो एक
दन हो गया। तब थोड़ा रोई लोक दिखावा। और फिर खाए
र थाल। (सहास्य) 'सांजसकाले भातार मलो कांदबो कत रात।'
-संध्या होते ही तो पति मर गया है अब मुझे सारी रात रोना पड़ेगा।)
ही तो है स्त्री।

श्री म (युवक के प्रति)—लोगों को क्या विश्वास होता है शीघ्र ?
तना कुछ देखते हुए भी मोह में डूबे हुए हैं।

"Life is not a joke as long as death is not
:xtinguished." (जीवन कोई हंसी खेल नहीं है, जब तक मृत्यु
ुंछ नहीं जाती।) जब तक अमृतत्व लाभ न हो, भगवान् के दर्शन न
ों, तब तक इसी की चेष्टा करना, तत्पश्चात् अन्य सब।

रात्रि दस। भक्तों ने विदा ली।

× × × × ×

श्री म चार तल के कमरे में बिछौने पर बैठे हैं। एक भक्त
शिक्षक पास खड़े हैं। श्री म उनके साथ स्कूल की आलोचना कर
रहे हैं। एक छात्र के सम्बन्ध में बात हो रही है, दसवीं श्रेणी का
उत्कृष्ट छात्र प्रणव प्रकाश सेन। उसने आवृत्ति प्रतियोगिता में प्रथम
स्थान अधिकार करके एक पदक उपहार पाया है। आवृत्ति का
विषय था, स्वामी विवेकानन्द लिखित 'वीर वाणी'। 'साहित्य परिषद्'
केन्द्र था। इसी शिक्षक की चेष्टा से यह तैयार हुआ था।

मठ के अनेक साधु भक्त उपस्थित थे। प्रणव के शांत और
सरल व्यवहार से तथा सुमधुर आवृत्ति को सुनकर मुग्ध हुए। उनकी
'संन्यासीर गीति' इतनी सुन्दर हुई कि स्वामी धीरानन्द ने अपने
गले के फूलों की माला प्रणव के गले में पहना दी। ज्ञान महाराज
ने भी खूब आशीर्वाद किया। श्री म ये सब बातें सुनकर बोले, मुझ
से मिलने के लिए कहना प्रणव को। शिक्षक बोले, "पहले ही कहा
है। मिलने कल आया भी था।" श्री म ने उत्तर दिया, कल यहां
हम नहीं थे। निश्चय मिलने के लिए कहना। ठाकुर कहते, जिस पर
साधु प्रसन्न होता है उसके भीतर सोना है। सामान्य जरा सी मिट्टी का

आवरण है। इसको हटा देनें से ही सोना निकल पड़ता है। सोना माने भगवान् में भक्ति-विश्वास।" शिक्षक बोले, "सब साधुओं के संग परिचय करवा दिया है। अब की बार मठ में ले जाऊँगा। वह भी जाना चाहता है।" श्री म बोले, "हां, मठ में ले जाएं तो फिर पूर्व संस्कार जाग्रत होंगे। यहां पर भी ले आना।"

श्री म ने एक भक्त के हाथ में दस पैसे दिए। बोले, "आप (दया करके) छह पैसे की तीन पंजाबी रोटी, और चार पैसे की मिठाई ले आइए। नवविधान ब्राह्मसमाज के सामने से लाना। तरकारी भी देगा। जलपान की भांति होगा। यह खूब बढ़िया है। हम पहले भी खाते थे। (भक्त के प्रति) बताएं तो किस दुकान से लाएंगे ?" भक्त बोले, "छोटे जितेन जहां पर खाते हैं।" श्री म ने उत्तर दिया, "हां, वही दुकान।"

एक भक्त रोटी लेकर लौट रहे हैं। वे चिन्ता कर रहे हैं, कैसा आश्चर्य, अपना घर-मकान, अपने स्त्री पुत्रादि सब हैं, किन्तु उनको कष्ट नहीं देंगे। असमय में आज आए हैं गदाधर आश्रम से, तभी स्वयं कष्ट करके दुकान का खाना खा रहे हैं। किसी की सेवा नहीं लेंगे। सत्तर वर्ष पार हो गए, दांत नहीं। तो भी दुकान की यही सख्त रोटी आहार करेंगे। ये क्या, पांथशाला के पथिक की भांति रहते हैं संसार में? क्या यही है बड़े घर की दासी की भांति संसार में रहना। किंवा हाथ में तेल मलकर कटहल तोड़ना।

(4)

ब्राह्म समाज में माघोत्सव चल रहा है। नव विधान और साधारण ब्राह्मसमाज श्री म के वास स्थान के निकट हैं। श्री म सर्वदा यातायात करते हैं। आदि-समाज चितपुर में हैं। वहां पर कभी कभी भक्तों के संग में गमन करते हैं। आज भी दिन के नौ बजे साधारण ब्राह्म समाज में गए थे, संग में अन्तेवासी थे। आज 25 जनवरी, 1924 ई०, **11** माघ, शुक्रवार।

ब्राह्मसमाज जाने से पूर्व प्रातः साढ़े सात के समय श्री म एक शिक्षक भक्त के संग बातें कर रहे थे अपने कमरे में। कथा प्रसंग में कथामृत के अंग्रेजी अनुवाद की बात चली।

शिक्षक भक्त (श्री म के प्रति)—मेरी इच्छा होती है कथामृत का अंग्रेजी अनुवाद करूं। पीछे आप देख देना। देश विदेश के अनेक साधु और भक्तों ने मुझ से अनुरोध किया है।

श्री म—अनुवाद तो स्कूल के छात्र भी करते हैं। थर्ड क्लास (अष्टम श्रेणी) के लड़के भी कर सकते हैं। करने से ही तो नहीं हुआ। जिससे भाव रहे वह देखना होगा। केवल कथा का अनुवाद करने से ही नहीं होगा। साहब लोग तो कुछ भी बंगला भाषा समझते नहीं। लड़के करें तो भी बहुत सा समझ लेंगे। हमारी इच्छा है कि जैसे सहज किया जाय और भाव भी रहे। भाव छोड़ भाषा का अनुवाद करना उचित नहीं है।

'वेदान्त केसरी' में दो बार निकाला था अनुवाद। उन्हें उचित था हमसे consult (परामर्श) करना। समझते तो नहीं वे। कैसा हो तो लोग पढ़ना चाहते हैं। हमने इसीलिए शिवानन्द स्वामी को चिट्ठी दी थी। उन्होंने फिर वही चिट्ठी वहां पर भेज दी थी। पत्रिका में फिर निकाला नहीं। किन्तु भीतर ही भीतर पुस्तक छपवा दी।

शिक्षक—एक कानून है लेखक दस वर्ष के भीतर अनुवाद न करे तो दूसरा कर सकता है।

श्री म—नहीं। कानून की बात नहीं। खूब अपनापन है, जभी वैसा किया है। किन्तु वे समझते नहीं कि किस प्रकार अनुवाद करना उचित है।

यह कहकर द्वितीय भाग खोलकर उसके कुछेक दोष दिखाए। दो एक स्थान दिखाकर बोले, यहां पर अनुवाद में यह लिखा है। होना उचित था ऐसा। यही हमने सर्वदा चेष्टा की है। जिससे सहज हो—जिससे सेवेन्थ (सातवीं) क्लास का लड़का भी समझ सके। अनेक स्थानों पर तो एक word (शब्द) के बदले एक sentence (वाक्य) दे दिया है।

यह पुस्तक Gospel part I (गोस्पेल भाग प्रथम) सानफ्रांसिस्को में छपी थी। त्रिगुणातीत ने प्रकाशित की थी। इसका सम्पूर्ण अनुवाद हमने किया है। मां ने शक्ति दी थी तभी हुआ। पुनः

हमने सर्वदा यही किया है, भाव को ही देने की चेष्टा की है, जैसा सुना था। *ठाकुर बातें करते समय एक भाव प्रकाश करते–जीवन्त भाव।* हमने उसी को यथाशक्ति देने की चेष्टा की है—शब्द यथासम्भव रक्षा करके। भाव को ही primary importance (प्राथमिक प्राधान्य) दिया गया है। शब्द वा भाषा तदनन्तर। और सहज वाणी में प्रकाश करने की चेष्टा हुई है। किस उद्देश्य में बोले थे, उसके ऊपर लक्ष्य न रखा जाए तो अर्थ अन्य प्रकार का हो जाता है।

संध्या होने में थोड़ी देर है। श्री म ने जगबन्धु को नवविधान ब्राह्मसमाज में भेज दिया था। संग में सदानन्द भी गए थे। माघोत्सव चल रहा है। संध्यारति दर्शन करके भक्तगण श्री म को उसका विवरण बता रहे हैं। ब्राह्म भक्तों ने छोटी छोटी आलोकदानियों में मोमबत्तियां जलाकर आरती की है 'मां, मां', नाम करते करते। अति मनोमुग्धकर दृश्य !

रात्रि आठ। श्री म चार तल के अपने कक्ष में बैठे हैं पश्चिमास्य। पास ही सामने बैठे हैं विनय, छोटे अमूल्य, जगबन्धु और हावड़ा के चाषाधोपा मुहल्ले के सुधीर। श्री म उपनिषद् की प्रार्थना आवृत्ति कर रहे हैं, अति गुरुगम्भीर ध्वनि से।

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।
रुद्र यत्ते दक्षिणं मुखं तेन मां पाहि नित्यम् ॥

कुछ क्षण बाद श्री म नवविधान ब्राह्म मन्दिर में उत्तर पश्चिम वाले दरवाजे के निकट खड़े हुए ब्राह्म भक्तों के दर्शन कर रहे हैं। नाना रंगों की बिजलियों के आलोक से गृह आलोकित है। आचार्य वेदी पर बैठे प्रार्थना कर रहे हैं। 'मां, हमारी मनोवासना पूर्ण करो।"

अब श्री म मेछुआ बाजार स्ट्रीट से जा रहे हैं। संग जगबन्धु, विनय, छोटे अमूल्य और बड़े सुधीर। झामापुकुर लेन में प्रवेश करके दाएं हाथ राजा दिगम्बर मित्र का प्रासाद दिखाकर भक्तों से बोले, "इसी बाड़ी में ठाकुर प्रथम प्रथम पूजा किया करते थे।" और भी

"यहां भी आए थे ठाकुर, विजय-कृष्ण गोस्वामी को देखने।" यह एक छोटा दो मंजिल का मकान है। गोस्वामी महाशय कुछ काल यहां थे। और भी अग्रसर होकर बेचु चैटर्जी स्ट्रीट में आ गए। ठीक विपरीत दिशा में एक मुड़िमुड़कि (खीलें, मुरमुरे) की दुकान है। उसे दिखाकर बोले, "यहां पर भी आए थे। इसी स्थान पर ही संस्कृत पाठशाला थी ठाकुर के बड़े भाई रामकुमार की, ऐसा सुना है। (बेचु चैटर्जी स्ट्रीट को दिखाकर) और इसी रास्ते पर ठाकुर सर्वदा चलते। नित्य ठनठनिया मां काली के पास जाते। मां को भजन सुनाते। इन सब स्थानों का प्रति धूलिकण पवित्र हो गया है उनके पाद स्पर्श से।" और भी आगे गुरुप्रसाद चौधुरी लेन के मोड़ पर आकर खड़े हो गए। बायें हाथ का मकान दिखाकर बोले, "यही राजेन्द्र मित्र का गृह है। यहां पर भी सर्वदा आते। केशव सेन महाशय भी यहां आते ठाकुर के दर्शन करने।"

शंकर घोष की गली से कार्नवालिस स्ट्रीट पार कर रहे हैं। आगे जगबन्धु जा रहे हैं, पीछे श्री म। सम्मुख ही साधारण-ब्राह्म-समाज है। यहां पर भी उत्सव है। मन्दिर गात्र पर नाना रंगों का आलोक है। पूर्व बरामदे में एक बेंच पर बैठकर श्री म मन्दिर का अभ्यन्तर दर्शन करते हैं। भीड़-पूर्ण गृह के कारण भीतर प्रवेश नहीं किया। पन्द्रह मिनट ठहरने के पश्चात् पुनः रास्ता पार हुए। इसी स्थान पर आशुतोष बैनर्जी के संग मिलाप हुआ। ये ही हैं "कथामृत" के "आगरपाड़ार छेलेटि।" (आगरपाड़ा का लड़का) ठाकुर के कृपा प्राप्त भक्त। अब वृद्ध। बीच बीच में श्री म के दर्शन करने आते हैं। शंकर घोष की गली में से श्री म आशु बाबू के संग बातें करते करते चले। श्री म "ठाकुर बाड़ी" गए। विनय और जगबन्धु के संग आशु बाबू को निज गृह भेज दिया। अमहर्स्ट स्ट्रीट से सब चल रहे हैं, सुकिया स्ट्रीट की ओर। रास्ते में आशु बाबू अपना ठाकुर के साथ प्रथम और द्वितीय मिलन का संवाद बताते रहे। बोले, द्वितीय दर्शन में ठाकुर की समाधि देखकर ही मुग्ध हुआ था। कैसा एक आकर्षण मन को जोर करके खींच ले गया उनकी ओर। चेष्टा करके नहीं गया। भूताविष्ट जैसे होता है वैसे ही हुआ था।

उसी दर्शन में ही मन प्राण अपार आनन्द में पूर्ण हो गए। तदवधि उन्हीं चरणों में मनप्राण बिक गया।

रात्रि साढ़े नौ। मॉर्टन स्कूल में श्री म बैठे हैं, दो तल की बैठक के फर्श पर। पास ही बैठे हैं बड़े जितेन, छोटे जितेन, सुखेन्दु, छोटे अमूल्य, डाक्टर, छोटे नलिनी और रमणी। जगबन्धु और विनय आशु बाबू को घर पहुंचा कर लौट आए हैं।

बड़े जितेन (श्री म के प्रति)—भगवान् को मनुष्य इतना करके पुकारते हैं, इतना उत्सव, व्रत-उपवास करते हैं, तब भी क्यों लोगों को शांति नहीं होती ?

श्री म—व्याकुलता नहीं है, यही ठाकुर ने कहा था। पुकारना है तभी पुकारते हैं। अल्प आनन्द, अल्प शांति होती है इसमें सन्देह नहीं। किन्तु स्थायी नहीं होती। ठाकुर बोले थे, "आन्तरिक जो उनको पुकारेंगे उनको यहां पर आना ही पड़ेगा और जो यहां पर आयेंगे मां उनकी मनोभावना पूर्ण करेंगी।'

बोले थे, 'मेरा चिन्तन जो करेगा वह मेरा ऐश्वर्य लाभ करेगा, जैसे पिता का ऐश्वर्य पुत्र लाभ करता है।' पिता के ऐश्वर्य पर लड़के का right (अधिकार) है। तभी वह उसे पाता है। आन्तरिक पुकारे तब ही शांति प्राप्त होती है। *अभ्यास को पकड़े रहने पर धीरे धीरे आन्तरिक होता है।*

यदि पूछो, भगवान् को पुकारने पर भी क्यों दुख कष्ट होता है ? उसका उत्तर है ये (दुख) सब लोगों को चैतन्य कर देते हैं। तब आन्तरिक पुकारता है। ब्राह्म समाज में भी आज सुनकर आया हूं, ये सब (दुःख) मनुष्य को होशियार करते हैं। तो फिर इन सब को कैसे खराब कहा जाए ? उनका सब ही भला। Retrospective way (पीछे मुड़कर) अब देखता हूं, सब भला है। अशांति न हो तो कैसे शान्ति की चेष्टा होगी ? तभी तो शांति मिलेगी। सच्ची शान्ति उनमें ही है। वे स्वयं शांतिस्वरूप हैं। इसी शांतिस्वरूप का ही आश्रय लिया था सनकादि ऋषियों ने सब कुछ छोड़कर। तभी शांत हुए थे।

भक्त होने पर ही दुख नहीं होगा, वह बात भी नहीं है। भक्तों को

भी दुख होता है। पाण्डवों को देखिए ना। दुखयन्त्रणा सर्वदा लगी हुई है।

स्वयं अपने विषय में देखा है, दुख कष्ट ने मेरा भला ही किया है। एक दिन जो मन में लगी थी महाविपद्, वह ही हो गई महासम्पद्। तब बाप भाई सब एक संग रहते थे। कुछ दिन पूर्व मां गत हुई थीं। उस अवस्था में जो होता है वही हुआ। परिवार में झगड़ा झाटि लग गया। शान्ति नहीं। मन में निदारुण कष्ट। और सहन नहीं हुआ। एक दिन रात्रि को दस-ग्यारह के समय निकल पड़ा घर छोड़कर। उस पर और फिर अमावस्या की रात। संग में वह (स्त्री) भी चल पड़ी। रास्ते में घोड़ा-गाड़ी की गई। ओ मां, अन्धेरी रात में गाड़ी का पहिया गया टूट, श्याम बाजार के मोड़ के पास। महाविपद, किया क्या जाय। पास ही एक मित्र के घर में गया। मित्र ने शायद सोचा इतनी रात में यह कैसी आपद् आ पड़ी। इसलिए cold reception (अनादर सहित अभ्यर्थना) हुई। बहु कष्ट से और एक गाड़ी का प्रबन्ध हुआ रात को बारह बजे। तदुपरान्त बराहनगर में बड़ी बहन के घर जा पहुंचा। मन की अवस्था सब भयंकर थी—suicide, आत्महत्या ही एकमात्र बन्धु था। इसी भयंकर मनोभाव को लेकर इस बाग से उस बाग में फिरते फिरते उनका दर्शन हुआ दूसरे दिन। देखो कहां आत्महत्या और कहां आत्मलाभ। इसी भयंकर विपद् ने ही तो प्राप्त कर ली अतुल सम्पद्—भगवान्। सात दिन पीछे जिन्होंने यन्त्रणा दी थी, वे ही जाकर ले आए प्यार से यह कहकर कि हमारा ही दोष हुआ है। देखिए ना, यही जो घर में episode (घटना) हुई, उनका दर्शन होगा इसीलिए तो हुई। मैं तो वही समझता हूं।

कुछ क्षण सब चुप किए रहे। पुनराय बातें होने लगी। अब की बार संयम के संबंध में। अनेक चेष्टा करने पर भी जो संयम पालन नहीं कर सकते, उनका क्या होगा?

डाक्टर—ठाकुर ने कहा है, "उनको पाना हो तो वीर्यधारण करना चाहिए।" वह होता कहां है? कोई कोई खूब चेष्टा कर के खड़े हो गए हैं। किन्तु औरों के लिए यही सब से बड़ी विपद्। उपाय क्या?

श्री म—उनसे रो रो कर कहना। ये सब बातें ही क्या हैं? वे

सब ठीक कर दे सकते हैं। *"जतो विपद् ततो सम्पद्।"* चेष्टा करना और उनसे कहना। ठाकुर की कृपा से भक्तों ने इस विपद् से उद्धार पाया है।

(छोटे जितेन के प्रति)—धर्मयुद्ध के लिए जाने पर कोई कोई किसी नाइट (रात) को स्त्री के पल्ले पड़ गया—जैसे लैंन्सलॉट (Lancelot) चेष्टा करके फिर संभल गया। कोई कोई तो बिल्कुल ही गिरे नहीं।

जगबन्धु—जैसे बेडिवियर (Bold Sir Bedivere)।

श्री म—हां, सर बेडिवियर। जो गिरे नहीं उन्होंने ही एकदम "होलि ग्रेल" (Holy Grail) ली। युद्ध क्षेत्र में भी स्त्रियों के निकट पड़ जाता है, फिर सम्भल जाता है।

रात्रि साढ़े दस।

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता।
29 जनवरी, 1924 ई०, शुक्रवार।
11 माघ, 1330 (बं०) साल।

पंचदश अध्याय

नवविधान ब्राह्मसमाज में श्री म

(1)

श्री म स्कूल के आफिस में दो तल पर सारा दिन बैठे रहे। तीन के समय तीन तल पर चढ़े। कई भक्त श्री म की प्रतीक्षा में बैठे हैं—भवानीपुर के यतीन बाबू, सदानन्द, जगबन्धु, "ब्रुकवाण्ड" (यतीन), गदाधर प्रभृति। कुछ बाद में बड़े जितेन आए। अब पौने पांच। "कांकुड़गाछि बागान" की कथा हो रही है। आज 26 जनवरी, 1924 ई०, शनिवार, 12 माघ, 1330 (बं०) साल।

श्री म (यतीन बाबू के प्रति)—वह भी तो एक महातीर्थ है। वहां पर ही तो प्रथम अस्थिस्थापन किया था स्वामी जी ने। सिर पर धारण करके घट को ले गए थे। उसके अतिरिक्त उसी बाग में एक बार ठाकुर गए थे। अब जहां पर तुलसी कुंज हैं, मंदिर के दक्षिण में, वहां पर बैठे थे। कमरे में भी बैठे थे।

जगबन्धु—नहीं। प्रथम श्मशान से काशीपुर बागान गई, फिर बलराम बाबू के घर पर। वहां से दो भाग हुए। शशी और निरंजन ने एक भाग गोपन में रख दिया, यही अब मठ में है। शेषांश कांकुड़गाछि बागान में ले गए। वहां पर ही समाहित किया गया।

भवानीपुर के यतीन बाबू—कोई कोई कहता है ललित महाराज का दिमाग खराब हो गया है। यह बात क्या सत्य है ?

श्री म—वैसा हो जाता है ईश्वर चिन्तन करने से। लोग उसे ही पागल बोलते हैं। किन्तु ठाकुर ही तो वह रास्ता दिखा गए हैं। ठाकुर को ही पागल कहते थे लोग। बाबूराम महाराज, राखाल महाराज, हरि महाराज—इनको भी ऐसे ही भाव होता था। तारक

महाराज को भी होता था जब नित्य गोपाल के संग रहते थे। राम बाबू, नित्य गोपाल और तारक महाराज, ये एक संग ठाकुर के पास जाया करते। राम बाबू के घर पर ही तीनों जने रहते। अट्ठारह सौ बियासी से छियासी (1882-1886) तक यातायात करते रहे चार बरस। छियासी में काशीपुर बागान में तारक महाराज पूर्ण रूप से रह गए।

ठाकुर एक बार "नन्दन बागान" गए। वहां पर जानकी घोषाल के संग मेल हुआ। बातें हुईं, तब जानकी बाबू patrosining way में (मुखिए के भाव से) बोले, वह कुछ नहीं है भाव-टाव (हास्य)। Matter-of-fact man (संसारी व्यक्ति) कि ना। किन्तु ठाकुर ने सुनकर protest (विरोध) किया।

ऐसा (पागल) हो तो आश्चर्य कुछ नहीं है। व्याकुल होने से ही nerve excited (नाड़िएं चंचल) हो जाती हैं। अन्य कारण से हो तो अन्य प्रकार का होता है। विषयचिन्ता करके उन्माद और ईश्वर चिन्तन करके उन्माद हैं पृथक् वस्तुयें।

श्री म (यतीन बाबू के प्रति)—आप लोगों को इनका दर्शन हुआ है क्या मां, राखाल महाराज, राम बाबू का ?

यतीन बाबू—काशी में हरि महाराज के दर्शन किए थे।

श्री म—वह होने से ही हुआ। दर्शन ही मन में ठहरते हैं। हमें केवल "सीन" (दृश्य) ही देखने की इच्छा होती है। ब्राह्मसमाज में जाता हूं इसीलिए। बातें याद नहीं रहतीं। और इतनी बातें स्मरण रहें भी कैसे ? "सीन" तो स्मरण रहते हैं।

अन्य लोग ठाकुर की भावावस्था को "पागलामि" बोलते। ब्राह्मसमाज के कोई कोई बोलते 'मिरगी'। ब्राह्मणी ने आकर बताया, "नहीं, यह महाभाव की अवस्था है। चैतन्यदेव की ऐसी होती थी।" तदुपरान्त वैष्णव चरण ने आकर उसे corroborate (समर्थन) किया।

जगबन्धु—सब "इंग्लिशमैन" जाते थे ठाकुर के पास। उनको शीघ्र ऐसी बातों पर विश्वास नहीं होता था।

श्री म (सहास्य)—इस बार की लीला में सब ही "इंग्लिशमैन।"

यही एक वैशिष्ट्य। अब भी जो आते हैं प्रायः सब ही वैसे हैं। इंग्लिशमैन विचार करते हैं कि ना (हास्य)। जो विचार करते हैं उनको ये सब होता नहीं भाव-टाव। भिन्न भिन्न श्रेणी के लोग हैं।

सी० आर० दास मठ में दरिद्रनारायण के संग बैठकर खाते।

अन्तेवासी (जनान्तिक, बड़े जितेन के प्रति)—आज इनका विश्राम नहीं हुआ, सारा दिन आफिस में थे।

यह बात सुनकर भक्तगण दो तल के कमरे में उतर गए। श्री म कुछ क्षण विश्राम करते हैं।

आज शनिवार। दो तल के कमरे में बहु भक्त एकत्रित हुए हैं। भाटपाड़ा के ललित, भोलानाथ, बसन्त और उनके मित्र आए हैं। ये शनिवार को आते हैं आफिस से लौटते हुए। तभी भक्तगण आनन्द मनाकर इन्हें शनिवार के भक्त कहते हैं। बड़े अमूल्य, छोटे जितेन, बड़े जितेन, छोटे अमूल्य, सुखेन्दु, उनका मित्र रमणी, "ब्रुकबॉण्ड" (यतीन), डाक्टर, विनय, छोटे ललित (वकील), अमृत, जगबन्धु आदि आए हैं।

छह के समय श्री म दो तल के कमरे में आए। अब संध्या। फर्श पर पूर्वास्य हुए कुछ क्षण ध्यान कर रहे हैं। भक्त भी ध्यान कर रहे हैं। इसी बीच विपिन सेन आ उपस्थित हुए। श्री म उन्हें परम स्नेह पूर्वक निकट बिठाकर कुशल प्रश्न कर रहे हैं। तत्पश्चात् भक्तों के संग परिचय करवा रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ये अधरसेन के वंशीय हैं—उनके भतीजे। इनकी आयु थी तब दस ग्यारह बरस। ठाकुर के दर्शन किए हुए हैं। वे उनके घर जाते थे कि ना।

बड़े जितेन—तब तो हमारे आत्मीय जन।

श्री म—आत्मीय, आत्मीय ही क्यों—परमात्मीय!

"भक्त क्या कम जी, नरसिंह अवतार के गर्जन से आकाश पाताल विदीर्ण हो रहा है। देवता गन्धर्व सब अस्थिर हैं। सब ने सोचा पृथ्वी रसातल में जा रही है। तब देवताओं ने बैठकर

resolution pass (प्रस्ताव स्थिर) किया—भक्त प्रह्लाद को उनके पास भेज दिया जाए। ज्यों ही प्रह्लाद गए—कहां गर्जन! सब बन्द हो गया। सस्नेह जीभ से देह चाटने लगे भगवान। जैसे सिंहनी अपनी सन्तान की देह चाटती है। भक्त ऐसा प्रिय।

"केशव सेन ने अट्ठारह सौ चौरासी (1884) में देहत्याग की। उनके लड़के बीच-बीच में ठाकुर के पास जाते थे। अट्ठारह सौ छियासी के आरम्भ में एक जन गया उनके पास, आयु ग्यारह-बारह होगी। केशव बाबू का बेटा है, यह बात सुनकर वे गोद में खेंचकर रोने लगे। शरीर पर हाथ फेर रहे हैं। तब वे अस्वस्थ थे (काशीपुर बागान) में। केशव बाबू की बात स्मरण हुई थी कि ना। उनको कितना प्यार करते थे। भक्त ऐसी वस्तु!

श्री म के चक्षु छलछल, कण्ठस्वर भारी और विजड़ित (अस्पष्ट)।

विपिन बाबू (विनीत भाव से)—उनका दर्शन किया है, पादस्पर्श किए हैं, किन्तु हुआ क्या, पता तो नहीं लग रहा। मन क्यों शान्त नहीं होता?

श्री म—एक जन पचास मील चला गया रेल में चढ़कर, निद्रित था। निद्रा टूटने पर बोला, गाड़ी के भीतर वही स्थान, वे ही सब लोग, वही बिछौना। समझ नहीं सका गाड़ी कहां आ गई है। आपका भी वही हो रहा है। कहां पहुंच गए हैं यह समझ नहीं पा रहे हैं। वे जब आपके गृह में गए हैं आपका वंश उद्धार हो गया है। साक्षात् भगवान् को घर में ले जाकर सेवा, और इतना प्रेम! आप क्या कम हैं! निज को निज पहचान नहीं सक रहे हैं।

साधारण साधु आते हैं उद्धार पाने, वे आए हैं उद्धार करने। यह बात ही मां ठाकुरुण से कही थी एक स्त्री भक्त ने (श्री म की धर्मपत्नी ने)।

अन्य साधु घर आए तो खूब उत्सव लग जाता है। घर के लोग कहते हैं, उनके हमारे घर में आने के पश्चात् ही हमारा यह सब कुछ—रुपया-पैसा, घर मकान, लड़के-बच्चे बढ़े हैं—मान-सम्मान,

नामयश यह सब हुआ है। ये निश्चय ही बड़े साधु हैं। यही है साधु की conception (धारणा) साधारण लोगों में।

किन्तु जगदम्बा से बोलने के लिए, कहने पर ठाकुर ने स्वामी जी से कहा था, "दाल भात हो तो बस—इससे अधिक नहीं।"

अधर बाबू के सम्पर्क में भी कहा था, "किन्तु उसकी कैसी हीन बुद्धि है, मां। जहां पर से परमार्थ लाभ होता है वहां से वह न मांगकर, चाहता है क्या, रुपया पैसा !

अधर बाबू तीन सौ रुपया महीना पाते थे—डिप्टी मैजिस्ट्रेट थे। हजार रुपये महीने की नौकरी की चेष्टा कर रहे थे कॉर्पोरेशन में। ठाकुर से अनुरोध किया था, मां से कहने के लिये। ठाकुर ने मां से बोला तो अवश्य, किन्तु ढंग दूसरा था। ठाकुर बोले, मां, अधर ने बोला है तुम्हें नौकरी के लिए कहने को। वह हो तो हो मां। तत्पश्चात् यही बात बोले, किन्तु उसकी कैसी हीन बुद्धि है मां। जहां परमार्थ लाभ होता है वहां से वह न मांगकर चाहता है क्या, रुपया पैसा !

श्री म (भक्तों के प्रति)—एक जन ने ठाकुर से कहा था, अमुक बड़ा बुद्धिमान है। ठाकुर सुनकर बोले, कैसी बुद्धि जी,—"चिड़ाभेजा" बुद्धि तो नहीं ? बोलते ही पूछा, लगता है समझे नहीं। उस देश (कामारपुकुर) में दही मिलता है। फर्स्ट क्लास, सैकेण्ड क्लास दही है। और एक प्रकार का है थर्ड क्लास। इसमें चिउड़ा भिगोना ही चलता है बस। पृथक् जल का प्रयोजन नहीं होता, जलवत् तरल (हास्य)। वैसे ही बुद्धि। इसके भी नाना भेद हैं। जिस बुद्धि से गाड़ी-घोड़ा, धन-दौलत, मान संभ्रम लाभ होता है उसे कहते हैं 'चिड़ा भेजा बुद्धि' अर्थात् *विषय बुद्धि*। उसके द्वारा संसार का लाभ हो सकता है, किन्तु भगवान लाभ अति दूर। जिस बुद्धि से भगवान की ओर मन जाता है, उनका दर्शन होता है, वही बुद्धि *'खासा बुद्धि'* है।

(विपिन के प्रति)—यही जो आप लोग यहां फिरते हैं, वहां घूमते हैं (सत्संग के लिए), उनको देखा था, इसी कारण ही तो। ऐसी यह बुद्धि सब की नहीं होती। उनकी कृपा होने से ऐसी बुद्धि होती है। नचेत् विषय बुद्धि का जाना बड़ा कठिन है।

श्री म कुछ क्षण चुप किए रहे। तत्पश्चात् भक्तों से बोले, यह गाना एक बार हो जाए ना—"एसेछे नूतन मानुष"। भक्तगण मिलित कण्ठ से गा रहे हैं। श्री म ने भी योगदान किया। सब एकदम मस्त हैं।

गान— एसेछे नूतन मानुष देखवि जदि आय चले।
श्रौ ताँर विवेक वैराग्य भुलि दु कांधे सदाइ भुले ॥
श्री बदने "मां मां" बोले पड़े गंगा सलिले।
बोले ब्रह्ममयी गेलो तो दिन देखा तो नहि दिले ॥ इत्यादि*

गान शेष हुआ। पुनः सब नीरव। क्षण काल पश्चात् श्री म फिर ठाकुर का कथामृत वर्षण कर रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ठाकुर तब अस्वस्थ थे। एक भक्त ने उनसे कहा, आपको देखकर तृप्ति नहीं होती। ठाकुर ने सस्नेह उत्तर दिया, हां, *भगवान् को देखकर तृप्ति नहीं होती।*

भक्त क्या कम! यदि world (जगत्) में real (सत्य) कुछ है तो भक्त ही है। भक्त ही है अन्य रूप में भगवान्! They are leading a real life. भक्तगण ही ठीक ठीक जीवन यापन करते हैं। (विपिन बाबू को दिखाकर) यही, इन्हें देखकर कितनी ही तो बातें आज मन में उठ रही हैं।

(विपिन के प्रति)—खबरदार, वह बाड़ी जैसे भी हो ठीक रहे। ठाकुर ने कितना आना जाना किया है वहां। आज भी कितने भक्त उसका दर्शन करने जाते हैं। जहां पर वे सर्वदा जाते, वे सब महातीर्थ बनकर अवस्थित हैं। वे सब कैसी हैं, नूतन काकी आदि (अधरसेन की स्त्री)?

विपिन—जी, अच्छी हैं। तो भी लड़कियों का शोक है।

---

*एक नया मनुष्य आया है, आओ यदि देखना है तो चलें। उसके दोनों कन्धों पर विवेक और वैराग्य के झोले सर्वदा झूलते रहते हैं। मुख से 'मां, मां' कहकर गंगा के जल में गिर जाता है। कहता है, ऐ ब्रह्ममयी, आज का दिन भी गया, दर्शन तो आपने मुझे नहीं दिया।

श्री म—तीनों ही लड़कियां गईं ?

विपिन—जी हां, तीनों ही चली गई हैं।

श्री म—हां, आप लोग उन्हें भी देखिएगा, बीच-बीच में जाइएगा। सुनता हूं धन का कुछ अभाव है। तो भी आपके जाने से बहुत साहस होगा। अपना जन देखने से साहस होता है। स्त्रियों के हाथ में पैसा न हो तो बड़ी मुश्किल होती है।

मॉर्टन स्कूल के दक्षिण की ओर श्रमजीवियों की एक पल्ली है। मुसलमान भक्तगण कभी कभी भजन करते हैं। आज भी वे भजन गा रहे हैं। उनके गाने का सुस्वर और धूप की सुगन्ध श्री म की भक्त मजलिस में भी पहुंची है। श्री म हजरत मुहम्मद की कथा चिन्तन कर रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—भक्तों के लिए भगवान् भी व्याकुल होते हैं, जैसे भक्त व्याकुल भगवान् के लिए। Last illness (मुहम्मद के अन्तिम असुख) के समय बहुत सारे भक्त मसजिद में समवेत हुए हैं। उन्हें पता लगा, मुहम्मद को खूब असुख है। आज वे आ नहीं सकेंगे उनके पास। यह बात सुनकर सब उच्च स्वर से रोदन करने लगे। मुहम्मद उस रोदन का शोर सुनकर फिर स्थिर नहीं रह सके। कई सेवकों के कन्धों पर भार देकर वे मसजिद में आ उपस्थित हुए। तब भक्तों को कितना आनन्द। चुम्बक सूई को खींचता है। सूई भी कभी कभी चुम्बक को खींचती है, ठाकुर बतलाते।

ठाकुर बोले, पूर्ण कायस्थ का लड़का है, उसके लिए मन कैसे कैसे करता है, क्यों, बताओ तो देखूं ?—नरेन्द्र जब गए उन्हें देखकर अन्य भक्तों से कहा था, मां ने मुझे बताया था, कायस्थ के घर जन्मा है। पहले ही दिखा दिया था।

बड़े जितेन—चैतन्य संकीर्तन में भी किसी किसी को (श्री म, बलराम आदि को) देखा था। पीछे उन्हें देखकर पहचान लिया था।

श्री म—हां, मां ने जिन्हें पहले दिखला दिया था उन्हें पहचान लिया था। आने जाने से पूर्व-स्मृति का उद्दीपन होता है कि ना ! भक्तों के लिए भगव[illegible] भी व्याकुल होते हैं। (भक्तों के प्रति) किसी भक्त को [illegible] और इधर कल दबा रहे हैं, मां इसको डुबाना मत।

उनको भी जो जितना समझेंगे, (विपिन को दिखाकर) इनको वे उतना प्यार करेंगे।

विनय (श्री म के प्रति)—कल विवेकानन्द सोसाइटी का मासिक अधिवेशन होगा दक्षिणेश्वर में।

श्री म (भक्तों के प्रति)—तब तो कल खूब function (उत्सव) है वहां। उनके स्थान पर उन्हीं की वाणी की आलोचना। जाना उचित सब को।

जनैक भक्त—ठाकुर के समय के कोई जाएंगे क्या ?

श्री म—रामलाल दादा हैं। वृक्ष लता ये भी सब उनके साक्षी हैं। वे हैं और मां हैं, राधाकान्त हैं, शिव हैं। और वही सब जीवन्त जाग्रत रज, जिसके ऊपर वे चलते थे, ये सब ही तो हैं। मां गंगा सम्मुख हैं।

बड़े अमूल्य—अवतार के संग में सर्वदा एक ही दल सांगोपांग का आता है क्या ?

श्री म—ऐसा ही सुना है।

"ठाकुर ने कहा था, मेरा चिन्तन जो करेगा वह मेरा ऐश्वर्य लाभ करेगा जैसे पिता का ऐश्वर्य पुत्र लाभ करता है। यही तो हमने जैसे उनका ऐश्वर्य लाभ किया है। आप भी लाभ कर रहे हैं। भविष्यत् में भी करेंगे।"

रात्रि दस। भक्तों ने विदा ली।

(2)

दूसरे दिन रविवार। आज सारा दिनव्यापी उत्सव नवविधान ब्राह्मसमाज में रहा। श्री म प्रातः साढ़े सात नवविधान में गए थे। उनके संग थे अमृत, विनय और जगबन्धु। वहां से झामापुकुर के भीतर से गुरुप्रसाद चौधरी लेन आए। 'ठाकुर बाड़ी' के सम्मुख खड़े हुए जगबन्धु और विनय से बोले, तुम लोग दक्षिणेश्वर जाओ तो अच्छा हो। उन्होंने काशीपुर में डाक्टर के भवन में आहार कर, छोटे अमूल्य को संग ले, दक्षिणेश्वर गमन किया। नटमन्दिर में बहु भक्त समागम हुआ

है। मठ से भी अनेक साधु आए हैं। विवेकानन्द सोसाइटी के अध्यक्ष स्वामी बोधानन्द सभापति हैं, सभा के अन्त में कालीकीर्तन हुआ। आरति दर्शन करके भक्त कोई कोई काशीपुर रहे डाक्टर के गृह में—विनय, जगबन्धु, छोटे अमूल्य, सुखेन्दु आदि।

अगले दिन सोमवार, 28 जनवरी, 1924 ई०। मॉर्टन स्कूल के दोतल के वराण्डे में श्री म बैठे हुए हैं—सीढ़ी के सामने दक्षिणास्य। श्री म के बायें हाथ उसी बेंच पर ही मुकुन्द और जगबन्धु बैठे हैं। विनय बैठे हैं और एक बेंच पर पूर्व की ओर। वह हाई बेंच से संयुक्त है। मुकुन्द रामपुर हाट के प्रधान हैं। अभी अभी आए हैं। विनय और जगबन्धु दक्षिणेश्वर से लौटे हैं। उनसे गत कल को विवेकानन्द सोसाइटी के मसिक उत्सव की कथा सुनी। अब निज ब्राह्मसमाज उत्सव का विवरण दे रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—कल हम अपराह्न में नवविधान गए थे। तब समय साढ़े चार का था। कामाख्या बाबू ने "पुलपिट" (वेदी) से sermon (उपदेश) दिया। ये बांकीपुर कॉलेज के अध्यापक हैं। खूब अच्छा लगा तभी ठहर गया। वे जो बोले उससे लगता है निश्चय ही साधुसंग किया है। ठाकुर की अनेक बातें बोले—निर्जनवास, ब्रह्मचर्य इत्यादि सब बातें। देखा, इससे अनेक लोग uncomfortable (अस्वस्तिबोध) कर रहे हैं। एक जन आसन छोड़कर उठ गया। जाते जाते खड़ा होकर फिर सुनने लगा और क्या कहते हैं। और कुछ क्षण बोलते तो संभवतः महागोलमाल होता। वक्ता भी फिर बड़े चालाक थे। सब बातों के पीछे ब्रह्मानन्द (केशवसेन) का नाम करते थे। कहा, उन्होंने भी ऐसा ही कहा था अमुक वक्तृता में। अन्य का नाम करने पर तो लोग रुष्ट हो सकते हैं। तभी ब्रह्मानन्द का नाम करते। (सहास्य) उनका नाम करने पर सब चुप हो जाते। अन्य बात तो एक भी और बोलने का उपाय ही नहीं था। उनकी tendency (भाव) है, भाई-बहन मिलकर प्रेम में रंगरलियां करें। किन्तु इनके sermon (प्रवचन) में ये सब बातें नहीं थीं। (संयत गम्भीर हास्य सहित) ओ बाबा, ये साधारण ब्राह्मसमाज में होते तो रक्षा कहां थी? एक बार शिवनाथ शास्त्री 'पुलपिट' पर बैठे sermon (प्रवचन) दे रहे थे। तब

कुल्हाड़ा लेकर कई जन काटने आए। 'पुलपिट' को कहा था, नहीं, यह 'पुलपिट' अब नहीं रखेंगे। यहां पर बैठकर ऐसी सब बातें !

"कमाख्या बाबू की बातें सुनकर मन में केवल आ रहा था ऐसी बातें कहां से पाईं ? पटना में ठाकुर का आश्रम हुआ है। क्या वहां यातायात करते हैं ? और बोले भी अच्छा, धीरे धीरे स्पष्ट करके, जिससे सब समझ सकें।"

जगबन्धु—बहुकाल से प्रोफेसरी करते हैं, तभी।

श्री म—वह तो अनेक ही करते हैं ? क्या होता है ? सब के विरुद्ध ऐसी बातें बोलने के लिए कितना moral courage (नैतिक साहस) आवश्यक है। This argues moral courage (नैतिक शक्ति) से ही केवल इस प्रकार बोलना संभव है। प्रमथ बाबू भी अच्छा बोलते हैं—किन्तु overlap करते हैं, एक के ऊपर एक ले आते हैं। जल्दी जल्दी में समस्त idea (भाव) लोग ले नहीं पाते।

कामाख्या बाबू बोले, अवस्तु के त्याग बिना वस्तु लाभ नहीं होता। ये सब महावाक्य ठाकुर के हैं। साधु संग किया है कि ना। साधु को जो प्यार नहीं करता वह beast in life जीवन्त पशु हैं। पशुओं के संग मनुष्य का community of interest समव्यवहार है—आहार, विश्राम, सन्तान उत्पादन और भय। मनुष्य के भीतर भगवान् को पुकारने की शक्ति है। मनुष्य यदि वैसा न करे तो केवल रूप में मनुष्य होता है, किन्तु कार्य में तो पशु ही होता है।

"कामाख्या बाबू ने प्रथम ही कह दिया था, अनेक दिन से मन में जितनी ही सब बातें संचित थीं। आज बोलने की सुविधा हुई तभी बोल रहा हूँ। बांकी पुर में रहते हैं कि ना, जभी तो सुविधा नहीं होती बोलने की।"

श्री म (जगबन्धु के प्रति)—आप जाकर उनके संग आलाप कीजिए—स्वामी जी के उत्सव के पश्चात् मठ से प्रत्यावर्तन करके। एक गान भी हुआ था अनाहत शब्द का। उस गाने ने मन को आकर्षित करके कहां चढ़ा दिया है ! प्रतीत होता है उस गान को भी उन्होंने ही lead (परिचालित) किया था। उसे भी लिख लाना। उसकी धारणा करने से उनका दर्शन होता है। हमारी इच्छा उनके दर्शन करने की है।

सुना है, मिर्जापुर पार्क के पास रहते हैं। ब्राह्मसमाज के प्रचारकों का एक आश्रम है। यहां जाने से उनका ठिकाना जान सकोगे। उनसे पूछना, 'आप क्या पटना आश्रम में जाते हैं ? और कितने दिन से जाते हैं ? बोलना, आपकी वक्तृता से हम बड़े ही संतुष्ट हुए हैं।'

आज बेलुड़ मठ में स्वामी जी का जन्म महोत्सव है। श्री म की गदाधर आश्रम जाने की बात थी। किन्तु भक्तगण बोले, आज मठ ही चलें तो अच्छा है। डाक्टर बाबू कार ले आए हैं। साढ़े नौ बजे श्री म मठ के लिए रवाना हुए—संग में विनय और डाक्टर हैं।

अब समय तीन का। श्री म बेलुड़ मठ में एक बेंच पर पूर्वास्य बैठे हैं। सम्मुख स्वामी जी का मन्दिर, उसके बाद गंगा। पास बैठे हैं स्वामी सारदानन्द, सान्याल महाशय और 'अब्दुल' (किशोरी राय)। ये सब ही ठाकुर की सन्तानें हैं, उनके समयकार लोग। परस्पर ठाकुर की पुरानी कथा कहकर आनन्द मना रहे हैं। कुछ क्षण बाद स्वामी सारदानन्द श्री म को साथ लेकर स्वामी जी के मन्दिर के द्वितल पर चढ़ गए। उत्तर पूर्व कोने में बैठी अमरीका की भक्त फॉक्स भगिनीद्वय गंगा और दक्षिणेश्वर दर्शन कर रही हैं। ये सान्फ्रांसिस्को के मठ के अध्यक्ष स्वामी प्रकाशानन्द के साथ इस पुण्य भूमि का दर्शन करने आई हैं। स्वामी सारदानन्द ने श्री म के साथ उनका परिचय करवा दिया। भगिनीद्वय ससंभ्रम उठकर खड़ी हो गईं और फिर भूमिष्ठ हो श्री म को प्रणाम किया।

श्री म पांच बजे कार पर चढ़े, गदाधर आश्रम जाएंगे।

(3)

समय दो। श्री म मॉर्टन स्कूल में आए हैं गदाधर आश्रम से। संग में डाक्टर कार्त्तिक बक्शी और भक्त फकीर बाबू हैं। श्री म स्कूल के ऑफिस में सुपरिन्टैन्डैण्ट के आसन पर बैठे हैं पश्चिमास्य। संगीगण निकट वाली चेयरों पर बैठे हैं। कुछ क्षण बातचीत करके वे तीन बजे ऊपर चले गए, विश्राम करते।

समय प्राय: पांच। श्री म पुन: दो तल पर उतर आये। ऑफिस के पास के कमरे में भक्त बैठे हैं। आज दो फरवरी, शनिवार है। तभी भक्त समागम पहले से ही हो गया है। भाटपाड़ा के ललित

प्राय: शनिवार को ही आते हैं। वे आज भी आए हैं । बसन्त एवं संगी दो-तीन जन आए हैं। बाग बाजार से एक जन गोस्वामी आए हैं। श्री म गोस्वामी के साथ बातें करते हैं।

श्री म (गोस्वामी के प्रति)—भवानीपुर में एक भक्त रहते हैं गदाधर आश्रम के सामने। ईंट व्यवसायी के पास कर्म करते हैं, पच्चीस रुपए महीने पर। मालिक ने एक मास से रुपया नहीं दिया। भक्त ने कहा कर्म छोड़ दूंगा। हमने कहा, ऐसे स्थान पर रुपया देकर भी रहना उत्तम। यहां पर रहने से कितना उपकार हो रहा है। अवसर मिलते ही आश्रम में आया जाता है। और कभी जप, कभी ध्यान, कभी भजन किया जा सकता है। और कैसा साधु संग ! ऐसे साधु मिलते कहां हैं, ठाकुर के साधु ? वे दिन रात highest ideal (सर्वश्रेष्ठ आदर्श) को लिए पड़े हैं। इतनी सुविधा है, नौकरी में रुपए न भी मिलें तो क्या ? निज रुपया देकर रहना उचित ऐसे स्थान पर तो। हमारे मना करने पर अब कुछ समझे हैं। कम उमर है कि ना, प्रथम तो समझ नहीं सके।

और भी एक दिक् है। ठाकुर एक गल्प सुनाया करते—दो बन्धु भ्रमण करने निकले। एक जन तो रास्ते के पास भागवत पाठ होता होता देखकर वहीं पर ही बैठ गया। और एक जन गया वेश्यालय में। जो वेश्यालय में गया था क्षण भर बाद परिताप करने लगा, छि: मैं कैसा हीन काज कर रहा हूं। भागवत पाठ छोड़कर इस नरक में गया हूं। जो भागवत पाठ में था, वह सोचने लगा, मेरा मित्र कितना मजा लूट रहा है। दोनों की ही मृत्यु हुई। जो भागवत पाठ में था उसको यमदूत ले गए नरक में मारते मारते। और जो वेश्यालय में गया था वह गया बैकुण्ठ में, विष्णु दूतों के संग। इसका अर्थ है, *मन-ही-सब। शरीर चाहे न भी गया। मन जाने से ही हुआ। मन जहां तुम भी वहां।*

श्री म का शिक्षा का भी अद्भुत कौशल है। गोस्वामी को साधु संग करने के लिए कहा है, अन्य एक भक्त का चरित्र वर्णन करके। साक्षात् रूप से कहने से तो संभवत: नहीं करेंगे। और फिर नित्य सत्संग करने की किसी भी प्रकार से सुविधा न हो तो मन

को सत्संग में भेज देने से भी संग हो जाता है, यह बात भी बता दी।

श्री म (ललित के प्रति)—अपना वही स्तव गोस्वामी महाशय को सुना दीजिए ना।

ललित बाल्मीकि-कृत वही 'गंगा-स्तोत्र' सुनाने लगे:—

मातः शैलसुता, सपत्नी वसुधा शृङ्गारहारावलि।
स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागिरथीं प्रार्थये ।। इत्यादि

तदनन्तर शंकराचार्य कृत दुर्गापराध क्षमापन स्तोत्र :—

शिशौ नासीद् वाक्यं जननि तव मंत्रं प्रजपितुं।
किशोरे विद्यायां विषमविषये तिष्ठति मनः ।। इत्यादि।

अब तुलसीकृत रामस्तोत्र को आवृत्ति शेष हुई:—

नमामि भक्तवत्सलं, कृपालुशीलकोमलं
भजामि ते पदाम्बुजं, हृयकामिनां स्वधामदम् ।। इत्यादि।

श्री म (ललित के प्रति)—गंगा तीर पर कृष्ण मंगल यात्रा हो रही है, गदाधर आश्रम के निकट। बड़ी सुन्दर। भागवत कथा इस प्रकार से हमें कोई सुनाए तो अच्छा हो। तभी जाता हूं सुनने। कल प्रायः तीन क्वार्टर्ज़ (पौन घण्टा) खड़ा रहा। और अधिक न रह सकता। Oldman, (वृद्ध) के लिए वही यथेष्ट है।

श्री म क्या चिन्तन कर रहे हैं। पुनः बातें हो रही हैं।

श्री म—हां ललित बाबू, आपकी लड़की की क्या खबर है? आपके घर में तो गृहिणी नहीं है जो सब बता देगी। समधियों को भेंट भेजनी चाहिए तभी वे सन्तुष्ट रहते हैं।

ललित—क्या, रुपयों से।

श्री म—ना। मिठाई कपड़े—इन सब की भेंट देनी चाहिए। तभी ससुराल के लोग खुश रहते हैं।

ललित आदि ने विदा ली। एक नूतन युवक के साथ बातें हो रही हैं।

श्री म (जनैक नूतन युवक के प्रति)—आप कहते हैं कि आप कुछ भी नहीं करते। शार्टहैण्ड क्यों नहीं सीखते?

युवक—मां से कहूंगा कि आपने कहा है।

श्री म—हां, यह कह सकते हो। वे सब बातें कहने का क्या काम—मठ में जाना, साधुसंग करने की बातें। शार्टहैण्ड सीखने की बात कहें। वे सब बातें गोपन का धन है। ढाक ढोल पीटकर नहीं होता। भगवान् को इस प्रकार पुकारना चाहिए जिससे कोई जानने न पाए। पहले कुछ जमा तो हो, फिर चाहे दूसरे को कहा जाए।

युवक की अल्प मोटी बुद्धि है।

युवक—जी, जो आज्ञा, आपका नाम करके सब कहूंगा।

श्री म—ना, ये सब हमारी बातें नहीं हैं। सब ठाकुर के महावाक्य हैं। वे किसी किसी से कहते, 'सुना है तुम कुमड़ाकाटा बड़ ठाकुर,' क्यों जी ? बच्चे वैसा न बनना। इसका अर्थ, इस व्यक्ति का पुरुषार्थ यहां तक। वह केवल कद्दू ही काट सकता है। और किसी काम का नहीं है। महिलायें 'कद्दू नहीं काटतीं। जभी एक जेठ जी होते हैं घर में। केवल कद्दू काटना ही उसका काम होता है अर्थात् अपदार्थ, (बिल्कुल व्यर्थ)। न इधर के न उधर के। एक दिक लेकर रहना चाहिए।

अब संध्या समागता। नित्यकार भक्तगण एक एक कर के आ उपस्थित हुए। रमणी, छोटे नलिनी, छोटे अमूल्य, गदाधर, डाक्टर, वकील, ललित, बड़े जितेन, छोटे जितेन, जगबन्धु, बलाई आदि आए हैं। बलाई नूतन आना जाना करने लगे हैं—घर पास ही है।

कमरे में आलोक आया। श्री म हाथ ताली देकर बोल रहे हैं "हरि बोल, हरि बोल।" फिर सब ध्यान कर रहे हैं, फरश पर चटाई पर बैठकर। आध घण्टा पीछे श्री म गा रहे हैं :—

गान—हरिरस मदिरा पिये, मम मानस मातरे,
लुटाए अवनीतल, हरि हरि बोले काँदो रे।
गंभीर निनादे हरिनामे गगन छाओ रे,
नाचो हरि बोले, दुबाहु तुले, हरिनाम बिलाओ रे;

हरिनाम आनन्द रसे अनुदिन भासो रे,

गाओ हरिनाम, होओ पूर्णकाम नीच वासना नाशरे ॥*

श्री म पुनराय कृष्णमंगल यात्रा की बात कह रहे हैं।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—सुनते हैं जितेन बाबू, आदिगंगा के तीर पर कृष्णयात्रा हो रही है। वे लोग सुन्दर गाते हैं। पांच रुपये लेते हैं एक बारी में। दो हारमोनियम दो खोल, और तीन लड़के हैं। हाथ बढ़ाकर पैसे लेते हैं। न दो तो फिर कहते हैं, पैसे नहीं हैं, गान सुनने आए हो? (सबका हास्य) हमने दिए थे एक दिन। डाक्टर बाबू ने दिए थे एक दिन।

(कार्त्तिक के प्रति) हैं ना डाक्टर बाबू ?

बड़े जितेन—पैसे जब दिए थे तब ठेल ठाल कर बैठ क्यों नहीं गए ?

श्री म (सहास्य)—किन्तु गाते हैं सुन्दर।

जगबन्धु—आज कामाख्या बाबू के घर गया था।

श्री म (साग्रह)—क्या कहा उन्होंने, बताइए तो।

जगबन्धु—ठाकुर के दक्षिणेश्वर में दर्शन किये थे। वयस तब कम थी; प्रथम यौवन।

श्री म (आह्लाद से)—मैंने भी वही समझा था—ये सब बातें पाई कहां से? सब ठाकुर की बातें हैं। (बालक की न्याईं, उत्सुकता से) इस ओर अग्रसर होकर बैठिए ना।

मुख के पास मुख रखकर सुनने लगे। श्री म पूर्वास्य, जगबन्धु पश्चिमास्य।

जगबन्धु—बोले, ठाकुर ने स्नेह करके छींके में से सन्देश

---

*भावार्थ—हे मेरे मन, हरिरस की मदिरा पीकर तू मतवाला हो जा। धरती पर लोटपोट होकर हरि हरि बोलते हुए रोदन कर। हरिनाम के गंभीर निनाद से गगन भर। दोनों बाहें उठाकर हरि हरि बोलकर नाचो और हरिनाम बांटो। हरिनाम के आनन्द रस में रात दिन तैरते रहो। हरिनाम गाओ और पूर्णकाम हो जाओ और नीच वासना का नाश करो।

निकालकर अपने हाथ से खाने को दिए थे। और फिर प्रसाद पाकर जाने के लिए कहा था। और उन्होंने बताया, उनके अपार स्नेह की बात क्या कहूं ? उनके स्नेह से खरीदा हुआ हूं। ऐसा स्नेह कहीं भी नहीं है।

श्री म (आश्चर्य सहित)—यह न होता तो ऐसी सत्य कथा against an unsympathetic assembly (समवेदना हीन इतने लोगों के सामने) कहते कैसे ? कल और भी बोले थे। स्त्रियों के संग बातें करते नहीं। बौद्ध लोग खड़े होकर स्त्रियों के पैरों की ओर देखते हुए बातें करते हैं। गाड़ी में बोले, मां, कन्या और पत्नी के अतिरिक्त अपर के संग नहीं जाना चाहिये। मां कन्या और पत्नी को छोड़ औरों के साथ बैठकर बातें नहीं करते। वे बड़े चतुर हैं, ब्रह्मानन्द की authority quote (दुहाई देकर) बोलते हैं। सभी तब चुप हो जाते हैं।

देखिए तो, उस गाने को उद्धार करके ला सकते हो कि नहीं ? अनाहत शब्द विषयक एक गाना हुआ था। प्रमथ बाबू से पूछें उसी गाने की बात। हमारा नाम करके नमस्कार देना। ये बड़े महात्मा हैं, विवाह नहीं किया है। इनके संग आलाप रखना अच्छा। केशव बाबू के बड़े भाई के लड़के हैं ये। ये ही अब इस दल के लीडर हैं। कितने बड़े भक्त वंश में जन्मे हैं। केशव बाबू का वंश कि ना। केशव बाबू इतने बड़े हुए क्यों ? कितना बड़ा वैष्णव वंश है उनका। इनके दादा जी रामकमल सेन गुरुगत प्राण थे। गुरु के घर में आने पर चांदी के थाल में उनके पैरों को धोकर सब ही वही चरणामृत पान करते थे। और बाजे गाने का एक हल्ला गुल्ला मच जाता है, एक महोत्सव होता था। इसी कारण तो अन्त में केशव बाबू 'गौर गौर' करने लगे थे। रक्त में हैं ना वे ही संस्कार।

श्री म (भक्तों के प्रति)—आहा, अनाहत शब्द का गाना सुन्दर है। योगियों का गाना है। मिल जाए तो अच्छा हो। योगी जन सुन पाते हैं अनाहत शब्द। सर्वदा ही हो रहा है। अनाहत, निज मे आंहत होकर यह विश्व हुआ है।

यह विश्व, आनन्द में उसकी सृष्टि, आनन्द में स्थिति, आनन्द में विनाश होता है। ऋषि कहते हैं—

आनन्दाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते।
आनन्देन जातानि जीवन्ति।
आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति।*

जैसे बालक। बाप से मांगकर पैसे लिए। ताश खरीदकर उस से आनन्द से घर बनाया। मित्रों को बुलाकर दिखाता है, कितना आनन्द! क्षण भर पीछे हंसते हंसते लात मारकर तोड़ दिया, और आनन्द में नृत्य करने लगा। वैसे ही यह विश्व सृष्टि है। भगवान् हैं आनन्द स्वरूप। उन्हें सकल अवस्थाओं में ही आनन्द है—जगत् की सृष्टि स्थिति और विनाश में। परमब्रह्म में सुख दुःख नहीं है। वे द्वन्द्वातीत आनन्द-स्वरूप।

बड़े जितेन—वह किन्तु समझ में नहीं आता।

श्री म—ठाकुर ने एक गल्प सुनाई थी। एक नेवला, नेवला माने 'वेजी'—The mongoose, बड़े मजे में एक दीवार पर बैठा था। लड़कों ने उसकी पूँछ में एक ईंट बांध दी। अब पहले की तरह हिल डुल नहीं सकता।

मनुष्य की अवस्था भी यही है। उसका स्वरूप वही सच्चिदानन्द स्वरूप है। भूल गया है कि मैं बड़ा जन हूं–राजपुत्र हूं।

चरखड़ी (परेते) पर जो सूत लिपटा हुआ है वह खोल लेने पर समझ में आयेंगी ये सब बातें। चरखड़ी मन है, सूत अर्थात् वासना। उनकी कृपा आवश्यक है। आराम कुर्सी पर बैठकर ये सब बातें समझने वाली नहीं हैं। मनुष्य यह सब क्या लिए हुए है। स्वरूप की चिन्ता कहां? कैसे समझेगा यह Grand Mystery, विराट रहस्य?

मन को सर्वदा देह पर निम्नगामी कर रखा है। उदर के लिए सब व्यस्त हैं। सब कुछ ही उदर के लिए करते हैं। उदर पूर्ण हुआ तो जरा विश्राम चाहिए। और फिर इसी बीच बाल बच्चे बढ़ाने

*तैत्तिरीयोपनिषद्, भृगुवल्ली 3/6

की चेष्टा। कैसे समझे मनुष्य यह Divine Play, भगवान् लीला? कहां है वह चेष्टा?

समाधि होने पर ये सब दुबलताएं चली जाती हैं। तब इस तत्त्व का अनुभव होता है—This Grand Mystery. समाधि माने देहबुद्धि भूल जाना। मैं देह नहीं हूं, मन नहीं हूं, मैं आत्मा हूं। यह चिन्ता करते करते आत्मस्वरूप हो जाता है। तब प्रत्यक्ष होता है। योगियों ने इस रहस्य का भेदन किया है।

श्री म (जनैक के प्रति)—ठाकुर कहते जिनके 'चेहरे तेल तेले' (चिकने चिकने) हों समझना होगा उनके योग-भोग दोनों ही हैं। जिनके चेहरे सूखे हों उनगा केवल योग है।

डाक्टर बक्शी निद्राभिभूत हैं। सारे दिन के परिश्रम से ठीक जैसे रणक्षेत्र का सैनिक होता है।

श्री म (छोटे अमूल्य के प्रति)—डाक्टर बाबू को जगा दीजिए। बहुत रात हो गई है। न आने से ही अच्छा होता। कल रात्रि को ये गदाधर आश्रम में, सारी रात जगे थे। सवेरे घर लौटने पर अनवरत काज रहा। दोपहर को भी एक बार आए थे। और फिर अब।

डाक्टर धन्य! महापुरुष का कैसा स्नेह ओर आशीर्वाद।

बड़े जितेन—जितना (सत्संग) अधिक हो उतना ही अच्छा है।

श्री म—नहीं। स्थिर होकर रहना चाहिए। जल सर्वदा हिलता रहे तो उसमें प्रतिबिम्ब नहीं पड़ता। जब स्थिर होता है तब मुख दिखता है। जो कुछ सुना गया, देखा गया, बैठे बैठे उसे विचारना चाहिए। जभी तो साधु पूछते हैं एक जन दूसरे एक जन को—आपका आसन कहां है? जहां पर बैठकर वे चिन्तन करते हैं, उसे वे कहते हैं आसन। हम कहते हैं 'थाका' (निवास)। आपनि कोथाय थाकेन? आपका निवास कहां पर है लोग पूछते हैं? साधुओं का चिन्तन, आचरण, बात सब उसी प्रकार के होते हैं। उनका एक काम है उन्हें पुकारना। एक आसन पर बैठकर उन्हें पुकारते हैं। परिश्रान्त होने पर (निद्रा का अभिनय करके) वहां पर ही शयन करते हैं। भाषा भाव का वाहन है। साधुओं की भाषा ही पृथक्।

श्री म कुछ काल नीरव रहे। पुनः बातें कर रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ठाकुर के जिन्होंने दर्शन किए थे, अन्त में उनका एक परिवर्तन हुआ था। ऐसे बहुत से देखे हैं। एक जन थे चरणदास बाबा जी। अन्तिम समय में पुरी में रहते थे। खूब बड़े महात्मा। हम उनके पास 'भाज पीटारमठ' में थे। एक दिन पूछा, कैसे ठाकुर के संग उनका मिलन हुआ ? बोले, तब पढ़ता था। और कुछ नहीं बोले। संन्यास लिया है कि ना। अब पूर्वाश्रम की बात बोलेंगे नहीं। वराह नगर में घर था।

फिर बोले, बुआ जी ने जो बोला था, अन्त में मेरा वही हुआ। वे अंग्रेजी लिखते पढ़ते थे। और बुआ जी प्राचीन महिला। संध्या वेला तुलसी तल पर प्रदीप देते देखकर एक दिन बोले थे, बुआ जी, यह क्या कर रही हो ? इससे क्या फिर सत्य का संधान मिलेगा ? बुआ जी ने उत्तर दिया, "बेटा, मैं मूर्ख नारी, मेरी इस तुलसी तल में ही जैसे मति रहे।"

प्रथम थे atheist (नास्तिक)। अन्त में हो गए agnostic (उदासीन)। और फिर बुआ जी ने जो बोला था अन्त में मेरा भी वही हुआ।

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता।
2 फरवरी, 1924 ई०, शनिवार।
19वां माघ, 1330 (बं०) साल।

मैं राजा का बेटा–
मनुष्य का स्वरूप सच्चिदानन्द

(1)

आज सवेरे श्री म 'ठाकुर वाड़ी' में थे। दोपहर को गदाधर आश्रम लौटे। अब अपराह्ण साढ़े चार। 3 फरवरी, 1924 ई०, 20वां माघ, 1330 (बं०) साल, रविवार। एक युवक भक्त कलकत्ते से श्री म के दर्शन करने आए हैं।

श्री म युवक-भक्त के संग भ्रमण को निकले। सस्नेह करुण स्वर में उनसे कह रहे हैं, "इतना कष्ट करके आते हो, काली घाट मां के दर्शन करके आना उचित। भाग्य में ये सब क्या होता है? आदिगंगा स्पर्श करके मां के मन्दिर की परिक्रमा करनी उचित। फिर सुविधा हो तो मां के दर्शन करके यहां पर आना चाहिए। श्री म के स्नेह स्पर्श से भक्त का हृदय विगलित, चक्षु छलछल हो रहे हैं।

भवानीपुर हरीश पार्क की ओर श्री म अग्रसर हो रहे हैं, चाउलपट्टी के रास्ते से। रास्ते में बाईं ओर एक घर में एक नवजात बछड़ा दूध पी रहा है।

श्री म (युवक के प्रति)—देखिए, देखिए, कैसे दूध पी रहा है। इतना सा उछड़ा अभी अभी ही जन्म हुआ है। अच्छा, ये पैदा होते ही पी सकते हैं या पकड़वा देना पड़ता है?

युवक—जी, पकड़वा देना पड़ता है।*

---

*इस घटना के कई वर्ष पश्चात् इसी भक्त ने देओघर में एक दृश्य देखा था। विस्तीर्ण मैदान में एक बछड़ा पेट से निकलने के थोड़ा बाद ही दूध पीने की चेष्टा कर रहा था। मां भी अपने स्तन उसके मुख के निकट रख रही थी। वहां पर कोई भी व्यक्ति नहीं था। 'ढु' (सिर) मारते मारते मारते स्तन पर मुख लगते ही दूध पीने लग पड़ा था।

श्री म—पकड़वा ही दो अथवा निजी चेष्टा से ही पीए, पीने की इच्छा तो है और चेष्टा भी है। होते ही पीने की चेष्टा। यदि यही हो तो फिर कैसे कहा जाय free will, स्वाधीन इच्छा ? तभी तो tendency संस्कार आ जाते हैं। पहले पिया है तभी पीने की इच्छा। और पीने की जो चेष्टा करता है, वह भी पूर्व अभ्यास का फल है। पूर्व जन्म आ जाता है तब तो फिर।

श्री म कुछ दूर अग्रसर हो रहे हैं। रास्ते में लाल बिहारी के संग मेल हुआ। ये अपना व्यापार करते हैं। श्री म उनके साथ बातें कर रहे हैं।

लाल बिहारी—हमारे एक कुली को कॉलरा (हैजा) हुआ है—वह उड़ीसा वासी है।

श्री म एक तख्तपोश का बन्दोबस्त नहीं हो सकता क्या ? डाक्टर कहते हैं, ठण्ड से फिर निमोनिया भी हो जाता है। देखना कौन हैं ?

लाल बिहारी—एक होम्योपैथिक डॉक्टर।

श्री म—कौन सा एक तरह का इन्जैक्शन निकला है। वह दिया जाए तो कैसा हो ?

लाल बिहारी—तब तो फिर चिकित्सा बदलनी पड़ेगी। वह तो ऐलोपैथिक है।

और थोड़ा अग्रसर होने पर सतीश और कालिदास आकर मिल गए।

हरीश पार्क। श्री म ने भक्तों के संग पार्क में प्रवेश किया। उत्तर प्रान्त में छोटे लड़के खेल रहे हैं। श्री म खड़े होकर उनका खेल देख रहे हैं। आनन्द से भरपूर हो गए हैं, मानो वे उनमें से ही एक जन हैं।

श्री म (युवक भक्त के प्रति)—देखिए, देखिए कैसी आनन्द की हाट लगी है। और ये बंसी बजा रहे हैं। और इसकी हंसी देखिए। ये दौड़ते हुए पलायन कर रहें हैं। (कुछ अग्रसर होकर) बूढ़े शायद सोच रहे हैं यह (श्री म) लड़कों के दल में फिर मिला कैसे ? (सब का हास्य)

कैसे आनन्द से खेल रहे हैं ये। जभी क्राइस्ट ने कहा था, उनके संग ईश्वर हैं। जभी इतना आनन्द है। ईश्वर बालकों के संग खेलते हैं ऐसा प्रतीत होता है। यदि कहो दिखाई क्यों नहीं देते ? ठाकुर उसके उत्तर में बोले थे, मिर्चें अनजाने खाने पर भी झाल लगेगी ही। (सतीश और कालिदास के प्रति) बताओ लगती है कि नहीं ?

और एक दल बालकों के पास आकर श्री म खड़े हो गए। इनकी आयु ग्यारह बारह बरस। श्री म युवक से बोले "देखिए, देखिए, ये आपस में झगड़ा कर रहे हैं। थोड़े बड़े हो गये हैं कि ना। झगड़े से बाहर के मैं की, देह की, development (वृद्धि) होती है। Real Self (जीवात्मा) की development (वृद्धि) होती है निर्जन में तपस्या से।

श्री म पार्क के भीतर उत्तर से दक्षिण को तीन चार बार घूमे और बीच बीच में बातें करते रहे।

श्री म (सतीश के प्रति)—(स्वामी जी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में) मीटिंग का क्या हुआ ?

सतीश—आज नहीं होगी, ललित महाराज (स्वामी कमले-श्वरानन्द) के असुख के कारण।

श्री म—क्या आवश्यकता है मीटिंग की ? असुख भी तो है फिर।

कालिदास—आवश्यक क्यों नहीं है महाराज ? बहुत से तो संभवतः जानते ही नहीं हैं कि यहां पर गदाधर आश्रम है।

कालिदास ने अति साहस करके यह बात कहकर शेष किया।

श्री म—तब तो फिर एक ड्रम खरीदकर खूब पीटो। परमहंस देव से सुना था, यदि गंभीर वन में फूल प्रस्फुटित हो तो मधुमक्खी अपने आप आएगी।

लैक्चर दोगे तो तुम्हारा 'पास' कहां है ? कहा था, उस देश (कामार पुकुर) में तालाब के किनारे कम्पनी ने ज्यों ही नोटिस लगा दिया त्यों ही शौच जाना बन्द हो गया। उससे पहले कोई किसी की बात सुनता ही नहीं था। 'कमिशन' कहां, credentials (परिचय पत्र) कहां ? स्वामी जी की बात कहोगे तो वह भिन्न। उन्हें कमीशन था।

ठाकुर की इच्छा थी ईस्ट-वैस्ट का मिलन हो। वैस्ट इस देश की spirituality, आत्मविद्या लेगा। और यह देश वैस्ट की साइन्स आदि, उस ओर की वे सब लेगा। आदान प्रदान होगा। इस देश से ईश्वर में श्रद्धा, भक्ति, विश्वास उस देश में जाएगा। और उनका जड़ विज्ञान इस देश में आएगा। उससे दोनों का ही मंगल है।

यह कर्म क्या सब कर सकते हैं? स्वामी जी का ही कर्म है। दूसरे लोग तो बोलना होता है कुछ, और बोलते हैं कुछ। Making confusion worse confounded. ठाकुर कहते, रोगी बैठा हुआ था, वैद्य ने आकर लिटा दिया।

मीटिंग के लिए ऐसे ही सब लोगों की खुशामद करनी होगी। Lower ideal (हीन आदर्श) की worship (अर्चना) करनी पड़ेगी। छि: !

श्री म सड़क पर चल रहे हैं पार्क के बाहर। गदाधर आश्रम में लौटेंगे। रास्ते में पन्नालाल आ मिले। पुन: लाल बिहारी के पास उपस्थित हुए। अस्वस्थ कुली के लिए चिन्तित हैं। अति करुण स्वर से कह रहे हैं, उसे ठण्ड न लगे। वे लोग फिर खूब भीत होते हैं। Poverty दरिद्रता ने ऐसा कर दिया है। और कमरे को disinfectant (कीटाणुमुक्त) कर लिया जाय ना।

श्री म लाल बिहारी के पास मानो प्रार्थना कर रहे हैं, जिससे रोगी की सेवा और शुश्रूषा में त्रुटि न हो।

अब संध्या। गदाधर आश्रम। दो तल का कमरा। श्री म दक्षिणास्य हुए फर्श पर बैठे हैं। विरिंचि बाबू की बहिन आई हैं। वे रो रही हैं। विरिंचि का देहत्याग हुआ है। वे कविराज थे। सर्वदा बड़े जितेन के साथ श्री म के पास आते थे।

अब मन्दिर में आरति हो रही है। साधु भक्तगण गा रहे हैं।

खण्डन भवबन्धन जगवन्दन वन्दि तोमाय।
निरंजन नररूपधर निर्गुण गुणमय ॥……इत्यादि।

संग में नानावाद्य हैं।

श्री म खड़े हुए दर्शन कर रहे हैं, हाथ अंजलिबद्ध। आरति शेष होने पर कई चले गए। जगबन्धु रहे।

श्री म (जगबन्धु के प्रति)—आपने कृष्णमंगल गान सुना नहीं ना। कुछ देर प्रतीक्षा करके सुन जाइए।

जगबन्धु आदिगंगा के तीर पर खड़े होकर कृष्णमंगल सुन रहे हैं। इन्द्रपूजा का विषय है। श्री कृष्ण ने इन्द्र की पूजा बन्द करवा दी है। इन्द्र ने क्रुद्ध होकर सारे ब्रजमण्डल को वर्षा और बाढ से बहा दिया है। गोप गोपीगण श्री कृष्ण के शरणापन्न हैं। बालक कृष्ण, वाम हस्त की छोटी ऊंगली के ऊपर गोवर्धन पर्वत धारण किए हैं। सब ने उनके नीचे आश्रय ग्रहण किया। दर्प चूर्ण हुआ। इन्द्र का ज्ञान लौट आया। भगवान् से प्रार्थना कर रहे हैं : मुझे क्षमा करें प्रभो। मेरा अहंकार चूर्ण हुआ है। मेरे प्रति आपकी असीम कृपा है इसकी मैं पूरी तरह से उपलब्धि कर रहा हूं। राजमद में मत्त होकर मैं आपके चरणकमल भूल गया था। मेरा दर्प चूर्ण करके असीम कृपा से पुनः मुझे अपने अभयपदों में स्थान दिया है। मैं धन्य !

बीस मिनट परे श्री म भी आ गए। शीत की रात में वृद्ध शरीर से गंगातीर पर खड़े हुए श्री म भी कृष्णमंगल सुन रहे हैं। सात से नौ पर्यन्त दण्डायमान हुए सुना। श्री म ने एक आना दर्शनी दी। लौटते हुए पथ में जगबन्धु से कह रहे हैं :

देखिए एक आना देकर कितनी बड़ी बात सुनी गई। अमूल्य कथा। उसका दाम नहीं। इन्द्र बोल रहे हैं, जीव का जो दुःख कष्ट है वह सब भगवान् की ओर मन को लेने के लिए है। इन्द्र बोल रहे हैं, यह उनकी कृपा है। यहां बात ही स्मरण रखने से संसार में जीवन्मुक्त होता है। सुख दुःख दोनों ही उनका प्रसाद। सर्वावस्था में यही स्मरण रखना। यही श्रेष्ठ साधन।

बचपन में ऐसे गानों में एक घण्टा पूर्व से ही जाकर मैं बैठा रहता था। मुहल्ला ढूंढ ढूंढकर जहां पर गान हुआ करता वहां पर ही जाता।

एक आने में कैसी अमूल्य वस्तु लाभ हुई है। यही चिन्तन करते करते कलकत्ते जाएं।

अगले दिन रात्रि आठ। श्री म मॉर्टन स्कूल के दो तल के कमरे में बैठे हैं। पास रमणी, छोटे नलिनी, जगबन्धु और बड़े जितेन हैं। विरिंचि के देहत्याग पर उनकी भगिनी के शोक की बातें हो रही हैं। श्री म बोले, "इसी स्नेह द्वारा जगत् बांध रखा है। उसका अभाव होने से ही शोक। शोक क्या कम—जैसे दावानल। जलाकर मार डालता है जीव को। उनकी कृपा से इसी स्नेह को यदि कोई ईश्वर पर दे दे, तब तो बच गया। विष का अमृत फल होता है। किन्तु उनकी कृपा बिना तो होने वाला ही नहीं है। कैसे कृपा होती है—ठाकुर बताते, क्रन्दन से, 'एक घटी' क्रन्दन से।"

बड़े जितेन—हमारे कुलगुरु कुछ क्षुब्ध हुए हैं। पहले इकट्ठा वार्षिक दिया जाता था, अब महीने महीने दिया जाता है इसलिए। अब उपाय क्या ?

श्री म—उनको चिट्ठी लिखना उचित यह कहकर, आशीर्वाद कीजिए जिससे अधिक दे सकूं।

शोक, दुःख और अभाव की अनेक बातें हुई हैं। श्री म ने उनका स्रोत उल्टा दिया। मत्त होकर ठाकुर की महौषधि गानों द्वारा वर्णन कर रहे हैं। तीन गाने गाए।

1. पड़िये भवसागरे।
2. दयाल गुरुनामे देओरे साँतार।
3. गुरु काण्डारी जेमन आरकि नेये आछे तेमन,
   पार करेन दीन जने अभय चरण तरी दिये।
   तरणीर एमनि गुण ताते नाइको पाल, नाइको गुण,
   तरणि आपनि चले श्री चरण रेणु गुणे।।

[गुरु जैसा कर्णधार है क्या वैसा कोई और नाविक है, ये दीनजनों को अपनी अभयपद नौका द्वारा पार कर देते हैं। इस तरणी के ऐसे गुण हैं कि न तो कोई पाल है और न कोई डोरी, यह नाव अपने आप चलती है, श्री चरण रेणु के जादू से।]

भक्तों को गाने के लिए कहकर श्री म 'ठाकुर बाड़ी' में आहार करने गए। लौटे रात को नौ बजे।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—क्या कर रहे थे आप सब इतनी देर ?

बड़े जितेन—गाने हुए। और फिर आपकी गतिविधि की बातें भी हुईं। मठ के उन लोगों की भी इच्छा है वहां पर (गदाधर आश्रम में) आप ठहरें कुछ दिन।

श्री म—यही आना जाना।

बड़े जितेन—यहां पर भी एक ग्रुप, वहां पर भी एक ग्रुप।

श्री म—हमारे में एक ऐसी impulse (चिन्ता शक्ति) दी है, इस ग्रुप की अभिज्ञता द्वारा जगत् के ग्रुपों को समझना चाहते हैं। सब ही ऐसे एक एक ग्रुप हैं। अनन्त ग्रुप, अनन्त काण्ड उनके। 'व्यक्त-मध्यानि भारत' (गीता 2 : 28) दोनो ओर हो अन्धकार है—जन्म से पहले और मृत्यु के पश्चात्। बीच का ही यह जीवनकाल व्यक्त है अर्थात् manifestation, यही life-time·

समझने का क्या कोई उपाय है? कुछ समझा नहीं जाता। देखिए ना एक पक्षी। किसने उसे बुद्धि दी ऐसा सुन्दर घोंसला बनाने की? और उसमें अण्डे भी देगा फिर। उससे (species) वंशवृद्धि होगी। जिस ओर भी देखें, देख सकेंगे एक विराट बुद्धि कार्य कर रही है, meticulously (सुनियंत्रित) रूप से। एक ही विराट plan (परिकल्पना) देखने में आती है। सब अनन्त। सम्पूर्ण को कोई समझ ही नहीं सकता, उन्हें छोड़। किन्तु जीव का काम हो जाता है यदि वह अपनी क्षुद्रता पकड़ सके उसी अनन्त के सामने। तो फिर उसका काज समाप्त। और दु:ख नहीं रहेगा।

They know that nothing can be known—जिन्होंने समझ लिया है कि हम कुछ भी समझ नहीं सके—उन्हें ही कहते हैं ज्ञानी। इस स्थूल और इस सूक्ष्म के द्वारा अर्थात् इस देह और बुद्धि के द्वारा इस विराट को जानने का उपाय ही नहीं है। उनका चिन्तन कर करके इसके ऊपर उठ सकने पर अन्य प्रकार का शरीर होता है। इन्द्रियां मन बुद्धि सब अन्य प्रकार की। उसके द्वारा देखा जाता है, समझा जाता है उसी विराट बुद्धि को कुछ थोड़ा सा। उनको जानने से और कुछ जानने की आकांक्षा नहीं रहती, तब और बाकी भी कुछ नहीं रहता जानने के लिए। 'तस्मिन् विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति।' 'कस्मिन्नु खलु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं

विज्ञातं भवति ।* महामुनि शौनक ने यही प्रश्न किया था। उसका उत्तर यहीं, उनको जान लेने पर सब जानना हो जाता है।

किन्तु इन सब स्थानों पर रहकर समझने का उपाय नहीं। इस परिवेश के भीतर रहने से मन छोटा हो जाता है। जैसे तालाब की बद्ध मछली। तपस्या प्रयोजनीय। उसे करते करते मन की क्षुद्रता टूट जाती है। तालाब बांध तोड़कर समुद्र में मिल जाता है। तब यह जल और वह जल एक। यह मछली और समुद्र की मछली एक।

तपस्या माने favourable environments (अनुकूल वातावरण) में रहकर उनका चिन्तन करना एक मन से।

(2)

मॉर्टन स्कूल का चार तल का कमरा। श्री म तख्तपोश पर बैठे ध्यान कर रहे हैं पश्चिमास्य। सम्मुख एक बेंच पर बैठे हैं जगबन्धु और शचीनन्दन। संध्या हो गई। आज 5 फरवरी, 1924 ई०; 22वां माघ, 1330 (बं०) साल, मंगलवार, अमावस्या।

कुछ परे प्रवेश किया डाक्टर बक्शी, विनय और छोटे नलिनी ने। फिर बड़े जितेन ने। श्री म भक्तों से कुशल प्रश्नादि कर रहे हैं— "सब खबर ठीक तो ?"

बड़े जितेन (श्री म के प्रति)—हरिदास बाबू ने पुस्तक लिखी है, किस प्रकार क्रोध को दमन करना चाहिए। लड़कों की physical culture (शरीर उत्कर्ष), mental improvement (मानसिक उन्नति) इन सबकी बातें भी हैं। छपवाएंगे। मुझे दिखाई थी। मैंने कहा वहां (श्री म को) दिखलाने से अच्छा होगा। क्या आपके पास अवसर होगा देखने का ? उनकी इच्छा है errors (त्रुटियां) निकाल दें, पीछे लड़कों का अनिष्ट न हो। और एक जन के देखने से वे पकड़ी जाएंगी।

श्री म—Authority quote (प्रमाण उद्धृत) किए हैं क्या ? वह न हो तो मात्र दो-एक जन फ्रेण्डस पढ़ेंगे। उसका permanent

*भगवन्, किसको जानने से इन सबका जानना हो जाता है ?

value (दीर्घकाल स्थायी मूल्य) नहीं होगा। देखिए ना, क्राइस्ट को जज चार्ज (दोषारोपण) कर रहा है, On what authority did you say so ? प्रमाण दिखाओ, किसकी बात से ऐसा कहते हैं। यही जो हमारी पुस्तकें (श्री श्री राम कृष्ण कथामृत) यदि ऐसे लिखी जाती कि हमारा मत यह है, तब तो कोई नहीं पढ़ता। ठाकुर ने निज बोला है। तभी सब का मस्तक नत हो जाता है सुनकर। इस पर तो कोई भी बात और कहने को जो नहीं रहती।

Next question (अगला प्रश्न) आया है, रिपोर्ट trustworthy (विश्वास योग्य) है कि नहीं। पहले quote (उद्धृत) करने के लिए कहें, बड़े बड़े लोगों ने उस सम्बन्ध में क्या क्या कहा है। बीच बीच में वेद, उपनिषद्, गीता, पुराण ये सब उद्धृत करने चाहियें। और अंग्रेज लोग क्या कहते हैं वह भी बताना चाहिए।

अब हमारे में अन्य कुछ पढ़ने की patience (धैर्य) नहीं है। ऐसा अभ्यास हो गया है ठाकुर का चिन्तन करते करते कि उनकी कथा छोड़ और कुछ अच्छा नहीं लगता। किसी नूतन पुस्तक को पढ़ना हो तो प्रथम कई पृष्ठ पढ़ता हूं। फिर बीच के कुछ और अन्त की ओर के कुछ देखकर contents (सूची) निश्चय कर लेता हूँ। इतना सब कच्चा माल खाने से हज़म होगा कैसे इस वृद्ध शरीर में ? ठाकुर का थोड़ा चिन्तन करूँगा, वह भी निश्चिन्त मन से करने का जरा भी अवसर नहीं पाता। तो फिर अन्य विषय सोचूं कैसे ? यह life (जीवन) तो too short (अति अल्प) है ईश्वर को पुकारने के लिए।

देखिए ना वकील आठ घण्टे अनवरत बोलता है, लैक्चर देता है। तीन दिन तक लैक्चर दिया। फिर सुना गया लैक्चर का विषय है कि जमीन अमुक की है या नहीं अथवा अमुक ने अमुक से इतना रुपया उधार लिया कि नहीं, इसके लिए लैक्चर हो रहा है तीन दिन से।

और एक जन ईश्वर को पुकारता है। उसे कहते हैं कि 'वेहैड' (उन्मत्त) हो जाएगा। तनिक सा भाव-टाव होने पर लोग

कहते हैं पागल हो गया है। अब कौन पागल है ? जो नित्य वस्तु ईश्वर को पुकारता है वह, या जो अनित्य वस्तु जमीन, किंवा रुपये के लिए लैक्चर देता है तीन दिन में चौबीस घण्टे, वह। पागल कहना ही हो तो बोलो दोनों ही पागल। केवल उसे (ईश्वर भक्त को) ही पागल क्यों कहोगे ? Majority (बहुमत) इनका है कि ना जभी उन्हें (ईश्वर भक्त को) पागल बोलते हैं।

एक को जानने की चेष्टा करने से, एक ठीक हो जाने पर, भीतर का अन्य सब अपने आप ही ठीक हो जाता है। एक ठीक होने से सब ठीक। देखो ना, गणेश ने पार्वती के चारों ओर परिक्रमा करके गले में मां का दिया हुआ अमूल्य हार पहन लिया। और कार्त्तिक ने ब्रह्माण्ड घूमकर भी कुछ नहीं पाया।

बड़े जितेन—शरीर कैसा चल रहा है, आजकल बहुत खराब है क्या ?

श्री म—अभी ठीक हुआ और फिर और तरह का। ज्वार भाटा खेल रहा है।

बड़े जितेन—अनेक ही जन स्वयं सारा काम न कर सकें तो दूसरे से कहते हैं। वे सब कर देते हैं। करने वाले जन हैं और उनका आग्रह भी है।

श्री म का शरीर उतना ठीक नहीं है। ये किसी की सेवा नहीं लेते। किसी को भी प्रायः विशेष कुछ करने के लिए नहीं कहते अपने शरीर के लिए। भक्त कोई कोई सर्वदा संग में रहते हैं सेवा के लिये। बड़े जितेन उनके लिए plead (वकालत) कर रहे हैं।

श्री म (उद्दाम हास्य से)—कर्ता सोचते हैं हम सब करते हैं। किन्तु वे ही सब करते हैं। उनकी जो इच्छा वही होगा। मनुष्य सोचते हैं हम सब करते हैं। ईश्वर सब करते हैं। देखिए ना, आक्सीजन हम वृक्ष से पाते हैं, सूर्य से पाते हैं ताप, तब ही तो यह जीवन रहता है। जानवर का दूध पीकर शरीर की रक्षा होती है। और फिर माछ खाते हैं, मांस खाते हैं, वृक्षों के फल खाते हैं—इतना खाकर ही तो तभी जीव जीवित हैं। इस पर जल और वायु तो हैं ही।

कैसे अद्भुत उपाय से फल फूल होते हैं। पेस्टिल (pestil) और पोलन (Pollen) किस प्रकार मिलित होते हैं ? तभी तो फूल होता है, उससे फल। पुरुष पोलन हवा में उड़ता है, किंवा कीट पतंग के शरीर का आश्रय लेकर पेस्टिल अर्थात् स्त्रीफूल पर बैठता है। उससे फर्टिलाइजड, fertilised (उर्वरक) होकर फूल होता है, उससे फिर फल। ये सब नियम किसने किए हैं, मनुष्य ने ? सब ही ईश्वर ने किए हैं।

हम विचार करते हैं एक जन की सेवा करेंगे। अच्छा, जो सेवा करेगा उसे यदि paralysis (पक्षाघात) हो जाए तब कौन सेवा करेगा ? और भी कितने प्रकार की बाधाएं हो सकती हैं। हम केवल positive condition (दृश्य कारण समूह) देखते हैं। Negative (अदृश्य कारण समूह) deny (अस्वीकार) करने से नहीं चलेगा। Positive (दृश्य) कारणों का तो चाहे प्रतिकार हो गया। किन्तु negative (अदृश्य) कारणों में क्या हाथ है तुम्हारा ? उसके लिए ही मन में सोचना उचित : ईश्वर सब करते हैं। वे सर्वशक्तिमान् हैं। उनकी इच्छा शक्ति से सब होता है, सब चलेगा।

'कर्ताहमितिमन्यते' (जनैक भक्त के प्रति) उसके पहले क्या है ?

भक्त—'अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते।' (गीता 3:27) (श्री म भी संग बोलते हैं।)

श्री म (भक्तों के प्रति)—यही देखिए, गीता में भी भगवान् कहते हैं, मैं सब करता हूं। किन्तु मनुष्य अज्ञान से बोलते हैं कि सब हम करते हैं, हम कर्ता।

श्री म (अन्तेवासी के प्रति)—जन्म से पूर्व की खबर नहीं। मृत्यु से परे क्या होगा उसकी भी खबर नहीं। केवल present (वर्तमान) को लेकर नाचने से क्या होगा ? सब ही वे करते हैं। जभी ठाकुर नित्य यही प्रार्थना किया करते :

'मां मैं यंत्र, तुम यंत्री। मैं घर, तुम घरणी। जैसा चलाती हो वैसा चलता हूं। जैसा बुलवाती हो वैसा बोलता हूं। जैसा करवाती हो वैसा करता हूं।' नित्य बोलते। वे देख पाते थे कि मां सब।

दोनों ओर ही infinity (अव्यक्त) है। बीच में तनिक सा manifestation (व्यक्त) है। इसमें ही लोग इतना अहंकार करते हैं। सोचते हैं मैं कर्ता। बोलता है, मैं व्यक्ति। व्यक्ति माने manifested (प्रकाशित)।

ईडन गार्डन्स में स्प्रिंग देखे नहीं—जल अनवरत पुडर पुडर करके ऊपर चढ़ता है। और फिर गिरकर गंगा में जाता है। वहां से ही चढ़ता है और वहां पर ही जाता है। बीच में केवल 'फड़फड़ानि'। 'व्यक्त-मध्यानि भारत', क्या है गीता में ?

(भक्त के संग) अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत। अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥ (गीता 2 : 28)

रमणी ने आकर भूमिष्ठ प्रणाम किया।

श्री म (रमणी के प्रति)—आहा, क्यों आप इतना कष्ट करते हैं। मुझे इससे कष्ट होता है।

बड़े जितेन—आपके कहने के पश्चात् मैं फिर इस प्रकार नहीं करता। हाथ से ही नमस्कार करता हूं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—राजा राधाकान्त देव बहादुर के पोते ने ठाकुर से कहा था, मेरी बड़ी इच्छा होती है ठाकुर को प्रणाम करूँ। किन्तु वे लोग (मित्रगण) पीछे ठट्ठा न करें तभी नहीं करता। ठाकुर झट बोले, अच्छा तो है, क्या प्रयोजन है। मन मन में करने से ही हुआ। यही अच्छा। मन ही तो असली है। देखिए, किस प्रकार उसके भाव की रक्षा की।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—और फिर किसी किसी से view (मत) का change (परिवर्तन) होता है कि ना। कुछ दिन खूब भक्ति कर ली फिर मत बदल गया। (हास्य) एक जन पूरी खा रहा था। मात्र चार खाकर हाथ हटाकर बैठ गया। और एक ने पूछा, खाते क्यों नहीं। उसने उत्तर दिया, तेलपक्व हैं। (श्री म और सबका उच्च हास्य)।

श्री म किसी को भी पांव में हाथ लगाने नहीं देते। कोई भूमिष्ठ प्रणाम करे तो कहते हैं, इससे उन्हें कष्ट होता है। उन्होंने अनेक बार भक्तों को सिखा दिया है हाथ से प्रणाम करना।

श्री म उनके प्रणाम करने के पूर्व सब को हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं।

छोटे जितेन ने प्रवेश किया। गदाधर आश्रम में श्री म को न पाकर मॉर्टन स्कूल आए हैं।

श्री म (छोटे जितेन के प्रति)—आप तो अब गदाधर आश्रम से आ रहे हैं, ललित महाराज (स्वामी कमलेश्वरानन्द) को मिले ? आहा, गाना सुनकर क्यों नहीं आए, कृष्ण मंगल ? बड़ा सुन्दर गाना।

श्री म (सबके प्रति)—ये सब बन्दोबस्त उन्होंने कर रखा है मनुष्यों के लिए। ये सब accumulated treasure of the past, (अतीत की सारी संचित सम्पद्) इसी प्रकार से चली आ रही है कितने ही काल से।

लोग परीक्षाएं आदि पास करते हैं—वह शक्ति तो निश्चय है। किन्तु इन सब गानों में जो मूल गायक है उसकी उनकी अपेक्षा क्या कम शक्ति है। ये लोग (scene) दृश्यों को visualise (प्रत्यक्षीभूत) करवा देते हैं।

एक सीन—श्री कृष्ण यमुना में खेवा दे रहे हैं। गोपियां पार हो रही हैं। सिरों पर दही, दूध और माखन के टोकरे हैं। दान मांगते हैं। कहते हैं, दान दो। मैंने कंस राजा से दान देकर यह घाट लिया है—पांच लाख रुपया। गोपियां बोलीं, हमने तो किसी भी दिन तो नहीं दिया, बारह बरस से यातायात कर रहीं हैं। श्री कृष्ण ने उत्तर दिया, तो फिर बारह बरस का ही दान देना होगा। इतने दिनों से ठगती रही हो। आज सब देकर तब जाओ। (राधा को लक्ष्य कर के) ये बहुत देंगी। सुना है ये बड़े घर की कन्या हैं—राजनन्दिनी। इसके सिन्दूर के लिए लूंगा तीन लाख रुपया और केशों के लिए पांच लाख।

श्री म (भक्तों के प्रति)—केशों के लिए पांच लाख माने भक्त का सब ही valuable (मूल्यवान) है। केवल valuable (मूल्यवान) ही नहीं, उसका दाम ही नहीं, अमूल्य।

श्री म (छोटे जितेन के प्रति)—और एक सीन वृन्दावन में। इन्द्र की पूजा का आयोजन हो रहा है। श्री कृष्ण बोले, तुम नारायण की

पूजा तो करते हो, किन्तु उसे देखा है कभी ? आज तुम्हें गोपाल दर्शन करवाऊंगा। सब खड़े हो जाओ हाथ जोड़ कर। कैसे प्रार्थना करनी चाहिए वह भी वे सिखाते हैं, Lead (परिचालन) करके। वे सब के साथ के साथ प्रार्थना करते हैं।

"प्रभो, हम सब मूर्ख हैं। हमारा साधन (नहीं) भजन नहीं। हम प्रमहीन, भक्तिहीन। हमें अपने गुणों से दर्शन दो।" तत्पश्चात् बालमूर्ति में गोवर्धन पहाड़ के ऊपर दर्शन दिए। सब को खूब हर्ष, किन्तु यशोदा गोलमाल में पड़ गई। वे एक बार उसी बालगोपाल की ओर देखती हैं और एक बार पुत्र कृष्ण की ओर देखती हैं।

श्री कृष्ण ने गोपगोपियों से पूछा, तुम जो इन्द्र की पूजा करते हो, उसे कभी देखा है क्या? देखो अभी अभी तुमने नारायण की पूजा की, और उन्होंने बालगोपाल मूर्ति में दर्शन दिए। तुम यदि उन्हें खाने को बोलो **तब** वे खायेंगे भी। उनकी प्रार्थना से भगवान् खाने लगे, बाल गोपाल रूप में। और फिर सिखा दिया, वर मांगो भगवान् से। तब हाथ जोड़कर सब प्रार्थना करते हैं, "हमारे गोपाल का जिससे कुशल हो," अर्थात् श्री कृष्ण का। श्री कृष्ण पुनः बोले, यह तो मेरी कुशल प्रार्थना की। तुम्हें जो आवश्यक था वह तो मांगा नहीं। वह मांगो, इसी क्षण। अगत्या वे बोले, "हमारे बछड़े गायें जैसे ठीक रहें, और और घास जिस प्रकार प्रचुर हो।"

श्री म (भक्तों के प्रति)—गोपाल पर कैसा गाढ़ा प्रेम। उनका कल्याण मांगा सबने, अपने लिए कुछ न मांग कर। कैसा प्रेम, कैसी निर्भरता ! माने श्री कृष्ण के अच्छा रहने पर वे भी अच्छे रहेंगे। उनके संग एकात्मभाव हो गया है इन सरल ग्राम्य गोप गोपियों का। जभी तो उन्होंने इतने उच्च आसन पर बिठाया जगत् में। कृष्णगत प्राण, सबका ही है।

इधर का सब भी मांग लिया। अन्तर में अभाव बोध है। तभी भगवान् अन्तर्यामी ने सिखा दिया इधर का सब मांगने के लिए। ईश्वर से नहीं मांगेंगे तो किससे मांगेंगे ?

भक्तों ने विदा ली।

श्री म की पौत्री शोभा अस्वस्थ है। नौ दस बरस की कन्या। बड़ा ही कष्ट पा रही है। डाक्टर बक्शी के संग उसके संबंध में परामर्श कर रहे हैं। फिर बोले, "गृह में रहने से ये सब झंझट है। मिहिजाम में अच्छा रहा गया था। शरीर भी चंगा था। आजकल की यह खांसी भी नहीं थी। भवानीपुर में भी आराम से रहा जाता है। इस कन्या के असुख ने चिन्तित कर डाला है।"

श्री म 'ठाकुर बाड़ी' चले गए। अब रात्रि दस।

दूसरे दिन 6 फरवरी। श्री म संध्या के समय मॉर्टन स्कूल में भक्तों के संग अल्पक्षण ध्यान करके ही ठाकुर बाड़ी चले गए। परिवार के सब वहां हैं। पौत्री का असुख बढ़ गया है। श्री म उद्विग्न हैं। बड़े जितेन, दुर्गापद, डाक्टर, विनय, जगबन्धु आदि श्री म की प्रतीक्षा में बैठे हैं। रात्रि दस के पश्चात् वे लौटे, तब भक्तों से प्रणाम करके विदा ली। मात्र एक जन भक्त श्री म के पास रह गए। ये तीन तल के जीने के कमरे में श्री म के लिए मसहरी लगा रहे हैं। श्री म बिछौने पर बैठे हैं।

श्री म (भक्त के प्रति)—मेरी विपदाओं को लक्ष्य करके ठाकुर छोकरों को बताते, इसकी जो ये सब विपदायें आ रही हैं तुम्हारी शिक्षा के लिए हैं जिन्होंने विवाह नहीं किया है। अब जो मेरी ये विपदायें हो रही हैं जभी ये भी आप लोगों की शिक्षाजन्य ही हैं। कैसी मुश्किल है! जभी तो ब्याह नहीं करना। जो बिना किए रह सकते हैं उन्हें शौक करके इसमें छलांग नहीं लगानी, ज्वलन्त अनल संसार।

आज महात्मा गांधी की कारामुक्ति के लिए कलकत्ता के सब स्कूल कॉलेजों में बारह बजे छुट्टी हो गई है। मार्टन स्कूल भी बन्द है।

रात्रि प्राय: पौने ग्यारह के समय श्री म दो एक भक्तों के संग दो तल के बरामदे में बैठे हैं। पौत्री के असुख की चिन्ता चल रही है। इधर उधर की बातों के उपरान्त बोले, "बालक बालिकाओं को इतना असुख विसुख जो होता है हमारे देश में, सब ही प्राय: बाप मां के दोष से होता है। वे जानते नहीं कैसे सन्तान का पालन करना चाहिए। जो जानते हैं वे भी neglect (अवहेलना) करते हैं। सैनसस (जनगणना) निकली है, यहां पर थर्टि परसैण्ट (तीस प्रतिशत) बच्चे मर जाते हैं। और

घर, दोनों ही हैं। इतने सब अत्याचारों के मध्य रोग शोक होंगे, नहीं तो क्या ? और फिर आनन्द भी है।

"मेघ उठेगा ही। कल ज्यों ही भवानीपुर के गाने की बात स्मरण हुई, झट चला गया। सीधे जाकर दस मिनट सुना। फिर बन्द हो गया।

"आहा, कैसी बात सुनी है। अक्रूर बोल रहे हैं—भक्त हैं कि ना वे, दुर्दिन क्या मेघ उठने से ही होता है ? इसे दुर्दिन नहीं कहते। *साधुसंग न हो, जिस दिन उनकी कथा न हो, वही दिन दुर्दिन है।*

"तो उस गाने में उनकी बात सुनी। और फिर मठ में (गदाधर आश्रम में) जाकर साधुसंग हुआ। और फिर भागवत पाठ भी हुआ। वह भी सुना गया।"

भक्त लोग अनेक ही आज स्कूल बाड़ी में रह गए हैं, रात्रिवास कर रहे हैं। रात्रि तब तीन। श्री म एक कम्बल और एक चटाई लिए दो तल पर आए। भक्तों के हाथ में वे दीं। शीतकाल।

दूसरे दिन मॉर्टन स्कूल में सरस्वती पूजा। आज छब्बीस दण्ड, दस पल, तीस अनुपल, पंचमी। श्री म पूजा दर्शन कर रहे हैं। भक्तों में से भी अनेक पूजा दर्शन कर रहे हैं। बड़े जितेन बालकों को लेकर आए हैं, अंजलि देंगे। अमृत, विनय, छोटे रमेश ने श्री म के संग देवी को अंजलि प्रदान की। डाक्टर, ललित (वकील), रमणी, छोटे नलिनी, छोटे जितेन, बलाई आदि ने आगे आकर पीछे उत्सव में योगदान किया।

उसके अगले दिन 10 फरवरी, रविवार। भोर में आंगन में वाद्य वादक बाजा बजा रहे हैं नाना प्रकार से। इनके संग जो बात हुई थी वह ये लोग पालन नहीं कर सके थे। इन्होंने धोखा दिया है। श्री म ने आकर बाजा बन्द करवा दिया। प्रतारक के साथ कोई सम्पर्क नहीं रखेंगे। तीव्र स्वर में दरबान से बोले, इनको बाहर जाने को बोलो। यहां पर बाजा नहीं होगा।

आज विसर्जन। अपराह्न पौने छह बजे छात्र प्रतिमा को गंगा पर ले जा रहे हैं, विसर्जन करेंगे।

श्री म दोतल पर बैठे हैं। भक्त भी पास बैठे हैं। भवानीपु
से सतीश आया है। वह कॉलेज में पढ़ता है। गदाधर आश्रम मे
रहता है। उसकी साधु भक्ति और साधु सेवा की सुख्याति कर र
हैं। उसके पिता ने मालिकों की अनुमति लेकर उसे गदाध
आश्रम में रखा है। श्री म बोले, "पतीली के एक चाव
के दबाने से सब पता लग जाता है। सारे चावलों को दबा
की जरूरत नहीं होती। देखो तो, बाप ने कितना काण्ड करके लड़
को साधुसंग में रखा है। सर्वदा साधुसेवा करता है। बाप भी साध
नहीं तो क्या फिर साधुओं को पहचान सकता है ?"

दोल तल के पश्चिम के कक्ष में बैठे श्री म शान्ति जल ले र
हैं। विसर्जन करके छात्रगण आ गए हैं। शुकलाल, डाक्टर, विनय
जगबन्धु, बड़े अमूल्य और छात्रगण श्री म के संग बैठे हैं।

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता,
10 फरवरी, 1924, रविवार।
27वां माघ, 1330 (बं०) साल, शुक्ला षष्ठी।

सप्तदश अध्याय

ध्यानमग्न श्री म

(1)

संध्या हो गई है। मॉर्टन स्कूल के तीन तल के उत्तर कोने के कमरे में श्री म बैठे ध्यान कर रहे हैं उत्तरास्य। कमरे में सदानन्द बैठे हैं। विनय और जगबन्धु प्रवेश करके पश्चिम के बेंच पर बैठ गए। प्रायः डेढ़ घण्टे पश्चात् श्री म भक्तों को संग लेकर दो तल के कमरे में आ गए। रमणी, छोटे जितेन आदि इसी बीच उपस्थित हुए। श्री म ने कथामृत पाठ करने के लिए कहा। जगबन्धु तृतीय भाग, अष्टम खण्ड पढ़ रहे हैं।

आज 11 फरवरी, 1924 ई०, 28वां माघ, 1330 (बं०) साल, सोमवार, सप्तमी।

पाठक पढ़ रहे हैं श्री रामकृष्ण बोले—किन्तु उनके दर्शन करने पर ही सब संशय दूर होते हैं। ईश्वर दर्शन करने से कर्मत्याग होता है। मेरी इसी प्रकार पूजा उठ गई थी। काली मन्दिर में पूजा किया करता। हठात् *दिखा दिया सब चिन्मय*—कोशाकुशी, वेदी, मन्दिर की चौकाठ सब चिन्मय। मनुष्य, जीव, जन्तु—सब चिन्मय। दिखा दिया विराट् मूर्ति ही शिव—फूलों के वृक्ष मानो एक एक फूलों का गुलदस्ता है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ईश्वर दर्शन के टैस्ट (परख) की कथा क्यों बताई, बताओ तो सही? श्री म निज ही उत्तर देने लगे, "पीछे कहीं भक्तगण मन में यह न लाएं कि हमारा तो हो गया है। इसी लिए कहा।"

पाठक (पढ़ते हैं)—नरेन्द्र बोले मैं नास्तिक मत पढ़ता रहा हूं।

श्री रामकृष्ण—दो मत हैं, अस्ति और नास्ति। अस्ति को ही तुम लेते नहीं क्यों?

श्री म—आहा, नरेन्द्र विपद में पड़कर एकदम ही नास्तिक हो गया है, माया का काण्ड ही ऐसा।

पाठक (पढ़ रहे हैं)—श्री रामकृष्ण बोले······भीष्मदेव शरशय्या पर लेटे हुए············रो रहे हैं। जिज्ञासा करने पर भीष्मदेव बोले·········मैं इसलिए रो रहा हूं कि संग में साक्षात् नारायण फिर रहे हैं, किन्तु पाण्डवों की विपद का अन्त नहीं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—भीष्मदेव की कहानी द्वारा ठाकुर ने यही बात बोली, मेरे नरेन्द्र के संग रहते हुए भी क्यों विपद दुःख कष्ट हैं? क्या किया जाय? माया का राज्य है। देह धारण करने से यह रहेगा ही। (जनैक भक्त के प्रति)—समझे देह धारण करने से यह रहेगा ही।

श्री म जने जने भक्त को यही महासत्य ही सुना रहे हैं। डाक्टर ने कमरे में प्रवेश किया। उनसे भी बोले, "सुनते हो डाक्टर बाबू देह धारण करने पर दुःख कष्ट के हाथ से निस्तार नहीं।"

श्री म क्या भक्तों को दुःख कष्ट सहन करने के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं? रमणी और छोटे जितेन आहार करने के लिए उठकर चले गए। अब रात्रि नौ।

श्री म (पाठक के प्रति)—इसे फिर पढ़िए तो!

पाठक ने फिर पढ़ा तृतीय अध्याय। नरेन्द्र का दुःख। देह धारण करने से सुख दुःख अनिवार्य।

पाठ बन्द रहा। श्री म मस्त होकर गाना गाने लगे।

गान—आमाय दे मा पागल करे, आर काज नाई ज्ञान विचारे।
तोमार प्रेमेर सुरा, पाने कराओ मातोयारा,
ओ मा भक्तचित्त हरा, डुबाओ प्रेम सागरे
तोमार ए पागला गारदे, केहो हासे केहो काँदे,
केहो नाचे आनन्द भरे
ईशा मूसा श्री चैतन्य, ओ मा प्रेमेर भरे अचैतन्य,
हाय कबे होबो मा धन्य, मिशे तार मिलरे

सप्तदश अध्याय

ध्यानमग्न श्री म

(1)

संध्या हो गई है। मॉर्टन स्कूल के तीन तल के उत्तर कोने के कमरे में श्री म बैठे ध्यान कर रहे हैं उत्तरास्य। कमरे में सदानन्द ठे हैं। विनय और जगवन्धु प्रवेश करके पश्चिम के बैंच पर बैठ ए। प्रायः डेढ़ घण्टे पश्चात् श्री म भक्तों को संग लेकर दो तल क कमरे में आ गए। रमणी, छोटे जितेन आदि इसी बीच उपस्थित ए। श्री म ने कथामृत पाठ करने के लिए कहा। जगवन्धु तृतीय ाग, अष्टम खण्ड पढ़ रहे हैं।

आज 11 फरवरी, 1924 ई०, 28वां माघ, 1330 (बं०) साल, ामवार, सप्तमी।

पाठक पढ़ रहे हैं श्री रामकृष्ण बोले—किन्तु उनके दर्शन करने र ही सब संशय दूर होते हैं। ईश्वर दर्शन करने से कर्मत्याग ता है। मेरी इसी प्रकार पूजा उठ गई थी। काली मन्दिर में जा किया करता। हठात् दिखा दिया सब चिन्मय—कोशाकुशी, वेदी, न्दिर की चौकाठ सब चिन्मय। मनुष्य, जीव, जन्तु—सब चिन्मय। खा दिया विराट् मूर्ति ही शिव—फूलों के वृक्ष मानो एक एक लों का गुलदस्ता है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ईश्वर दर्शन के टैस्ट (परख) की कथा यों बताई, बताओ तो सही? श्री म निज ही उत्तर देने लगे, "पीछे हीं भक्तगण मन में यह न लाएं कि हमारा तो हो गया है। इसी ाए कहा।"

पाठक (पढ़ते हैं)—नरेन्द्र बोले मैं नास्तिक मत पढ़ता रहा हूं।

श्री रामकृष्ण—दो मत हैं, अस्ति और नास्ति। अस्ति को ही म लेते नहीं क्यों?

श्री म—आहा, नरेन्द्र विपद में पड़कर एकदम ही नास्तिक हो गया है, माया का काण्ड ही ऐसा।

पाठक (पढ़ रहे हैं)—श्री रामकृष्ण बोले······भीष्मदेव शरशय्या पर लेटे हुए···········रो रहे हैं। जिज्ञासा करने पर भीष्मदेव बोले·········मैं इसलिए रो रहा हूं कि संग में साक्षात् नारायण फिर रहे हैं, किन्तु पाण्डवों की विपद का अन्त नहीं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—भीष्मदेव की कहानी द्वारा ठाकुर ने यही बात बोली, मेरे नरेन्द्र के संग रहते हुए भी क्यों विपद दुःख कष्ट हैं? क्या किया जाय? माया का राज्य है। देह धारण करने से यह रहेगा ही। (जनैक भक्त के प्रति)—समझे देह धारण करने से यह रहेगा ही।

श्री म जने जने भक्त को यही महासत्य ही सुना रहे हैं। डाक्टर ने कमरे में प्रवेश किया। उनसे भी बोले, "सुनते हो डाक्टर बाबू देह धारण करने पर दुःख कष्ट के हाथ से निस्तार नहीं।"

श्री म क्या भक्तों को दुःख कष्ट सहन करने के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं? रमणी और छोटे जितेन आहार करने के लिए उठकर चले गए। अब रात्रि नौ।

श्री म (पाठक के प्रति)—इसे फिर पढ़िए तो!

पाठक ने फिर पढ़ा तृतीय अध्याय। नरेन्द्र का दुःख। देह धारण करने से सुख दुःख अनिवार्य।

पाठ बन्द रहा। श्री म मस्त होकर गाना गाने लगे।

गान—आमाय दे मा पागल करे, आर काज नाई ज्ञान विचारे।
तोमार प्रेमेर सुरा, पाने कराओ मातोयारा,
ओ मा भक्तचित्त हरा, डुबाओ प्रेम सागरे।
तोमार ए पागला गारदे, केहो हासे केहो काँदे,
केहो नाचे आनन्द भरे।
ईशा मूसा श्री चैतन्य, ओ मा प्रेमेर भरे अचैतन्य,
हाय कबे होबो मा धन्य, मिशे तार मिलरे।

स्वर्गेते पागलेर मेला, जेमन गुरु तेमनि चेला,
प्रेमेर खेला के बुझते पारे,
तुमि प्रेमे उन्मादिनी, ओ मा पागलेर शिरोमणि,
प्रेमधने करो मा धनी, कांगाल प्रेमदासेरे ॥*

गान—चिदानन्द सिन्धुनीरे उठिलो प्रेमानन्देर लहरी।
(चिदानन्द सागर के जल में प्रेमानन्द की लहरें उठी हैं।)

गान—टुटलो भरम भीति—इत्यादि।
(भ्रम का भय अब टूट गया है।)

श्री म आहार करके नीचे आ गए। कथावार्ता हो रही है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—अच्छा, क्या आहार करने से फिर [पका]ना न पड़े? यह बड़ा ही हंगामा है पकाना-बकाना। दूध, रोटी, [फ]ल—ये सब खरीदकर खाने से हो सकता है। देखिए ना, रन्धन [क]रके सारे ही दिन चिन्ता। इसे लेकर ही घर है। पकाना और [फि]र खाना, सारा दिन-रात यही चलता है। तो फिर उनको [पु]कारने का समय कैसे होगा? और इसके अतिरिक्त इतना खाने से [अ]सुख होता है। ऐसा खाद्य खाना जिससे शरीर की पुष्टि हो, [स्]वास्थ्य अच्छा रहे। और इसी शरीर से श्री भगवान का भजन [क]रना। किन्तु मनुष्य क्या वह करता है? उद्देश्य भूल जाता है। [प]काना खाना ही उद्देश्य हो जाता है।

विनय ने आज कुछ आहार नहीं किया। घर में गुस्से हुए हैं। [श्र]ी म ने डाक्टर बाबू से यह संवाद पहले ही सुन लिया है। इधर

---

*भावार्थ—मां, मुझे पागल बना दो, ज्ञान विचार की और अब आवश्यकता [न]हीं है। अपनी प्रेम सुरा पिलाकर मतवाला बना दो। ओ मां, तुम भक्त का [चि]त्त हरणकारी हो, प्रेमसागर में मुझे डुबा दो। तुम्हारी इस पागल गारद (फौज) में कोई हंसता है, कोई रोता है, कोई आनन्द में भरकर नाचता है। [ई]सा, मूसा, श्री चैतन्य प्रेम में भरकर हे मां बेहोश हैं। मां, मैं कब तुम्हारे [भ]ीतर मिलकर धन्य होऊँगा? स्वर्ग में पागलों का मेला है, जैसा गुरु वैसा [ह]ी चेला है। प्रेम का खेल कौन समझ सकता है? मां तुम तो प्रेम उन्मादिनी [औ]र पागलों की शिरोमणि हो। और मुझ कंगाल प्रेमदास को प्रेम धन [क]ा धनी बना दो।

उधर की बातें हो रही हैं। हठात् परिहास्य से डाक्टर बाबू से बोले, "हां डाक्टर बाबू सुना है, आज विनय बाबू ने षष्ठी देवी का व्रत किया है ?" (सब का हास्य)।

मणि आए हैं। अभाव और मुकदमें में पड़कर उनका मस्तिष्क कुछ गरम हो गया है। गृह में प्रवेश करते ही बातें करने लगे। जितेन बाबू, ग्रामोफोन का साउण्ड बॉक्स बदलवा लाइए, बजाना होगा, इत्यादि। सब असंलग्न वाक्य। श्री म उन्हें पास बिठाकर सस्नेह बातें कर रहे हैं।

श्री म (मणि के प्रति)—आप लड़कियों को उस प्रकार न भेजें। रास्ते में मोटर गाड़ी चलती है। विपद घट सकती है। फिर kid-napping (अपहरण) भी होता है।

मणि दस बरस की एक कन्या को दुकान पर जलपान खरीदने के लिए भेजते हैं।

जनैक भक्त (श्री म के प्रति)—विपिन जमाई के एक बरस आयु के पौत्र को चुरा कर ले गए हैं

श्री म (मणि के प्रति)—यही सुनिए लड़के को चोर ले गया।

मणि—मैं भेजता हूँ जब कुछ प्रयोजन होता है। लड़के यहां पर नहीं हैं। फिर मैं भी घर पर नहीं रहता। मैंने कह दिया है जाते समय सड़क पर दादा मधुसूदन कहते जाना।

श्री म—यह बोलने से क्या होगा ? ठाकुर की एक कहानी है। तीन बन्धु सड़क पर इकट्ठे जा रहे थे। हठात् एक बाघ आ पड़ा सामने। एक ने कहा 'चलो भागें।' और एक जन बोला, 'वह क्यों ? चलो ईश्वर को पुकारें।' और एक जन बोला, 'नहीं, पेड़ पर चढ़ें। उन्होंने तो हमें हाथ पांव दिए हैं। मन बुद्धि दिए हैं। उनका व्यवहार किया जाए। निरर्थक उन्हें क्यों कष्ट देना ?'

वैसे ही जब तक शक्ति है तब तक उसका प्रयोग करना उचित। शक्ति का अभाव हो तब उनके ऊपर भार देना चाहिए।

मणि (असंलग्न भाव से)— इस साइड (दिशा) की ओर ध्यान नहीं था। यह new development, new pulsation (नूतन दिक्, नूतन अभिज्ञता) है।

मणि (श्री म के प्रति)—ठाकुर की वह कहानी भी है। मां लक्ष्मी पदसेवा कर रही थीं। धोबी भक्त को मारने आया, देखकर हठात् नारायण उठ पड़े। भक्त की रक्षा करने निकल पड़े।

श्री म—वह है। किन्तु किन के लिए ? जो उनकी चिन्ता में विभोर हैं।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥
(गीता 9/22)

मणि—ऐसा यदि किसी का हो तो वह कर सकता। मुझे लगता है मेरी वैसी अवस्था हुई है। जिस भी काम में जाऊँ, जो करूँ आपकी बात स्मरण होती है। तो फिर मेरी वैसी अवस्था नहीं हुई, यह कैसे कहा जाए ?

श्री म (सस्नेह)—जिसके अन्य कार्य शेष हो गए हैं, उनको पुकारने के अतिरिक्त और कार्य नहीं है, ऐसे जो भक्त हैं उनके लिए ही वह व्यवस्था है। भगवान के एकान्त निर्भरशीलजनों के लिए वह बात है।

मणि—मैं सोचता हूं, मैं अनुभव करता हूं, निश्चय ही यह अवस्था लाभ हुई है।

श्री म—वह तो अच्छा है। आप दया करके कन्याओं को फिर दुकान पर मत भेजें। हमारा अनुरोध है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ठाकुर ने अधर सेन से कहा था, 'क्यों पालकी पर चढ़ने से नहीं होता ? विद्यासागर पालकी में चढ़ता है।' अधर बाबू इसके पूर्व भी एक बार घोड़े से गिर थे। तब बोले वे यह बात। किन्तु सुना नहीं। द्वितीय बार घोड़े से गिरे, हाथ टूट गया। उससे ही देह गई। देहत्याग का सम्वाद सुनकर कहा था, ईश्वर कितनी बार सावधान करेंगे। वे क्या एक सौ बार बो लेंगे ? यह बोलते ही अधर सेन के शोक में क्रन्दन करने लगे।

श्री म (मणि के प्रति)—यही जो सावधान किया जा रहा है वह वे ही कर रहे हैं। यह छोड़ कन्याओं को दुकानों पर भेजने से लज्जाहीना हो जाती हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—एक भक्त की स्त्री को वायु-रोग था। बाइस-तेइस वर्ष के छोकरे उनको देखने जाते। रोगिणी के बिछौने के चारों ओर बैठते। ठाकुर ने सुनकर उस भक्त से पूछा, 'सुना है तुम इन्हें अन्त:पुर में ले जाते हो ? तुम्हारी पत्नी के पास सुना है ये सब बैठते हैं ? तुम क्या सोचते हो कि सब ही मेरे जैसे हैं ? मुझ में जो काम (वासना) नहीं है वह क्या मेरी सामर्थ्य से ? मां ने खींच रखा है। बोलो फिर ऐसा नहीं करोगे ? भक्त से प्रतिज्ञा करवा कर छोड़ा।

जनाना मर्दाना क्यों बनवाया है ? बड़े महत् पुरुषों ने, ऋषियों ने यह व्यवस्था की है।

उसी भक्त की एक कन्या थी। उसकी आयु आठ नौ बरस। काशीपुर बागान में गई। ऊपर जाकर उसने ठाकुर को एक गाना सुनाया। नीचे नरेन्द्र आदि थे उन्होंने भी उसका गाना सुना, नीचे के कमरे में बैठ कर। क्षणिक बाद ठाकुर ने उसी भक्त का ऊपर बुलवा कर तिरस्कार किया। बोले, मेरे सामने गाना गाया है तो इस कारण क्या सब के सामने ही गाना पड़ेगा। ऐसा होने से, तो फिर लज्जा जो चली जाएगी। स्त्रियों की लज्जा गई तो रहा क्या ?

श्री म (मणि के प्रति)—देखिए कैसी बात। स्त्री की लज्जा गई तो रहा क्या ?

मणि—मैं जब दक्षिणेश्वर में जाता हूं तो खूब रोता हूं। मुझे बोध होता है मैं ठाकुर के दल का कोई था, मैं ईशान मुखर्जी, या अधर-सेन या हाजरा। ऋणी के लिए दुबारा जन्म हुआ है। केशवसेन भी हो सकता हूं। उनकी मृत्यु के संग ही मेरा जन्म है। किन्तु उनको तो (कुछ) देना नहीं था।

मेरा एक बनिया मित्र है। उसने कहा बीस पचीस हज़ार रुपया जो तीनों कन्याओं के विवाह पर लगेगा वह सब खर्चा करेगा। लड़के एक को भाई का श्वसुर गोद लेगा, कहता है। और पिता जी की लिखी कितनी ही पुस्तकें हैं वे, सब बेलुड़ मठ में दे दूंगा।

मैं चार सौ बरस पहले क्या था, कह सकता हूँ (चैतन्यावतार में)।

इस रामकृष्णावतार में क्या था, वह तो अभी अभी बताया ही है।

मणि इसी प्रकार अनर्गल, असंलग्न ऐसी बातें बोलने लगे। श्री म सस्नेह पुनः उनसे बोले, हमारा एकान्त अनुरोध है, कन्या को बाहर न जानें दें।

भक्तों ने विदा ली। श्री म अन्तेवासी के संग तीन तल पर आरोहण कर रहे हैं। बोले, "बड़ा neglect (अवहेलना) करते हैं बालकों की।" दो युवक भक्तों की बातों में सहास्य कह रहे हैं, Two blacks cannot make a white, दो काले मिलकर कभी भी एक सफेद नहीं हो सकते। प्रकृति क्या सहज में बदलती है ?"

(2)

श्री म ध्यानमग्न, विभोर। असमय में ध्यान। अपराह्न साढ़े पांच से साढ़े सात तक। बाह्य ज्ञान शून्य ! मुख मण्डल प्रशान्त गम्भीर ! चार तल के कमरे में बैठे हैं—बिछौने पर पश्चिमास्य।

पारटीशन के दूसरी ओर एक युवक बैठे हैं। यह दृश्य देख रहे हैं। उनके हाथ में एक साप्ताहिक सरवैन्ट (Weekly Servant) है। श्री म के लिए लाए हैं।

आज संक्रान्ति, 12 फरवरी, 1924 ई०, 29वां माघ, 1330 (बं०) साल, मंगलवार।

श्री रामकृष्ण के अन्यतम पार्षद स्वामी सुबोधानन्द जी (खोका महाराज) आए हैं। ठाकुर ने उन्हें कहा था, मास्टर के पास जाओगे। वृद्ध वयस में भी वही गुरुवाक्य पालन कर रहे हैं। बीच बीच में श्री म को देखने आते हैं। युवक भक्त ने दो तल पर ले जाकर बिठाया। श्री म की शिक्षा अनुरूप उन्होंने स्वामी जी की पूजा की। उपकरण—एक बोतल सोडा वाटर, बड़े रसगुल्ले दो, हवागाड़ी सिगरेट एक और एक दियासलाई। सर्वदा ही ये इन्हीं उपकरणों से पूजित होते हैं यहां। बीच बीच में कई बार चेष्टा की युवक ने श्री म को संवाद देने की। किन्तु श्री म बाह्य ज्ञान शून्य हैं। स्वामी जी ने मना किया विघ्न डालने को। उन्होंने विदा ली।

साढ़े सात बजे श्री म का ध्यान भंग हुआ। मृदु मधुर कण्ठ से भगवान् का नाम कर रहे हैं। अब भी चक्षु निमीलित हैं।

श्री म आवृत्ति कर रहे हैं—जय गोबिन्द, जय गोबिन्द, जय

गोविन्द, जय बंसीवट, जय जमुना। जय श्यामकुण्ड, जय राधा कुण्ड, जय गोवर्धन। जय राधे, जय राधे, जय राधे। जय गोविन्द, जय गोविन्द, जय वृन्दावन। जय गंगा, यमुना, सरस्वती। जय गोदावरी, सिन्धु, कावेरी। जय गायत्री। जय गुरु, जय गुरु, जय गुरु। जय केदार बद्री। जय जगन्नाथ। जय रामेश्वर। जय द्वारका। जय विश्वनाथ। जय मीनाक्षी। जय श्री रंगनाथ। जय अयोध्या। जय नवद्वीप। जय कामारपुकुर। जय जयरामबाटी। जय दक्षिणेश्वर। जय बेलुड़ मठ। जय काशीपुर। जय काशीपुर।

जय भृगु वशिष्ठ व्यास। जय ब्रह्मा, विष्णु, शिव। जय ब्रह्म, जय ब्रह्म, जय ब्रह्म। मां ब्रह्ममयी, मां ब्रह्ममयी, मां ब्रह्ममयी। गुरुदेव, गुरुदेव, गुरुदेव।

(सुरसंयोग से) त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण-
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम, त्वया ततं विश्वमनन्तरूप॥

जय भक्त, भागवत, भगवान्।

श्री म दोतल पर उतर आए हैं। बरामदे में बेंच पर बैठे दो एक नवागत भक्तों के संग बातें कर रहे हैं। कुछ पश्चात् सामने वाले बैठक कमरे में प्रवेश किया। बड़े जितेन, जगबन्धु आदि वहां पर बैठे हैं। माखन आए हैं। वे नाना अवान्तर बातें कर रहे हैं।

श्री म (माखन के प्रति)—ठाकुर की एक कहानी है। दो बन्धु भ्रमण को निकले। एक जन गया वेश्यालय में, और दूसरा बैठकर भागवत पाठ सुनने लगा। मरने पर—जो वेश्यालय में गया था, उसकी गति हुई थी बैकुण्ठ में। दूसरा गया नरक में। इसका अर्थ हुआ, मन ही सब करता है। *मन जहां तुम भी वहां।*

तीर्थ दर्शन—किसी किसी का ऐसा है कि मन में ही सब देख लेता है। Realise (अनुभव) कर सकता है। आंखों से जैसा देखता है मन में भी वैसा ही होता है।

बड़े जितेन—मन में वैसा ही vivid (जीवन्त) होता है, देखने पर जैसा होता है?

श्री म—हां, वैसा होता तो है। तो भी संस्कार रहने से होता है। सब को क्या होता है? कोई कोई बद्रीनाथ जाकर भी पत्थर का ढेला देखता है। कोई अन्य रूप देखता है।

योगियों की वैसी अवस्था होती है। योगी जन पहले लोगों की परख उसी तरह करते थे। ध्यान आदि करने को कहते। देख लेते हैं जिनका ध्यान करते हैं उस पर किसी का तो मन बैठता ही नहीं—इधर उधर जाता है।

माखन—स्थान माहात्म्य तो है। तीर्थ की प्रयोजनीयता भी तो है, क्या नहीं ?

श्री म—ऐसा कुछ तो निश्चय है। जगन्नाथ के मन्दिर में जाकर देखो. वहां पर शत्रु मित्र सब एक हो जाते हैं। मार्ग में डंडों से मारपीट लाठालाठी करते हैं। वहां पर जाकर युक्त कर से (शरणागति मुद्रा दिखलाकर) यह भाव। किन्तु वह अति थोड़ी देर के लिए होता है। ठाकुर की सुन्दर एक उपमा है। जैसे गर्म तवे पर जलबिन्दु। क्षणस्थायी।

ठाकुर के सामने दो जन को ध्यान करने के लिए बोला। एक जन तो बैठते ही स्थिर हो गया। और दूसरा जन और तरह का है। इस पहले व्यक्ति ने बहुत परिश्रम किया हुआ है। यही sense world (जगत्)।

ठाकुर बोलते, किसी का सोना बीस मन मिट्टी से ढका हुआ है, किसी का एक सेर से। जिसका एक आध सेर से ढका होता है उनको तो खेंच लेते हैं पहले। कौन जाए खोदने बीस मन ? सोना अर्थात् परमात्मा।

संस्कार से ऐसा होता है। सर्वदा जो मूर्ति प्रिय लगती है उसे ही सामने देखते हैं। Realise (दर्शन) कर सकते हैं। मन मन में (दर्शन) माने real (सत्य) जैसा बोध करना। हम तो सब ही (real) सत्य जैसा बोध करते हैं, जो कुछ भी देखते हैं उन सब को।

वस्तुतः वैसा तो नहीं है। यह माया का राज्य है। Real (सत्य) एक ईश्वर हैं।

कथामृत पाठ होगा। श्री म ने निकाल दिया तृतीय भाग, द्वादश खण्ड, द्वितीय अध्याय। जगबन्धु पढ़ रहे हैं।

पाठक—(श्री रामकृष्ण छोटे नरेन से बोले) 'तुझे क्या अच्छा लगता है, ज्ञान या भक्ति ?' छोटे नरेन बोले, "केवल भक्ति।' श्री रामकृष्ण ने जिज्ञासा की, इनको (मास्टर को, श्री म को) यदि

नहीं जानते तो कैसे इनकी भक्ति करोगे ? तो भी शुद्धात्मा जिस समय बोलती है, 'केवल भक्ति मांगता हूं।' इसका अर्थ है। अपने आप भक्ति आना, संस्कार न हों तो नहीं होता। *यही प्रेमा भक्ति का लक्षण है।* ज्ञान भक्ति—विचार करके भक्ति।······इत्यादि पाठ चला।

श्री म (भक्तों के प्रति)—यही देख रहे हो, *गुरु के ऊपर विश्वास करने से कुछ करना नहीं पड़ता।* जो आवश्यक है वे करते हैं। ठाकुर ने भक्तों के लिए जो दरकार था सब कर दिया था स्वयं ही। वे अन्तर्यामी हैं, सब जानते हैं, पूर्वजन्म परजन्म सब। एक जन से बोले, विश्वास करो, निर्भर करो तो फिर स्वयं कुछ भी करना नहीं पड़ेगा। मां काली सब कर देंगी। और एक जन से बोले, भागवत पण्डित को एक पाश देकर ईश्वर रख देते हैं। वह न हो तो लोगों को भागवत कौन सुनाएगा ? रख देते हैं लोक शिक्षा के लिए। तभी मां ने गृहस्थ में रखा है मुझे (अर्थात् श्री म को)।

श्री म (युवक के प्रति)—गुरु प्राप्त करके जहां पर भी रहो, भय नहीं। उनकी दृष्टि रहती है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—अनेक ही कुलगुरु से मन्त्र लेकर समझते हैं मनुष्य के पास से मन्त्र लिया है। मनुष्य बुद्धि करने से होगा नहीं। गुरु पर ईश्वर बुद्धि चाहिए। मंत्र ईश्वर ने दिया है ऐसी बुद्धि चाहिए। गुरु पर ईश्वर बुद्धि न लाने से दाम जो lower (कम) हो जाता है। *ईश्वर ने दिया है मंत्र, यह विश्वास चाहिए।* (पाठक के प्रति) पढ़ो।

पाठक (पढ़ते हैं)—श्री रामकृष्ण बोले, व्यासदेव ने गोपियों का प्रायः सब खीर दही मक्खन खा लिया। फिर कहते हैं, हे यमुने आज यदि मैंने कुछ नहीं खाया है तो तुम्हारा जल दो भाग हो जाए और बीच के रास्ते से हम चले जाएंगे। ठीक वही हुआ।

श्री म—देखिए व्यासदेव का कैसा ज्वलन्त विश्वास! इतना खाया तो भी बोल रहे हैं, मैंने कुछ भी नहीं खाया। गोपियां तो देख सुनकर अवाक्। कैसा विश्वास ! मैं अर्थात् शुद्धात्मा, जो अन्तर में हैं। वें निर्लिप्त हैं। उन्हें क्षुधा तृष्णा नहीं। इसका नाम है, ब्रह्मज्ञान। इसके होने से ही जीवन्मुक्त। बोले, जिन्हें यह ज्ञान हुआ है वे समझ सकते हैं कि आत्मा अलग है और देह अलग है।

ठाकुर ने एक और उपमा दी थी। तालाब का जल सब जलपौधों से ढका हुआ है। जल का प्रयोजन हो तो पहले जल-पौधे हटाने होंगे संसार में जो चतुर हैं वे इन जलपौधों को हटाकर जल पी लेते हैं।

बड़े जितेन—इसे ठीक नहीं समझ सका।

श्री म—पाना (जलपौधे) अर्थात् माया। माया से बाहर जाकर उन्हें देखना। पाना तो आवरण है, वस्तुतः जल ही नीचे होता है।

बड़े जितेन—वैसा क्या सब कर सकते हैं, सहज बात है?

श्री म—गुरु की कृपा से वह भी हो सकता है। महामाया का काण्ड ही ऐसा है, सब गोलमाल कर देती है। गुरु के ऊपर विश्वास हो तो इसके हाथ से छुटकारा मिल जाता है। तब स्वयं कुछ नहीं करना पड़ता।

माया की definition (संज्ञा) ही यही—जो real (सत्य) को unreal (असत्य) बोध करवा देती है। 'अतस्मिन् तद् बुद्धिः।' (ब्रह्मसूत्र 1:1)। माया का और एक नाम है sense-world (जगत्)। हम तो सब माया के खेल के भीतर पड़े हुए हैं। गुरु कृपा तथा गुरु के ऊपर विश्वास रहने से और कुछ करना नहीं पड़ता।

पाठक (पढ़ते हैं) श्री रामकृष्ण मास्टर से बोले, 'उस दिन देखा यह खोल छोड़कर सच्चिदानन्द बाहर आ गए। आकर बोले—'युग युग में मैं अवतार होता हूं।' तब सोचा शायद मन के विचार से ऐसी बात बोल रहा हूं। फिर चुप रहकर देखा आप ही बोलता है। शक्ति की आराधना चैतन्य ने भी की है। देखा, पूर्ण आविर्भाव है। तब भी सत्त्व गुण का ऐश्वर्य है।

श्री म—पहले से ही फील्ड (भूमि) तैयार कर लेते हैं। और कोई नहीं था वहां अन्तरंगों को छोड़। जभी अपना स्वरूप बताया। बोले, मैं वही सच्चिदानन्द परमब्रह्म हूं। अब अवतार होकर आया हूं। वे जो अवतार हैं उसका greatest evidence (सब से बड़ा प्रमाण) है, उनके निज मुख का यह महावाक्य। अर्जुन से श्री कृष्ण ने यही बात कही थी, मैं ही परमब्रह्म हूं। जभी अर्जुन बोले, 'स्वयं चैव ब्रवीषि मे।' (गीता 10:13) और बाहर का प्रमाण है, नरेन्द्र के अद्भुत कर्म और जीवन।

पाठक (पढ़ते हैं) श्री रामकृष्ण बोले, खेकसा* के खेत में यदि बहुत विकास हो तो मालिक दो चार बांट सकता है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—यह एक primitive (प्राचीन) उदाहरण है 'civilisation' (नवीन सभ्यता) के पहले वाला। ठाकुर की दोनों ही हैं—primitive (प्राचीन) उपमा भी हैं और फिर वर्तमान civilisation (सभ्यता) की भी उपमा है। 'स्टीमर', 'इंजिन', 'टेलिग्राफ के तार' यह सब नवीन हैं। 'हाबाते काठ' केवल निज बह जाती है, यह भी primitive (प्राचीन) है। स्टीमर निज भी पार जाता है और औरों को भी ले जाता है—यह modern (आधुनिक) उपमा है। योग की बात समझाते समय टेलिग्राफ की बात बोलते। तार कहीं से भी कटा हो तो ठीक ठीक योग नहीं होता।

दोनों प्रकार से ही कह गए हैं। वैस्ट के लोग आयेंगे कि ना, जभी। अंग्रेजी जानने वाले लोगों को 'इंगलिशमैन' क्यों कहते थे? माने, उन्होंने civilisation (पाश्चात्य सभ्यता) प्राप्त कर रखी है कि ना (हास्य)।

श्री म (पाठक के प्रति)—एक साथ अधिक नहीं पढ़ते। उससे सब दब जाता है। आज यहीं तक रहे।

रात्रि नौ। एक सज्जन आए हैं। उनके हाथ में सिगार है। ये गिरीश घोष के पास यातायात किया करते थे। श्री म ने सस्नेह उन्हें अपने पास बिठा लिया। गिरीश बाबू का जीवनचरित लिखा जा रहा है कि नहीं, श्री म पूछ रहे हैं। बोले, "आप लोग उनके पास बहुत बैठे हैं, आप लोगों द्वारा लिखे जाने से ही अच्छा होता।" भक्त ने उत्तर दिया, "कट्टरता का दोष जो हो जाएगा।" श्री म प्रति उत्तर में बोले, "नहीं, केवल facts (घटनाएं) ही दे दीजिए। अपनी opinion (राय) बिना दिए हो जाएगा।"

(3)

दो दिन पश्चात् 14 फरवरी, 1924, ई०। रात्रि नौ। श्री म मार्टन इन्स्टिट्यूटशन के दो तल के बरामदे में बेंच पर बैठे हैं। अन्तेवासी एक साधु के दर्शन करके आए हैं। उसी के बारे में बातें हो रही हैं।

श्री म (अन्तेवासी के प्रति)—कुछ आलाप हुआ?

*खेकसा=बंगाली नाम काँकुड़, करेले या परवल जैसी एक सब्जी।

गान—जागो मां कुलकुण्डलिनी,
तुमि नित्यानन्द स्वरूपिणी तुमि ब्रह्मानन्द स्वरूपिणी।
प्रसुप्त भुजगाकारा आधार पद्मवासिनी।
त्रिकोणे ज्वले कृशानु तापित होइलो तनु।
मूलाधार त्यज शिवे स्वयंभूशिववेष्ठिनी।
गच्छ सुषुम्नार पथ, स्वाधिष्ठाने होओ उदित,
मणिपुर अनाहत विशुद्धाज्ञासंचारिणी।।
शिरसि सहस्रदले, परमशिवेते मिले,
क्रीड़ा करो कुतुहले सच्चिदानन्ददायिनी।।*

गान—बोलो रे श्री दुर्गा नाम। इत्यादि।

गान—मजलो आमार मन-भ्रमरा श्यामापद नीलकमले। इत्यादि।
(हे मेरे मन भ्रमर, तुम श्यामा के नीलकमल-चरणों में लीन हो जाओ।)

गान—कबे होबे समाधिमग्न इत्यादि।
(कब समाधिमग्न होओगे।)

गान—ऐ बार आमि भालो भेवेछि। इत्यादि
(अब मैंने ठीक विचार कर लिया है।)

भजन शेष होने के पूर्व छोटे जितेन आकर पारटीशन के कक्ष में बैठ गए। भजन होने पर उन्होंने घर में प्रवेश किया। बड़े जितेन ने भी संग संग प्रवेश किया। ठाकुरबाड़ी से भृत्य श्री म का रात्रि का आहार लाया है। भक्तगण दो तल के कक्ष में उतर आए। एक जन केवल श्री म का आहार प्रस्तुत करके पास ही बैठे रहे। श्री म भोजन कर रहे हैं। दूध और रोटी रात का आहार

*भावार्थ:—हे मां कुल कुण्डलिनी जागो। तुम तो नित्यानन्द स्वरूपिणी हो, मां तुम ब्रह्मानन्द स्वरूपिणी हो। तुम सोए हुए सर्प के आकार वाली हो और आधार पद्मवासिनी हो।

तीनों ओर आग जल रही है। शरीर तप चुका है। शिवानी मूलाधार को छोड़कर स्वयंभू शिव को घेर लो। आप सुषुम्ना के पथ से चल पड़ो और स्वाधिष्ठान में उदित हो जाओ, प्रार्थना है। मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा में संचरण करती हुई सिर में सहस्रदल पद्म पर आप परम शिव से मिलकर फिर बड़े आनन्द से क्रीड़ा करो। हे मां, आप सच्चिदानन्द दायिनी हो। आप जागो मां। जागो।

होता है। दूध में मीठा भी नहीं डाला जाता। आहार शेष हो जाने पर सब पुनः आकर एकत्रित हुए। बड़े जितेन, छोटे जितेन, छोटे नलिनी, जगबन्धु ग्रादि। श्री म का शरीर उतना ठीक नहीं है। बड़े जितेन हाथ में लालटैन लेकर श्री म का मुख दर्शन करते हैं। वे बिस्तर पर लेटे हुए हैं।

बड़े जितेन (सस्नेह श्री म के प्रति)—सुना है चेहरा खराब हो गया है, ज्वर-श्वर तो नहीं है?

श्री म—न। चेहरा क्या एक सा रहता है? और यह चेहरा तो असल चेहरा नहीं है। यह 'मैं' नहीं है। स्व-स्वरूप ही है ग्रसल चेहरा। यह तो बदलता रहता है। देखिए बाल्य, किशोरावस्था (पौगण्ड) यौवन, वार्धक्य ये सब तो हैं। एक समय के चेहरे से अन्य समय के चेहरे का मेल नहीं है। यही 'मैं' यदि real (वास्तविक) 'मैं' होता तो फिर और उपाय नहीं था। यह क्या ग्राज से चला है? Since the creation of the universe (सृष्टि के आदि से) चला है।

बड़े जितेन—कैसे देखा जाए स्व-स्वरूप को, वही कर दीजिए।

श्री म—देखिए, इसीलिए ही समझिए अवतार ग्राते हैं। युग युग में आते हैं। आकर कहते हैं, मेरा चिन्तन करो। तब ही स्व-स्वरूप को जाना जा सकता है।

बड़ी बड़ी बातें बोलने से क्या होगा? बातें तो बहुत हुई हैं, जिसके पेट को जो सहे वही ले। पुलाव क्या सब का पेट सहता है? देखिए ना अर्जुन जैसे उत्तमाधिकारी भी विश्वरूप देखते ही एकदम वेपथु ग्रर्थात् अज्ञान हो गये और कांपने लगे। बोले, प्रभो, मुझे अपना वही रूप दिखलाग्रो, सौम्यरूप। यह रूप संवरण करो। श्री कृष्ण बोले, देवतागण मेरा यही रूप देखना चाहते हैं। अर्जुन बोले, नहीं, मैं नहीं चाहता। संवरण करो, प्रभो! संवरण करो यह रूप! ऐसा काण्ड है!

सहेगा क्यों इस शरीर में? इसके लिए अन्य व्यवस्था है। तभी समझिये ग्रवतार आते हैं। अचिन्त्य की चिन्ता नहीं कर पाते इस देह से। जभी वे देह धारण करके आते हैं। वह ही चलेगा। (अपने लेटे हुए शरीर पर दाएं हाथ से आघात करके) इसमें ही यह सहता

है। उसके बाद की व्यवस्था भिन्न है। अनन्त काण्ड कैसे समझे जाएं इसमें ? इसीलिये देह धारण करते हैं। और फिर रोग शोक भूख प्यास सब कुछ मनुष्य की भांति ही लेकर आते हैं। तभी मनुष्य उनका चिन्तन कर सकेगा।

श्री म (भक्तों के प्रति)—गुरु ही सब करते हैं। शिष्य सोचता है, मैं करता हूं। यह बात नहीं है। भवानीपुर जाते हुए एक बालक को देखा था—साइकल पर चढ़ा बैठा है। और एक जन उसे ठेलकर ले जा रहा है। लड़का quite at ease (बड़े आराम से हिलता, चढ़ता, झूलता) है। किन्तु उसे लिये जा रहा है ठेलकर और एक जन। वैसे ही गुरु ही सब करते हैं। शिष्य quite at ease (बड़े आराम से) जा सकता है। गुरु बिना उपाय नहीं। क्राइस्ट ने वही बात ही कही थी। 'In the world ye shall have tribulation: but be of good cheer for I have overcome the world.' इसका अर्थ यही है शरीर धारण करने पर दुःख कष्ट तो निश्चय ही होगा। यदि बचना चाहो इसके हाथ से, यदि आनन्द में रहना चाहो तो इसके भीतर रहते हुए भी मुझे पकड़ो। मैंने शोक ताप को जीत लिया है। मैंने नित्यानन्द उपभोग किया है, इस झमेले के भीतर रहकर भी। मुझे पकड़े रहने पर तुम भी नित्यानन्द उपभोग कर सकोगे।

डाक्टर बक्शी, विनय और छोटे अमूल्य ने गृह में प्रवेश किया। रात्रि अब साढ़े नौ।

श्री म (विस्मय से डाक्टर के प्रति) ओ मां, अरे आप कब आए, इतनी रात में ?

डाक्टर—देर हो गई। घर की वे आई हैं। नीचे हैं।

श्री म—स्त्रिएं ?

बड़े जितेन (मजाक से)—अब सब भैरव भैरवी हो गए हैं, देख रहा हूं। ठाकुर कहते, पति पत्नी होने में बुरा नहीं है।

श्री म (गम्भीर भाव से)—ठाकुर कहा करते थे जिन्होंने बहुत दिन तक तपस्या की है, स्त्री क्या वस्तु है, जिन्होंने यह जान लिया है, वे ही यह कर सकते हैं (भैरव भैरवी होकर पवित्र भाव में रहना)। बड़े घर के जो हैं, ऊंची श्रेणी जिनकी है उनको कुछ दिन असंग

(निर्जन में अकेले) रहना उचित। उस प्रकार रहकर निज को जानकर फिर आकर गृहस्थ करने में दोष नहीं है। जैसे त्रैलंग स्वामी। उन्हें कोट पैन्ट पहना देने पर भी त्रैलंग स्वामी ही हैं। ये आफिस के बाबू हैं यह बात कोई भी नहीं कहेगा। जो लोग कुछ दिन निसंग अवस्था में रहते हैं, समझना होगा इनका घर ऊँचा है।

बड़े जितेन—साधुसंग इतना हो रहा है, यहां पर आता हूं, कहां पाऊँगा ऐसा साधुसंग ?

श्री म (विरक्ति भाव में)—जेठामी (छोटा मुंह बड़ी बात) करने से क्या होगा ? पहले कुछ दिन निर्जन में रहकर फिर संसार कर सकते हो।

बड़े जितेन—यहां पर जो आते हैं उनका कुछ कुछ होता तो है।

श्री म—बाजे के बोल मुखस्थ करना तो सहज है। हाथ में लाना बड़ा कठिन है। निसंग रहने से अपनी position (अवस्था) समझ में आ जाती है। अपनी position (अवस्था) समझ लेने पर ही हो गया। कोई कोई ऐसे हैं, बाहर के बन्धन भी छोड़ देते हैं, कुर्ता धोती। तत्पश्चात् नग्न होकर ध्यान करते हैं निर्जन में। कुर्ता धोती भी बन्धन।

श्री म (भक्तों के प्रति)—गुरु ही सब करते हैं। कभी कभी फिर मारते भी हैं। Battle-field (रणक्षेत्र) में कमाण्डर कभी कभी फिर चाबुक मारता है। जो good soldier (अच्छा सैनिक) होगा उसे वह खाना पड़ता है। अनेक युद्ध lost and won (हार जीत) करके ही तब फिर पक्का कमाण्डर बनता है।

श्री म बिछौने से उठकर छत पर गए। शीत काल। देह पर स्वेटर, उसके ऊपर फलैनल की पंजाबी। सिर पर मफलर लपेटा हुआ। खुली हवा में एकाकी टहल रहे हैं।

मणि ने भक्त सभा में प्रवेश किया। अभाव में पड़कर उनके मस्तिष्क में कुछ गोलमाल हो गया है। बड़े जितेन उनको सस्नेह उपदेश दे रहे हैं।

बड़े जितेन (मणि के प्रति)—बाल बच्चे लेकर यहां आना उचित नहीं। ये उसे पसन्द नहीं करते। कहते हैं एक आध बार हुआ तो

बस। अधिक आना ठीक नहीं। समय होने पर उनका भी होगा। अब उन्हें खेल कूद चाहिये। खुली हवा में इन्हें ले जाना अच्छा।

मणि—हम 'बाहादुरी काठ[1]।' 'हाबाते काठ[2]' होने क्यों जाएं ? हम स्वयं भी जायेंगे, अन्य को भी संग ले जाएंगे।

श्री म ने गृह में प्रवेश किया।

श्री म (भक्तों के प्रति)—क्या सब बातें हो रही हैं ?

मणि—हम 'हाबाते काठ' क्यों होने जायें ? हम हैं बाहादुरी काठ।

श्री म ने कथा का स्रोत ही उलट दिया।

श्री म (डाक्टर के प्रति)—ओल्ड टैस्टामैंट की जिल्द बन्ध गई क्या ? बड़ी सुन्दर पुस्तक है। पढ़ने की इच्छा होती है। अफ्रीका से लेकर आये हैं (उनके क्रीतदासों के मोजिज)। वे कहते हैं, क्यों ईश्वर हमें खाना नहीं देते ? वहां तो मैं खूब सुखी था। यहां पर फिर क्यों नहीं देते ? देखो, जैसे घर के लोगों के साथ बातें कर रहे हैं। *कितना निकट, कितना अपना।* वे बड़े सरल हैं कि ना। ईश्वर के दर्शन मिले हैं। पढ़ने में अच्छा लगता है।

श्री म (मणि के प्रति)—आपके ग्रामोफोन पर आज दोपहर को सुना था, चैतन्य लीला, प्रभातलीला। आहा कैसी सुन्दर है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—यही देखिए यहां पर भी प्रेम की कथा। अनेक दिन जिसका स्मरण किया जाए, जिसके संग रहा जाये उसके संग प्यार पैदा हो जाता है। हमारा शरीर ऐसे उपदानों से गठित है। एक संग अनेक दिन रहने से प्यार पैदा हो जाता है। एक जन को दो महीने का एक लड़का मरने पर इतना शोक नहीं होता, किन्तु दस बरस के लड़के के जाने पर कितना क्रन्दन !

ईश्वर के ऊपर प्रेम भी इसी प्रकार होता है। अनेक दिन तक उनका चिन्तन कर कर के उनकी सेवा कर कर के तब यह प्यार होता है। इस शरीर में ही होता है, इसी एक ही भाव में होता है—ईश्वर को प्रेम करना ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य है।

---

[1]'बाहादुरी काठ'=साल की लकड़ी, बड़ी मजबूत लकड़ी, लोग बैठ सकते हैं।
[2]हाबाते काठ = छोटी लकड़ी, हल्की लकड़ी तनिक से बोझ से डूब जाती है।

श्री म चुप किए बैठे हैं। कुछ काल पश्चात् फिर बातें कर रहे हैं।

श्री म (जगबन्धु के प्रति)—इससे ही होगा।

डाक्टर—इसके माने क्या हैं?

श्री म—अर्थात् इसी सरञ्जाम (आयोजन) में ही होगा। इसी शरीर में ही ईश्वर दर्शन होता है। किन्तु तब मोड़ फिरा देना पड़ता है। ईश्वर का ऐसा व्यापार है। वे मछली के तेल में मछली तलते हैं। इसी लिवर, इसी स्पलीन इसी nervous system (स्नायु मण्डल) द्वारा ही उन्हें देखा जाता है। ये अवतार होते हैं इसीलिए। इसी शरीर द्वारा ही तो तब उनको लोग प्यार करेंगे।

ठाकुर किसी किसी से apologetically (सविनय) कहते, 'बोलने से पीछे अभिमान न हो जाये, यहां आते हुए हाथ में कुछ लेकर आना चाहिए दो चार पैसे का।' किसी को कहते—'पैर पर तनिक हाथ फेर दो तो, कन कन कर रहा है।' क्यों इस प्रकार बोलते? इस प्रकार करते करते उनमें प्यार जन्मेगा।

कुछ देने के सम्बन्ध में क्राइस्ट बोले थे, एक जन को एक पाई देते हुए देखकर। इसका दाम अमूल्य है। कारण इसके पास कुछ भी नहीं है। गरीब है, फिर भी देता है। गिरजे में बाक्स रहता है ना। अनेक ही पूजा के लिए उसमें कुछ न कुछ देते हैं। एक जन ने एक पाई वहां पर दी थी। वही देखकर यह कहा था। जिसके पास है अधिक वह तो अधिक देगा ही। किन्तु जिसके पास नहीं है वह जो देता है तो प्राण ही दे देता है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—इसी शरीर में ही उन्हें देखा जाता है। उसी के लिये ही समझिए अवतार आते हैं। इससे अधिक किया नहीं जा सकता। अर्जुन कर नहीं सके। शरीर इस प्रकार से गठित है। अब इसे भीतर से देखना होगा।

उस पर फिर और कितनी तरह तरह का देखता है। लाल चश्मा पहनो लाल देखोगे। नीला पहनने से नीला देखोगे। जिसका जैसा चश्मा अर्थात् मन और भाव होता है वह वैसा ही देखता है। ईश्वर को तभी तो कभी इस नाम से कभी उस नाम से पुकारते हैं। किसी ने जल रूप में देखा है। कोई कहता है वायु, कोई अग्नि।

ऋषियों ने इन सब के भीतर ही उनको देखा है। Infinite possibilities (अनन्त सम्भावनाएं) हैं।

God is a point without a circumference (भगवान् एक ऐसे विन्दु है जिसकी परिधि नहीं है)।

बड़े जितेन—समझ नहीं पाया मैं यह तो।

श्री म (विस्तर के ऊपर तर्जनी के द्वारा आघात करके)—यहां पर एक पोएंट (विन्दु) लगाने पर उसका एक radius (व्यासार्ध) रहेगा, circumference (परिधि) रहेगी। ये सब ही हुए finite (सान्त)। ईश्वर को कहा गया है infinite (अनन्त)। वे यदि ऐसे हों तो उनकी circumference (परिधि) नहीं, radius (व्यासार्थ) भी नहीं। प्रत्येक पोएंट–विन्दु ही वे हैं— nearest (निकटतम) हृदय है।

बड़े जितेन—तभी क्या ईश्वर को Immanent (विश्व व्याप्त) कहते हैं?

श्री म—Immanent (विश्वव्याप्त) कैसे कहा जाए? सब ही तो मोम के वाग की भांति है—सब मोम।

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता।
15 फरवरी, 1924 ई०, शुक्रवार, दशमी।
3रा फाल्गुन, 1330 (बं०) साल।